तीर्थाटन प्रदीपिका

TIRTHA TANA PRADIPIKA

अर्थात्

भारतवर्ष के मुख्य तीर्थों और बड़े बड़े
नगर और शहरों का वृत्तान्त

जिस को

अवध रुहेलखण्ड रेलवे के मुसाफिरों के फायदे के लिये
बोर्ड के हुक्म से बनाया ।

न १९०८ । सम्वत् १९६४ वि०

अवध रुहेलखण्ड रेलवे यन्त्रालय लखनऊ में छपा ।
जुलाई सन् १९०१ ई० ॥

[तीय बार]　　　　　[छपी २०००

।। विज्ञापन ।।

यह पुस्तक बहुत जल्दी में बनी और छपी है इस लिये इस में कोई गलती रहगई हो तो जिस महात्मा को गलती मालूम हो वह लायब्रेरायन रेलवे बोर्ड को लिखें ताकि दूसरी छपाई में उसको दुरुस्त कर दिया जावे ।।

अबदूररशीद,

लायब्रेरीयन रेलवे बोर्ड ।

विषयसूची

इति ॥

भूमिका ।

यह पुस्तक इस कारण बनाई गई है कि थोड़ा थोड़ा हाल तीर्थों का जहां हिन्दू लोग यात्रा को जाते हैं या और बड़े बड़े हिन्दुस्तान देश के नगरों का उनकी ख़बर के वास्ते दिया जावे, जो बातें इस में लिखी हैं भरोसे वाली जगहों से ली गई हैं और आशा है कि जिन लोगों ने इन तीर्थों को पहिले नहीं देखा, या अंग्रेज़ी किताबें नहीं पढ़ सक्के उनको यह पुस्तक बहुत काम देगी ॥

१८६० के रेलवे ऐक्ट ६ का और रेल के उन कायदों का जो आज कल जारी हैं खुलासा लोगों को ख़बर के वास्ते इस पुस्तक के पाछे दिया गया है ॥

बड़े बड़े स्टेशनों पर तीसरे दर्जे के टिकट घर अकसर हर वक़्त खुले रहते हैं और जहां ऐसा नहीं वहां गाड़ी के वक़्त से बहुत पहिले खोल दिये जाते हैं, बड़े शहरों में शहर के अन्दर भी टिकट घर खोले गये हैं जहां टिकट मिलसक्के हैं और असबाब की भी बिलटी बन सक्की है ऐसे स्टेशनों के नाम इस पुस्तक के पीछे लिखे हैं बाज़े स्टेशनों पर टिकट घर के पास बदमाश लोग भी फिरा करते हैं उन की मारफ़त टिकट कभी नहीं लेना चाहिये यह लोग मुसाफ़िरों को धोखा देते हैं और उनका रुपया खाजाते हैं ॥

तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों के वास्ते जो गाड़ियां नई बनती हैं उन में टट्टी का इन्तज़ाम किया जाता है और गाड़ी के गार्ड के साथ ज़रूरत के वक़्त बातचीत करने का सामान भी रक्खा जायगा ॥

हर एक स्टेशन से किसी बड़े स्टेशन का फ़ासला और तीसरे दर्जे का किराया दिया है इस से मुसाफ़िरों को बहुत कुछ मदद मिल

सकती है। थोड़ी रेलों के सिवाय सब रेलों पर पहिले दूसरे और ड्योढे दर्जे का किराया एक आना। आध आना और एक पैसा फ़ी मील के हिसाब से लिया जाता है॥

वक़्त की कमी के सबब यह पुस्तक ऐसी पूरी पूरी ठीक नहीं बनी जैसा कि ख़ियाल था इसी सबब से नक़्शा भी अंग्रेज़ी का ही लगा दिया गया है अगली बार यह सब कमी पूरी की जावेगी॥

अगाशी ।

अहाता बम्बई के ज़िला थाना तहसील बसीन में नगर है। बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे (बम्बई की छोटी लैन) के स्टेशन विरार से ४॥ मील पश्चिम की ओर है। रेलवे, स्टेशन से इस नगर को पक्की सड़क जाती है। यहां पुर्तगाल वालों का एक मदरसा है और भवानीशंकर का एक मन्दिर है जो सन् १६६१ ईस्वी में बनाया गया था इस मन्दिर के लिये सरकार से ७५) रुपये साल मिलते हैं जहां न्हाने की जगह है कहते हैं कि इस जगह नहाने से, शरीर की खलड़ी के सब रोग दूर होजाते हैं॥

केले और पान का बड़ा व्योपार होता है सूखा हुआ केला यहां का सारे ज़िले में अच्छा होता है। विरार स्टेशन से अगाशी को तांगे और गाड़ियां जाती हैं अगाशी में देशी मुसाफ़िरों के वास्ते एक धर्म-शाला है। बम्बई से विरार ३८॥ मील और तीसरे दर्जे का किराया ॥)। लगते हैं॥

अगर तारा ।

बङ्गाल के ज़िला तिरहुत के बनगांव गांव में अगरतारा देवी का मन्दिर और बड़े तीर्थ की जगह है इस का हाल देवी पुराण में देखो।

यह जगह जहाजों के स्टेशन गांगरी से १५ मील है ईस्ट इण्डियन रेलवे के मुंघेर स्टेशन से यहां जाते हैं कलकत्ते से देहली को जाते हुये मुंघेर १६७ मील है और तीसरे दर्जे का किराया २।-)॥। लगता है॥

अगरतारा में कोई धर्मशाला नहीं यात्रियों को मन्दिर में ठहरना चाहिये या अपना और कोई बन्दोबस्त करें॥

अगरतुला पुराना।

अहाता बङ्गाल की रियास्त तिप्परा में एक गांव है और रियास्त की इस वक्त की राजधानी से चार मील के फ़ासले पर है। सन् १८४४ तक राजों का स्थान रहा पीछे नया नगर राजधानी बनाया गया। पुराने महिलों के खंडर और राजा और रानियों की छतरियां अब तक बाकी हैं। महिल के पास एक छोटासा मन्दिर है जिसको पहाड़ी लोग बड़ा पवित्र मानते हैं इस मन्दिर में सोने चांदी और दूसरी धातों के १६ सिर बने हुए हैं जो तिप्परा के रक्षा करने वाले देवताओं की मूर्ती हैं जो कोई मन्दिर के पास से वहां के लोगों में से गुजरे तो उसको ज़रूर मत्था टेकना उचित होता है॥

नये अगरतुला में कालेज, महाराजा साहिब का हाईस्कूल महारानी साहिबा की पुत्री पाठशाला और संस्कृत स्कूल हैं। यहां सराये या धर्मशाला कोई नहीं। अगरतुला जिस को लोग मूगरा कहते हैं आसाम बङ्गाल रेलवे पर चिट्टागांग से १२२ मील और राजधानी से ६ मील है तीसरे दर्जे का किराया १॥≈)॥ है॥

बैल गाड़ियां पालकियां और घोड़ा गाड़ियां अखौड़ा स्टेशन पर जो इस नगर से ६ मील है स्वारी के लिये मिलती है पर वर्षा के दिनो में मूगरा स्टेशन पर उतर के और किश्ती में बैठकर अगरतुला जाना चाहिये अखौड़ा चिट्टागांग से १२५ मील और तीसरे दर्जे का किराया १॥≈)। है।

अगर द्वीप।

भागीरथी नदी में टापू है और बङ्गाल अहाते के ज़िला नदिया में ईस्टर्न बङ्गाल लैन के बेथुवाधारी स्टेशन से ८ मील के फ़ासले पर वाक़े है॥

४०० या ५०० वर्ष गुज़रे कि घोस ठाकुर जो नवा द्वीप के महा चैतान्य का चेला था गोपीनाथ कृष्ण जी की मूर्त्ति यहां लाया था उसकी यादगारी में मार्च के महीने में डोल यात्रा से ठीक ११ दिन पीछे ज़िले का सबसे बड़ा मेला होता है यह मेला एक हफ़ते तक रहता है और २५ हज़ार के क़रीब यात्री इस में आते हैं॥

अगर द्वीप में कोई धर्मशाला या सराय नहीं पर मेले के दिनों में यात्रियों के आराम के लिये चटाई की झोंपड़ियां बना देते हैं स्टेशन पर सवारी के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं॥

बेथुवाधारी स्टेशन रानाघाट जंकशन से ३३ मील है और तीसरे दर्जे का किराया।≈) लगता है॥

अचल।

पंजाब के ज़िला गुर्दासपुर तहसील बटाला में एक गांव है और बटाला स्टेशन से जो नार्थ वैस्टर्न रेलवे पंजाब लैन पर है ३ मील के फ़ासले पर है। इस गावों में शिवजी का एक बड़ा सुन्दर मन्दिर है जिसपर नौमी और दसमी का मेला नवम्बर में लगता है जो दो दिन तक रहता है इस मेले में दस हज़ार के लगभग लोग आते हैं अपरैल के महीने में बैसाखी का मेला भी यहां बड़ा भारी होता है यह मेला भी दो दिन तक रहता है और दस हज़ार लोग इस में आते हैं॥

गांव में देशी लोगों के आश्रम के लिये धर्मशाला है और बटाला स्टेशन पर यक्के सवारी के लिये मिलते हैं ॥

बटाला पंजाब के नगर अमृतसर से २४ मील है तीसरे दर्जे का किराया ।)॥ है ॥

अज़ीकल ।

मद्रास रेलवे की बड़ी लायन पर यह आखिरी स्टेशन है । पहिले दूसरे और तीसरे दर्जे के मुसाफ़रों के वास्ते वेटिंगरूम [मुसाफ़रखाने] बने हुये हैं स्टेशन बलिया पट्टम के क़रीब बना हुआ है जो एक छोटासा व्योपार का शहर है और कनानोर से पांच मील क़रीब पूर्व दक्षिण की तरफ़ को वाक़े है स्टेशन से क़रीब एक मील के फ़ासले पर एक मशहूर मन्दिर है और चराकल में राजा चराकल का बनाया एक बड़ा तालाब और देसी मुसाफ़िरों के वास्ते एक बड़ा चत्तरम यानि धर्मशाला है इस चत्तरम में ब्राह्मणों को मुफ्त खाना मिलता है यह शहर एक बड़े दरिया के किनारे पर वाक़े है जो यहां से ४ मील के फ़ासले पर समुद्र में जा मिलता है । इस जगह लकड़ी, काली मिर्च, नारयल और अनाज बहुत होता है । बहरी महसूल खाना स्टेशन से क़रीब ३ मील है ॥

अज़ीकल मद्रास से ४७४ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ४=) है ॥

अयध्या

अवध के ज़िला फ़ैज़ाबाद में एक बड़ा पुराना शहर घागरा दरिया के किनारे पर जिसको पिछले ज़माने में सर्जू कहते थे । अवध

रुहेलखंड रैलवे पर मुगल सराय से १२६ लखनेऊ से ८४ और इलाहाबाद से १०४ मील के फ़ासले पर वाक़े है तीसरे दर्जे का किराया १॥)। आना १-)। आना १।)॥ है। पुराना शहर अब अलोप होगया। लेकिन खंडर बाक़ी हैं पहले ज़माने में अयुध्या बड़ा भारी शहर था कहते हैं कि ईसका अहाता १२ योजन यानी ९६ मील था। कौशल्या राज्य में राजा दशरथ की राजधानी थी। राजा दशरथ राजा रामचन्द्र जी के पिता थे और रामचन्द्र जी रामायण के सूरमा थे। चन्द्रबंशी खानदान की बर्बादी पर यह शहर बर्बाद होगया और राज कुटुम्ब तित्तर बित्तर हो गया कहते हैं कि राजा बिक्रमाजीत ने जो सन् ईस्वी से ५७ वर्ष पहिले हुए हैं इस पुराने शहर का और उन जगहों का जो रामचन्द्र जी के सबब पवित्र समझी जाती हैं पता लगाया इसमें सब से बड़े रामकोट यानी राजा का महल नगेशरनाथ का मन्दिर जो महादेव जी के नाम पर है मनापर्ब्बत दर्शनसिंह या मानसिंह का मन्दिर और हनुमान गढ़ी हैं। कौशल्या बुद्धधर्म के सबब भी मशहूर है चीनी यात्री हियून संग जो सातवीं सदी में आया लिखता है कि यहां पर बुद्ध लोगों के २० मन्दिर। ३००० योगी और बहुत आबादी थी॥

रामनौमी का हर साल मेला लगता है कि जिस में ५ लाख के क़रीब आदमी जमा होते हैं।

नगर स्टेशन से ३ मील है स्टेशन पर सवारी सब भांत की मिलती हैं।

स्टेशन पर वेटिंग रूम और नगर के अन्दर कई धर्मशाला हैं॥

अजण्टा की खोहें।

रियासत हैदराबाद में गांव और घाटी है। जी० आई० पी० याना

बम्बई की बड़ी लैन के जलगांव स्टेशन से ३८ मील है इस गांव से ४ मील के फ़ासले पर इस जगह की मशहूर खोहें या पर्ब्बतों को काट कर बने हुए मन्दिर हैं खोहें दिखलाने के लिये एक आदमी उसी जगह मिल सकता है यह खोहें गिनती में २६ हैं पिछले ज़माने में बुद्ध लोगों ने पहाड़ी चट्टान काटकर उन में मन्दिर बनाये थे बाजे मन्दिर इन में से १४०० साल के पुराने हैं। २६ में से २४ विहारे या अस्थल हैं और ५ मन्दिर हैं यह सब बड़े बड़े पील पायों पर खड़े हैं और उन के अन्दर मूर्तियों पर खूबसूरत रोगन किया हुआ है खोहों में और बाहर पहाड़ पर बहुत से संस्क्रेत में कुतुबे खोदे हुए हैं यह खोहें बड़ी खूबसूरत हैं और देखने के क़ाबिल हैं॥

जलगांव में टट्टु छकड़े और बैल गाड़ियां स्वारी के लिये मिलती हैं॥

जलगांव बम्बई से २६१ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाकगाड़ी में ४-) और सवारी गाड़ी में २॥।) है

अजमेर।

बम्बई बड़ौदा और सन्टरल इण्डिया रेलवे (बम्बई की छोटी लैन) का स्टेशन और मालवा शाख का जंकशन है। बम्बई से ६१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६॥=) और दिल्ली से २३५ मील है किराया २।=) है॥

अजमेर बहुत पुराना और मशहूर शहर और ज़िला अजमेर का सदर है कहते हैं इस को राजा अजा ने अंग्रेज़ी सम्बत १४५ में बसाया था इर्द गिर्द की पहाड़ियां चटयल हैं पर बड़ी खूबसूरत हैं और उन में से एक कि जिस को तारागढ़ कहते हैं चोटी घाटी से १००० फ़ाट ऊंची है अजमेर एक पहाड़ी के नीचे के ढलाओ पर

आबाद है और उत्तर और पश्चिम की तर्फ़ पत्थर की दीवार से घिरा हुआ है। शहर के पांच ऊंचे ऊंचे मज़बूत फाटक हैं और शहर के बीच में कई मसजिदें और मन्दिर हैं जिनमें से अधाई दीन की झोंपड़ी देखने के लायक़ है। इस के पालपायों और गुम्बज़ की संगत्राशी जो अभी तक अच्छी है निहायत खूबसूरत है॥

शहर के पश्चिम की तर्फ़ एक किसी की बनवाई हुई बड़ी सुन्दर झील है जिस को अनासागर कहते हैं यह झील ८०० गज़ लम्बी और १०० गज़ चौड़ी है कई नालों का पानी रोक कर बनाई गई है। बरसात में इस झील का घेरा ६ मील होता है॥

यहां ख्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती का मज़ार है जिस को हिन्दू और मुसलमान दोनों पवित्र मानते हैं इस पर हर साल अगस्त में ६ दिन तक उर्स होता है मुलक के सब हिस्सों से २०,००० लोग आते हैं पास ही तारागढ़ पहाड़ी पर एक मसजिद है जो मुसलमानों की पहली मेमारी का उमदा नमूना है॥

अजमेर से क़रीब ७ मील एक गांव में पुश्कर या पोखर का मेला हर साल होता है यह मेला सारे राजपूताना में बड़ा है बेशुमार घोड़े और टट्टू बीकानेर और इर्द गिर्द के मुल्क से आकर बिकते हैं यात्री भी जो पवित्र तालाब में स्नान करने आते हैं अनगिनत होते हैं। यह मेला नवम्बर में होता है॥

दौलत बाग़ में झील अनासागर के किनारे पर खूबसूरत बारहदरियां, आम लोगों का सैरगाह का बाग़, रेलवे के दफ़तर, मेओ कालिज जो राजपुताना के राजों के बच्चों की तालीम के लिये बना है देखने के लायक़ है॥

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रिफ्रेशमेन्ट रूम याने आरामगाह और खाने के होटल हैं पास ही डाक बंगला है। सवारी स्टेशन

पर और शहर में मिलती हैं। अमीर हिन्दू साहिबान के लिये जो सरायों में ठहरना पसन्द नहीं करते या डाक बंगले में हिन्दूधर्म होने के सबब से नहीं ठहर सकते घण्टाघर के पास ही स्टेशन के सामने एक हिन्दू होटल है जिस में हर किसम का आराम मिल सक्ता है। स्टेशन के पास एक सराय और शहर में कई धर्मशाला हैं॥

अटूर।

अहाता मद्रास के ज़िला सलेम के ताल्लुक है। इस इलाके में पेरियार पर्ब्बत पर कारीरामन का पगोड़ा बड़ा पवित्र माना जाता है। इस पगोडे के साल में चार मेले होते है॥

अटूर साऊथ इण्डियन रेलवे की अरकोनाम लैन पर स्टेशन है और मद्रास बीच जंकशन से ४१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥~) आने और सवारी गाड़ी में ॥)। आने लगता है॥

अप्पेकोंडू।

अहाता मद्रास के ज़िला विज़ागापट्टम में समुद्र के किनारे पर एक गांव है। उस जगह शिवजी का मन्दिर है जिस के सबब यह गांव बहुत मशहूर है। उस मन्दिर में पूजा करने से कष्ट दूर होजात हैं। पहिले यहां बहुत मन्दिर थे पर रेते के नीचे दब गये हैं अप्पेकोंडू विज़ागापट्टम से १३ मील है। विज़ागापट्टम से अप्पेकोंडू को पक्की सड़क जाती है और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं जिनका आने जाने का किराया २॥) फी गाड़ी है यहां कई धर्मशाला हैं। विज़ागापट्टम मद्रास से ४८७ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।~) लगता है॥

अपराजेता देवी या कनकपुर ।

इस्ट इंडियन रेलवे (बङ्गाल लैन) की लूप (शाख) लाइन के मुरारई स्टेशन से डेढ़ कोस पश्चिम की तरफ़ हौड़े से १५५ मील के फ़ासले पर एक गांव है रेल का तीसरे दरजे का किराया १।।।=) आने है। इस मन्दिर में काली माता की पत्थर की मूर्ति है। जो हिन्दू गृहस्थ को छोड़ना चाहता है वह इस तीर्थ में आकर योगाभ्यास करता है। वैशाख पुर्णमाशी को यहां एक मेला होता है जिस में बहुत से महापुरुष आया करते हैं॥

मुरारई में कनकपुर जाने के वास्ते बैल गाड़ी मिलती है कनकपुर में धर्मशाला कोई नहीं॥

अथीराला ।

अहाता मद्रास के ज़िला कड़ापा में चेयर दरिया पर एक पवित्र स्थान है। मन्दिर के पास ही एक ताल है। कहते हैं कि इस के पानी में स्नान करने से सब पाप नष्ट होजाते हैं जैसा कि परशुराम (जिस को विष्णु का अवतार मानते हैं) के चरित से मालूम होता है। कि वह अपनी माता को मारने के पाप से यहां स्नान करने से पवित्र हुआ। फ़र्वरी की १५ के क़रीब यहां शिवरात्री का मेला तीन दिन तक रहता है हज़ारों यात्री लोग इस में आते हैं मन्दिर के वास्ते हर साल एक हज़ार दो सौ पैंतालीस रुपये जमा होते हैं। इस स्थान से मद्रास रेलवे के स्टेशन नन्दालूर और राजमपेटा पास हैं नन्दालूर यहां से ४ मील और राजमपेटा ६ मील है राजमपेटा में अथीराला जाने के लिये यक्के और बैलगाड़ियां मिलती हैं। ।=) आने एक तर्फ़ का किराया लगता है॥

नन्दालूर और राजमपेटा में डाक बंगले हैं और अथीराला में चत्तरम या धर्मशाला हैं॥

नन्दालूर मद्रास से १३७ मील और राजमपेटा से १३० मील है तीसरे दर्जे का किराया १।≈) और १।~) लगता है ॥

अनूप शहर ।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला बुलन्दशहर में कसबा है। और अनूप शहर तहसील का सदर है। देहली से ७५ मील उत्तर दक्षिण की तर्फ़ गंगाजी के पश्चिमी किनारे पर वाक़े है। इसकी बुनियाद राजा अनूपराय ने जहांगीर के ज़माने में डाली थी। यात्री लोग गंगाजी के स्नान के लिये वहां जाते है और कार्तिक (नवम्बर दिसम्बर) के महीने में हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से पचास हज़ार के करीब लोग गंगाजी के स्नान के वास्ते जमा हो जाते हैं॥

देशी मुसफ़रों के लिये एक बहुत अच्छी सराय बनी हुई है। पर यात्री लोग अकसर प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं॥

अनूप शहर अवध रुहेलखण्ड रेलवे के स्टेशन राज घाट से १० मील और ई० आई० आर० के चोला बुलन्द शहर स्टेशन से ३२ मील है राजघाट में बैल गाड़ियां और बुलन्दशहर में यके और घोड़े गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं बुलन्दशहर कलकत्ते से ८९६ मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥।/) है॥

अनन्द पुर ।

सूबा पंजाब के ज़िला हुश्यारपुर में एक नगर है। जो सतलुज दरिया के किनारे पर वाक़े है। सब से पास रेलवे स्टेशन सरहिन्द है जहां से रोपड़ तक तांगे जाते हैं और वहां से अनन्दपुर तक बैल गाड़ी या टट्टू जाते हैं जालन्धर से भी अनन्दपुर जा सके हैं।

जालन्धर से ऊना ज़िला हुश्यारपुर तक यका और वहां से अनन्दपुर तक टट्टू जाते हैं॥

सिक्ख मत के बानी गुरु नानक से दसवें गुरु गोविन्दसिंह ने इस नगर को अंगरेज़ी, सम्बत १६७८ में बसाया था। यहां के लोग जो सोढी कहलाते हैं गुरु रामदास की औलाद में से हैं। और निहंग पन्थ का सदर मुक़ाम है होली के दूसरे दिन यहां एक बड़ा भारी मेला होता है जिस को होला कहते हैं बेशुमार लोग ख़ासकर सिक्ख इस मेले में आते हैं॥

दरिया सतलुज के पार के हिस्से में अनन्दपुर बड़े ब्योपार की जगह है॥

इस नगर में दो सरायें और तीन धर्मशाला मुसाफ़िरों के आराम के वास्ते हैं॥

सरहिन्द दिल्ली से १६५ मील और लाहौर जालन्धर से ८१ मील, तीसरे दरजे का किराया २)॥ और ॥।≡)। लगता है॥

अनवा।

रियासत हैदराबाद दखिन में जूआ दरिया पर शेवनी से ५ मील के फ़ासले पर सिलोद तालुक में एक क़सबा है जो जी० आई० पी० रलवे के जलगांव स्टेशन से २५ मील है। यहां एक छोटा सा खूबसूरत मन्दिर पत्थर का बना हुआ है जिस में बहुत पालपाये और मूर्त्तियां हैं इस मन्दिर पर हर साल दो मेले चैत और माघ के महीनों में होते हैं जिन में बहुत लोग आते हैं॥

इस क़सबे से रूई खामगाऊं और जलगाऊं को जाती है॥

अनवा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग बस्ती में अपना आप बन्दोबस्त कर लेते हैं॥

जलगांव बम्बई से २६१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४-) और सवारी गाड़ी में २॥।) लगता है ॥

अन्तरावेदी ।

अहाता मदरास के ज़िला गोदावरी में नरसापुर से ६ मील के फ़ासले पर मन्दिर है और गोदावरी दरिया के सात बड़े पवित्र स्थानों में से है। रथयात्रा के मौक़े पर जो माघ शुदि एकादशी को होता है और ५ दिन तक रहता है हज़ारों यात्री इस जगह आते हैं ॥

अन्तरावेदी में कई धर्मशाला हैं मेले के मौक़े पर यात्रियों के आराम के लिये और बन्दोबस्त भी किया जाता है ॥

मदरास रेलवे का निदादावोलू स्टेशन अन्तरावेदी के पास है वहां से किशती में बैठ कर यात्री अन्तरावेदी जाते हैं ॥

निदादावोलू मदरास से ३४७ मील है, तीसरे दरजे का किराया ४॥) रु० लगता है ॥

अमलनेर ।

जी० आई० पी० और टापटीवैली रेलवे का जकशन है और पोरी दरिया पर वाक़े है इस जगह से जलगाव के रास्ते भुसावल और सूरत के दरमियान रेल गाड़ियां बराबर चलती हैं ॥

यहां से १२ मील के फ़ासले पर परोला मुक़ाम पर दसहरे के दिनों में एक मेला होता है जिस में दस हज़ार के क़रीब लोग जमा होते हैं। तांगे और बैल गाड़ियां स्टेशन पर मिलसकती हैं। यहां पर रूई दबाने और रूई निकालने की कलें भी हैं और हज़ारों यात्री सुखराम बाबा महाराज के मन्दिर के सालाना मेले पर आते हैं ॥

अमलनेर बम्बई से जलगांव के रास्ते २८६ मील है और

तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ३=) और डाकगाड़ी में ४॥) लगता है॥

अम्बाटूर।

मदरास रेलवे पर एक स्टेशन और ज़िला चिंगलीपत तहसील सैदापत में एक नगर है। यहां लाल पत्थर की बड़ी बड़ी खाने हैं जिनसे मदरास बन्दर के लिये बहुत पत्थर निकाला गया था स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर थीरुमल्लावायल में मसील मनी ईश्वर का पुराना और मशहूर मन्दिर है जिस को कहते हैं चोला के राजा ने बनवाया था। मई के महीने में ब्रह्मा ऊशावम के मौके पर हज़ारों लोग ख़ासकर मदरासी इस मन्दिर के दर्शन को आते हैं पास ही पचमाले अम्मन का मन्दिर है यह भी बहुत मशहूर है अग्नि पर चलने के तेवहार वाले दिन यहां भी सैकड़ों आदमी आते हैं। थीरुमल्लावायल गांव में यात्रीयों के वास्ते चत्रम हैं तेहवार के दिनों में गाड़ियां सवारी के वास्ते मिलती हैं॥

अम्बटूर मदरास से दस मील और तीसरे दरजे का किराया -)॥। है॥

अम्बाद।

रियासत हैदराबाद दक्खिन के ज़िला औरंगाबाद में बड़ा नगर है और अम्बाद तालुक का सदर मुक़ाम है इस को एक हिन्दू राजा अम्बा ने बसाया था। यह राजा अपने राज्य को छोड़ कर इस नगर के पास एक खोह मे आ रहा और उस खोह का नाम अपने नाम पर रक्खा। खोह की जगह अब एक बड़ा खूबसूरत देवी का मन्दिर बन गया है। हर साल इस जगह मेला होता है जिसमें

हज़ारों लोग आते हैं। अनाज और रूई का अम्बाद में व्योपार होता है॥

अम्बाद निज़ाम की रेलवे के जलना स्टेशन से १६ मील है। तांगे और देशी गाड़ियां सवारी के लिये जलना में मिलती हैं।

अम्बाद में धर्मशाला कोई नहीं यात्री लोग मन्दिर में ठहरते हैं।

जलना हैदराबाद से २८१ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।≈) लगता है।

अम्बाला।

पंजाब के ज़िला अम्बाला में यह एक बड़ा व्योपार का शहर है और इस के साथ छावनी भी है। यह शहर दिल्ली से १२३ मील और कलकत्ते से १०७७ मील है। चौदवीं सदी ई० में एक राजपूत ने जिस का नाम अम्बा था इस शहर को बसाया था उन दिनों में यह नगर छोटा सा गांव था। १८०८ में सतलुज के वार के राजों ने राजा रणजीत सिंह से बचने के लिये सर्कार अंगरेज़ी से मदद मांगी उस वक्त के इक़रार नामे के मुआफ़िक १८२३ में दयाकौर के मरने पर जो सर्दार गुरबख़्श सिंह की औरत जो अम्बाले की मालिक थी कोई उत्तर अधिकारी न होने के सबब रियासत सर्कार अंगरेज़ी के पास आगई १८४३ में शहर के दक्षिण की तरफ़ छावनी डाली गई और १८४९ में जब पंजाब सर्कार के इलाके में मिलगया तो अम्बाला ज़िले का हेडक्वाटर बनाया गया देशी शहर में नई और पुरानी दो बस्तियां हैं नई बस्ती की सड़कें खुली कुशादा और तरतीब बहुत अच्छी है। अम्बाले में रूई, अनाज, तेल के बीज, अदरक, हलदी, कपड़ा, दरियां, लोहा, ऊन और रेशम का बड़ा व्योपार होता है।

भादों के पिछले दिनों में यहां बावन द्वादशी का मेला होता

है । यह मेला ज़िले में सब से बड़ा और मशहूर है और २० या २५ हज़ार के क़रीब लोग इस मे आते हैं ठाकुरों की सवारी शहर के बीच में मौहरियों के मन्दिर से चलकर शहर के बाहर एक पक्के तालाब पर पहुंचती है और बांस की सुन्दर किश्तियों में जो उस मौक़े के वास्ते बनाई जाती हैं ठाकुरों को बैठाकर पार ले जाते हैं। किश्तियों में खूब रौशनी की जाती है इस मौक़े पर व्योपार भी बहुत होता है ॥

यहां रूई निकालने, रूई दबाने, आटे और शीशे के कारखाने और कलें हैं दरियां अच्छी बनती हैं ॥

स्टेशन के पास देसी मुसाफ़िरों के वास्ते अच्छी पक्की सराय है यक्के शहर में और स्टेशन पर सवारी के लिये मिलते हैं ॥

दिल्ली से अम्बाले शहर तक तीसरे दरजे का किराया १॥≈)। है और कलकत्ते से फ़ासला १०३१ मील और तीसरे दरजे का किराया ६॥)॥ है लाहौर से फ़ासला १८२ मील और किराया २≈)। है ॥

छावनी शहर से ५ मील है। इसस्टेशन पर वेटिंगरूम और रिफ़्रेशमैंट रूम बने हैं और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। छावनी में घोड़दौड़ का मैदान पबलिक बाग़ जहां अंग्रेज़ी बाजा बजा करता है और पेजट पार्क देखने के लायक़ है। स्टेशन के पास एक सराय है ॥

अमबासमुद्राम।

अहाता मद्रास के ज़िला तिन्नीवैली में नगर/और अम्बासमुद्राम तालुक़ का हेड क्वार्टर है। नगर रेल के स्टेशन से डेढ़ मील है और उसमें जुलाहों की बस्ती ज़ियादा है। स्टेशन से ५ मील

दक्खिन पश्चिम की तरफ़ पपानसम गांव है जिस में शिवजी का एक बड़ा मशहूर मन्दिर और पानी के झरने हैं। जूलाई और दिसम्बर के महीनों में यहां स्नान मेला होता है जिस में बहुत यात्री आते हैं। पास ही बनातीर्थम जगह है यहां भी यात्री लोग बहुत आते हैं॥

अम्बासमुद्राम में एक रूई कातने की कल है जो पानी से चलती है। धान इस जगह बहुत होते हैं।

स्टेशन पर वेटिंग रूम बना है॥

अम्बासमुद्राम साऊथ इन्डियन रेलवे का स्टेशन है मद्रास बीच स्टेशन से ४६८ मील है तीसरे दरजे का किराया ५=)॥ लगता है॥

अम्बूर।

मद्रास रेलवे पर मद्रास से ११३ मील और तीसरे दरजे का किराया १=) है। पालार दरिया स्टेशन से आधे मील के फ़ासले पर बहता है और मेलपति स्टेशन तक जो अम्बूर से ७ मील है लैन के बराबर चला जाता है। दरिया के दक्खनी किनार पर नगेसवारा मन्दिर है और स्टेशन से ३ मील दक्खिन की तरफ़ पर्यानकप्पम गांव के पास समुद्रामा का मशहूर मन्दिर है, हज़ारों यात्री इन मन्दिरों के दर्शन को हर साल आते हैं शुक्र के दिन शैंडायान मेला होता है। इस कसबे में चमड़ा रंगने के कई अच्छे कारखाने हैं॥

अम्बूर स्टेशन पर यक्के और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। यहां धर्मशाला या सराय कोई नहीं पर गांव के लोग मेले में आने वालों को अपने घरों में रख लेते हैं॥

अमवर नाथ।

बम्बई आहाते के ज़िला कलयान में गांव है और जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। यह गांव बम्बई से ३८ मील पूना रायचूर लैन पर है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥=) है॥

स्टेशन से क़रीब एक मील के फ़ासले पर शिवजी का एक बहुत पुराना और सुन्दर मन्दिर है जिस को कहते है कि पांडवों ने बनाया था। शिवरात्री के मौके पर इस मन्दिर पर मेला होता है जिस में अनगिन्त लोग आते हैं। स्टेशन पर बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। इस गांव में सराय या धर्मशाला नहीं॥

अमर कंटक पर्ब्बत या रतनपुर।

हौड़े से इस्ट इन्डियन रेलवे में असनसोल स्टेशन वहां से बङ्गाल नागपुर रेलवे से बिलासपुर स्टेशन फिर वहां से कटनी ब्रांच के पैंडरारोड स्टेशन तक रेल में जाते हैं इस स्टेश से उत्तर कर पूर्व की तरफ साढ़े तीन कोस पैदल जाना पड़ता है। हौड़े से पैंडरा रोड स्टेशन ५०८ मील है और तीसरे दरजे का किराया ५।≈)॥। है। यहां पर पांच कुण्ड हैं और इसी जगह से नर्बदा दरिया निकलता है इस जगह पर बहुत से मन्दिर हैं जो महाभारत के ज़माने के बने हुये हैं। और इसी जगह पर भगवान जी पृथिवी पर आये थे। अमर कंटक से नर्बदा सागर संगम (यानी जहां नर्बदा और दरिया से मिल जाता है) दस बड़े बड़े मशहूर तीर्थ हैं जिन का वर्णन आगे आवेगा। हिन्दूओं के मशहूर कवि कालीदास ने अपनी किताब मेघदूत यहां पर बनवाई थी। यह जगह ३४९३ फुट समुद्र से ऊंची है॥

अमरनाथ (कश्मीर)

कलकत्ते से रावलपिन्डी स्टेशन तक रेल में जाते हैं। वहां से कश्मीर की राजधानी श्रीनगर को तांगे या यक्के पर और श्रीनगर से अमरनाथ को जो आठ पड़ाव है पैदल जाते हैं। कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया रावलपिंडी तक १४~) आना है और फ़ासला १३९३ मील है। सलोनों के तेहवार के दिन इस तीर्थ पर बहुत से महात्मा और यात्री लोग दूर दूर से आते हैं। श्रीनगर के पास रामपान जगह में एक झंडा खड़ा कर देते हैं जिससे यह मालूम होता है कि यात्री लोगों के वास्ते वर्फ़ से रास्ता खुल गया। पूर्णमाशी से एक हफ्ता पहले श्रीनगर में सब यात्री इकट्ठे होते हैं और वहां से अमरनाथ को रवाना होते हैं। रास्ते में खाने की वस्तु साथ ले जानी पड़ती हैं। रास्ते में सब पड़ाओं में तीर्थ हैं। पूर्णमाशी के दिन अमरनाथ पहुंच जाते हैं। इस जगह को हिन्दू लोग शिव जी का स्थान मानते हैं और अगर यात्रियों की बिन्ती की आवाज़ सुनकर कबूतर जो बहुत इस जगह में रहते हैं अपने घरों से उड़ जायें तो समझा जाता है कि यात्रियों की प्रार्थना सिद्ध होगई। यहां छत्त से पानी गिर गिर कर एक खम्बे की शकल बन जाता है इस को लोग शिवजी की मूर्त्ति खियाल करते हैं और कहते हैं कि यह चन्द्रमा के साथ घटती बढ़ती रहती है॥

रावलपिंडी से श्रीनगर को कोहमरी के रास्ते जाना अच्छा है रावलपिंडी से तांगे और यक्के मिलते हैं तांगे का किराया रावलपिंडी से मरी तक ८) रूपये और मरी से श्रीनगर तक ३७) रूपये फी सवारी है। यक्के का किराया रावलपिंडी से श्रीनगर तक २२) रूपये लगता है पर यक्के का किराया घटता बढ़ता रहता है श्रीनगर में एक सराय और कई धर्म्मशाला हैं॥

अमरापुरा (अर्थात् देवताओं का नगर) ।

बर्मा में ईरावदी नदी के किनारे पर एक नगर है। बर्मा की राजधानी बनाने के लिये १७८३ ई० में बसाया गया था पर १८१० ई० में आग से तबाह हो गया था और फिर बाद में भोंचाल से बहुत नुक्सान हुआ। यह नगर अच्छा बना हुआ है पर मन्दिरों के सिवा सब मकान बांस के हैं। कई पर सुनैहरी काम किया हुआ है और इस लिये भले मालूम होते हैं।

सबसे बढ़िया एक मशहूर मन्दिर है जिसके अन्दर २५० सुनहरी बांस के बड़े २ पील पाये हैं इस मन्दिर में बुद्ध की कांशी की बड़ी भारी मूर्ती है। राजों के महिल के खंडर शहर के बीच में अभी तक हैं॥

अगस्त के महीने में यदानाकूपये मेला दो भाईयों की यादगारी में होता है जो एक मन्दिर की बुनियाद का पत्थर न रख सकने के सबब यहां मारे गये थे उन दिनों में इस जगह एक स्टेशन बना दिया जाता है॥

अमरापुरा मूवैली रेलवे पर मांडले से ६ मील और रंगून से ३३८ मील है। तीसरे दरजे का किराया मांडले से ‑)॥ और रंगून से ५।)॥ है॥

देशी लोगों के लिये यहां कई धर्म्मशाला हैं॥

अमृतसर ।

आबादी और बड़ाई में यह नगर पंजाब में दूसरे दरजे पर है रिया ब्यास और रावी के बीच में लाहौर से ३३ मील और दिल्ली से ३१७ मील के फासले पर वाक़े है और नार्थवैस्टरेन रेलवे की शाख पठानकोट का जंकशन है। लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ।=) और दिल्ली से ३।≥) है॥

अमृतसर गुरू रामदास ने १५७४ में बसाया था यहां सबसे बढ़कर देखने के लायक दरबार साहिब है यह छोटा पर खूबसूरत सुनैहरी मन्दिर शहर के अन्दर एक तालाब के बीच में संगमरमर के चबूतरे पर बना हुआ है। मन्दिर भी संगमरमर का है और गुम्बज़ सुनैहरी है अन्दर बाहर खूबसूरत बेलबूटे बने हैं सिक्ख लोग दरबार साहिब को बहुत पवित्र मानते हैं और उसकी सजावटके लिये रुपया देना पुण्य का काम जानते हैं। मन्दिर के अन्दर बड़े आदर के साथ ग्रंथ साहिब रक्खा हुआ है पासही एक तालाब के किनारे पर बाबाटल्ल है। उसकी मीनारों पर से दरबार साहिब का बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है तालाब के एक किनारे पर घंटा घर है। इन के सिवाय हाल बाज़ार टाऊनहाल, गवर्नमेन्ट स्कूल, सन्तोकसर तालाब जो शहर के अन्दर हैं। कम्पनी बाग़ और शहर के बाहिर रामबाग और खालसा कालिज देखने के मुक़ाम हैं कम्पनी बाग में मलका विक्टोरिया का संगमरमर का पूरा बुत है॥

यह शहर पंजाब में ब्योपार की बड़ी मण्डी है दोशाले और ग़लीचे इस शहर के बहुत मशहूर हैं ऊनी और रेशमी कपड़े और ज़रदोज़ी के बड़े २ कारखाने हैं। हरसाल अप्रैल और नवम्बर के महीनों में बैसाखी और दीवाली के दो मेले होते हैं इन मेलों पर अनगिनत आदमी आते हैं माल मन्डी भी लगती है॥

स्टेशन पर मुसाफ़िरखाने और शहर में बहुत धर्मशाला और सरायें हैं जिन में से एक दो के सिवा सब विना किराये की हैं स्टेशन के पास संतराम का तालाब है जहां हिन्दू लोग विना किराये ठहर सकते हैं और हाल बाज़ार में घुसते ही मुहम्मद शाह की सरायें जहां सब लोग ठहर सकते हैं स्टेशन पर सवारी हर वक़्त मिलती है॥

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

दरबार साहब—अमिरतसर ।
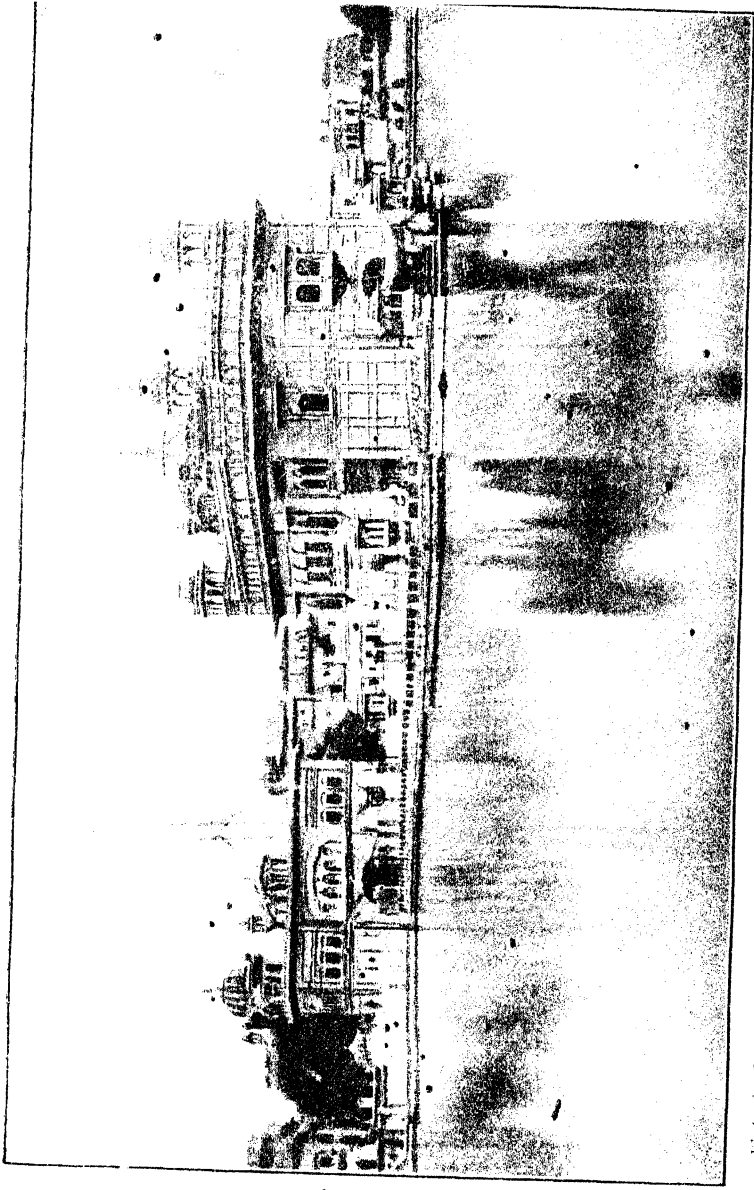
अमरावती ।

बरार में ज़िला अमरावती का हेडक्वार्टर है और जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ४११ मील के फ़ासले पर वाक़े है। बम्बई से तीसरे दरजे का किराया ४।=)। है। इस जगह सब से अजीब देसी मकान भवानी का मन्दिर है जिस को अम्बा माई का मन्दिर भी कहते हैं। कहते हैं कि यह मन्दिर हज़ार वर्ष का बना हुआ है इस के पास और मन्दिर हैं जो सौ साल के बने हुए हैं॥

अमरावती रूई के व्योपार के सबब बहुत मशहूर है और बरार में बड़ा धनवान नगर है। यहां कई रूई की कलें हैं। १८०४ ई० में जनरल विलज़ली साहिब गाविलगढ़ सर करने के बाद यहां आकर ठहरे थे॥

देसी और यूरूपीयन मुसाफ़िरों के लिये टिकने की जगहें बनी हुई हैं॥

अमरेश्वर ।

नर्बदा नदी के किनारे पर एक मन्दिर है जिस में महादेव जी की मूर्ति है। यह मन्दिर महाभारत के ज़माने का बना हुआ है राजपूताना मालवा रेलवे के मूर्तका स्टेशन से साढ़े तीन कोस है मूर्तका अजमेर से ३५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥=) है॥

हिन्दू लोग, अमरेश्वर को बहुत पवित्र मानते हैं और यात्री लोग साल भर यहां आते रहते हैं कार्तिक पूर्णमाशी को एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में दस हज़ार के क़रीब यात्री आते हैं॥

स्टेशन पर बैल गाड़ियां सवारी के वास्ते मिलती हैं॥

अमरेश्वर में एक धर्म्मशाला भी है पर लोग उस में कम ठहरते हैं॥

अरुन्याचल ।

मद्रास अहाते में साऊथ इण्डियन रेलवे की विनापुरम घण्टाकल लैल पर स्टेशन है आजकल इस को तारुवन्नामलई कहते हैं पांडिचरी से तीसरे दरजे का किराया ।॥=) लगता है स्टेशन से आधा मील पश्चिम की तर्फ अरुन्याचल पवित्र जगह है इस जगह का मन्दिर एक पहाड़ी पर बना हुआ है उस में महादेव की पांच सिर की मूर्ति है। पारवती और ब्रह्म की भी मूर्ति है ॥

अरुन्याचल में कई धर्म्मशाला हैं थके और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

यह स्टेशन कटपदी जंकशन से ५८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।॥=) लगता है ॥

अरकोनाम ।

मद्रास रेलवे और साऊथ इण्डियन रेलवे का जंकशन है। कांजीवर्म में जो साऊथ इण्डियन रेलवे के रास्ते यहां से १७ मील है दक्खिनी हिन्दूस्तान के कई बहुत मशहूर और पवित्र मन्दिर हैं। मई के महीने में श्रीदेवाराजा स्वामी के मन्दिर का बड़ा भारी मेला होता है जो दस दिन तक रहता है। यात्री लोग देश के सब हिस्से से आते हैं। मद्रास रेलवे के तार इंजनीयर। डिस्टरिक्ट इंजनीयर और टरैफ़िक मैनेजर अरकोनाम में रहते हैं। सबमैजिस्टरेट और सबरजिस्टरार की कचहरियां और एक अस्पताल भी यहां है ॥

स्टेशन के पास ही देसियों के आराम के लिये कई चतरम या धर्म्मशालायें और होटल हैं स्टेशन पर भी देसियों के लिये खाना मिलता है। अरकोनाम मद्रास से ४२ मील है और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ॥) है और डाक गाड़ी में ॥-) है ॥

अरन्तंगी ।

साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है गांव स्टेशन से आधे मील के करीब है। डिप्टी तहसीलदार और सब मजिस्ट्रेट का हैड क्वाटर है, गांव में एक चत्तरम भी है अरन्तंगी में हर मंगल को मेला होता है। कपड़ा यहां से बाहर जाता है, स्टेशन से एक मील के करीब वीराम हालियाम्मनकोइल का मन्दिर है जहां मई के महीने में एक तेहवार होता है। अथूमनाथ स्वामी का मन्दिर जिस को अवधाकोइल कहते हैं। अरन्तंगी से ७ मील दक्खिन पूर्व की तर्फ है यात्री रामेश्वर को इस रास्ते से जाते हैं, जून और दिसम्बर के महीनों में यहां अनितीरुमं जन्म और अरुद्र दर्शनम के मेले होते हैं, बहुत लोग इन मेलों में आते हैं मन्दिर बड़ा सुन्दर बना हुआ है और देखने के लायक है ॥

अरन्तंगी मद्रास बीच स्टेशन से २७६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ३॥=) और सवारी गाड़ी में ३=) लगता है॥

अरोड़ ।

सिंध के ज़िला शिकारपुर में रोहड़ी से पांच मील एक उजड़ा हुआ नगर है। किसी ज़माने में सिंध के हिन्दू राजों की राजधानी थी। इस के पास कालकादेवी की खोह है जिस को हिन्दू लोग बड़ा पवित्र मानते हैं। यहां हर साल सितम्बर के महीनेमें मेला होता है। जिस में ६ हज़ार के करीब लोग ज़िला सक्खर से आते हैं। यहां एक मुसाफिरखाना टिकने के लिये है ॥

रोहड़ी लाहौर से ४८८ मील और तीसरे दरजे का किराया ५।=)॥ है और करांची से २६६ मील है और तीसरे दरजे की किराया ३।=)॥ है ॥

अरवी ।

यह कसबा वरधा सूबाजात मुतवस्सत में वरधा शहर से करीब ३४ मील के फासले पर उत्तर पश्चिमकी तर्फ वाके है। कहते हैं ३०० वर्ष गुजरे हैं तिलंगराओ वली ने यह शहर बसाया था इस लिये कुछ लोग अरवी को तिलंगराओ वली भी कहते हैं हिन्दूओं के ख़ियाल में तिलंगराओ हिन्दू था और मुसलमान उसे मुसलमान मानते हैं दोनों उसको मानते हैं और उसकी कबर पर जाते है। अरवी ब्योपार की बड़ी मण्डी है। यहां एक सरांय भी है॥

यह स्टेशन सदर्न मरहट्टा रेलवे पर पूना से ६७ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १।)॥ और सवारी गाड़ी में १) है॥

अलावा खावा ।

अर्थात सूखे चावल खाना। यह बलिया गांव जिला दीनाजपुर सूबा बङ्गाल में एक मसहूर मेला हर साल अक्तूबर या नवम्बर के महीने में रासपुरनीमा तेहवार के मौके पर कृष्ण जी की यादगारी में होता है। यात्री लोग सूखे चावल कृष्ण जी को चढ़ाते हैं इसी वास्ते इस का नाम अलावा खावा हो गया है। यह मेला ८ दिन से १५ दिन तक रहता है और ७५००० या ८०००० के करीब लोग इस में आते हैं। मेले के दिनों में बड़ा ब्योपार होता है॥

यह गांव ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे के हलदीवाड़ी स्टेशन से ३६ मील है स्टेशन पर बलिया जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं। बलिया में कोई सराय या धर्म्मशाला नहीं यात्री लोग टिकने के वास्ते आप बन्दोबस्त करते हैं॥

हलदीबाड़ी से स्टेशन कलकत्ते से २६२ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३॥)॥। लगता है ॥

अलीगढ़ ।

कलकत्ते से अलीगढ़ ८२५ मील और दिल्ली से ८४ मील है और सूबा आगरा और अवध में कमिश्नरी मेरठ के ज़िला अलीगढ़ का हैडक्वार्टर है। सिविल स्टेशन और क़िला पुराने मशहूर कोयल शहर के गिर्द नवाह में वाक़े है। कहते हैं कि कोयल शहर को सूर्य बंशी खानदान के एक क्षत्री ने बसाया था। पुराने ज़माने में कोयल डोर राजपूत राजों का गढ़ था और इस वक़्त जो शहर अलीगढ़ है वहां उस की बिरादरी के लोग आबाद थे। अब भी उन का क़िला शहर के बीच में मौजूद है बारहवीं सदी ईस्वी के आख़ीर हिस्से में इस क़िले पर मुसलमानों ने हमला किया और फिर मुग़ल खानदान के बादशाहों तैमूर और बाबर ने औरंगज़ेब के मरने के बाद मरहट्टों, जाटों, पठानों और रुहेलों में कोयल के वास्ते आपस में लड़ाई लग गई क्योंकि यह शहर आगरा, मथुरा, दिल्ली और रोहेलखंड की सड़कों के सिरे पर वाक़े था इस वास्ते जंगी खियाल से बड़ा ज़रूरी समझा जाता था, १७८४ से १८०३ तक जब यह शहर मरहट्टों के कबज़े में था तो उन्होंने क़िले को बहुत मज़बूत बना दिया और महाराजा सिन्धिया ने अपनी फ़ौज को यूरुपी क़वायद सिखाने के लिये इस को पसंद किया। १८०३ में अंगरेज़ी जरनैल लार्डलेक ने इस क़िले पर चढ़ाई की और बड़ी भारी और लम्बी लड़ाई के बाद इसको फ़तह किया और इस सबब से सारे उत्तर के दोआबे का सिवालक पर्बत तक अंगरेज़ों के हाथ में कुञ्जी आगई ॥

अलीगढ़ में एक बड़ा भारी कालिज है जिस को सर सय्यद अहमदख़ां ने बनाया था, यह कालिज सारे हिन्दुस्तान में अच्छा माना जाता है और यहां की पढ़ाई बहुत अच्छी है ॥

अलीगढ़ में सरायें और होटल हैं और स्टेशन पर भी वेटिंग रूम और रीफ्रेशमेन्ट रूम हैं स्टेशन के पास ही लाला अजुध्या प्रसाद की बनाई हुई धर्म्मशाला है जिस में २० के क़रीब आदमी ठहर सक्ते हैं। इसके पांच दुकानें हैं यहां से खाने की चीज़ें मिलती हैं। स्वारी स्टेशन पर और शहर में हर वक्त मिलती है ॥

अलीगढ़ ई० आई० और अवध रोहेलखंड रेलवे का, जंकशन है कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया ७।≈)॥। है ॥

अलाहाबाद या प्रयाग ।

यह बड़ा सिवल और मिलटेरी शहर सूबा आगरा और अवध के लाटसाहिब का सदर मुक़ाम है। और गंगाजी और जमना जी के संगम पर बम्बई से जी० आई० पी० और ईस्टइंडियन रेलवे के रस्ते ८४४ मील और कलकत्ते से ५१४ मील पर वाक़े है। तीसरे दरजे का किराया बम्बई से मुसाफ़िर गाड़ी में ९-) और डाक गाड़ी में १३॥-) है और कलकत्ते से ५-) है।

शहर और छावनी से थोड़े फ़ासले पर गंगाजी और जमना जी के संगम पर क़िला है जिस को अकबर ने सन् १५७५ में बनाया था इस क़िले के अन्दर एक पत्थर का पीलपाया ३० फुट ऊंचा है जिस को राजा अशोक ने, अंग्रेज़ी सन् २४० साल पहिले बनवाया था। इस पर राजा अशोक के क़ानून और उस ज़माने की तारीख़ खुदी हुई है ॥

शहर अलाहाबाद को हिन्दू लोग बड़ी पवित्र जगह मानते हैं। क्योंकि यहां सब से पवित्र तीन दरियाओं गंगा, जमना और

सरस्वती जी का संगम है। सूबा आगरा और अवध का सब से बड़ा मेला जो माघ मेला कहलाता है अलाहाबाद में दिसम्बर और जनवरी के महीनों में किले के नज़दीक एक मैदान में गंगा और जमुना के संगम के करीब होता है। ढाई लाख के करीब यात्री इस मेले में आते हैं लेकिन कुम्भ का मेला जो हर बारहवें साल होता है इस से भी बड़ा है इस में १०,००,००० यात्री जमा हो जाते हैं ॥

पेलफ़रेड पार्क जो सन् १८७० में डियूक आफ़ एडिनबरा के हिन्दुस्तान आने की यादगारी में बनाई गई थी बहुत खूबसूरत है। मकफ़र्सनपार्क छावनी में और रेलवे स्टेशन के पास खुसरो बाग जिस में तीन मक़बरे हैं देखने के लायक़ हैं ॥

अलाहाबाद में कई उमदा होटल और सराय हैं स्टेशन पर भी आराम कमरे हैं सवारी हर वक़्त मिलती है। स्टेशन के बाहर ही लाला बिहारीलाल कुञ्जलाल की धर्मशाला है जहां सब चीज़ मिल सकती हैं ॥

इस शहर को सन् १८५७ ई० के ग़दर में एक देसी पलटन बिगड़गई थी इसलिये इस के नाम पर बग़ावत का बट्टा है ॥

अलन्दी ।

बम्बई अहाते के ज़िला पूना में क़सबा और सदर्न मरहट्टा रेलवे का स्टेशन है। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है ॥

अलंदी पूना से १५ मील है और सवारी गाड़ी से तीसरे दर्जे का किराया ढाई आने और डाकगाड़ी से सवा तीन आने है। स्टेशन के पास देसी मुसाफ़िरों के वास्ते एक धर्मशाला है ॥

अवानी ।

मैसूर रियासत के ज़िला कोलर और मुलबागुल तालुक़ में एक गाऊं है। हिन्दू लोग इस को अवनतिका क्षेत्र याने हिन्दुस्तान की दस बड़ी पवित्र जगहों में मानते हैं। पहले यह दाख्खिन का गया कहलाता था। यहां रामचन्द्र जी और भरत के और और बहुत से मन्दिर हैं। कहते हैं कि जब रामचन्द्र जी सीता जी को लंका से लाये तो यहां आकर ठहरे थे और फिर जब रामचन्द्र जी ने सीता जी को पीछे त्याग दिया तो वह इसी जगह आकर रही थीं और उन के जोड़े लड़कों ने इसी जगह जन्म लिया था। बालमीकी जो बड़ा मशहूर कवि हुआ है और जिस ने रामायण लिखी थी सीता जी और उनके लड़कों की ख़बरदारी किया करता था। बालमीकी के सबब गांव के पास की पहाड़ी बालमीकी पर्ब्बत कहलाती है। सामर्थ पन्थ के गुरू यहां रहते हैं॥

फागुण महीने में शिवरात्री को यहां हर साल बड़ा भारी मेला होता है जो दस दिन तक रहता है। दस हज़ार के क़रीब लोग मले में आते हैं॥

बेमंगला वाटरवर्क्स यहां से ७ मील है। अवानी मदरास रैलवे की बंगलोर लैन पर स्टेशन है और बौरंगपेट स्टेशन से २२ मील है। बौरंगपेट में यक्के, बहलियां और घोड़ा गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

अवानी में देशी लोगों के आराम के लिये एक चत्रम है। अंग्रेज़ लोग मुलबागुल के डाक बङ्गले में ठहर सक्ते हैं॥

बौरंगपेट मदरास से १५६ मील है। तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २।=) और मुसाफिर गाड़ी में १॥।=) लगता है॥

अहोबालम ।

अहाता मद्रास के ज़िला कर्नूल में गांव है। इस के पास ही पहाड़ी पर तीन पगोडे एक पहाड़ी के नीचे दूसरा आधे रास्ते पर और तीसरा पहाड़ी की चोटी पर बने हुये हैं जो उस इलाके में बहुत मशहूर हैं और पवित्र माने जाते हैं इन में से एक निहायत खूबसूरत है उस की दीवारों पर और दोनों ड्योढ़ियों पर जो उन के सामने ८ फीट गोल पीलपायों पर खड़ी है रामायण के वाक़िआत की तस्वीरें बड़ी खूबी की बनी हैं ॥

फाल्गुन के महीने में होली पूर्णमाशी को यहां चार दिन तक मेला होता है जिस में सैकड़ों लोग आते हैं ॥

यहां कोई धर्मशाला नहीं पर एक मन्तापम है जिस में हिन्दू ठहर सक्ते हैं ॥

अहोबालम सदर्न महट्टा रेलवे के नन्दियाल स्टेशन से ३० मील है। बैल गाड़ियां सवारी के लिये नन्दियाल में मिलती हैं ॥

नन्दियाल मैसूर से ३५० मील और बेजवादा से १८६ मील है। तीसरे दर्जे का किराया ३॥=)॥ और १॥≈)॥ लगता है ॥

अलवर ।

दिल्ली से ६८ मील के फासले पर एक राजपूत रियासत है जिस पर कछवाहा नरुका राजे राज करते हैं इस को राओ राजा पर्ताप सिंह ने बसाया था ॥

राजधानी स्टेशन से २ मील है और उसके पास एक खूबसूरत क़िला है जो १२०० फीट ऊंचा है इस क़िले के गिर्द बाग़ और बड़े बड़े रूख हैं जिन के सबब नगर और भी भला मालूम होता है। यहां देखने वाले मकान यह हैं ॥

(१) बन्नें बिलास महल (२) शहर का महल (३) महाराजा राजा सवाई बखतावरसिंह जी की समाध जो हिन्दुस्तानी इमारत का बड़ा अच्छा नमूना है और बारादरी से जो सारे देश में खूबसूरत है इस समाध का नज़ारा और भी अच्छा मालूम होता है ॥

सर एडविन आरनल्ड इस समाध की बाबत लिखते हैं कि अगर इस के संगमरमरके बालाखानों और छोटी छोटी सुन्दर गुम्बदों से जिन में रंगारंग की गुलकारी और संगतराशी की हुई है और और पत्थरों पर चमकदार जिला है। साफ सुथरे और ठंडे ठंडे फर्श लगे हैं खिड़कियों में से रोशनी आती है फुआरों से फर्श पर पानी गिरता है खजूर के दरख्तों और केले के झंडे की शकल के पत्तों में हवा फिरती है। बाहर की तरफ देखें तो ऐसा आनन्द आता है कि लिखने में नहीं आसकता यह समाध तस्वीर के लायक़ है ॥

(४) महाराजा साहिब की मशहूर पुस्तकशाला जिस में कई हाथ की लिखी हुई बड़ी कीमती देसी किताबें हैं ॥

(५) हथ्यार घर (६) खूबसूरत झील जो राजधानी से ७ मील है (७) लैन्सडाऊन महल जिस में महाराजा साहिब सवाई जयसिंहजी बहादुर रहते हैं और जो एक पहाड़ी पर बना हुआ है (८) स्टड यानि घोड़ों के रखने की जगह (९) डायमंड जूबली ताल (१०) हाई स्कूल (११) कन्नाट हाऊस (१२) नरशाह जी की समाध (१३) कम्पनी बाग और (१४) फतेजंग का गुम्बज़ ॥

अलवर दिल्ली से ९८ मील है और बम्बई से ७९२ मील है तीसरे दरजे का किराया एक रुपया और ७॥=) लगता है।

स्टेशन से एक मील और शहर के पास एक अच्छी सराये जिसको मोर सराये कहते हैं देशी मुसाफिरों के वास्ते बनी हुई है अंग्रेज़ लोगों के लिये एक डाक बंगला भी है। यक्के की सवारी स्टेशन पर और शहर में मिलती है ॥
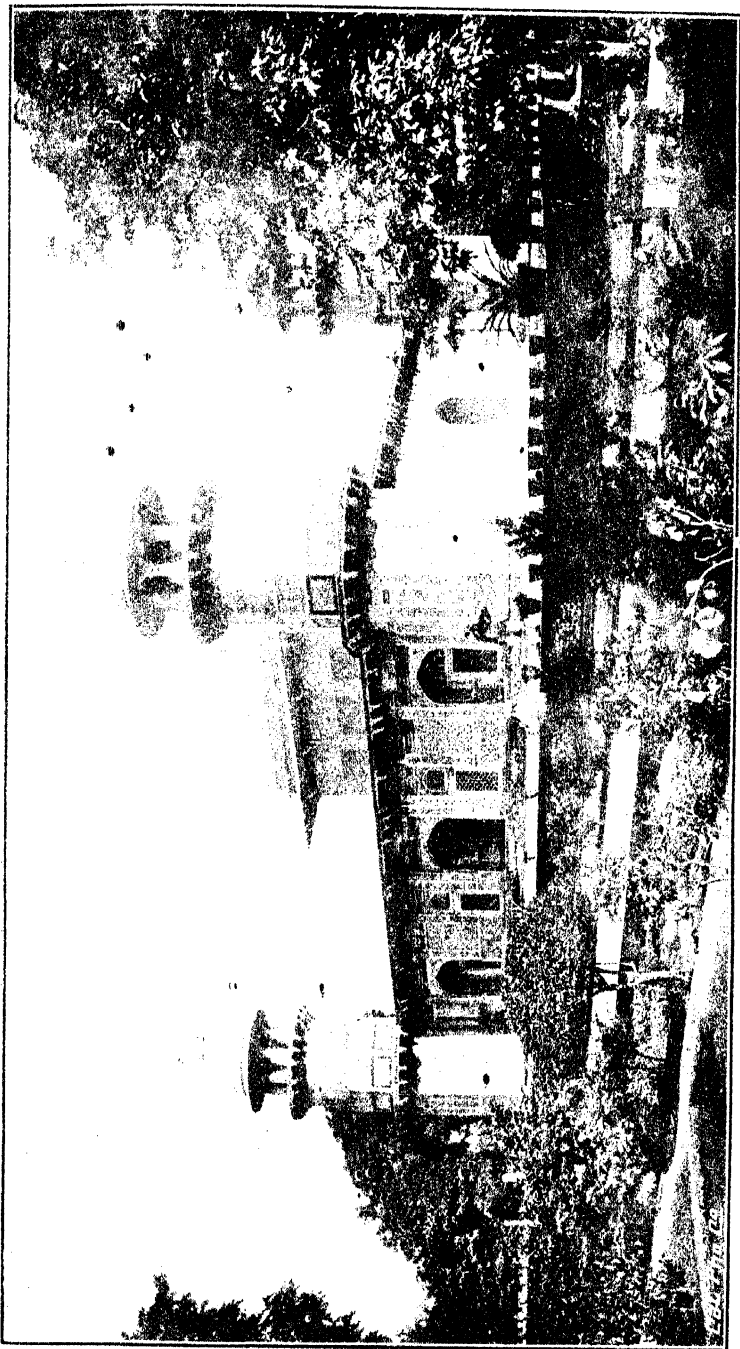
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.
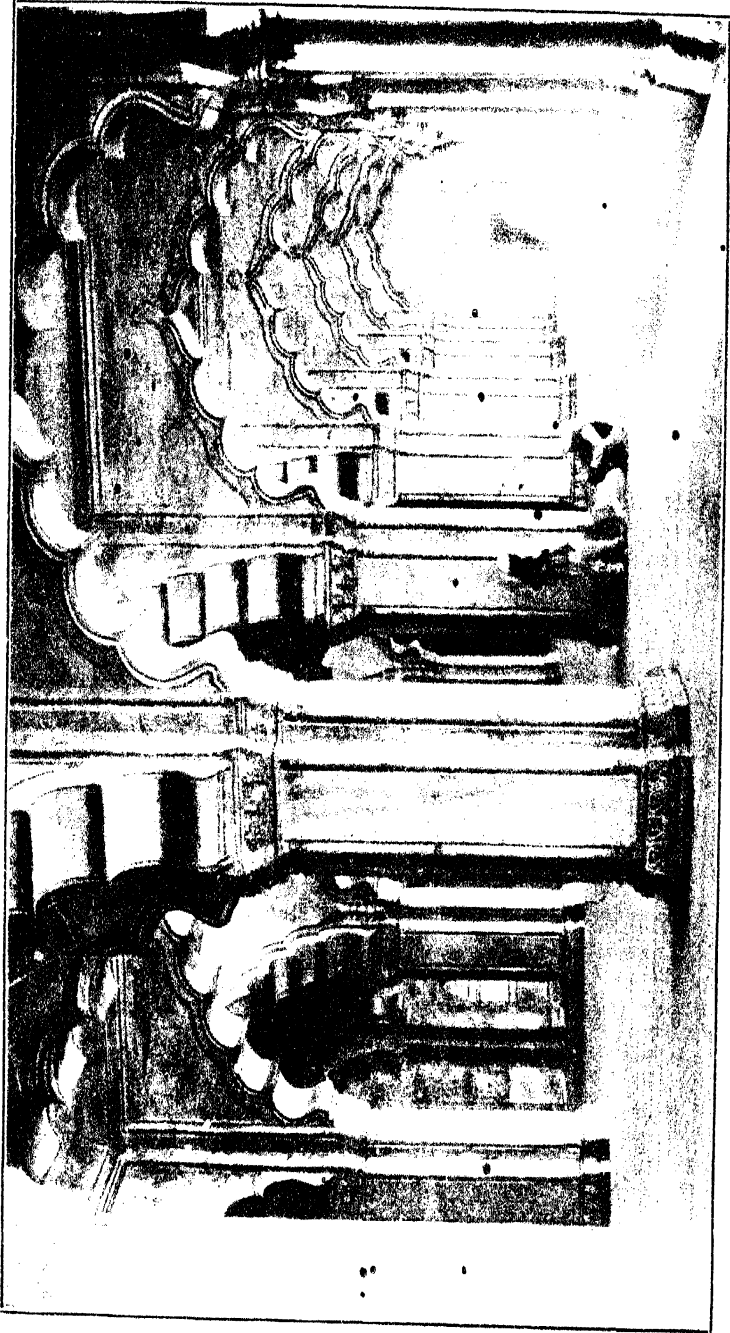
एतमाद उद्दौला का मक़बरा: आगरा।

Photo. by Bourne and Shepherd Calcutta.

मोती मसजिद आगरा अंदर से ।
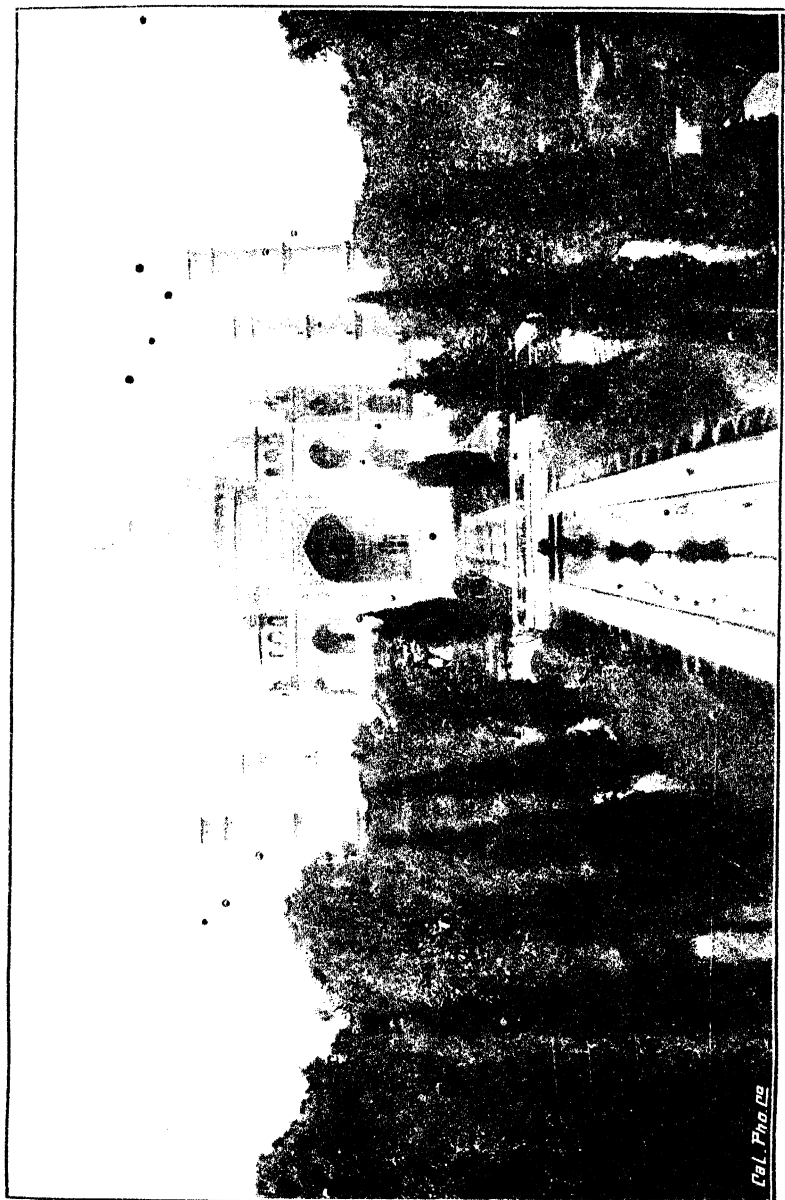
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

ताज महल आगरा।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

ताज महल के अन्दर संग मरमर की जाली
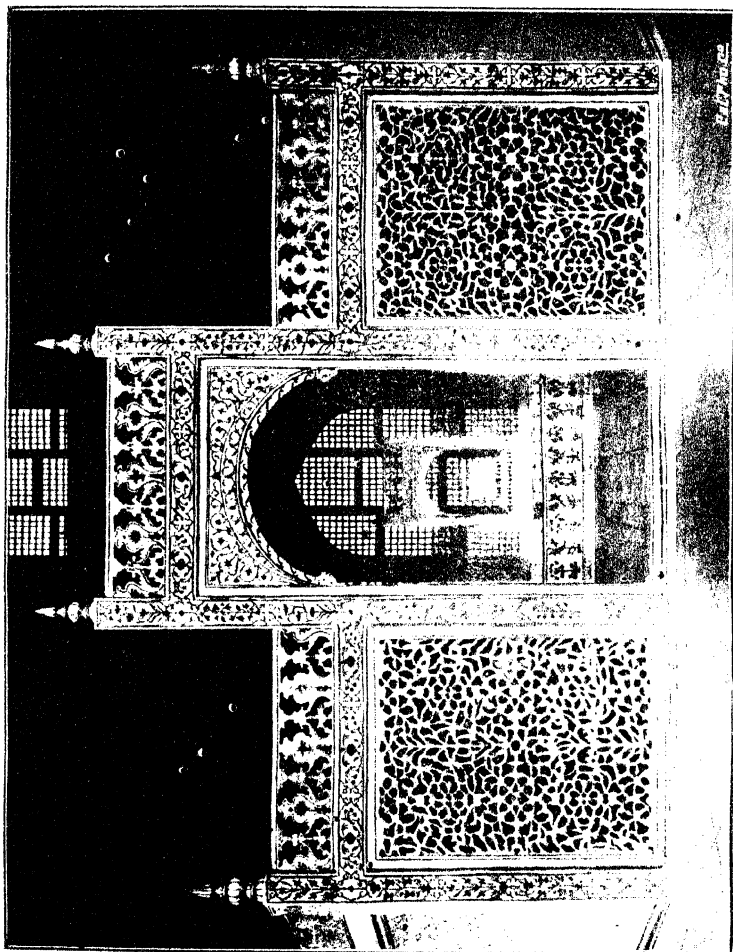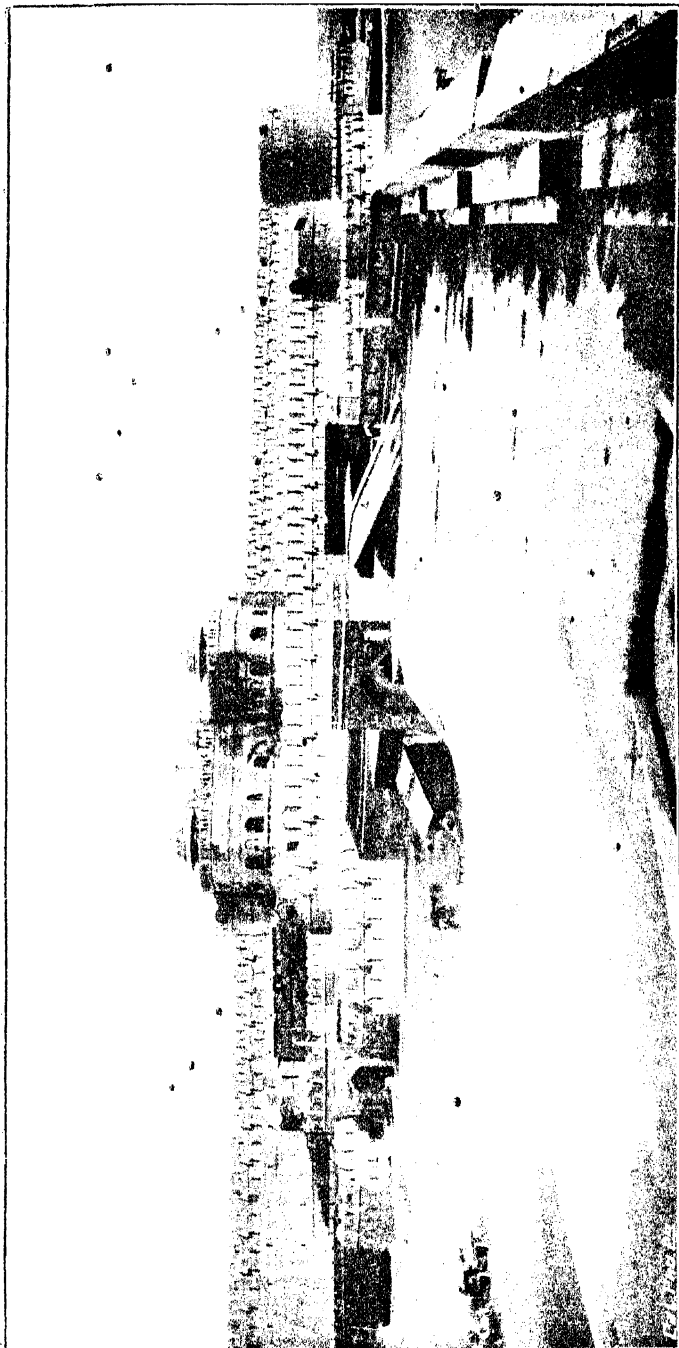
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

आगरे का क़िला ।

आगरा ।

यह बड़ा और खूबसूरत शहर दरया जमना के दाहने किनारे पर है इसको अकबर बादशाह ने सन् १५६६ ई० में बसाया था। और सौ बरस से भी जयादा तक मुगल बादशाहों की राजधानी रही ॥

आगरा ताजमहिल के सबब सारे जगत् में मशहूर है इस इमार्त को शाहजहान ने जिस को इमार्तों का बहुत शौक था। और जिस का नाम इसी लिये आज तक मशहूर है सन् १६४८ ई० में अपनी प्यारी बीबी अर्जमन्द बानो बेगम को कबर पर बनाया था। इस मलका का नाम लोगों में मुमताज महल मशहूर है ॥

खूबसूरती में ताज जैसी इमार्त सारी जगत् में नहीं। जयपुरी संगमरमर की बनी हुई है और चारों कोने पर लम्बे शानदार मुनारे हैं। बड़े गुम्बज के नीचे और एक निहायत खूबसूरत जाली-दार संगमरमर के जंगले में शाहजहान और उसकी मलका की कबरें हैं। ताज के अन्दर के हिस्से का रंग और बनावट बेनज़ीर है और बाहिर से इमारत को देखने वाले के दिलपर इसका ऐसा नक़शा जमता है कि कभी नहीं भूलता। दरया जमना से ताज़ का नज़ारा और भी भला मालूम होता है ॥

आगरे में देखने के लायक और इमारतें भी हैं। अकबर का बनाया हुआ लाल पत्थर का किला जिस में माछीबावन। शीशमहिल और मोती मसजिद है। मोती मसजिद भी जगत् में एकही है। शहर के बाहर जमामसजिद और शाहजहान के सुसर और वजीर ऐतमादुलौला की कबर और शीशमहिल ऐसी कारीगरी के बने हैं कि एशिया की मेमारी में सबक सिखाते हैं ॥

ताज महिल और किला और ऐतमादुदौला का मकबरा देखने के लिये आगरा फोर्ट स्टेशन पर उतरना चाहिये और अकबर

का मक़बरा जो सिकंदरे में आगरे से ५ मील है देखने को राजा की कण्डो स्टेशन पर उतरना ठीक है आगरे से यक्के या गाड़ी में भी सिकंदरे आ जा सक्ते हैं। आगरा ज़िले और कमिशनरी का सदर मुक़ाम है। देसी लोगों के मकान अकसर पत्थर के हैं। इन के सिवा दिल्ली से आगरे तक पुरानी इमारतें बेशुमार हैं॥

आगरा ज़िले के बटेसर गांव में बड़ा भारी ब्योपारीयों का मेला होता है जिस में डेड़ लाख के क़रीब लोग आते हैं। और घोड़ों ऊंटों और पशुओं का बड़ा ब्योपार होता है॥

आगरा संगतराशी के वास्ते मशहूर है। बूट, दरियां और गोटा सूती ग़लीचे यहां से बाहर जाते हैं अनाज और चीनी की भी बड़ी मण्डी हैं॥

जी० आई० पी० ई० आई० और बम्बई बड़ोदा सेंटरल इण्डिया रेलवे यहां मिलती है॥

दिल्ली से तीसरे दर्जे का किराया मुसाफ़िर गाड़ी में १॥-) है फ़ासला आगरा रोड स्टेशन से दिल्ली तक १२२ मील है। बम्बई से आगरा जी० आई० पी० रेलवे में ८३५ मील है और मुसाफ़िर गाड़ी में तीसरे दर्जे का किराया ८॥-) है॥

आगरे में कई अच्छे होटल और सरायें हैं। सवारी हर एक भांत की मिलती है। एक सराय आगरा फ़ोर्ट स्टेशन के पास ही है। और ४०० गज़ के फ़ासले पर लाला राम किशन की बनाई हुई धर्मशाला है॥

आबू पर्बत।

यह ठंडा और सेहतबख्श पहाड़ राजपूताना मालवा रेलवे के स्टेशन आबूरोड से १७ मील है। स्टेशन से यहां तक पक्की सड़क बनी हुई है और तांगे और यक्के चलते हैं इस पहाड़ का गिरदा
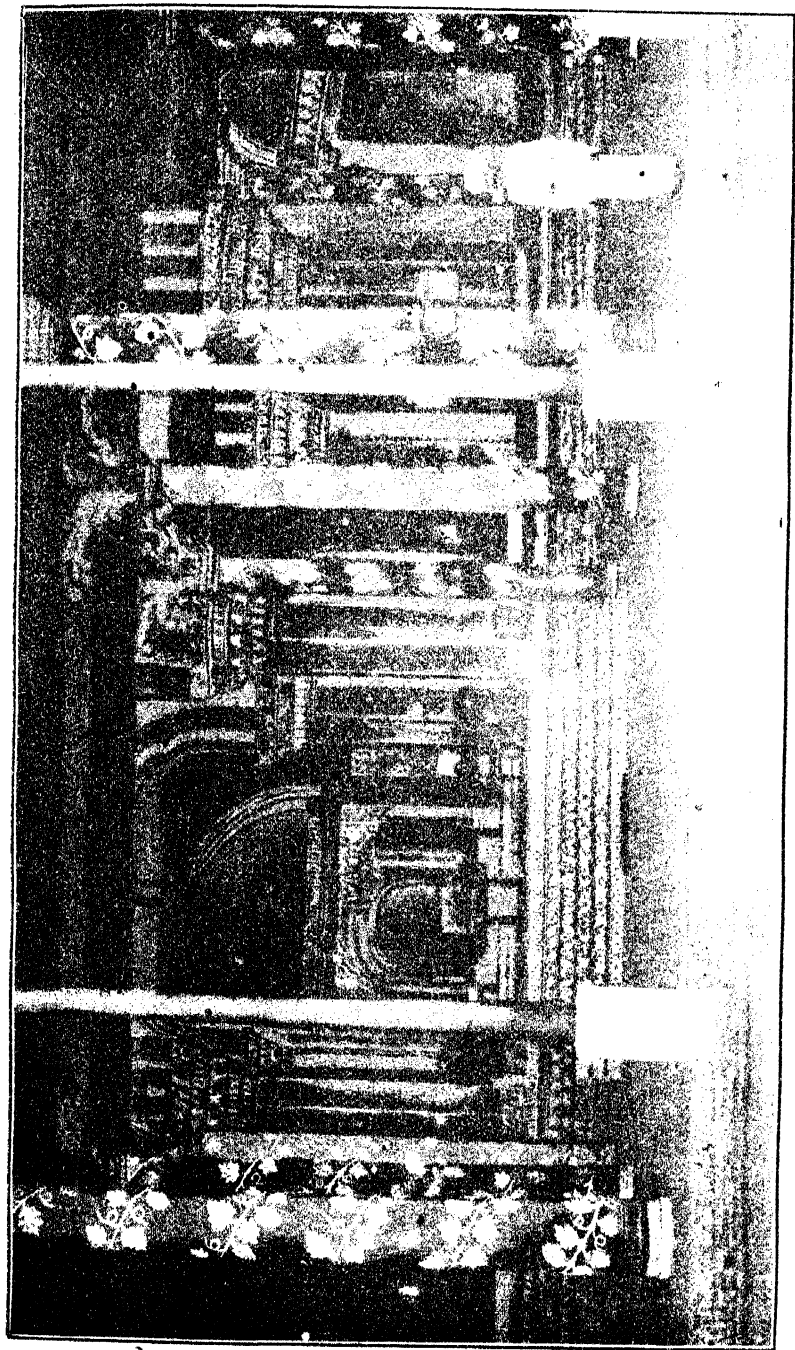
Photo by Bourne and Shepherd, Calcutta.

देलवाड़ा मन्दिर—आबू पर्व्वत।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

जैन्यों का मन्दिर देवलवाड़ा आबू पर्ब्बत पर ।
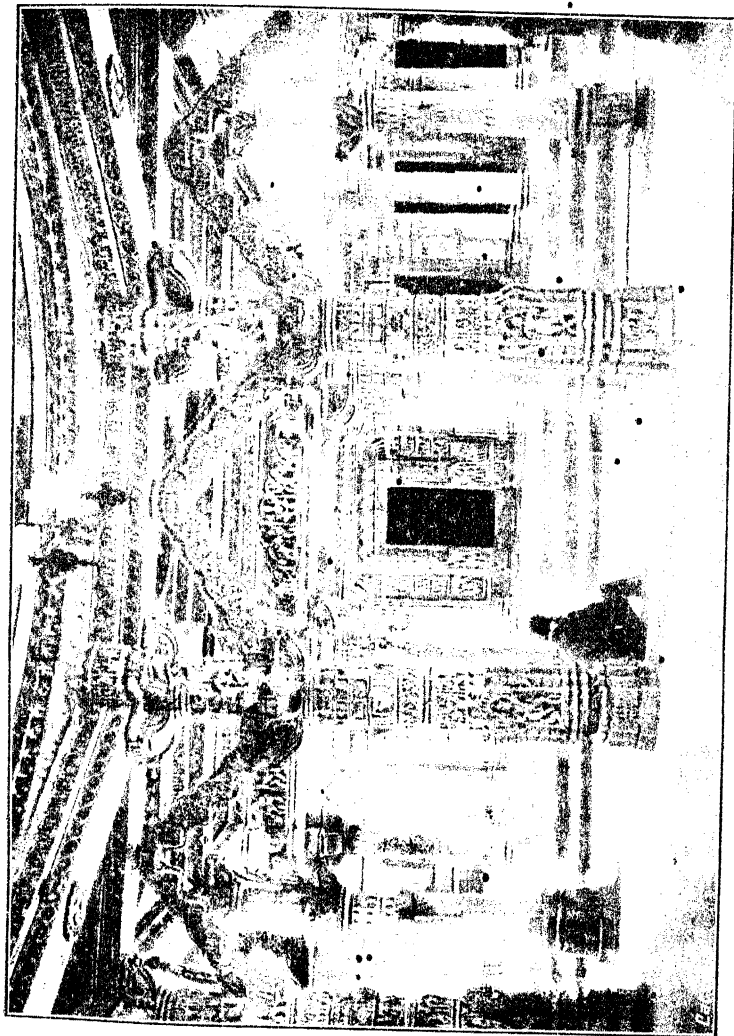
क़रीब ५० मील है और समुन्द्र से ऊंचाई ४५०० फ़ीट है लेकिन सब से ऊंची चोटी जिसको गुरु सिकरा कहते हैं ५६०० फ़ीट से भी ज़ियादा ऊंची है ॥

आबू बड़ी मशहूर तीर्थ की जगह है खास कर जैनियों को जिन की देवलवाड़ा में निहायत खूबसूरत पूजा की जगह है। देवलवाड़ा पहाड़ के बीच में गुरुसिकरा से पांच मील दक्खिनी पश्चमी कोने में वाक़े है उस झुंड में ५ मन्दिर हैं जिन में से सब से बड़ा तीन मंज़िल का मन्दिर ऋषभनाथ या ऋषभदेव के नाम पर है ऋषभदेव २४ तीर्थंकरों में से जिन को जैन लोग पूजते हैं पहिला तीर्थंकर था। करनल टाड साहिब लिखते हैं कि बिलाशक यह मन्दिर हिंदुस्तान में सबसे खूबसूरत है और ताज महिल के सिवा इस देश में और कोई इमारत नहीं जो इस को पहुंच सके। जहां यह मन्दिर बना है वहां शिवजी और विष्णु के मन्दिर थे कहते हैं कि अनहिलवाड़े के एक सौदागर वनूलशाह ने जिसने यह मन्दिर बनाया, यह जगह सिरहोई के राजा से खरीदी थी। जितनी ज़मीन दरकार थी उस में रुपये बिछाकर क़ीमत दी थी। यह मन्दिर १४ साल में बना था और ५६ लाख के सिवा जो ज़मीन के ठीक करनेमें खर्च हुआ १८ क्रोड़ रुपया इस पर लागत आई थी मन्दिर के सामने बनाने वाले का बुत खड़ा है इस में उस को घोड़े पर सवार दिखाया है, दूसरा मन्दिर जो नेमीनाथ के नाम पर है एक कुतबे स मालूम होता है कि तेरवीं सदी में बना था, बाक़ी मन्दिर ऐसे खूबसूरत नहीं और सिर्फ़ ४०० वर्ष के पुराने हैं। इन मन्दिरों के पास एक छोटी सी खूबसूरत झील है जिस को नुकी तलाव कहते हैं ॥

आबू की आबो हवा तन्दुरुस्ती के लिये बहुत अच्छी है क्योंकि सालभर की रोज़ाना गर्मी की औसत सिर्फ़ ५६ दर्जे होती है। मेंह की पिछले कई साल की औसत ६० इंच है ॥

बर्म्मा के लोगों के टिकने के लिये घर बने हुए हैं पर और लोगों को अपना बन्दोबस्त बज़ार में करना पड़ता है॥

चिट्टागांग से कलकत्ते तक रेल में तीसरे दरजे का किराया ४॥।=) लगता है।

आहार ।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला बुलन्द शहर में एक पुराना कसबा है और बुलन्द शहर से २१ मील उत्तर पूर्व की तरफ़ गंगा जी के दाहिने किनारे पर वाके है यहां जून के महीने में एक बड़ा मेला होता है जिस में अनगिनत लोग गंगा जी के स्नान करने के लिये आते हैं। इस कसबे में बहुत से मन्दिर हैं लेकिन इन में से न तो कोई बहुत पुराना है और न कोई बहुत खूबसूरत है। बुलन्दशहर में सवारी के लिये यक्के मिलते हैं। बुलन्दशहर कलकत्ते से ८६६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ७॥-) है। आहार में एक कच्ची सराय है॥

अहायारी ।

अहाता बङ्गाल के ज़िला दरभंगा में एक गांव है। यहां पर आहलया स्थान में रामनौमी का मेला होता है जिस में १० हज़ार के करीब यात्री लोग जमा होते हैं इस गांव में ५ खूबसूरत मन्दिर हैं जिन में रामचन्द्र जी और सीता जी की मूर्तियां रक्खी हैं॥

यहां कोई सराय या धर्मशाला नहीं है लोग गांव में टिकने का बन्दोबस्त कर लेते हैं और अंग्रेज़ लोग कमतोवल के डाक बंगले में जो यहां से एक मील है ठहर सक्ते हैं॥

दरभंगा से कमतोवल तक तीसरे दरजे का किराया =)॥ है॥

इगतपुरी ।

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रिफरेशमेंट रूम याने मुसाफिर खाने और खाने के कमरे हैं और स्टेशन से थोड़ी दूर पर एक डाक बंगला है और नगर में तीन धर्मशालायें हैं यह स्टेशन थल घाट पर है और अंग्रेज़ लोग यहां की आबहवा बहुत पसन्द करते हैं। रेलवे कम्पनी के इञ्जन बनाने के कारखाने इसी जगह हैं जिस में बहुत अंग्रेज़ और देसी नौकर हैं एक सुन्दर झील जिस से इगतपुरी और कालारा को पानी जाता है यहां से आधे मील पर है इगतपुरी से २ मील पिम्परी और ३ मील पर बगोली म दो मेले सितम्बर और फर्वरी में होते हैं जिन में हिन्दू लोग जाते हैं ॥

इगतपुरी जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ८५ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया १।~) और सवारी गाड़ी में ।।।=) लगता है। स्टेशन पर बैल गाड़ियां और कभी कभी तांगे सवारी के लिये मिलते हैं ॥

इटाकोट ।

मदरास रेलवे की साऊथ वेस्ट लाइन पर मदरास से ४६२ मील एक स्टेशन है मदरास से तीसरे दरजे का किराया ४।।।≈) है यहां देवालार बेलाकरू देवता का मन्दिर है जिस को उरबासाक्षात कहते हैं। इस मन्दिर के दर्शन करने को लोग महे, कालीकट, कुइलंदी, तिकटी, बदागारा, तलेकरी और नकानोर से साल भर आते रहते हैं। मन्दिर के गिर्द बाजे मकानों पर तांबे की छत्त और बाज़ों पर खपरेल हैं ॥

इटावा ।

ईस्ट इण्डियन रेलवे पर कलकत्ते से ७२० मील एक नगर है कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया ६॥=)॥ है। मुग़लों के जमाने में यहां एक मुसलमान हाकम रहता था। अब ज़िला इटावा का सिवल स्टेशन है देसीयों की बसती जमनाजी के उत्तर की तर्फ़ आध मील के फ़ासले पर वाक़े है और रेल के स्टेशन से एक मील है पहले यहां लुटेरे लोग आबाद थे जो मित्र और दुशमन को एक समझते थे॥

ग्यारहवीं सदी के शुरू में महमूद ने और ११८६ में महम्मद गौरी नें इस ज़िले पर हमला किया और १५२८ में बाबर ने इस शहर को फतह करके अपने मुल्क में शामिल कर लिया और अक़बर के वक़्त में शहर और ज़िला दोनों आगरे के साथ मिल गये अजीब बात यह है कि यहां मुग़लों का राज्य बड़ी देर तक रहा पर मुसलमानों के पास जागीर बहुत कम है अकसर ज़िमींदार लोग कन्नौजीये ब्राह्मणों की औलाद हैं इटावा में देखने वाले यह मुक़ाम हैं किला टूटी फुटी हालत में है पर मालूम होता है कि किसी ज़माने में बहुत मज़बूत था, जामा मसजिद एक मन्दिर, हियूमगंज यह बहुत बड़ा है और शहर के बीच में वाके है। इस में अनाज और रुई की मण्डियां हैं, मजिस्टरेटी, थाना, मिशन हाऊस, असपताल पास ही हियूम हाई स्कूल है इन सब जगहों के नाम हियूम साहब के नाम पर जो यहां के कलक्टर थे रक्खे गये हैं। इटावा से ग्वालीयर, फर्रुखाबाद, आगरा, मैनपुरी को बड़ी अच्छी पक्की सड़कें जाती हैं। सिवल स्टेशन रेलवे स्टेशन के पास कसबे के उत्तर पश्चिम की तर्फ़ है यहां की सड़कें अच्छी हैं और उन पर दोनों तर्फ़ दरख़्त लगे हुए हैं॥

१८५७ में बागियों ने दो दफ़ा इस ज़िले पर हमला किया सिवल के अफ़सर मजबूर हो कर आगरे चले गये पर शहर के लोग सरकार के वफ़ादार रहे ॥

इटावा में घी, रूई, अनाज, सरसों का इस्ट इण्डियन रेलवे, जमना और गंगा जी की नहर के रस्ते बड़ाही व्योपार होता है। यहां एक डाक बंगला है और शहर में देसियों के लिये बड़ी भारी सराय है जमना जी के किनारे हर साल में तीन मेले होते हैं। धर्मशाला बहुत हैं और एक धर्मशाला स्टेशन के पास बन रही है जो थोड़े दिनों में तैयार हो जायेगी ॥

इरोद (या इरोदू)।

अहाता मद्रास के ज़िला कोएम्बाटोर में एक नगर, और मद्रास रेलवे का स्टेशन और साऊथ इण्डियन रेलवे का जकंशन है मद्रास से २४३ मील और तीसरे दर्जे का किराया २॥-) है। त्रिचनापली, तंजोर और साऊथ इण्डियन रेलवे के और और स्टेशनों के जाने वालों को यहां गाड़ी बदलना चाहिये स्टेशन से २ मील पर मशहूर कावेरी दरिया है जिस को हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और हज़ारों स्नान के लिये आते हैं ॥

स्टेशन के पास देसियों के लिये कई होटल हैं स्टेशन के पास एक चोलतरी भी है जिस में लोग तीन दिन तक बिना किराये ठहर सकते हैं इरोद से कुछ मील के फ़ासले पर कावेरी और भवानी के संगम पर भवानी मुक़ाम भी पवित्र माना जाता है।

इरोद में डिप्टी कलकटर, तहसीलदार, सबमाजिस्टरेट और मुन्सिफ़ की कचहरियां हैं यहां हर बृहस्पत के दिन मेला होता है और रूई और केला बहुत पैदा होता है ॥

इरंदोल।

अहाता बम्बई ज़िला खांदेश के सब डिवीज़न खांदेश का बड़ा नगर है और जी० आई० पी० याने बम्बई की बड़ी लायन की शाख़ जलगांव आमालनर पर स्टेशन है दिल्ली से भुसावल के रस्ते ७२६ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ९।~) और सवारी गाड़ी में ७॥) है और बम्बई से भुसावल के रस्ते ३११ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में ४॥।) और सवारी गाड़ी में ३।~) लगता है इरंदोल रोड स्टेशन से २५ मील अदावद के उत्तर की तरफ़ और सतपुड़ा पर्व्वत के नीचे उनावदेव के गर्म पानी के सोते हैं गर्म पानी एक पुराने मन्दिर के नीचे से एक चौकोर छेद में से निकलता है सोतों के ऊपर से मन्दिर को एक अजीब पक्का रास्ता जाता है॥

इरंदोल में रुई और रुई के बीजा का ब्योपार होता है

इरंदोल रोड स्टेशन पर बैल गाड़ीयां इरंदोल नगर जाने के लिये मिलता हैं नगर में एक धर्मशाला मुसाफ़िरों के ठहरने के लिये है॥

इन्दौर।

रियासत इन्दौर की राजधानी है महाराजा साहिब और रेज़ीडैन्ट साहिब इसी जगह रहते हैं नगर थोड़े दिन का बना हुआ है अहल्या बाई ने बसाया था यह समुन्द्र से २००० फ़ीट ऊंची और सुथरी जगह पर बसा है बड़ा भारी महल जिस का दरवाज़ा ऊंचा और कई मन्ज़िल का है शहर में हर तरफ़ से दिखाई देता है लाल बाग़ जिस में गरमी में रहने का महल और चिड़िया घर बना हुआ है। टकसाल, बाज़ार, रूई की कलें देखने के लायक़ हैं रेलवे स्टेशन महल से क़रीब एक मील के फ़ासले पर है रेज़ीडेनसी एक

हुई है। राजकुमार कालिज जहां मालवा के राजों के लड़के पढ़ते हैं रजीडेंसी के अहाते में है।

इन्दौर अजमेर से ३०७ मील और बम्बई से ५४२ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।≈) और ४॥≈) है॥

यहां दो धर्मशाला हैं एक तो स्टेशन के पीछे ५०० गज़ के फासले पर है और दूसरी शहर में स्टेशन से चौथाई मील के फासले पर है। एक और बड़ी सुन्दर धर्मशाला बन रही है॥

इन्द्रपुर भवन।

सूबा आगरा और अवध के लिये और तहसील सहारनपुर में एक गांव है और सहारनपुर से १८ मील के फासले पर वाक़े है॥

यहां अक्तूबर के शुरू में शाकम्भरी देवी का बड़ा भारी मेला होता है जो ६ दिन तक रहता है इस मेले में ५०० के क़रीब रेल में और बहुत से लोग सड़क से आते हैं॥

सहारनपुर से इन्द्रपुर तक बैल गाड़ियां जाती हैं पर घोड़ा गाड़ियां कलसिया से आगे नहीं जा सक्ती क्योंकि आगे सड़क कच्ची है॥

इन्द्रपुर में कोई सराए या धर्मशाला नहीं॥

सहारनपुर दिल्ली से ११२ मील है तीसरे दरजे का किराया १।-) है॥

इमलीता।

रियासत जींद की दादरी तहसील में गांव है जो बी० बी० एन्ड सी० आई रेलवे याने बम्बई की छोटी लाईन की फाज़िलका शाख के चरखी दादरी स्टेशन से ४ मील के फासले पर वाक़े है यहां सितम्बर महीने के दूसरे हफ्ते में माल मण्डी लगती है जो १४ दिन

तक रहती है। इस में करीब २ हज़ार लोग और १५ हज़ार पशु आते हैं इसलोते में सराय या धर्मशाला कोई नहीं, मेले के दिनों में झोपड़ियां डाल दी जाती हैं॥

चरखी दादरी स्टेशन रेवाड़ी से ३५ मील और दिल्ली से ८७ मील है तीसरे दरजे का किराया ।-)॥। और ॥।≈)॥ लगता है॥

उच्च ।

सूबापंजाब रियासत बहावलपुर तहसील अहमदपुर में एक पुराना कसबा मुलतान से ७० मील के फ़ासले पर दरिया पंजनद पूर्व के किनारे पर वाक़े है नार्थ वेस्टर्न रेलवे की लाहौर कराची लैन पर अहमदपुर से १४ मील है कहते हैं उच्च उसी मुक़ाम पर वाक़े है जहां सिकन्दर आज़म ने पंज नद पर एक शहर बसाया था यह भी कहते हैं कि यह वही कसबा है जिस को रशीद उद्दीन ने उन चार रियासतों में से जो क्यंदकफंद के मातहत थीं एक का दारुल खिलाफ़ा लिखा है. इस को महमूद गज़नवी और महम्मद गौरी ने फतह किया और नसीरुद्दीन कुबाच की हकूमत में शुमाली सिंध का एक मशहूर शहर होगया और बहुत से हेर फेर के बाद अकबर के ज़माने में मुग़लिया सलतनत में पक्के तौरपर शामिल किया गया मुसलमान लोग इस जगह को पुराना होने और उन बड़े बड़े आदमियों का जिन का तवारीखों में ज़िकर है जनम भुमी होने के सबब आदर करते हैं॥

हर साल अपरैल के दूसरे हफ़्ते यहां पीर सैयद जलाल की यादगारी में बड़ा मेला लगता है जिस में ८०००० के करीब हिन्दू और मुसलमान आते हैं॥

उच्च में कोई सराए नहीं लेकिन उच्च के लोग मेले में आने वालों को घर देते हैं जिनका किराया मेले के दिनों के लिये ६) या ७) रूपये होता है अहमदपुर स्टेशन से टट्टू और ऊंट सवारी के लिये मिलते हैं॥

उच्च में खजूर बहुत होती हैं और उन के पत्तों के पंखे खूबसूरत बनते हैं

अहमदपुर लाहौर से २०१ मील है और चनिगोट स्टेशन २१६ मील है लाहौर से तीसरे दरजे का किराया २॥)॥ और २॥≈)। है॥

उज्जैन।

यह नगरी आज कल महाराजा सिन्धिया की रियासत में है, उज्जैन महाभारत के ज़माने में बड़ा भारी और मशहूर शहर था उस ज़माने में इसके कई नाम थे याने अवन्ती, अवनतीका, बशाखा, पुष्पा क्रन्तीनी॥

उज्जैन बुद्ध और जैनियों का बड़ा तीर्थ है यहां पर महा काल नाम एक शिवजी का मन्दिर है एक और मन्दिर भी है जिस को कदाश कहते हैं इन के सिवा और बहुत मन्दिर हैं जो देखने के लायक हैं॥

सिप्रा नदी के दक्षिण की तरफ एक जगह भैरवगढ़ के नाम से मशहूर है यह जगह देखने के लायक है उज्जैन श्री कृष्ण जी और उनके साथी बलदेव वगैरह सांधीपनी मुनि जी के पास पाठाभ्यास करने आया करते थे इस वास्ते यह तीरथ बहुत मशहूर है और पुराने ज़माने में हिन्दुस्तान देश का आक्सफोर्ड यूनिवर्स्टी था॥

उज्जैन नगरी के पास छिपरा नदी के किनारे पर राजा भरतरी की सुरंग है जिस में राजा भरतरी और उनके गुरू गोरख नाथ की मूर्ति है इन के सिवा और बहुत से बुत और शिव लिंग की मूर्तियां हैं।

नई उज्जैन नगरी से थोड़ा दूर आगे राजा विक्रमाजीत जी की पुरानी उज्जैन के एक गोल गढे में दस बारह हाथ नीचे उतरने से निशान मिलते हैं॥

बड़ा बाज़ार खुला है और उस में दो मंज़िल के मकान हैं नए शहर के दक्खिन की तरफ जैपुर के महाराजा जैसिंह की आकाश लोचन है ॥

यहां से अफीम बाहर जाती है और अंग्रेज़ी वस्तु खासकर कपड़ा बाहर से आता है यहां रूई दबाने। रूई निकालने और कपड़ा बुनने की कलें भी हैं, गवालियर के महाराजा साहिब का महिल स्टेशन से दो मील है ॥

स्टेशन पर मुसाफिर खाना और खाने का कमरा बना हुआ है और पास ही एक सराए और डाक बंगला है ॥

उज्जैन बम्बई से बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे में ४६८ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।~) लगता है ॥

उड़ीसा की खोहें

यह खूबसूरत पहाड़ियों के एक झुंड के दरमियान वाक़े है यह पहाड़ियां महानदी दरिया के डेलटा के साफ़ मैदान में खड़ी हैं इस जगह राजा अशोक । एक कतबा मिलता है बुध की लोथ जलाते ही उसका एक दांत यहां लाया गया था उदयागिरी पहाड़ी में छोटी २ कोठडियों के सिवा १६ बड़ी बड़ी खोहैं हैं जिस खोह को रानी का नूर याने राजा का महल कहते हैं वह सबसे खूबसूरत है इसकी दो मंज़िलें हैं और एक चौकोना आंगन के तीन तर्फ बनी हुई है। दीवारों पर संगतराशी की हुई है ॥

उदैपुर

राजपूताना में मेवाड या उदैपुर रियासत की राजधानी है। शहर की जगह और महल जो झील पर एक छोटी सी पहाड़ी पर

वाक़े है हिन्दुस्तान में बहुत खूबसूरत है जब १५६८ ई० में अकबर ने चितौड़गढ लिया तो मेवाड के महाराना ऊदैसिंह ने यहां आकर पहाड़ों में बचाओ की जगह बनाई और फिर यहां एक नगर बन गया जिस का नाम महाराना ने अपने नाम पर ऊदैपुर रक्खा॥

१५७७ ई० में मशहुर महाराना परतावसिंह के वक़्त में ऊदैपुर में अकबर की फ़ौज रही पर परतावसिंह ने १५८६ में अपनी राजधानी को फिर ले लिया १७६९ में माधोजी सिंधिया ने ऊदैपुर को घेर लिया लेकिन दीवान ऊमराचन्द की हिम्मत से और मुलक का कुछ अच्छा हिस्सा देकर बच गया॥

ऊदैपुर पूर्व की तरफ़ से भला मालूम होता है। राना साहिब और राज अधिकारियों के महल जगन्नाथ जी का बड़ा भारी मन्दिर मुसाहबों और अमीरों के घर बड़े खूबसूरत मालूम होते हैं॥

ऊदैपुर से १२ मील उत्तर की तरफ़ एक तंग घाटी में महादेवजी या ईश्वर का लिङ्ग मन्दिर है यहां महादेवजी को लोग एकलिङ्ग या चौमुखी ईश्वर मानते हैं उनकी मुर्त्ती के ४ चेहरे हैं मूर्त्ती के सामने नादा बैल की कांसी की पूरी क़द की मूर्त्ती है मन्दिर और नगर से ३०० या ४०० गज़ के फ़ासले पर एक सुन्दर झील है जिस पर बहुत से मन्दिर बने हैं और इर्द गिर्द पहाड़ियां हैं॥

उदैपुर बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे की शाख उदैपुर चितोडगढ पर स्टेशन है चितौडगढसे ६९ मील और अजमेर से १८५ मील है तीसरे दर्जे का किराया ॥=)॥ और १॥=)॥ है शहर के पास जो स्टेशन से २ मील है अच्छी सराय और धर्मशाला बनी हुई हैं तांगे और बैल गाड़ियां स्टेशन पर और शहर में मिलती हैं॥

उदवदा।

बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे याने बम्बई की छोटी लैन

पर एक स्टेशन और गांव है गांव स्टेशन से चार मील के क़रीब है यहां पारसी लोग आबाद हैं और एक अग्नि का मन्दिर है यह मन्दिर हिंदुस्तान देश मे सब से पुराना बताते हैं हज़ारों पारसी अदर (मई जून) और अरदी बहिस्त (अकतूबर नवम्बर) के महीनों में यात्रा के वास्ते यहां जाते हैं ॥

इस गांव में एक धर्मशाला और आठ बंगले हैं जिन में पारसी लोग बिना किराया दियें ठहर सकते हैं तांगें और गाड़ियां स्टेशन पर मिलता हैं ॥

उदवदा बम्बई से ११५ मील है तीसरे दरजे का किराया १।=) लगता है ॥

ऊंजालूर

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच जकशन स्टेशन से ३१६ मील के फ़ासले पर स्टेशन है मद्रास बीच से तीसरे दर्जे का किराया ३॥-) लगता है ॥

इस गांव में हर मङ्गल के दिन मेला लगता है स्टेशन से ३ मील पश्चिम की तरफ़ कोईमारियम्मन का मन्दिर है जहां हर मङ्गल के दिन पूर्णमासी के पूरे चन्द्रमा के सालाना मेले पर जो फ़र्वरी मार्च में होता है भेड़ें भैंसे भेंट दिये जाते हैं ॥

स्टेशन से थोड़े फ़ासले पर एक चतरम है जहां ब्राह्मणों को मुफ़्त खाना मिलता है स्टेशन से पौन मील के फ़ासले पर एक डाक बंगला भी है स्टेशन के पास एक पक्का मकान है जिसमें देसी लोग ठहर सकते हैं सवारी स्टेशन पर मिलती है ॥

उरुली।

जी० आई० पी० याने बम्बई की बड़ी लायन पर स्टेशन है और भीमा दरिया के पास बसा है, स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है यहां से १२ मील तले गांव में एक बड़ा मन्दिर है जहां गुज़रात से बहुत यात्री जाते हैं यहां से १२ मील जेजूरी जगह है जिसे हिन्दू लोग बड़ा पवित्र मानते हैं। बैल गाड़ियां पहले से बन्दोबस्त करने से मिलती हैं किराया फी गाड़ी २) लगता है स्टेशन के पास एक बड़ा मन्दिर है जिस में लोग ठहरते हैं और स्टेशन से क़रीब आधे मील के फासले पर नहर वालों का बंगला है॥

उरुली बम्बई से १३७ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया २≈) और सवारी गाड़ी में १।≡) लगता है॥

उलावापाडू।

शाही सड़क के ऊपर मदरास आहाते में एक छोटा गांव और मदरास रेलवे का स्टेशन है यह गांव रायापुरम मदरास से १५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया २~) है॥

यहां विष्णु का एक मन्दिर है जिस का अप्रैल या मई के महीने में मेला होता है और यहां एक चोलत्री है जिस में मुसाफिरों को बिना दाम खाना मिलता है॥

ऊरछा।

जी० आई० पी० रेलवे पर भांसी से ७ मील और स्टेशन से ५ मील के फ़ासले पर एक पुराना नगर है पहले ऊरछा रियासत की राजधानी था अब टीकमगढ़ जो यहां से ४० मील के क़रीब है रियासत की राजधानी है॥

स्टेशन से इस नगर तक कच्चा रस्ता जाता है जिस पर गाड़ी मुशकिल से चल सक्ती है इस नगर का गिर्द २ मील है और इस के गिर्द पत्थर की बड़ी भारी दिवाल बनी हुई है जिस में ऊंचे दर्वाज़े हैं इस को राजा रुद्रपर्तापसिंह ने १५३१ में बसाया और करारा किले को छोड़ कर इस को अपनी राजधानी बनाया था महलों और राजों की समाधों के सबब जो दरया के किनारे बनी हैं यह नगर बड़ा सुन्दर मालूम होता है इस जगह एक बड़ा मन्दिर भी है जिस को चत्रभुज कहते हैं किले और नगर के बीच में पुल बना है यहां एक खूबसूरत महल भी अब तक मौजूद है जब जहांगीर बादशाह मिलने आया तो राजा बीरसिंह देवने इस महल को बादशाह के आश्रम के वास्ते बनवाया था॥

ऊरछाका महाराजा बुन्धेलखण्ड के सब राजों से बड़ा माना जाता है अगस्त के महीने में यहां बड़ा भारी बेतवा दरया में स्नान का मेला होता है॥

झांसी से तीसरे दरजे का किराया ~)॥। लगता है॥

ऊरछा में कोई सराय यां धर्मशाला नहीं लोग या तो मन्दिर में ठहरते हैं या अपना और बन्दोबस्त करते हैं॥

एटाकोलम ।

मदरास रेलवे का स्टेशन मदरास से ३८२ मील है तीसरे दरजे का किराया ४) है यहां से आधे मील के फासले पर एक बड़ा मशहूर विष्णु जी का मन्दिर है जिस को थिरुनावाइ कहते हैं यह मन्दिर अथा पुजई दरया के किनारे बना हुआ है जनवरी फरवरी जूलाई और अक्तूबर के महीनों में नये चंद्रमा के तेहवार के मौकों पर तलीचरी, कनानोर, कालीकट, शोरानूर और दूसरी जगहों से बहुत

यात्री आते हैं। अप्रैल के महीने में एक बड़ा भारी तेहवार होता है जो १० दिन तक रहता है और जिस में अनगिनत यात्री आते हैं॥

स्टेशन से एक मील के फासले पर एक धर्मशाला है जहां सिर्फ ब्राह्मण ठहर सक्ते हैं। और कोई धर्मशाला नहीं॥

एमनाबाद।

सूबा पंजाब के ज़िला और तहसील गुजरांवाला में पुराना कसबा है आईने अकबरी में लिखा है कि उस वक्त यह एक महाल याने माली डिवीजन का हैडकुआर्टर था और मुसलमानों के अच्छे अच्छे मकानों के अब तक खंडर मौजूद हैं यहां बड़े मशहूर क्षत्रियों का एक कुटम्ब रहता है॥

अप्रैल में बैशाखी के मौके पर वहां बड़ा भारी मेला लगता है जो दो दिन रहता है २० हज़ार के क़रीब लोग इस मेले पर जमा होते हैं मालमण्डी भी लगती है और इनाम मिलता है॥

नगर स्टेशन से ३ मील है उस में लोगों के टिकने के लिये सराय और धर्मशाला हैं गाड़ी के वक्त स्टेशन पर यक्के और टमटमें मिलती हैं॥

एमनाबाद लाहौर से ३४ मील है तीसरे दरजे का किराया।<)। है।

एलिफन्टा।

बम्बई बन्दर में शहर से ६ मील के फासले पर एक टापू है जिस का गिर्द ५ मील है यहां पर दो पहाड़ियां हैं जिन के बीच में एक तंग घाटी है पुर्तगाल देश के लोगों ने इसका नाम एलिफन्टा रक्खा था क्योंकि यहां जहाज़ों के उतरने की पुरानी जगह के नज़दीक एक बड़ा पत्थर का हाथी खड़ा था॥

यह जज़ीरा खोहों के मन्दिरों के सबब से मशहूर है, इन अजीब खोहों में से चार तो क़रीब क़रीब पूरी हैं पर पांचवीं बड़ी खोह अब भर गई है, इन में से बड़ी खोह बड़ी पहाड़ी पर सब से अजीब है जहाज़ों से उतरने की जगह से इस के दरवाज़े तक जो पौने मील के क़रीब है एक मोड़दार रस्ता जाता है खोह पक्की चट्टान में खोदी हुई है। इस की लम्बाई चौड़ाई १३० फीट है, दरवाज़े में तीन बड़े बड़े पांख पाये हैं जिन के ऊपर एक चट्टान टिकी हुई है और उस चट्टान के ऊपर हरयावल और फुलदार बेलें उगी हुई हैं खोह अन्दर से चौकोर है और लम्बाई चौड़ाई में करीब ९१ फीट है और पाल पायों की ६ कतारों पर खड़ी है, खोह के अन्दर एक मशहूर और बड़ी त्रिमूर्ति है जिस की संगतराशी निहायत अजीब है, इस में ब्रह्म बनाने वाले, विष्णु पालन करने वाले, और शिव संहार करने वाले की मूर्त्तियां शामिल हैं, मन्दिर के अन्दर जाते हुये दाहने हाथ को एक कमरा है जिस में लिंग है इस कमरे में कई द्वारपाल और और मूर्त्तियां हैं त्रिमूर्त्ति के दोनों तर्फ़ दो कमरे हैं उन में भी बहुत सी संगतराशी की मूर्त्तियां बनी हुई हैं॥

त्रिमूर्त्ति के पूर्व की तर्फ़ के कमरे में शिव जी की मूर्त्ति है जो आधी आदमी की और आधी औरत की है इस मूर्त्ति को अरधनारी कहते हैं, यह मूर्त्ति १० फीट ऊंची है, पश्चिम की तर्फ़ के कमरों में शिवजी और पारबती जी की मूर्त्तियां हैं और एक और कमरे में पारबती जी की मूर्त्ति शिवजी की मूर्त्ति के दाहने तर्फ़ खड़ी है जिस में उन दोनों का ब्याह दिखाया है और खोह के पश्चिम के कमरे में शिवजी की कपाला भरित वाले भैरव अवतार की मूर्त्ति है सिर पर एक खोपड़ी है और गले में खोपड़ियों की माला है॥

यहां कई और भी मन्दिर हैं शिवरात्री तेहवार को यहां बड़ा मेला होता है॥
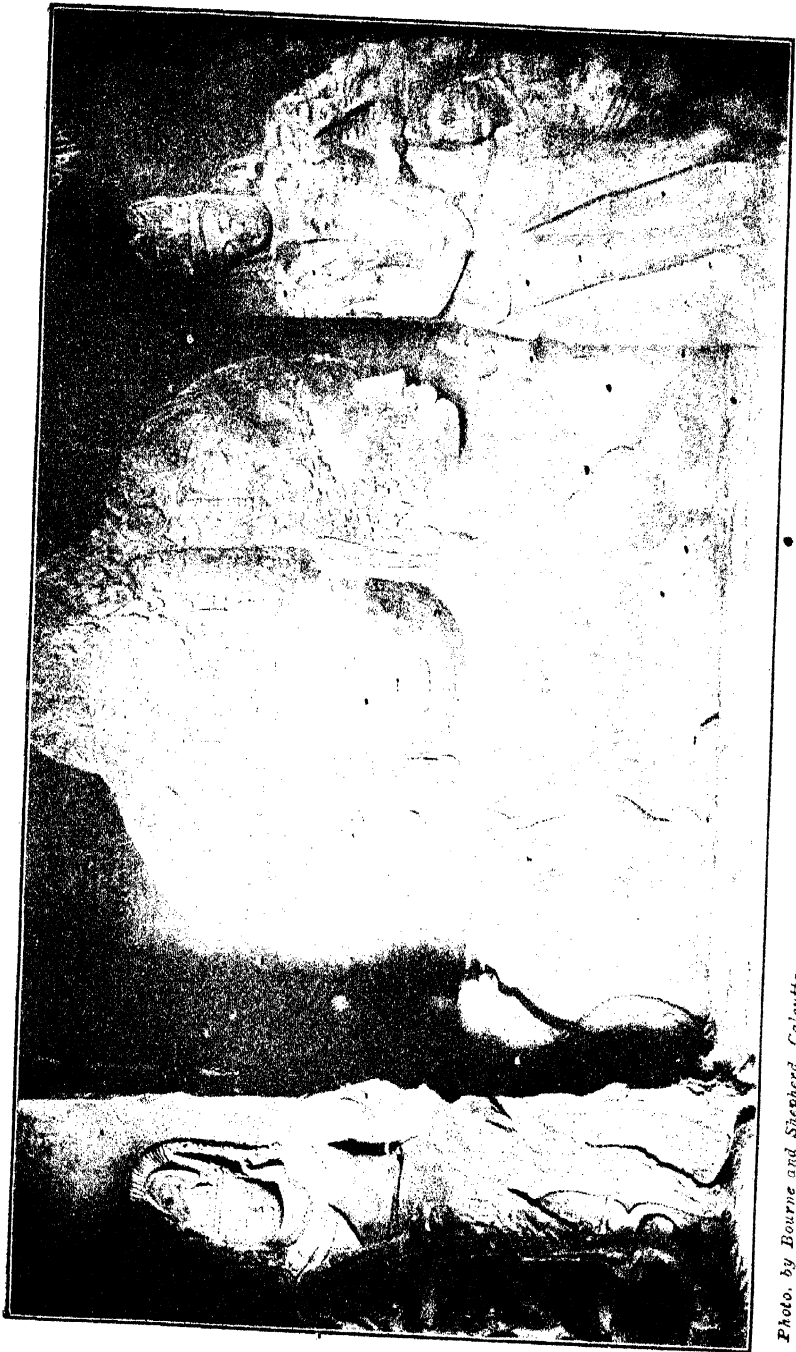
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

त्रिमूर्ति एलफेंटा की खोहों में।

इस टापू में अपालो बन्दर से अगनबोट में जाते हैं।

बम्बई कलकत्ते से जी० आई० पी० और ई० आई० रेलवे में १३४६ मील और बी० बी० ऐन्ड सी० आई० और नार्थ वैस्टरन रेलवे में लाहौर से १०६८ मील है। तीसरे दर्जे का किराया १३≡) और १०॥) लगता है॥

एलौरा।

हैदराबाद दक्खिन में औरंगाबाद स्टेशन से १३ मील और दौलत आबाद स्टेशन से ७ मील के फ़ासले पर एक गांव है, इस के गिर्द थोड़ी सी दिवार बनी हुई है और अन्दर मुसलमानों की एक खानगाह है जो सारे दक्खिन में शरीर के रोग दूर करने के लिये मशहूर है॥

यह नगर खोहों के मन्दिरों के सबब बहुत मशहूर है इन के अन्दर देवताओं की मुर्त्तियों के सिवाय जैनियों और बुद्ध लोगों के पूजने की भी मुर्त्तियां हैं, बुद्ध लोगों। ब्राह्मनों और जैनियों की खोहें अलग अलग हैं बुद्ध लोगों की १२ ब्राह्मनों की १७ और जैनियों की ५ खोहें हैं। फरगुसन साहिब लिखते हैं कि सब से बड़ा मन्दिर जिस को कैलास कहते हैं हिन्दुस्तान देश में इमारत के ख्याल से बहुत अनोखा और देखने के लायक़ है इस की खुबसूरती पर देखने वालों को सदा अचम्भा होता है बाहिर की तरफ़ से १३८ फ़ीट और अन्दर की तरफ़ २४७ फ़ीट लम्बा और १५० फ़ीट चौड़ा है और किसी किसी जगह ऊंचाई १०० फ़ीट है कहते हैं कि यह और दूसरे मन्दिर आठवीं सदी ईस्वी के क़रीब एलिचपुर के राजा एदूने बनवाये थे क्योंकि उसका यहां पानी में स्नान करने से एक रोग चला गया था, यह गांव उसी के नाम पर

एलोरा कहलाता है, बड़ा मन्दिर शिव जी का मन्दिर कहलाता है पर उस में विष्णु और देवताओं की भी मूर्तें हैं, मण्डप एक बड़े आंगन पर जो १५४ फ़ीट चौड़ा और २७६ फ़ीट लम्बा है बना हुआ है। साम्हने एक पत्थर का पर्दा है जिस की बाहर की तरफ़ शिवजी की, विष्णु जी की और और मूर्तियां खोदी हुई हैं। पर्दे के बीच में दर्वाज़ा है जिस के दोनों तरफ़ कमरे हैं, आगे जाकर लक्ष्मी और उसके हाथी की मूर्ति है आंगन के साम्हने नांदी का मण्डप है और इसके दोनों तरफ़ एक एक पील पाया या दवाजदन्द खड़ा है जो ४५ फ़ीट ऊंचा है, इन पीलपायों की चोटी पर शिवजी के त्रिशूल ४ फ़ीट बाक़ी रह गये हैं॥

दौलताबाद हिज़हाईनेस निज़ाम की रेलवे का स्टेशन है और हैदराबाद से ३२३ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३।=) है॥

दौलताबाद के स्टेशन मास्टर को एक दिन पहिले ख़बर देने से खोहों को जाने के लिये तांगे मिल सकते हैं तांगे का किराया १०) रुपया लगता है॥

स्टेशन के पास एक बंगला है जिस का एक रुपया रोज़ किराया लगता है। एलोरा के पास भी बंगला है पर उस में औरंगाबाद के तालुक़ादार की इजाज़त से ठहर सक्ते हैं॥

ओंकारजी।

बम्बई अहाते के ज़िला खंडवा तहसील निमर में एक बड़ी पवित्र जगह है और बी० बी० एंड सी० आई० (बम्बई की छोटी लायन) के मोर्तक्का स्टेशन से ७ मील है। मोर्तक्का अजमेर से ३५६ मील और तीसरे दर्जे का किराया ३।-) है॥

यहां दरिया नर्बदा के किनारे पहाड़ी पर एक बहुत पुराना ओंकार जी का मन्दिर है ज़िले का सब से बड़ा मेला कार्तिक पूर्णमाशी के दिन इस मन्दिर पर होता है जिस में दस हज़ार के क़रीब लोग आते हैं साल के और दिनों में दस यात्री पवित्र दरिया नर्बदा में स्नान करने यहां आते रहते हैं और बाज़े उन में से श्रावण का सारा महीना यहां रहते हैं ॥

मोर्तक्का स्टेशन पर ओंकारजी जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं ॥

ओंकार जी में एक धर्मशाला भी है पर यात्री लोगों को पांडे अपने घरों में उतारते हैं ॥

ओखला ।

यह स्टेशन जी० आई० पी० रेलवे में दिल्ली से ६ मील है। दरिया और गांव के सबब जो आगरा दिल्ली नहर के सिरे पर है इस गांव का नाम ओखला होगया है नहर स्टेशन से दो मील परे जमना जी से निकली है। जमना जी के बीच में यहां बंद लगाया है जिस से गरमी के दिनों में सारा पानी नहर में ले आते हैं, यहां धरती पार्क याने सैरगाह की तरह बनाई हुई है और वहां एक दो खूबसूरत बंगले हैं। स्टेशन के पास ही कालका जी के मन्दिर हैं जहां यात्री लोग सारा साल आते रहते हैं कुतब साहब की लाठ रेल में से दिखाई देती है और उस के गिर्द दूर तक महलों और कबरों के खंडर फैले हुए हैं जो हिन्दुस्तान में बलकि सारे जगत् में अजीब हैं ॥

दिल्ली से ओखले तक तीसरे दर्जे का किराया ≈) है ॥
यात्रियों के लिये यहां कई धर्मशाला हैं ॥

ओट्टनकाडू ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की तंजौर डिस्ट्रीक्ट शाख पर मदरास बीच स्टेशन से २५५ मील के फासले पर स्टेशन और गांव है। गांव स्टेशन से २ मील के फासले पर है यहां से २॥ मील थीरुचितम्बलम गांव है जो बड़े तीर्थ की जगह है इस गांव में फ़रवरी के महीने में तैरने का मेला और जून में रथ यात्रा का मेला होता है हज़ारों लोग इन मेलों में आते हैं॥

यहां से थोड़े फ़ासले पर दो गांव हैं जिन में आठवें दिन मेले होते हैं॥

ओट्टनकाडू में लोगों के ठहरने के लिये एक चत्तरम है॥

मदरास बीच स्टेशन से ओट्टनकाडू तक तीसरे दरजे का किराया २।।।=) लगता है॥

ओट्टनकाडू में बैलगाड़ी की सवारी =) फी मील के हिसाब से मिलती है॥

काकोरा ।

सूबा आगरा और अवध के बदाऊं ज़िले और बदाऊं तहसील में छोटा सा गांव है जो गगां जी के किनारे के पास बदाऊं शहर से १२ मील के फासले पर वाक़े हैं॥

कार्तिक के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है जिसके सबब यह गांव बहुत मशहूर है इस मेले पर दिल्ली, कानपूर, फ़र्रुखाबाद और रुहेलखण्ड के और हिस्सों से एक लाख के क़रीब लोग आते हैं, गंगाजी में स्नान करने के बाद यात्री ब्योपार में लग जाते हैं। मिठाई, फल, खाने पकाने के बर्तन, जूतियां, कपड़ा और असबाब का लेन देन होता है हर चीज़ के लिये अलग बाज़ार लगता है॥

बदाऊं में यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं पर अकसर यात्री लोग शेखुपुर स्टेशन पर उतर कर काकोरीको पैदल जाते हैं ॥

काकोरी में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग टिकने का आप बन्दोबस्त करते हैं ॥

शेखुपुर रुहेलखंड कुमाऊं रेलवे का स्टेशन लखनऊ से २२६ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३) लगता है ॥

कानपुर ।

सूबा आगरा और अवध में बड़ा शहर, छावनी और सिवल स्टेशन और बड़े व्योपार की जगह है यहां चार रेलें ईस्ट इंडियन, अवध रुहेलखंड, ग्रेट इंडियन पेनिनशुला और बंगाल एंड नार्थ वेस्टरन मिलतीहैं। लखनऊ जानें वाले मुसाफ़िरों को यहां गाड़ी नहीं बदलनी चाहिये पर ईस्ट इंडियन रेलवे पर जानेवालों को अवध रुहेलखंड के कानपुर स्टेशन पर गाड़ी बदलनी चाहिये। सन् १८५७ में यहां बड़ा भयानक ग़दर हुआ था इस वास्ते यह शहर और भी मशहूर है जहां जनरल वीलर साहिब का मोर्चा था वहां एक यादगार में सुन्दर गिरिजा बना हुआ है, क़त्ल की जगह दरिया के किनारे पर है और जिस कूएं में मारकर लोथें डाली गई थीं उस पर दूत की खूबसूरत मूर्त है इर्द गिर्द बहुत अच्छे बाग़ हैं ॥

छावनी और सिवल स्टेशन गंगाजी के दाहने किनारे पर हैं और देसी बस्ती खुशकी की तरफ दखिन पश्चिम को है। इलाहाबाद की सड़कपर पूर्व की तरफ़ से चलें तो पहिले घोड़दौड़ का मैदान आता है उसके बाद पश्चिम की तरफ रिसाले की बारगें हैं और इस के पीछे फौजों के क़वायद करने का मैदान आता है। इस मैदान

के आगे उत्तर पूर्व की तरफ़ अंग्रेज़ी पलटन की बारगें हैं। छावनी और दरिया के बीच में मिमोरियल (यादगार) गिर्जा, कलबघर, तोपखाना और फ़ौजी दफ़तर हैं॥ माल याने ठंडी सड़क छावनी से केहरान, हस्पताल, मरे अजनसी, कानपुर सपलाई ऐसोसिएशन, कमरशल बिलडिंगस और और बड़ी बड़ी देसी और पारसी दुकानों के पास से गुज़रती है दाहिनी तरफ़ मलका का बाग़ है जिस में मलका का कांसी का बड़ा बुत है इस के दूसरी तरफ यादगार बाग़ है जिस में मशहूर कूवा है। आगे पश्चिम की तरफ सिवल स्टेशनहै जिस में बङ्गाल बैंक, क्राइस्ट का गिर्जा, बड़ा डाकखाना, शिमले का अलायन्स बैंक, इलाहाबाद बैंक, चेम्बर आफ़कामर्स (ब्योपार की कमेटी) बिलडिंगस और अंग्रेज़ों के मकान हैं॥

कोठियां कारखाने पश्चिम की तरफ हैं और उन के उत्तर की तरफ गंगा है इन में से बड़े २ कारखाने यह हैं मूइरमिल, कानपुर ऊनी कपड़े की ऐलजिन की कल, कानपुर रूई की कल विकटोरिया कल, एम्पायर बारगेमास्टरी का कारखाना, बुर्श बनानेका कारखाना, चमड़े का कारखाना, चीनी का कारखाना और कई आटे और रुई निकालने की कलें हैं॥

पादरियों के मिशन स्कूल और हस्पताल भी हैं॥

पुराना कानपुर ३ मील परे दरिया के किनारे पर है इस के और नए शहर के बीच में खेत और बाग़ हैं॥

यह शहर सूबा आगरा और अवध में चौथे दर्जे पर है इस का रक़बा ६०७६ एकड़ है॥

ई० आई० आर के स्टेशन से आधे मील के फासले पर लाला बैजनाथ रामनाथ सिंघानिया की धर्मशाला है और स्टेशन से उत्तर पश्चिम की ओर स्टेशन से ४०० गज़ के फ़ासले पर लालातुलसीराम

शिवप्रशाद की धर्म्मशाला है मुसाफिरों से किराया नहीं लिया जाता खाना भी मामूली दामों में मिलजाता है ॥

कानपुर कलकत्ते से ६३३ मील और तीसरे दर्जे का किराया ५॥≈)॥ है बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ८३६ मील और तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में ६॥=) और डाक गाड़ी में १३=) है ॥

कांगड़ा ।

पंजाब के जिला कांगड़ा में एक नगर है और पहले कटोच राज्य की राजधानी था पिछले जमाने में इस को नगर कोट कहते थे । पुराना नगर एक पहाड़ी के दखनी ढलाओ पर बसा हुआ है और इर्द गिर्द की बस्ती और भवन और देवी का मशहूर मन्दिर उत्तर के ढलाओ पर वाक़े हैं असल में कांगड़ा क़िले का नाम था जो एक सीधी चट्टान पर बानगंगा के ऊपर खड़ा है ॥

कटोच राजे कांगड़े पर बहुत पुराने वक्तों से अंगरेज़ों के आने तक राज करते रहे यहां मुग़लों के राज्य में आजकल से बहुत जियादा आबादी थी कांगड़े का देवी का मन्दिर हिन्दुस्तान देश में सब से पुराना और धन वाला था परन्तु अपरैल १६०५ के भोंचाल से तबाह हो गया इस भोंचाल से कांगड़े के ज़िले में जान और माल का बड़ा नुक़सान हुआ । ज़िले का हेड कुआर्टर १८५५ में धर्मशाला बदल गया तब से कांगड़े में वोह रौनक़ नहीं रही ॥

कांगड़ा चांदी के ज़ेवर और मीनाकारी के लिये बहुत मशहूर है यहां एक सराय भी है ॥

किले में गोर्खा पलटन का जो धर्म्मशाला में रहती है एक दस्ता रहता है यहां पादरियों का बड़ाभारी मिशन है ॥

कांगड़े जाने के लिये नार्थ वैस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख के पठानकोट स्टेशनपर उतरना चाहिये वहां तांगे और यक्के किराये पर मिलते हैं ॥

पठानकोट अमृतसर से ६७ मील है तीसरे दर्जे का किराया ॥)॥ लगता है। कांगड़े में धर्म्मशाला भी है ॥

कामाखिया ।

आसाम देशके कामरूप जिले में गौहटी से २ मील ब्रह्मपुत्र दरिया के किनारे पर पहाड़ी है। चोटी पर बड़ा नामी कामाखिया या दुर्गा का मन्दिर है, इस मन्दिर के सबब पहाड़ी का नाम कामाखिया होगया है। इस मन्दिर के बड़े मेले यह हैं। पुरुष दुवाना जो जनवरी के महीने में देवी और कामेश्वर देवता के विवाह रचाने का होता है। मनसापूजा का मेला अगस्त में और आद्यपूजा का मेला सितम्बर में इन सब मेलों पर अनगिनत लोग आते हैं ॥

गौहटी स्टेशन के पास डाक बंगला है। और डेढ़ मील के करीब धर्म्मशाला है। एक बंगाली होटल भी है। पर यात्री लोग अकसर प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं। यक्के गाड़ियां किराये पर मिलती हैं पहले घण्टे का किराया १) और उस बाद ॥) फ़ी घण्टा लगता है ॥

गौहटी आसाम बङ्गाल रेलवे पर चिट्टागांग से ४८० मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥) लगता है ॥

कामरूप ।

तीर्थ आसाम में है इस की बाबत मशहूर है कि औ

भगवान् जी ने कामदेव को इस जगह पर भस्म कर दिया था इस वास्ते इस जगह का नाम कामरूप हो गया है। और ब्रह्मा जी ने इस जगह बैठ कर चांद तारे वग़ैरा बनाए थे इस वास्ते इस जगह का दूसरा नाम प्राग ज्योतिषपुर है। कहते हैं कि उस ज़माने में यहां जादू बहुत होता था ज्योतिष का इलम यहां बनाया गया था। पुराने ज़माने में यहां बहुत तीर्थ थे अब वह बाक़ी नहीं रहे। इस जगह देवी का मन्दिर है जहां पर दूसहरे के दिनों में बड़ा भारी मेला होता है॥

कामरूप से आध कोस के फ़ासले पर कामिक्षा देवी का मन्दिर है यहां एक छोटासा पर्वत है उस पर भी एक मन्दिर है।

कामरूप पहुचने के लिये ई० बी० एस० रेल में गवालन्दो स्टेशन तक वहां से अगनबोट पर गौहटी जाना चाहिये गौहटी से कामरूप तक बैल गाड़ी जाती है॥

गवालन्दो स्टेशन कलकत्ते से १५५ मील है। और तीसरे दरजे का किराया १॥।≈)। है॥

कारागोला ॥

बङ्गाल के ज़िले पूर्निया में गांव है जो गंगाजी के बायें किनारे पर बसा हुआ है। यह गांव एक बड़े मेले के सबब बहुत मशहूर है जो पहले गंगाजी के दूसरे किनारे पर पीरपैंती ज़िला भागलपूर में होता था पर १९ वीं सदी के शुरू में पुर्निया आगया और फिर होते होते १८५१ से बराबर कारागोला में होता है। मेला दस दिन रहता है इन दिनों में मेले की जगह पर बांस और चटाई की दुकानें लग जाती हैं और कपड़े खाने पकाने के बरतन और कम्बलों का बाड़ ब्योपार होता है॥

कागगोला बङ्गाल नार्थ वैस्टरन रेलवे का स्टेशन है और कानपूर से ४११ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।≈) लगता है ॥

कारला ।

जी० आई० पी० रेलवे पर एक स्टेशन है बम्बई से ८५ मील है। और तीसरे दरजे का किराया १।-) लगता है ॥

स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर कारली गांव और ३ मील खोहें हैं। बैल गाड़ी पहले से इन्तज़ाम करने से मिल सक्ती है। कारली की खोहें हिन्दुस्तान में सब से अच्छी हैं और अच्छे हाल में हैं। यह उस ज़माने की बनी हुई हैं जब इमारत की बनावट का ढंग बहुत अच्छा था। तामीर के जितने पहले नुक़्स थे इन खोहों में ठीक कर दिये गये थे। तर्ज़ ऐसे कमाल को पहुंची हुई है कि फिर इस से कभी नहीं बढ़ी। स्टेशन के पीछे थोड़े फ़ासले पर ट्रावनकोर के मशहूर मुसव्विर का रावीवर्मा छापाखाना है जो इस ग़रज़ से क़ायम किया गया है कि देसियों को भी इस हुनर की तरफ़ ख़्याल हो। इस छापेखाने में काम बहुत अच्छा होता है देवताओं की भी तसवीरें बनती हैं इस छापेखाने से एक मील दक्षिण की तरफ़ भोज की खोहें हैं जिन में कई पुराने ज़माने की संगतराशी के काम हैं। दो पुराने मरहठों के क़िले लोहागढ़ और बीजापुर खोहों के ऊपर बड़ी शान से खड़े हैं और देखने के क़ाबिल हैं ॥

कालाहस्ती ।

मद्रास आहाते के ज़िले-शुमाली अरकाट में स्वर्णमुखी दरिया के दक्खनी किनारे पर एक नगर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मद्रास बीच जंकशन से २८६ मील तीसरे दर्जे का किराया ३≈) है

इस नगर को श्रीकालाहस्ती भी कहते हैं यह बड़ी तीर्थ की जगह है और यहां के लोग इस को काशी जी से कम नहीं समझते मार्च के महीने में शिवरात्री तेहवार पर यहां बड़ा भारी मेला होता है जो दस दिन तक रहता है यहां पर पारबती जी का बड़ा भारी मन्दिर है और एक शिव जी का मन्दिर है जिस में पांच चेहरे वाली मूर्त्ति है। अचम्भे की बात यह है कि हवा के अन्दर जाने को कोई रस्ता नहीं पर मूर्त्ति के ऊपर जो दीया जलता है हर वक़्त हिलता रहता है। इस मन्दिर के सबब से यह नगर बहुत मशहूर है। नगर के अन्दर एक चौक है जिस में मकान बने हुये हैं और जिस के गिर्द चार चौड़ी २ सड़कें हैं॥

इस नगर के आसपास कपड़ा बहुत बनती है और अनाज और चूड़ियों का बहुत ब्यौपार होता है॥

नगर स्टेशन से डेढ़ मील के क़रीब है। स्टेशन पर गाड़ी के वक़्त बैल गाड़ियां मिलती हैं जिन का किराया दो आने से तीन आने फी गाड़ी लगता है॥

यहां ३ चोलत्रियां और ४ या ५ देसी होटल हैं जिन में ᠆)॥ को एक वक़्त का खाना मिलता है॥

कालिंजर।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला और तहसील बांदा में बांदा शहर से ३३ मील दक्खिन की ओर एक नगर और बड़ा नामी पुराना पहाड़ी क़िला है। यह क़िला बुन्धेलखण्ड में सब से पुराना है और इस की बाबत महाभारत और शिवपुरान में लिखा है कि यह स्थान ६ उटकलों में से है यहां से पानी निकलेगा और अन्त सारे जगत् को नष्ट कर देगा। इस जगह एक ताल है जिस

की बाबत महाभारत में है कि जो कोई इस देवताओं के ताल में स्नान करेगा उसे हज़ार गौदान करने का पुण्य होगा ॥

तेहवार और मेलों के दिनों में यात्री दूर दूर से आते हैं इस नगर के ७ दरवाज़े हैं। बड़े दरवाज़े के बाहर एक ढलवान गढ़ा है जिस में से रस्ता सीता सेज को जाता है इस सेज को राम सेज्जा भी कहते हैं इस के अन्दर छोटी सी कोठड़ी में एक पत्थर का पलंग है कहते हैं इस पर सीता जी ने लंका से लौट कर विश्राम किया था ॥

कोटतीर्थ (करोड़ तीर्थ का बिगड़ा हुआ है) मृगधारा नीलकण्ठका मन्दिर जिस में और लिंगों के सिवाय नीलकण्ठ महादेव का बड़ा लिंग है और कई खोहें देखने के लायक़ हैं। मृगधारा सात पत्थर के मृगों के सबब बड़ी नामी जगह है यह मृग ऋषि थे पर अनआज्ञाकारी के सबब अपने गुरू के श्राप से अगले जन्म में दशरन जंगल में बहेलिये या चिड़ीमार बन गये उस से अगले जन्म में कालिंजर में मृग बने फिर लंका में चकवा चकवी उस के पीछे मानसरोवर झील में राज हंस और सब से पीछे कुरुक्षेत्र में ब्राह्मण बने और उन की मुक्ति हुई ॥

कालिंजर में और पहाड़ी के नीचे मुसलमानों की बहुत क़बरें हैं ॥

कालिंजर की आबोहवा और नज़ारा बहुत अच्छा है।

कालिंजर बदौसा स्टेशन से जो जी० आई० पी० रेलवे की झांसी मनिकपुर शाख पर है १६ मील है बन्दोबस्त करने से टट्टू और बैल गाड़ियां किराये पर बदौस में मिल सकती हैं गाड़ी का किराया दो आने और टट्टू का एक आना मील के हिसाब से लगता है। कालिंजर में एक सराय, एक धर्मशाला और एक सरकारी बंगला है ॥

बदौसा झांसी से १४५ मील और बम्बई. से ८४७ मील है तीसरे दरजे का किराया बम्बई से डाकगाड़ी में १३) और सवारी गाड़ी में ६॥।≡) और झांसी से २) लगता हैं ॥

कावेरी ।

जनूबी हिन्दुस्तान का बड़ा दरिया है जो आबपाशी खूबसूरत नज़ारे और पवित्रपन के सबब बहुत मशहूर है हिन्दू लोग इस को दक्षिण गंगा या दक्षिण का गंगा कहते हैं और उनके ख़ियाल में यह दरिया शुरू से आख़ीर तक सब जगह पवित्र है। अग्नि और स्कंदा पुराणों में लिखा है कि एक दफ़ा इस प्रथिवी पर ब्रह्मा की लड़की विष्णुमाया या लोपामुद्रा ने जन्म लिया पर वह अपने पिता की आज्ञा से कावेरा मुनी (एक मनुष्य) की लड़की कहलाने लगी। लड़की ने अपने धर्मे हुए बाप को आनन्दित करने के लिये दरिया बन जाने का जिस के पानी से सारे पाप नाश हो जायें इरादा किया, इसलिये पवित्र गंगा जी भी साल में एक दफ़ा धरती के नीचे २ कावेरी के निकास तक पहुंचती है तांकि जो गन्दे पापियों के न्हाने से उस में हो गया उससे पवित्र होजाये तला कावेरी जहां से दरिया निकलता है और भाग मण्डला पर पुराने मन्दिर हैं जहां हर साल तुल सक्रान्ति (अक्तूबर नवम्बर) में अनगिनत लोग यात्रा के लिये जाते हैं ॥

मैसूर रियासत में कावेरी के दो जज़ीरे से रंगापटम और शिवासमुद्राम तीर्थ हैं जो त्रिचनापली के ज़िले में श्रीरंगम से कम नहीं ॥

शिवासमुद्राम जज़ीरे के गिर्द कावेरी की मशहूर आबशार हैं जो अपनी अनऊठी खुबसूरती में लासानी हैं। यहां पर दरिया

की दो धारें होजाती हैं जिन में से हर एक २०० फीट नीचे गिरती है। वहां तक दो पुलों के रस्ते से जिन को एक मैसूर के रहने वाले ने अपने खर्च से बनवाया है पहुंच सकते हैं ॥

कावेरी पर यह स्टेशन हैं ॥

(१) सेरंगापटम सदर्न मरहट्टा रेलवे पर बंगलोर शहर से ७७ मील तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ।।।)।।। है ॥

(२) पश्चिमवाहिनी बंगलोर से ७८ मील किराया ।।।‿) है।

(३) त्रिचनापल्ली साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास से २५१ मील किराया २।।‿) है ॥

(४) इरोद मद्रास रेलवे पर मद्रास से २४३ मील किराय २।।‿) है। यह सब मुक़ाम बहुत पवित्र माने जाते हैं ॥

काशगंज ।

रुहेलखण्ड कुमाऊं और बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे यहां आकर मिलती हैं। सोरन एक पुराना शहर और रुहेलखण्ड कुमाऊं का स्टेशन यहां से ६ मील के क़रीब है और यात्रा के मेलों के लिये बहुत मशहूर है। यात्री लोग बड़ंगंगा दरिया में स्नान करने के वास्ते अकसर आते हैं। दरिया का पानी यहां बहुत जमा रहता है और उसके गिर्द खूबसूरत मन्दिर और घाट बने हुए हैं। काशगंज लखनऊ से २६२ मील है तीसरे दरजे का किराया २।‿)।।। लगता है ॥

काशीपुर ।

जिला नैनीताल में एक म्यूनिसिपल क़सबा है जो नैनीताल

से ४५ मील है और सब से नज़दीक स्टेशन काठगोदाम है जहां रुहेलखण्ड कुमाऊं रेलवे खतम होता है । जिला नैनीतालका सब से बड़ा मेला मार्च के आखीर में काशीपुर से तीन मील के फासले पर बलसुन्दरी देवी का होता है। और १५ दिन तक रहता है मेला चेत की पहिली तारीख को मन्दिर पर शुरू होता है और १० दिन के बाद काशीपुर बाजार आजाता है। ७०००० के करीब लोग जमा होते हैं और पशुओं, गाड़ियों, किसानों; के औज़ारों और और चीज़ों का बड़ा व्योपार होता है। इस मौक़े पर जूआ बहुत होता है।

द्रोनासागर नदी के पश्चिमी किनारे पर कई छोटे छोटे मन्दिर हैं, काशीपुर और क़िले के पास बहुत से ताल हैं जिन में से सब से बड़ा द्रोनासागर है जिसको कहते हैं पांच भाई पांडों ने अपने उस्ताद द्रोना के लिये बनाया था यह ताल ६००, फीट लम्बा चौड़ा है इस को हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं और गोत्री जाने वाले यात्री इस के दर्शन करते हैं॥

काठगोदाम बरेली से ६६ मील और तीसरे दरजे का किराया १॥) है॥

कासारा।

जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ७५ मील के फासले पर एक स्टेशन है बम्बई से तीसरे दरजे का क़िराया डाक गाड़ी में १=) और सवारी गाड़ी में ॥।-) है । स्टेशन पर वेटिंग रूम बनाहुआ है और गांव में देशी मुसाफिरों के लिये धर्मशाला है। कासारा से गुज़र कर थल घाट की चढ़ाई ज़ियादा होती जाती है, और कासारा और इगतपुरी के बीच में १० मील के फासले में चढ़ाई समुद्र से १०५० फीट होजाती है। तीन सुरंग गुजरने

पड़ते हैं और साढ़ेचार मील सफर करने के बाद रीवरसिंग स्टेशन आता है यह स्टेशन लैन ठीक रखने के लिये बनाया गया था यहां आकर गाड़ी उलटी होजाती है याने इंजन पीछे से आगे आजाता है। इस स्टेशन से चलकर ६ सुरंगे और हिन्दुस्तान में सब से ऊंचा पुल आता है गाड़ी में बैठे मुसाफिर को पुल पर से १६० फीट नीचे खण्ड दिखाई देता है॥

कुलीतलई।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच स्टेशन से २७४ मील के फासले पर है। तीसरे दरजे का किराया ३~) लगता है। यह नगर त्रिचनापली जिले में कुलीतलई तालुक का सदरमुकाम है॥

यहां जनवरी के महीने में हरसाल बड़ाभारी मेला होता है जो पुशयम मेला कहलाता है॥

कृष्णा।

जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ४२७ मील है सवारी गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४।≈) है॥

यह नगर कृष्णा दरिया के किनारे पर वाक़े है जिसको हिंदू लोग पवित्र मानते हैं और मुसाफिर इस में स्नान करने के लिये गाड़ी से यहां उतरते हैं। दरिया पर ३८५४ फीट लम्बा पुल बना हुआ है। स्टेशन के पास एक अच्छी धर्मशाला बनीहुई है॥

कृष्णाराजापुरम।

यह मद्रास रेलवे का स्टेशन बैंगलोर शहर से ६ मील के फासले पर वाक़े है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाडी में ~)॥ डेढ़ आना है॥

स्टेशन के पास मुसाफिरों के आराम के वास्ते एक चत्तरम है। करीब ३ मील दक्खिन पश्चिम की तर्फ उलसूर नगर है जहां झील उलसूर के किनारे पर एक बहुत पुराना मन्दिर है, जिस के दर्शन को हरसाल हजारों यात्री आते हैं। मन्दिर के पास भी एक चत्तरम है। यह स्टेशन मद्रास से २११ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥।) और सवारी गाड़ी में २।) है॥

केदारनाथ।

गढ़वाल रियासत में है। यह हिमालय पर्वत की एक बर्फानी चोटी का जो २२८५३ फीट ऊंची है, और एक बड़े मशहूर मन्दिर का नाम है जो इस चोटी की ढाल पर बना हुआ है। कहते हैं कि यहां पर शिवजी के एक अवतार ने बहुत लड़ाइयों के बाद अपना पीछा करने वाले पाण्डुओं से बचने के कारण धरती में गोता मारा था। उनकी देह का नीचे का हिस्सा एक पहाड़ी की सूरत में जो पवित्र माना जाता है धरती के ऊपर रहगया और बाक़ी हिस्से इधर उधर और जगह चले गये। मन्दिर के पास एक टीला है जो भैरवझम्प के नाम से मशहूर है। यहांपर यात्री लोग मुक्ति हासिल करने के कारण गिर कर आत्मघात किया करते थे। पर अंग्रेज़ी सरकार ने यह रसम बन्द करदी। किदार नाथ के पास ४ मन्दिर और हैं जो सब मिलकर पांच किदार कहलाते हैं इन सब के दर्शन किये जाते हैं क्योंकि कहते हैं कि शिवजी की देह के बाकी हिस्से इन में हैं। किदारनाथ में एक बड़ा लिंग है॥

यहां कई सदावर्त और धर्मशाला हैं और दुकानें भी हैं। हरिद्वार से झम्पान सवारी के लिये मिलते हैं। रास्ते में और बहुत तीर्थ आते हैं॥

हरिद्वार सहारनपुर से ४६ मील है और कलकत्ते से ६२१ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥=)। और ८॥।=) लगता है ॥

कैथल ।

पंजाब के जिला करनाल में एक पुराना नगर और म्यूनीसपैलिटी है और करनाल से ३८ मील के फासले पर वाके है, यह नगर एक आप बनाई हुई बड़ी झील के किनारे पर बसा हुआ है और इस झील के ऊपर बहुत से घाट और सीढ़ियां बनी हैं। कहते हैं कि इस नगर को राजा युधिष्ठिर ने बसाया था और हनुमानजी के साथ भी इसका लगाओ है। संस्कृत में इस जगह को कपीस्थल या बन्दर का घर कहते हैं। और यह नाम अब भी चला जाता है। अकबर के राज्य में इस नगर को फिर ठीक करके यहां एक किला बनाया गया। १७६७ में यह एक सिक्खसर्दार देसुसिंहके हाथ आगया इस सर्दार का वंश कैथल के भाई कहलाते थे और सतलुज के पार के सब सर्दारों से जोरावर थे, १८४३ में उनका सारा इलाका सर्कार अंग्रेजी के पास आगया ॥

इस नगर में थोड़ासा चने, पशुओं और कम्बलों का व्योपार होता है लाख के खिलौने और जेवर बनते हैं यहां ऐक्सटरा असिस्टंट कमिश्नर की कचहरी, तहसील, थाना, अस्पताल, मदरसा और एक सराय है ॥

कैथल सदरन पंजाब रेलवे का स्टेशन है दिल्ली से १२४ मील और तीसरे दरजे का किराया १।=)। है करनाल से कैथल को यक्के जाते है ॥

कैंदूली।

अहाता बंगाल के ज़िला बीरभूम में गांव है जो अजई नदी के किनारे पर आबाद है, यहां संस्कृत के कवि और विष्णुमत के सुधारने वाले चैतान्या के चेले जैयादेवा ने जन्म लिया था चैतान्या ने संस्कृत की मशहूर गोविंद गीता कृष्ण जी की तारीफ़ में लिखी थी। माघ के आख़िर दिन (फ़र्वरी के शुरू में) इस गांव में जैयादेवा की यादगार में एक बड़ा भारी मेला लगता है जिस में ५०००० से भी ज़ियादा लोग आते हैं॥

कैलास पर्ब्बत

अटक और सतलुज के निकास के पास हिमालया पहाड़ के बीच में सर्कार अंग्रेज़ी की हद के बाहर २०२२६ फ़ीट ऊंचा एक पर्ब्बत है जिस को संस्कृत की किताबों में शिवजी का स्वर्ग लिखा है। दूर होने के सबब यात्री लोग कम जाते हैं फिर भी बहुत से लोग इस पर्ब्बत पर जाकर अपने दिन पूरे करते हैं॥

इस के दक्खिन पश्चिमी कोने में मानसरोवर झील है जिस की बाबत यूं कहते हैं कि यह उन चार झीलों में से है जिन में से देवता पानी पीते हैं॥

कोएम्बाटोर।

मद्रास रेलवे पर ज़िला कोएम्बाटोर का बड़ा क़सबा है और कलकटर का सदर मुक़ाम है। यहां काफ़ी तैय्यार करने के कई कारख़ाने हैं इस जगह से तीन मील परूर का मन्दिर है जिस के दर्शन को मलायालम और और जगह से यात्री आते हैं। यहां रुई कातने और कपड़ा बनने के कारख़ाने भी हैं॥

इस नगर में और पढ़र में कई चत्तरम या धर्मशाला हैं, यक्के और बैलगाड़ियां स्टेशन पर किराये पर मिलती हैं॥

कोयेम्बाटोर मद्रास से २०६ मील है और तीसरे दर्जे का किराया डाकगाड़ी में ४) और सवारी गाडी में ३=) है॥

कांजीवर्म।

या कांचीपुरम मद्रास से ५६ मील है यह चोला खानदानका मशहूर शहर था और चौथवीं सदी में तोंदामन्दालम का राजधानी था सन् १६४४ ई० में बिजयानगर के ज़वाल पर यह गोलकण्डा के मुसलमान बादशाहों के हाथ आया और बाद में अरकाट रियासत का हिस्सा बन गया। सन् १७५१ ईसवी में अरकाट से वापिस आकर क्लाइव ने फ्रांस वालों से इस को फतह किया॥

कांजीवर्म हिन्दुस्तान के सात बड़े तीर्थों में से है। जिन की यात्रा करने से कहते हैं मरने के बाद सुख मिलता है सातवीं सदी में बुद्ध लोगों का यहां बहुत ज़ोर था लेकिन उसकी अगली सदी में जैन आये और जैन बैरागने जिले में अबलक मौजूद हैं। बारहवीं सदी के करीब यह जगह हिन्दुओं के हाथ आई। दो मन्दिर जो जनूबी हिन्दुस्तान में सब से बड़े हैं सन् १५०६ ई० के करीब कृष्णराय ने बनवाये थे॥

कांजीवर्म के छोटे बड़े दोनों कसबों में मन्दिरों के झुण्ड हैं और चोलतरियां याने धर्मशालें भी हैं। यात्री यहां कसरत से आते रहते हैं॥

बड़े कांजीवर्म में शिवजी के मन्दिर में खूबसूरत ग.रे और बड़े २ मंडप याने मामूली १०० पीलपाओं वाले दालान और कई खूबसूरत तालाब हैं जिन के इर्द गिर्द पत्थर की सीढ़ियां बनी हुई

हैं सब से बड़े गपूरे की दस मञ्जिलें हैं और ऊंचाई १८८ फीट है चोटी पर से मन्दिर और आस पास का बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है ॥

छोटे कौंजीवर्म में विष्णु का मन्दिर बड़े मन्दिर से क़रीब दो मील के फासले पर है। इस में एक बड़ा अजीब ६६ पीलपाओं का दालान है जिन पर जड़ के क़रीब सवारों और पशुओं की मूर्ति बनी हैं। तालाब के सामने दो मुनारें झण्डों के वास्ते हैं और एक रंगीन छत की बारादरी है जिस के चार पीलपाये है। इस मन्दिर के खजाने में बहुत से पुराने ज़माने के बड़े कीमती जवाहरात हैं ॥

कौंजीवर्म के बड़े भारी मेले पर जो मई के महीने में होता है अनगिनत यात्री दूर दूर से आते हैं। कौंजीवर्म साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच स्टेशन से ५६ मील है। तीसरे दरजे का किराया ॥≈) लगता है ॥

कोटअदू ।

नार्थ वेस्टर्न रलेवे की लालामूसा शेरशाह शाख़ पर एक स्टेशन है लाहौर से ३८३ मील के फासले पर है और तीसरे दरजे का किराया ४।≈)॥ लगता है ॥

यहां सितम्बर महीने के पहिले हफते में कांसीगर का मेला लगता है जिस में डेरा इस्माईलखां, डेरा गाज़ीखां और मुलतान से ५००० के क़रीब लोग आते हैं। यह मेला तीन दिन तक रहता है ॥

कोट्टापल्ली ।

अहाता मदरास, ज़िला गोदावरी, तालुक रामचन्द्रपुर मे

गांव है। इस को हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं और बारहवें साल हज़ारों यात्री आते हैं। पगोड़े के पास दरिया का पानी बहुत ही पवित्र समझा जाता है॥

अन्नावर्म में जो यहां से डेढ़ मील है मई के महीने में श्री वीरा वरिकाटासलिया नारायन स्वामी का बड़ा भारी मेला होता है जिस में ५ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

कोहापल्ली में देशियों और अंग्रेज़ लोगों के लिये टिकने की कोई जगह नहीं पर अन्नावर्म में एक चत्तरम और एक बंगला है॥

कोहापल्ली मदरास रेलवे पर मदरास से ४१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ५।ॾ) है॥

कोदूमदी।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच जंकशन से ३१५ मील के फ़ासले पर वाक़े है मदरास बीच से तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है। यहां सोमवार के दिन एक मेला होता है॥

कावेरी दरिया के किनारे पर एक पुराना और ख़ूबसूरत शिवजी का मन्दिर है जहां चैत्र के महीने में रथयात्रा का मेला होता है॥

स्टेशन के पास एक डाक बंगला और देशी लोगों के लिये एक चत्तरम है॥

कोटाप्पाकोंडू।

मदरास अहाते के किस्टना जिले और नरसाराओपेट तालुक में एक पहाड़ी गांव और बड़ा मशहूर मन्दिर है, पहाड़ी नरसाराओ पेट के दक्खिन की तरफ़ ८ मील है और उस पर शिवजी का मन्दिर है जो मैदान से ६०० फ़ीट ऊंचा है मन्दिर तक सीढ़ियां बनी हैं॥

फर्वरी के महीने में नये चन्द्रमा को यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में कई हजार लोग आते हैं। मेले के मौके पर लकड़ी का बड़ा व्योपार होता है॥

पहाड़ी के ऊपर एक धर्मशाला है जिस में उसका मालिक मेले के दिनों में ब्राह्मणों को भोजन दिया करता है और लोग मैदान में ठहरते हैं॥

नरसाराओपेट बंगलोर से सदर्न मरहट्टा रेलवे में ४०५ मील है और तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में ४।)॥ लगता है॥

कोट फतेहखां।

नार्थ वैस्टर्न रेलवे (पंजाब लैन.) की रावलपिंडी खुशालगढ़ थल शाख के स्टेशन गगन के पास वाक़े है जो रावलपिंडी से ३८ मील है और तीसरे दर्जे का किराया।॰)। लगता है॥

अपरैल में बैसाखी के मौक़े पर यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में रावलपिंडी, पिंडीघेप, फतेहजंग और पेशावर और मजेहल ज़िलों से ४ या ५ हज़ार के करीब लोग जमा होते हैं। यह मेला दो दिन तक रहता है॥

कोनारक।

यह तीर्थ की जगह पुरी से १६ मील उत्तर और पूर्व के कोने में समुद्र के क़िनारे पर वाक़े है। इस मन्दिर की बाबत कहते हैं कि बुद्धिमान नारद को एक जवान आदमी पर जिसका नाम सम्बा था शक हुआ कि कृष्णजी की १६ हज़ार स्त्रियों से आशनाई रक्खता है। उस ने उस आदमी को शराप दिया और वह कोढ़ी होगया। पर रोज सूरज की ओर! सूर्य्य कह कर पूजा करने से उस का रोग जाता रहा। दूसरे दिन जब वह दरिया में स्नान कर रहा

था तो उस को एक मूर्ति मिली जो विश्वकर्मा ने दरिया में डाल दी थी। यह मूर्ति सूर्य के अङ्ग के एक हिस्से की बनी हुई थी सम्बा ने इसके वास्ते एक मन्दिर बना दिया जिसमें सूर्य को रोग दूरकरने हारा मान कर उस की पूजा होती है सारे मन्दिर में भांत भांत की संगत्राशी का काम किया हुआ है। कोनारक को पुरी से पालकियां और बैलगाड़ियां जाती हैं॥

यहां धर्मशाला कोई नहीं पर एक दफा जब मन्दिर की मरम्मत होरही थी गवर्नमेंट ने कुछ झोपड़ियां बनाई थीं जिन में अब यात्री लोग ठहरते हैं॥

पुरी बङ्गाल नागपुर रेलवे में कलकत्ते से ३११ मील है और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ४~) है॥

कोरेकी।

पंजाब के जिला सियालकोट तहसील पसरूर में सियालकोट से २७ मील है। सियालकोट लाहौर से ८६ मील है तीसरे दर्जे का किराया १)॥ लगता है॥

सितम्बर के तीसरे हफ्ते में यहां गुल्लूशाह की माल मंडी का मेला होता है जो एक हफ्ता रहता है इस मेले में ८० हजार के करीब लोग सूबा पंजाब के सब हिस्सों से आते हैं॥

कर्णवाश।

यह तीर्थ सूबा आगरा और अवध के जिला बुलन्द शहर में अनूपशहर से ८ मील के फासले पर है। यहां एक शीतलामाई का बड़ा पुराना मन्दिर है। मालूम नहीं इस मन्दिर को किसने और कब बनाया था। जून में दशहरे के मौके पर यहां एक बड़ाभारी मेला

होता है जो तीन दिन रहता है। इस में हजारों आदमी गंगा जी में स्नान करने को आते हैं। हर सोमवार को औरतें पूजा के लिये आती हैं। बुलन्दशहर से कर्णवास को बैलगाड़ी मिलती हैं कर्णवास में कई धर्मशाला हैं॥

बुलन्दशहर ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन कलकत्ते से ८६६ मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥~) लगता है॥

छोरनाली।

सूबा पंजाब के जिला रावलपिंडी, गुज्जारखां तहसील में एक छोआ गांव है जो नार्थ वेस्टरन रेलवे के गुज्जारखां स्टेशन से ६ मील के फासले पर वाक़े है सवारी के लिये स्टेशन पर खच्चरें टट्टू और ऊंट मिलते हैं॥

इस गांव में एक महात्मा का मन्दिर है जो उन के नाम पर गुफा बाबा मोहनदास कहलाता है इर्द गिर्द के गांवों के लोग उस को बहुत मानते हैं। बैशाखी के मौके पर यहां बड़ाभारी मेला होता है जो तीन दिन रहता है इस मेले पर ३ से ४ हजार तक लोग जमा होते हैं मन्दिर में ग्रन्थ साहब रक्खा हुआ है॥

गांव में एक सराय और एक धर्मशाला है॥

गुज्जारखां रावलपिंडी, से ३३ मील है और तीसरे दरजे का किराया।~)। है॥

कोल्हापुर।

यह शहर कोल्हापुर रियासत की राजधानी है और मुद्दत से महालक्ष्मी देवी के बड़े पुराने मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है कटिया जो पहले इस के गिर्द बनीहुई थी अब मट्टी के नीचे कई फ़ीट दबी हुई है मालूम होती है कि यहां कभी धरता को बहुत

हिलजुल हुई थी। १८८० में एक बड़े स्टूपा में से एक बिल्लौर का सन्दूकचा निकला जिस के ढकने के ऊपर अंग्रेजी सम्बत से पहिले तीसरी सदी का असोका अक्षरों में एक कतबा था। अब भी धरती खोदने से छोटे २ मन्दिर निकल आते हैं॥

मिट्टी के बरतन, लोहे की चीज़ें, मोटी रुई और ऊन का कपड़ा चिकना काग़ज़, इतर, शराब, शीशे और गोटे के जेवर बनते हैं॥

वहां एक प्राविन्शल कालिज भी है॥

इस नगर में कई धर्मशाला हैं और एक धर्मशाला शाहपुर में स्टेशन के पास है। स्टेशन के सामने एक होटल और पौन मील के फासले पर डाक बंगाला है। सवारी हरवक्त मिलती है॥

कोहलापुर सदरन मरहट्टा रेलवे में पूना से १८६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥।≥)॥। लगता है॥

कोलाघाट।

बंगाल नागपुर रेलवे पर हौडे से ३४ मील एक स्टेशन है तीसरे दरजे का किराया हौडे से ।≥)। लगता है। वहां से १० मील दक्खिन की तर्फ सी० ऐस० ऐन० कम्पनी के घाट के पास तमलुक या नमरासिपति वाक़े हैं जिसका सब से पहिले जिकर चीन देश के मशहूर यात्री हियून संग के लिखे हुए हाल से पायाजाता है यह मशहूर यात्री बुद्ध लोगों की इस पुरानी बस्ती में सम्वत् ई० की सातवीं सदी में आया था उस जमाने में तमलुक बड़ाभारी बन्दर था और बुद्धलोगों ने जो पांचवीं सदी के शुरू में यहां आकर बसे १० अस्थल बनाये जिन में एक हजार महन्त रहते थे। अशोका के एक २०० फीट ऊंचे मिनारे से भी मालूम होता था कि बुद्ध लोगों

की यहां बड़ी बस्ती थी। तमलुक के सबब से पहिले राजा चक्रधारी वंश के क्षत्री होते थे॥

तमलुक के सबब से मशहूर मन्दिर वर्गभीमा और कृष्ण अर्जुन के हैं इन में से पहला ऊंची जगह पर बना हुआ है और शकल और बनावट की तर्ज़ में अनोखा है। दूसरा राजा तमोरधजा ने बनाया था, इस में कृष्णजी और अरजून की मूर्तियां हैं कहते हैं कि जब महाराजा युधिष्टिर ने अश्वमेध यज्ञ करने के लिये घोड़े को कृष्ण जी की रक्षा में छोड़ा तो घोड़ा तमलुक चला आया जो उस वक़्त ज़बरदस्त राजा तमोरधजा की राजधानी थी। राजा के लड़कों ने घोड़े को पकड़ लिया और इस पर उन लड़कों और अर्जून में लड़ाई हुई अर्जून की हार हुई उसने यह हाल कृष्णजी को सुनाया कृष्णजी ने कहा कि जिस राजा के लड़कों से तू लड़ा उस पर विष्णु जी की कृपा है किसी छल से काम लेना चाहिये तब अर्जून और कृष्ण जी ब्राह्मण का भेष करके राजा के महल में गए पर वहां राजा की भक्ती के बहुत से निशान देख कर ऐसे आदमी को धोखा देने से लेजाए और राजा के सामने हो गए राजा ऐसा खुश हुआ कि उस ने जोश में आकर विन्ती की कि वह कृष्णजी जगत् के सर्दार और अर्जून को रोज़ देख सका करे उस की विन्ती मनजूर हो गई, तो उस ने कृष्णजी और अर्जून की पत्थर की मूर्तियां बनवाई और एक ख़ास मन्दिर बनवाकर उस में रक्ख दीं॥

कोवूर।

यह मदरास रेलवे का स्टेशन मदरास से ३५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४॥=) है यहां तहसील है और इसी जगह से गोदावरी दरिया का पुल बनना शुरू हुआ था। हिन्दूओं के नज़दीक

यह जगह पवित्र मानी जाती है क्योंकि कहते हैं कि यहां गोदावरी को गौतम लाया था ॥

यहां छोटी जाति के लोगों के लिये एक छोटी सी धर्मशाला है और लोग टिकने के लिये आप बन्दोबस्त करते हैं ॥

किशोरगंज ।

बङ्गाल के ज़िला मैमनसिंह में एक नगर और म्यूनिसिपैलटी है और किशोरगंज सबडिवीज़न का हेडक्वाटर है यह नगर कुडाली खाल पर ब्रह्मपुत्र से १३ मील के फासले पर वाक़े है झूलन यात्रा के दिनों में कृष्ण जी का मेला होता है जो आधी जूलाई से आधे अगस्त तक रहता है यहां एक किस्म का बारीक़ कपड़ा बनता है ॥

यहां सराय या धर्मशाला नहीं मेले के दिनों में यात्रियों के लिये झोंपड़ियां डाल दी जाती हैं ॥

खुश्क दिनों में गफरगाऊं स्टेशन पर गाड़ियां और पालकियां मिलती हैं गाड़ी का किराया ७) और पालकी का २) होता है, पर वर्षा के दिनों में ७ मील किश्ती में जाना पड़ता है किश्ती का किराया १।) लगता है ॥

गफरगाऊं ईस्टरन बङ्गाल रेलवे जो ढाका शाख पर स्टेशन है यह कलकत्ते से ३१७ मील है तीसरे दरजे का किराया ४-) लगता है ॥

कटास ।

सूबा पंजाब ज़िला जेहलम तहसील पिंड दादनखां में एक पवित्र चश्मा है। ज्वालामुखी और कुरुक्षेत्र के सिवा सब के सब तीर्थों से यहां यात्री ज़ियादा जाते हैं ॥

इसकी असल यों बताते हैं, कि शिव जी को अपनी स्त्री सती दक्षा की पुत्री के काल होजाने का ऐसा रंजहुआ कि उन की आंखों से आंसू जारी होगये जिस से दो पवित्र ताल एक अजमेर के पास जिस को पुष्कर कहते हैं और दूसरा कटाक्ष या कटास सिन्ध सागर दोआबे में बन गये। कटास नमक के पहाड़ों की दूसरीतर्फ १६ मील पिंडदादनखां से और १८ मील चकवाल से वाके है गिर्द की पहाड़ियों पर दीवालों बुर्जों ईंटों के खंडर हैं और उन के नीचे एक अहाते के अन्दर सात धारा याने सात मन्दिरों के खंडर हैं कहते हैं यह मन्दिर पांडव भाइयों ने बनवायेथे जो अपने १२ वर्ष के बनवास का एक हिस्सा कटास में आकर रहे थे। गर्मी के शुरू में यहां एक बड़ाभारी मेला होता है जिस में ८० हजार के करीब यात्री आते हैं॥

खेवडा स्टेशनपर टट्टू और खच्चरें बंदोबस्त करने से सवारी के लिये मिल सक्ती है पिंडदादनखां में यक्के और टमटम बहुत मिलती हैं॥

कटास में यात्रियों के टिकने के लिये कई मकान बने हैं॥

खेवडा नार्थवैस्टर्न रेलवे पर स्टेशन है और लाहौर से १४२ मील है। तीसरे दर्जे का किराया १॥=)॥ लगता है॥

कटकराज।

नार्थ वैस्टर्न रेलवे के खेवडा स्टेशन से १२ मील है यहां एक मन्दिर है, जिस में देवी की मूर्ति रक्खी है। चैत महीने की पहली तारीख यहां एक बड़ा मेला होता है जिस में हजारों यात्री जमा होते हैं। खेवडा लाहौर से १४२ मील है तीसरे दर्जे का किराया १॥=)॥ लगता है॥

कटनी।

ई० आई० जी० आई० पी० और बी० एन० रेलवे यहां मिलती है यह जगह बी० यन० रेल के जरीये कलकत्ते से ६४३ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ५।~) है और ई० आई० आर रेलवे में ६७६ मील और तीसरे दर्जे का किराया ६।~)। है बम्बई से कटनी ६७३ मील है और तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में ७=) है मुल्क का वह हिस्सा जिस में से जी० आई० पी० रेल गुजरती है तारीख में बहुत मशहूर है रस्ते में सागर, भोपाल, ग्वालियर, उदैपुर और झांसी बड़े बड़े शहर आते हैं। बङ्गाल नागपुर रेलवे पर यह रास्ता थोड़े दिनों में कलकत्ते से किरार्चा को सब रस्तों से नजदीक हो जायगा॥

कटनी में अनाज जमा होकर बाहर जाता है और चूना बहुत होता है यहां एक रंग भी तैयार होकर बाहर जाता है॥

स्टेशन के ऊपर पहले और दूसरे दर्जे के मुसाफिरों के वास्ते एक छोटासा वेटिंगरूम है और शहर में देसी मुसाफिरों के लिये एक बड़ी सराय है॥

कटनी अनाज की बड़ी मण्डी है॥

कटपदी।

मद्रास रेलवेपर एक स्टेशन और नगर है मद्रास से ८१ और अजीकल से ३६३ मील है तीसरे दर्जे का किराया इन दोनों जगह से ॥।~) और ४।~) है कटपदी साऊथ इण्डियन रेलवे का जंकशन भी है। यहां से ५७ मील साऊथ इण्डियन रेलवे पर तिरुवन्नामलई वाके है जो एक बड़े मन्दिर के सबब मशहूर है मद्रास रेलवे के स्टेशनों पर से थ्रु तिरुवन्नामलई तक टिकट मिल सके हैं। कटपदी

से २ मील के फासले पर पालार दर्या पर आधा मील लम्बा पक्का पुल बना हुआ है। स्टेशन के पास हर शनिश्चर के दिन शांडी याने मेला होता है॥

कटपदी से ४ मील दक्षिण की तरफ वेलोर जगह है जो बड़ा भारी देसी नगर और व्योपार की जगह है यहां पहले मदरासी देसी पलटन का एक दस्ता रहता था पर जिले के अफ़सर चित्तूर में रहते हैं। बेलोर में एक पुराना क़िला है जिस के अन्दर एक मन्दिर है इस मन्दिर में बड़ी अजीब संगतरासी की हुई है इस की थोड़े दिन हुए सर्कार ने मरम्मत की थी॥

सेन्टरल जेल किसम किसम का कपड़ा बनाने के वास्ते मशहूर है

कटपदी में दो धर्मशालां हैं और तिरुवनमलई में कई हैं यक्के और बैलगाड़ियां दोनों जगह मिलते हैं कटपदी में अनाज का व्योपार होता है॥

कठोर गिरी।

अहाता मदरास में अरोनाचल और त्रिचनापल्ली के बीच में एक पर्वत है इस पर एक बड़ा मशहूर मन्दिर है जिस के दर्शन करने को हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से यात्री आते हैं॥

कादिरी।

मदरास अहाते के कडुांपा जिले में नगर है और कादिरी तालुकका सदर है यहां एक गपोड़ा है। नरसिंह स्वामी का यहां फर्वरी के आखीर में मेला शुरू होता है जब हज़ारों यात्री आते हैं नगर के बाहर मुसलमानों की बहुत कबरें और मसजिदें हैं। जिन

से मालूम होता है कि यह नगर मुसलमानों के पास भी रहा है।

यहां एक बड़ा चत्तरम और एक बंगला भी है। कादरी में गेहूं, चने, कम्बू, चोलम, अरिंड का बीज, इमली और चमड़ा साफ करने की छाल पैदा होती है॥

कादिरी साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है, मदरास बीच स्टेशन २३६ मील के फासले पर वाक़े है तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है॥

कडापा।

जिला कडापा का हैडक्वार्टर और मदरास रेलवे का स्टेशन है मदरासले १६२ मील और तीसरे दरजेका किराया १॥≈)है, यहदेसी लोगों की बड़ी व्योपार की जगह है। शहर के अन्दर चार मकान हैं जो पहले कडापा के नवाब के महल थे, पर अब उन में सर्कारी दफ़्तर हैं इन में बाजी बाज़ी जगह बैल बूटे का अच्छा काम किया हुआ है जिले में बहुत पुरानी इमारतें देखने के लायक़ हैं खासकर मदनापल्ल में जहां एक पगोड़ा और एक खूबसूरत संगतराशी किया हुआ मीनार है इस नगर की आबादी १६४३७ है॥

स्टेशनसे एक फरलांग के फासले पर एक चत्तरम है और नगर में जो स्टेशन से ढाई मील है २ चत्तरम एक धर्मशाला और एक बंगला है। स्टेशन पर यक्के हर वक़्त मिलते हैं॥

कुत्तलम।

अहाता मदरास के जिला तिन्नीवेली और तेनकासी तालुक़ में एक गांव है, यहां की आबहवा बहुत अच्छी है। जिले के लोग जून से अक्तूबर तक यहां आकर रहते हैं॥

इस जगह छोटी से छोटी पानी की चादरें १०० फुट ऊंची है, उस के नीचे खूबसूरत नहाने की जगह और एक गपोड़ा बना हुआ है। कुत्तलम के इर्द गिर्द बहुत से मन्दिर हैं जहां यात्री लोग बहुत आते रहते हैं

देसी औरतों के लिये यहां कपड़ा बनता है। धान और नारियल यहां से बाहर आते हैं, गांव में देसी लोगों के ठहरने के लिये दो मकान और तीन होटल हैं॥

कुत्तलम मदरास बीच स्टेशन से १८२ मील है तीसरे दरजे का किराया २~) लगता है॥

कनखल।

हरिद्वार से डेढ़ मील दक्खिन की तर्फ गंगा जी के किनारे पर वाके है। कलकत्ते से ई० आई० आर रेलवे पर हरिद्वार तक फासला ६२१ मील और तीसरे दरजे का किराया ८॥।~) है और दिल्ली से १६१ मील और तीसरे दरजे का किराया २)। है। इस जगहपर गंगा जी की तीन धारें होकर मिली हैं संगम पर पानी की चौड़ाई २००० हाथ है। इस तीर्थ की यात्रा करने से कुल पाप नाश होजाते हैं और हमेशा के लिये स्वर्ग प्राप्त होजाता है इसी जगह राजा दक्ष ने यज्ञ किया था और इसी जगह सती ने अपने पती की निन्द्या सुनकर आत्मघात कर लिया था। दक्षिण की तरफ शिव जी की मूर्ति है जिस को दक्षेश्वर कहते हैं यहां सीताकुण्ड तीर्थ भी है पहाड़ के ऊपर एक चबूतरा बना हुआ है जिस में त्रिसूल गड़ा हुआ है॥

यहां यात्रियों के आराम के वास्ते कई धर्मशाला हैं पर यात्री उसी दिन हरिद्वार को लौट आते हैं॥

कण्टईरोड ।

बंगाल नागपुर रेलवे पर कण्टई के लिये स्टेशन है। हौडे से ६४ मील और तीसरे दरजे का किराया १=)॥। लगता है॥

कसबा कण्टई बंगाल जिला मिदनापुर में कण्टई सबडिवीजन का सदर मुकाम है॥ इस से १० मील खुश्की की तरफ पश्चिम को कसबा कसयारी है यहां पुराने जमाने के देखने के लायक खण्डर अब तक मौजूद हैं। कुरम्बरा के किले या स्थल की १० फीट ऊंची दीवारें लाल पत्थर की बनी हुई अबतक अच्छी हालत में हैं इस स्थल के अन्दर एक कतार कुटियों की है इस में से हर एक कुटिया आठ फीट चौडी है। किले के अन्दर मन्दिर हैं जिस में एक कुयें की तह में महादेवजी की मूर्ति है जिस को अब भी बहुत लोग पूजते हैं। किले में पश्चिमी किनारे को एक मसजिद भी है जो अब इस्तेमाल नहीं कीजाती। इस की अन्दर की पश्चिमी दीवार पर उड़िया जबान में एक कतबा है जिससे मालूम होता है कि इसे महम्मद ताहिर ने औरंगजेब के जमाने में बनाया था लेकिन थोडी देर बाद किला फिर हिन्दुओं के हाथ आगया और मसजिद बेकार होगई। उत्तर की तरफ एक बड़ा और गहरा तालाब है जिस को जगेश्वर कुण्ड कहते हैं। इस तालाब में मगरमच्छ रहते हैं। यहां के लोग कहते हैं कि इस स्थल को कत्तिलेश्पर के महाराज ने बनाया था यह राजा उड़िया के देवराज वंश में से था। इसी जगह मशहूर बाघ राजा रहा करता था। जब यह जगह बिलकुल जंगल थी उसकी गायें भैंसे दरिया सुवरनरेखा जो उस वक्त यहां बहता था कि पश्चिमी किनारे पर खेतों में चरा करती थीं एक दिन एक गाय ने और दिन से थोड़ा दूध दिया और राजा ने ग्वाला को जो गायें, भैंसों को चराया करता था सज़ा दी। इस के बाद ग्वाला छुप के गायें के पीछे

रहा। गाये दरिया पार जाकर पूर्व की तरफ़ चली और एक महादेव जी की मूर्ति के पास जाकर अपना दूध देवता के सिर पर डाला, बाघ राजा ने सुनकर यह हाल महाराजा कपिलेश्वर से कहा जिसने मन्दिर बनवा कर देवता के नाम कर दिया ॥

शायद इस इलाक़े में कयारचन्द के पत्थर के पीलपाओं के खण्डर सब से अजीब हैं, यह खण्डर गिनती में हज़ार के क़रीब हैं और एक बड़े मैदान पर फैले हुए हैं कहते हैं कि यह एक हिन्दू राजा जवाहरसिंह की तजवीज़ से बनाए गय थे, ताकि दुश्मन इतने आदमियों को रात दिन पहरे पर देख कर डरें, उड़िया रियासत में एक मन्दिर है जिस में संगमरमर की तख़्ती पर एक कुतबा है। जिस से मालूम होता है कि इसको राजा चोहनसिंह ने बनवाया था ॥

यहां एक मुग़लपाड़ा भी हैं जहां मुग़लों के ज़माने की इमारतें हैं इनमें से बहुत औरगज़ेब के ज़माने की हैं यह जगह टस्सर और रेशम के काम के लिये मशहूर है ॥

स्टेशन से नगर ३५ मील है, ऊंट और बैल गाड़ियां स्टेशन पर किराये को मिल सकती हैं ॥

स्टेशन पर और नगर में कोई सराये या धर्मशाला नहीं पर ४ डाक बंगले हैं जिन में से एक स्टेशन के पास है और बाक़ी नगर को जाते हुए रस्ते में आते हैं ॥

कनौज।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला फ़रुखाबाद में एक बड़ा पुराना नगर है, काली नदी के पश्चिमी किनारे पर गंगा जी के संगम से ५ मील ऊपर की तरफ़ वाक़े है, यह पवित्र दरिया पहिले

शहर के पास ही बहता था पर अब ४ मील उत्तर की तरफ़ हट गया है। पहले यह एक बड़े ज़बरदस्त हिन्दू राज्य की राजधनी थी, और इस जगह बहुत से मारके हो गुज़रे हैं, पुरानी इमारतों के खंडर आधे घेरे में पांच मील तक पांच गांओं में फैले हुए हैं, राजा जैपाल की समाध बहुत अजीब है इससे दूसरे दरजे पर जुमां मसजिद है। सिक्के और २ पुरानी चीज़ें अब तक बहुत निकलती हैं। यह नगर पहले हिन्दू शायस्तिगी का मरकज़ था॥

कन्नौज देसी इतरों के वास्ते मशहूर है॥

क़न्नौज बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे का स्टेशन है और कानपुर से ४६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥)। है॥ शहर में सराय है॥

कन्या आश्रम।

हारिद्वार से पश्चिम की तरफ़ ३० मील के फ़ासले पर है। शकुन्तला की पैदायश की जगह है इस वास्ते बड़ी मशहूर है। यहां की आब हवा बहुत अच्छी है॥

हरिद्वार में सवारी किराये पर मिलती है॥

हरिद्वार सहारनपुर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥≈)। लगता है॥

कपादवंज।

बी० बी० ऐंड सी आई० रेलवे के स्टेशन दकोर से २० मील उत्तर की तरफ़ एक क़सबा है जिस के गिरद पक्की दीवार बनी हुई है यह बड़े व्योपार की जगह है यहां साबन, शीशे और घी के वास्ते कुप्पे बन्ते हैं। शहर के अन्दर एक खूबसूरत हौज़

बनाहुआ है और पूर्वी दरवाजे के पास एक आरामगाह है। यहां मुसलमानों की मसजिदों और कबरों के खण्डर भी हैं और जैनियों का एक मन्दिर है जो २५ साल हुये १५०००० रुपये की लागत से बना था इस में संगमरमर के खूबसूरत पीलपाये हैं और फरश भी संगमरमर का है, जिस में पच्चरकारी की हुई है॥

दकोर और कपादवंज के बीच में लसुन्दरी के गर्म पानीके चश्मे हैं जिनकी जियादा से जियादा हरारत ११५ दरजे है पानी में किसी कदर गन्धक की मिलावट मालूम होती है और कहते हैं कि यहपानी शरीर की खलड़ी के रोगों को फायदा करता है॥

दकोर से कपादवंज को तांगे जाते हैं और कपादवंज में मुसा-फिरो के वास्ते कई धर्मशाला हैं॥

दकोर भी बड़ी तीर्थ की जगह है दूर २ से लोग यात्रा के लिये आते हैं यहां भी बहुत सी धर्मशाला हैं॥

दकोर बम्बई (कुलाबा) से ३८६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३७)॥ लगता है॥

कपालमोचन।

यह तीर्थ अम्बाले के पूर्व की तरफ नार्थ वेस्टर्न रेलवे के जगाधरी स्टेशन से ६ मील के फासले पर वाक़े है यहां कई पक्के ताल और मन्दिर हैं और कार्तिक के महीने में इस जगह एक ऋषि की यादगार में जिन्होंने कई आश्चर्य काम किये थे एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में दूर दूर से हजारों यात्री आते हैं इस जगह स्नान करने से बड़ा पुण्य होता है। यात्री लोग झोंपड़ियों में ठहरते हैं और बाजे अपने खेमे ले आते हैं कई एक मकान भी हैं पर इन को धनी लोग ले लेते हैं। कपालमोचन जाने के लिये जगाधरी में यक्के और बैलगाड़ियां मिलती हैं॥

जगाधरी दिल्ली से १३० मील है और तीसरे दरजे का किराया १॥)॥ है। अम्बाले से ३२ मील और तीसरे दरजे का किराया ।~) है

कपिला मुनी।

बंगाल अहाते के खुलना जिले में एक गांव है। कबदक दरिया के किनारे पर ताला से ५ या ६ मील नीचे वाक़े है। इस गांव का नाम एक महात्मा के नाम से कपिला मुनी मशहूर होगया है। यह महात्मा बड़ा कपिला नही थे जिन्हों ने राजा सागर के लड़कों को भस्म कर दिया था केवल एक तपस्वी थे। पुराने जमाने में इन महात्मा ने यहां अपना स्थान बनाकर कपलेश्वरी की मूर्ति रक्खी थी जिसकी आज तक पूजा होती है। इस देवी का मार्च के महीने में वारुनी स्नान के दिन बड़ा भारी मेला होता है॥

कहते हैं कि इस जगह पर उस दिन के वास्ते कबदक दरिया के पानी में कपिला मुनीजी के गुनों के सबबसे पवित्र करने को गंगा जी जैसे गुण होजाते हैं॥

इस गांव में पहुंचने के वास्ते ई० बी० ऐस रेलवे के सन्टरल सैकशन के झिकारगाछा स्टेशन जाना चाहिये और वहां से अगनबोट में कपिलमुनी पहुंचते हैं। झिकारगाछा कलकत्ते से ६७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥।~) है॥

होरमिल्लर कम्पनी के जहाज़ में झिकारगाछा स्टेशन से कपिल मुनी तक १) किराया लगता है॥

कपोलास।

उड़िसा की रियासत धेकानल में एक पहाड़ी है जो समुद्र से

२०१८ फीट ऊंची है। उस पहाड़ी का नाम कपिलास एक मन्दिर के सबब से होगया है जो इस की चोटी के पास वाके है फरवरी के महीने में यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में हजारों यात्री आते हैं। इस मौके पर बड़ा व्योपार होता है॥

इस जगह जाने के लिये बङ्गाल नागपुर रेल पर कलकत्ते से कपीलास रोड़ स्टेशन जाना चाहिये। कपीलास रोड कलकत्ते से२४४ मील है तीसरे दरजे का किराया३≈)लगता है। कपिलास रोड़स्टेशन पर गाड़ियां और पालकियाँ पहाड़ी को जाने के लिये मिलती हैं॥

कपूरथला।

सूबा पञ्जाब की रियासत कपूरथला की राजधानी और बड़ा नगर है नार्थवैस्टर्न रेलवे के स्टेशन जालन्धर शहर से ११ मील है और कर्तारपुर से ७॥ मील। जालन्धर और कर्तारपुर से कपूरथले तक पक्की सड़क गई है और यक्के सवारी के लिये मिलते हैं यक्के का किराया जालन्धर से ≡) आने से ।) या ।−) आने तक एक सवारी के लगते हैं। कपूरथले में महाराजा साहिब के कईसुन्दर बाग़ महिल और कोठियां हैं। इस नगर में फरवरी के महीने में चौकी का मेला लगता है जिस में हजारों लोग आते हैं॥

यक्के खाने के पास सराय है और नगर के अन्दर धर्मशालायें हैं॥

जालन्धर लाहौर से ८१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥≈)। लगता है॥

कमलापुरम।

मद्रास रेलवे की नार्थईस्ट लैन पर स्टेशन और मद्रास

~९१ से १७६ मील के फ़ासले पर है। मुसाफिर गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया १॥।~) और डाकगाड़ी में २।~) लगता है। इस जगह दूसरे दरजे के मजिस्टरेट की कचहरी है। यहां से ५ मील उत्तर पूर्व की तर्फ़ पुष्पागिरी में एक बड़ा मशहूर मन्दिर है॥

कम्पिल।

सूबा आगरा और अवध जिला फ़र्रुखाबाद, तहसील कायम गंज में गंगाजीके किनारे फ़तेहगढ़ नगर से २८ मील उत्तर पश्चिम की तरफ़ गांव है। महाभारत में लिखा है कि यह गांव दक्खिनी पंचाला में राजा द्रौपदा की राजधानी था इस राजा की पुत्री द्रौपदी की पांच भाई पाण्डव से बिवाह हुआ था। कहते हैं कि पुराना नगर कम्पिला ऋषि एक बनवासी ने बसाया था और द्रौपद राजा से पहले यहां ब्रह्मदत्त राज करता था। साल में दो मेले एक अक्तूबर नवम्बर में और दूसरा मार्च अपरैल में इस जगह होते हैं॥

इस नगर में थाना, डाकखाना और मदरसा भी है॥

काम्पिल में ठहरने की जगह कोई नहीं पर जैनी लोग मन्दिर के साथ के घरों में ठहरते हैं जैनी अब एक धर्मशाला भी बनारहे हैं॥

कायमगंज में स्टेशन से ३ फलांग के फासले पर बंगला है और नगर में एक सराय है और स्टेशन से दो मील के फासले पर एक धर्मशाला भी बन रही है। कायमगंज में चाकू, सरोते और ताले बनते हैं और यहां से संगतरे, तमाकू, आलू, शकरकन्दी, चाकू और ताले बाहर जाते हैं। कम्पिल से भी तमाकू बाहर जाती है॥

कायमगंज से कम्पिल जाने के लिये यक्के और बहलियां किराये पर मिलती हैं यक्के का मामूली किराया १) और बहली का ॥|) होता है पर मेले के दिनों में किराया बहुत बढ़जाता है॥

कायमगंज बी० बी० सी० आई रेलवे में कानपुर से १०४ मील है तीसरे दर्जे का किराया १~) लगता है॥

कम्बाकोनाम।

इस के माने हैं पानी के घड़े का मुंह। मद्रास से करीब १६६ मील के फासले पर जिला तंजोर में वाक़े है पिछले वक्तों में चोलाराज्य की राजधानी था और विद्या के वास्ते मशहूर था। यहां सब से बड़े मन्दिर का गोपरा २१ मंज़िल का है और १६० फुट ऊंचा है। शिवजी के मन्दिर को एक बड़ा अजीब मेहराबदार ३३० फिट लम्बा रस्ता जाता है जिस के दोनों तरफ दुकानें हैं। महामाहम के ताल के गिर्द सीढ़ियां और मन्दिर बने हुये हैं इन में एक बहुत बड़ा और पक्की इंटों का है। यहां बहुत से बड़े बड़े रथ हैं जिन को यात्राके दिन देवताको बीच में बिठाकर हजारों आदमी खैंचते हैं। कहते हैं कि बारहवेंसाल गंगा जी का पानी इस ताल में आजाता है उस मौके पर अनगिनत लोग इस में स्नान करते हैं॥

कम्बाको नाम जंकशन मद्रास से १९९ मील है तीसरे दर्जेका किराया २≶) है कम्बाको नाम में कई धर्मशाला हैं जिन में दो या तीन दिन तक लोग बिना किराये ठहर सक्ते हैं॥

किरांची।

सिन्ध के किराची जिले में बड़ा नगर, छावनी और बन्दर है। छावनी लाहौर से नार्थवैस्टर्न रेलवे के रस्ते ७८२ मील और शहर ७८४ मीलहै तीसरे दरजेका किराया ६≈)॥। और ६≶), लगताहै। बी० आई ऐस० एन कम्पनी और ऐस० ऐन० कम्पनी के अगनबोट

हफ़्ते में दो बार बम्बई से क्रांची को जाते हैं। डाक का अगनबोट क्रांची ३८ घण्टे में पहुंचता है ॥

यह नगर बड़े ब्योपार की जगह है । थोड़े बरसों से ब्योपार इतना बढ़गया है कि जहाज़ बनाने और ठहराने की जगह को बढ़ाना पड़ा । शहर और छावनी निरोगी जगह हैं क्योंकि समुद्र की हवा सदा आती रहती है । अपरैल और मई के महीनों में जियादा से जियादा गर्मी ६० दरजे होती है और दिसम्बर में कम से कम ५० दर्जे वर्षा साल में ७ इंच के करीब होती है । क्रांची के बड़े बड़े मकान अंग्रेज़ी ढंग के हैं वह यह हैं फ़रीरहाल जिस में पुस्तकशाला और अजायब घर हैं । नेपियर बारगें, गिर्जा, सिन्धक्लब, फरीमेसनों का हाल, सरकारी खज़ाना, डाकखाना, तारघर, मेकलोड स्टेशन, इमप्रैस मारकीट (बाजार) अस्पताल, बोलटन का मारकीट, मैस डेनसी हाल मियरवैदर घण्टाघर, बम्बई बैंक, सदर कचहरी और रोमन कैथलिक इसाइयों का बड़ा भारी गिर्जा, । वाटरवर्कस जो १८८२ में खोलागया ६ मील है ॥

किरांची में कई होटल और काफ़लेवालों के लिये एक सराय है॥

कराघदी ।

कराजपत्तई अहाता मद्रास में एक छोटा सा गांव है और मद्रास रेलवे का स्टेशन मद्रास शहर से १८८ मील है तीसरे दर्जे का किराया २।०) लगता है इस जगह राजा रामचन्द्रजी ने खरदूषण राक्षस को मारा था ॥

करईमदई ।

अहाता मद्रास के जिला कोयम्बाटोर सबडिविज़न कोयम्बाटोर में

में एक नगर है और मदरास रेलवे की साऊथ वस्टरन लैन पर मदरास से ३२३ मील के फासले पर एक स्टेशन है। मदरास से तीसरे दरजे का किराया ३।ॐ)। यहां विष्णु जी के मानने वालों का एक पगोड़ा है जो श्री रघुनाथ स्वामी देवता के नाम पर है। इस को मदरास अहाते के हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं। मार्च के महीने से रथयात्रा का बड़ा भारी मेला होता है जिसमें १२ हज़ार के क़रीब यात्री अहाते के सब हिस्सों से आते हैं॥

इस मन्दिर की बाबत कहते हैं कि एक ग्वाला राजा की गौये जंगल में चराया करता था उन में से एक गौ जिस का नाम कम्मे पसवन था चुपके से अलग हो जाती और अपना दूध जंगल में एक जगह डाल देती। राजा को एक दिन बड़ा क्रोध आया और यह समझकर कि ग्वाला निकाल लेता है। उसने ग्वाले को मारा दूसरे दिन ग्वाला गऊ को देखता रहा और जब वह चली तो उस के पीछे हो लिया और उस को दूध डालते हुए देखकर बहुत गुस्सा हुआ और अपनी कुल्हाड़ी जिस जगह गौ ने दूध डाला था मारी कुल्हाड़ी देवता के सिर पर लगी और लहू निकलने लगा और तलाओं का पानी लाल होगया ग्वला यह हाल देखकर कर डरा और बेहोश हो कर गिर पड़ा जब राजा ग्वाले को ढूंढता उस जगह आया और ग्वाले का हाल देखा देवता उस के सामने आया राजा ने उस जगह मन्दिर बनवा दिया यहां एक शिव जी का भी मन्दिर बड़ा सुन्दर है इस में चार पत्थर के हाथी रक्खे हैं॥

मेले की जगह स्टेशन से पाओ मील है बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। करईमदई में छै चतरम या धर्मशाला मुसाफ़िरों के आराम के लिये हैं॥

करेली ।

जी० आई० पी रेलवे का स्टेशन है। जबलपुर से ६३ मील और तीसरे दरजे का किराया ॥≫) है। स्टेशन पर पहले दूसरे दर्जे के मुसाफिरों के वास्ते वेटिंग रूम और स्टेशन के पास डाक बंगला और सरायें है। करेली से ६ मील सागर की सड़क पर बीरमान गांव में नवम्बर और दिसम्बर में या उन महीनों में कार्तिक सुदि पूर्णमा के मौक़े पर यात्री आते हैं और एक मेला होता है जिस को बीरमान मेला कहते हैं। यह मेला १५ दिन रहता है और इसमें व्योपार भी बहुत होता है। एक और मेला माल मण्डी का होता है जिस में व्योपारी और दूसरे लोग बहुत आते हैं॥

करतारपुर ।

पंजाब के जिला जलंधर में जलंधर शहर से ६ मील और लाहौर से ७२ मील के फ़ासले पर नार्थवेस्टर्न रेलवे पर एक नगर है। जलंधर से तीसरे दरजे का किराया ७ पैसे और लाहौर से ॥।-)॥ है सिक्ख मत के गुरु साहब यहां रहते हैं इस वास्ते सिक्ख लोग इस नगर को बहुत पवित्र मानते हैं इस जगह की ज़मीन गुरु रामदास को जहांगीर बादशाह से मिली थी और उसके बेटे गुरु अर्जुन ने इस नगर को १५८८ ई० में बसाया था जब अर्जुन यहां आए और अपनी कुटिया बनाने लगे तो एक भूत ने जो एक दरख्त में रहता था उनको लकड़ी न काटने दी जब तक उस ने बचन न ले लिया कि उस को कोई दिक़ न करेगा बलकि उसकी पूजा हुआ करेगा॥

अपरैल के महीने में हर साल बैसाखी का बड़ा भारी [illegible] होता है इस मौक़े पर हजारों लोग आते हैं॥

शहर में एक धर्मशाला है और बाहर सड़क के ऊपर डाकखाने और थाने के सामने एक सराय है। सवारी मिलती है जालन्धर को भी यक्के रात दिन चलते हैं॥

करतारपुर में अंग्रेजी मिडल स्कूल भी है॥

करतवा सत्यमुनी।

सूबा ईस्टर्न बंगाल और आसाम में जलपईगुरी से २४ मील दक्षिण की तरफ एक नदी है जो बोगूले के पास जाकर हलहल्या नदी में मिल जाती है। हिन्दुओं के ख्याल में इस नदी में स्नान करने से अश्वमेध के बराबर पुण्य होता है। कहते हैं इस नदी को शिवजी की स्त्री पारबती ने बनाया था। यात्री लोग इस नदी को चिलहटी या हलदीबाड़ी के स्टेशन से जाते हैं जहां से फासला १२ मील है और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिल सकती हैं॥

स्नानघाट के पास कोई सराय या धर्मशाला नहीं और यात्री लोग महाराजा कूचबिहार की बनवाई हुई झोपड़ियों में ठहरते हैं॥

चीलहटी और हलदीबाड़ी ईस्टर्न बंगाल रेलवे के स्टेशन हैं पहला कलकत्ते से २८५ मील है और दूसरा २६२ मील। तीसरे दर्जे का किराया ३॥≈)॥ और ३॥)॥। लगता है॥

करनाल।

एक पुराना शहर दिल्ली अम्बाला कालका रेलवे पर कलकत्ते से ९७९ मील, दिल्ली से ७६ मील और अम्बाला छावनी से ४७ मील के फासले पर वाके है और जिला करनाल का सिविल सदरमुकाम है। इस को राजा करना ने जो पाण्डों और कौरों में कुरुक्षेत्र की बड़ी भारी लड़ाई में कौरों का मददगार था इस शहर को बसाया था इसी शहर

में ईरान के बादशाह नादिरशाह ने मुगल बादशाह महम्मद शाह को १७५६ ई० में शिकस्त दी थी बाद में यह शहर राजा जींद और मरहट्टों के हाथ में आया फिर मरहट्टोंको लदवा के राजा गुरदित्तसिंह ने निकाल दिया। १८०५ में राजा गुरदित्तसिंह से सर्कार अंगरेज़ी ने ज़ब्त कर लिया। किला जो कई साल तक छावनी के काम में आता रहा अब स्कूलकेकाममें आताहै। काबुलका मशहूर अमीर दोस्तमहम्मद खां कलकत्ते जाते हुए,१८४० में यहां ६ महीने नजरबन्द रहा था॥

१९०१ में करनाल की आबादी १४९०६ हिन्दू, ८३६७ मुसलमान और २८३ ईसाई वगैरा थे। जिले की पैदावारी का व्योपार होता है देशी कपड़े, कम्बल और बूट भी यहांबहुत बनते थे अब पहले से कम बनते हैं। कर्नाल में सर्कारी घोड़े पाले जाते थे अब वहां से स्टड उठा लिया गया है॥

शहर में मुसाफ़रों के लिये कई सरायें हैं। यक्के बग्घियां सवारी के लिये हर वक्त मिलते हैं॥

कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया ९=) है॥

कर्णगढ़।

अहाता बंगाल जिला भागलपुर में भागलपुर नगर के पास पहाड़ी है जिसपर शिवजी के कई मन्दिर हैं इन में ४ मठ हैं कार्तिक महीने के पिछले दिन बहुत लोग यात्रा के लिये आते हैं। मन्दिर में महादेवजी या शिवजी के कई आसन हैं इन में से एक जबलपुर के पास से नर्बदा दरिया से पत्थर लाकर बनाया गया है और इस सबब से लोग औरों से इस को अच्छा जानते हैं। इस जगह का नाम राजा कर्ण के नाम पर है जो ब्राह्मणों को बहुत दान पुण्य करता था लोग इस जगह को राजा कर्ण के महल की जगह कहते हैं।

स्टेशन के पास ३ धर्मशाला हैं एक जैनियों की जिस को अज़ीमगज के रायधनपतिसिंह बहादुर ने बनाया है इस में २०० लोग ठहर सके हैं, दूसरी तोरमल की जिस में १८० आदमी ठहर सके हैं और तीसरी भदरमल का यह धर्मशाला टेशन से ६०० गज़ के फ़ासले पर है और उस में ३०० आदमी ठहर सके हैं।

भागलपुर ईस्टइण्डियन रेलवे में कलकत्ते से २६५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३) है

कर्ण प्रयाग।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला गढ़वाल में एक गांव है और पिंडर और अलक नन्दा के संगम पर वाक़े है। हिमांचल जाने वाले यात्रियों के लिये पांच ठहरने वाली पवित्र जगहों में से एक बड़ा मन्दिर शिवजी की स्त्री उमा का है। कहते हैं कि इस को धर्म के सुधारने वाले शंकराचार्य ने नौवीं सदी ई० में नए सिरेसे बनाया था। पिंडर दरिया पर लोहे का पुल बना हुआ है॥

कर्ण प्रयाग में धर्मशाला हैं और खाने पीनेकी वस्तू मिल जाती हैं॥

हरिद्वार से भी कर्ण प्रयाग जाते हैं हरिद्वार में टट्टू और झम्पान सवारी के लिये किराये पर मिलते हैं॥

हरिद्वार कलकत्ते से ६२१ मील और सहारनपूर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥।~) और ॥~)। लगता है॥

करंज तीर्थ।

इलाक़ा बरार ज़िला अकोला में वाक़े है। बम्बई से बदनेरा जकशन और वहां से अमरावती जाते हैं बम्बई से अमरावती ४१६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।~)। है। कौरंज ऋषि जी अपने पूर्व जन्म के पापों से तकलीफ़ पा रहे थे उन्होंने इसी

जगह तपस्या की थी और देवी ने बर दिया तो पापों से मुक्ति हुई इस लिये हिन्दुओं के नज़दीक यह बडा पवित्र तीर्थ है यहां पर नीले रंग का महादेव जी का मन्दिर है और भी कई प्राचीन मन्दिर हैं कहते हैं कि जिस किसी को आसेब हो मन्दिर के ताक़ों में सिर रखने से दूर होजाता है ॥

तांगे और बैल गाड़ियां सवारी के लिये अमरावती में किराये पर मिलती हैं ॥

करंजेमें एक बंगला और बड़ी भारी और अच्छी धर्मशाला है ॥

कलानौर ।

सूबा पंजाब के ज़िला गुर्दासपुर में गुर्दासपुर शहर से १७ मील दक्खिन की तरफ़ एक नगर है। चौथवीं, पंदरहवीं और सोलवीं सदी ई० में यह नगर बड़ी रौनक़ पर था। इसी जगह अकबर को उस के बाप के मरनेकी खबर मिली थी और इसी जगह वह गद्दी पर बैठा था॥

मार्च के महीने में शिवरात्री तेहवार को यहां दो दिन तक मेला होता है जिस में ५ हज़ार लोग आते हैं ॥

यह नगर नार्थवैस्टर्न रेलवे के बटाला स्टेशन से १० मील है बटाले में यक्के सवारी के लिये मिलते हैं ॥

बटाला अमृतसर से अमृतसर पठानकोट लाइन पर २४ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥ लगता है ॥

कलानौर में देशी लोगों के ठिकने के लिये एक सराय है।

कलकत्ता ।

हिन्दुस्तान की राजधानी और सब से बड़ा तिजारती शहर हुगली दरिया पर बम्बई से जी० आई० पी और बङ्गाल नागपुर के

लिघाट—कलकत्त

रस्ते १२२१ मील और मुसाफिर गाड़ीमें तीसरे दरजेका किराया२॥।=) और जी०आई० पी० ईस्ट इण्डियन रेलवे के रास्ते १३४१ मील और तीसरे दरजेका किराया १२=) है। यहां हिन्दुस्तानकी कई रेलें मिलतीहैं॥

शिवजी की स्त्री और मशहूर देवी काली माई के मन्दिर काली घाट के सबब इस शहर का नाम कलकत्ता होगयाहै। मन्दिर शहरके दक्षिण में वाक़े है। बहुत पुराने जमाने में इर्द गिर्द का देश कालीक्षेत्र या काली का मैदान कहलाता था यह मन्दिर ३०० साल का है॥

काली को लोग देवी या महादेवी कहते हैं। पर उस के दुर्गा चण्डिका और भैरवी भी नाम हैं। काली की मूर्त्ति के चार हाथ हैं एक में तलवार है और एक हाथ में राक्षस का शिर है जिसको उस ने मारा है और दो हाथों से अपने सेवकों को हौंसला देती है कानों में बालियों की जगह दो लोथें और गले में खोपड़ियों की माला पहने हुए हैं कपड़े की जगह मरे हुए आदमियों के हाथों का कमर-बन्ध है और जीभ बाहिर निकली हुई है। एक लात अपने पति की रान पर और दूसरी उसकी छाती पर रक्खे खड़ी है। राक्षस को मारने के बाद खुशी में आकर ऐसे जोर शोर से नाची कि धरती कांपने लगी, देवताओं के कहने से शिवजीने उसे रोका पर जोश के सबब से काली ने उस की परवाह न की और वह मुरदों में लेट गया। काली नाचती रही आखिर उस की नजर अपने पति पर पड़ी और उसने शरमिन्दगी से जीभ बाहिर निकाल दी॥

कालिका पुराण से मालूम होता है कि मृग, गैण्डा और आदमी की भेट देवी को बहुत पसन्द है और भेट देनेवाले के शरीरसे खून लेना देवी के लिये बहुतही अच्छा बल है॥

इस मन्दिर के असूले की बाबत कहा जाता है कि पार्वती के बापदादा ने एक यज्ञ किया और शिवजी को उस में न बुलाया।

पार्वती को यह हलकापन बुरा मालूम हुआ और उसने योग की अग्नि से अपना शरीर भस्म किया। शिव जी को बड़ा रंज हुआ और पार्वती की लोथ को कन्धे पर डालकर सारी धरती पर फिरने लगे जिस से बड़ी हलचल मचगई। लोगों ने तंग आकर विष्णु से अर्जकी उस ने अपना चक्कर हवा में फेंका और पार्वती की लोथ के ५० टुकड़े होगये जहां जहां वह टुकड़े गिरे एक मन्दिर बन गया। कहते हैं कि कालीघाट में देवी की बायें पावों की दूसरी अंगुली है॥

यात्री काली घाट साल भर आते रहते हैं पर शिवजी या दुर्गा के तेहवारों के दिन अनगिनत लोग जमा होते हैं। जिन लोगों के बच्चे न होते हों या जो लोग किसी कष्ट में हों काली के पास बचन करते हैं कि अगर उन के लड़का हो या कष्ट दूर होजाये तो उसको बकरा चढ़ायेंगे॥

शहर कलकत्ता हुगली के पूर्वी किनारे पर कई मील तक फैला हुआ है और समुद्र से ८० मील है। हौड़ा जिसे में कलें और कारखाने हैं, शिवपुर जहां इंजनीयरोंका गवर्नमेण्ट कालिज और नबाताती बाग है शहर के सामने दरिया के दूसरे किनारे पर है॥

पहिले पहिल कलकत्ते का जिकर सन् १५६६ ई० में अकबर के जमाने में पाया जाता है और उस के सौ साल के बाद ईस्टइण्डिया कम्पनी ने यहां कोठियां बनाकर इस को अपना सदरमुकाम बनाया।

पुराना किला फोर्ट विलियम १७०० ई० में मदरास अहातेके मातहत बना था, जो फोर्टविलयम अब मौजूद है इस को कलाइव ने सन् १७५७ ई० में शुरू करके सन् १७७३ ई० में ३००००००० रुपये की लागत से खतम किया॥

सन् १७५६ ई० में बंगाल का नवाब सिराजउद्दौला अंग्रेज्जों की बस्ती पर जा पड़ा और १४६ आदमियों को पकड़ कर एक छोटे से कमरे में बन्द कर दिया इन में से २३ आदमी सबेरे जीते
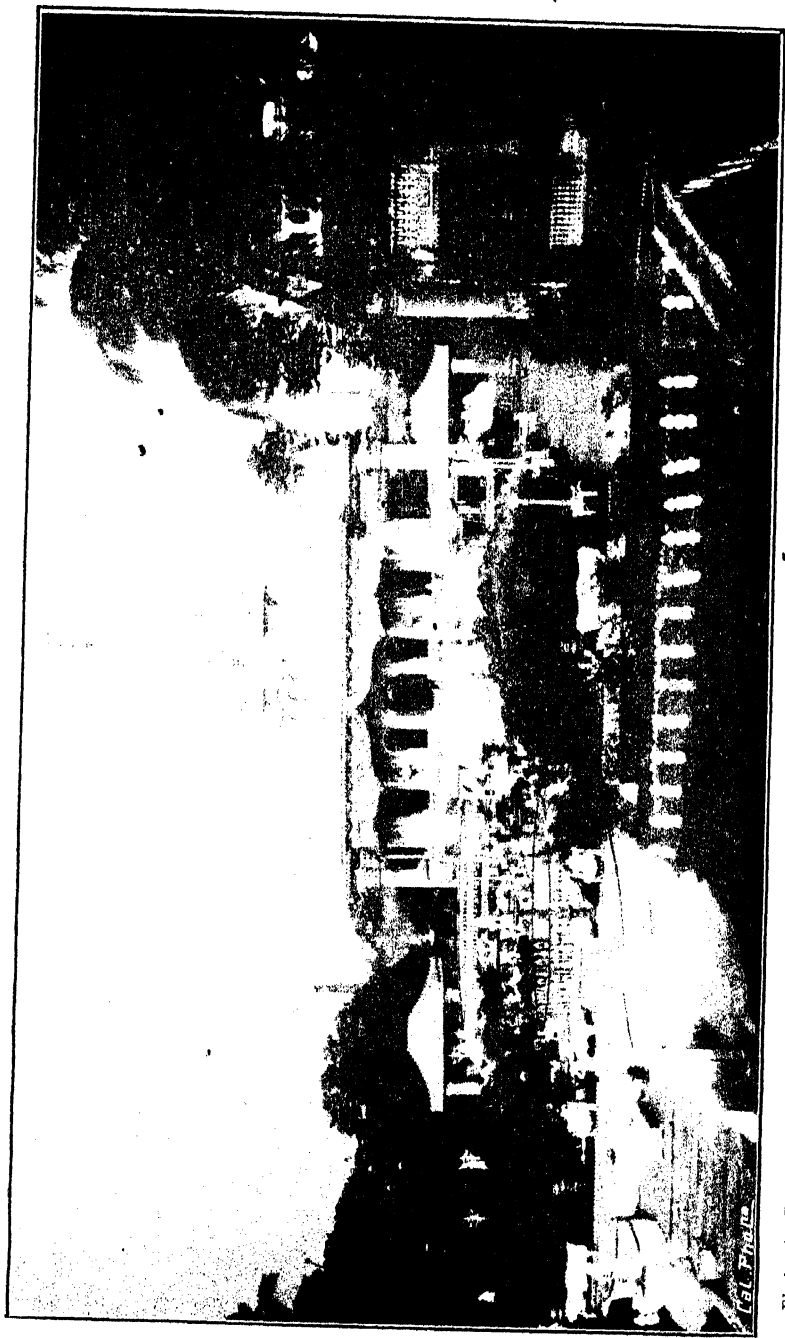
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

जैनियों का मन्दिर कलकत्ता।

निकले। तारीख में वह कमरा ब्लैक होल के नाम से मशहूर है। सन् १७५७ ई० में क्लाइव ने नवाब को भगाकर कलकत्ते पर कबजा कर लिया और अंग्रेजी राज की नींव रक्खी॥

देखने के काबिल और जगह यह हैं। शाही टकसाल स्टरैंड में, नबाताती बाग शिवपुर में, चिड़ियाघर अलीपुर में, अदनबाग और अख़तर लोनी का मीनार मैदान में अजायब घर और ऐशियाटिक इन्सटीटयूशन चौरंगी में, तारघर, डाकखाना, मेटकाफहाल, सेंटपाल का गिर्जा, हाईकोर्ट, गवर्नमेण्ट हाऊस, जैनियों का मन्दिर, टाऊन हाल खिदर बाजार की तरफ तीन मील पर एक और मन्दिर है जिस को भुई कैलाश कहते हैं। इस में शिवजी का लिंग है। शिवरात्री के तेहवौर को यहां एक मेला होता है जिस में हजारों यात्री आते हैं॥

कलकत्ते में बेशुमार अंग्रेज़ और देसी बड़े बड़े सौदागरों की कोठियां हैं॥

कलकत्ते में देसी मुसाफिरों के वास्ते जो सराय और धर्मशाला हैं नीचे लिखी जाती हैं॥

(१) हौड़ा स्टेशन के पास राजा शिवबख़श बगला की धर्म्म शाला जहां खाने को मिल सक्ता है॥

(२) बड़ा बाज़ार नम्बर ६ शामा बाई लेन में बाबू मोतीचन्द नखत की बिना किराये धर्मशाला हिन्दू और जैनियों के वास्ते॥

(३) मल्लिक स्टरीट में नम्बर ३,४,५ राजा सुर्जनमल की बिना किराये धर्मशाला है॥

(४) नम्बर ५०५१ ताराचन्ददत्त स्टरीट में मसजिद के पास हाजी शेख बख़्श इलाही का मुसलमानों के वास्ते बिना किराये मुसाफिर खाना॥

कल्यान ।

जी० आई० पी० रेलवे की नार्थ ईस्ट और साऊथ ईस्ट लैनों का जंकशन है बम्बई से ३४ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ।≥) है ॥

स्टेशन पर वेटिंग रूम और रीफरेशमेंट रूम बने हुए हैं और स्टेशन के पासही देसी मुसाफिरों के लिये एक धर्मशाला है कल्यान तलके का मामलतदार यहां रहता है सबजज की कचहरी भी है यहां एक खूबसूरत खाडी है किश्ती की सैर और मच्छी के शिकार के लिये बहुत अच्छी है । और मुसलमानों का एक मेला जिसको बन्द्र का मेला कहते हैं हर साल मई के महीने में स्टेशन से एक मील के फासले पर होता है यहां पर ईंटों और खपरेलों के भट्टे और पास पत्थर की खानें हैं । कल्यान से अम्बर नाथ जो हिन्दूओं की बड़ी तीर्थ की जगह है ४ मील है ॥

रुकमनीबाई का हसपताल जिस में सर्कार की तरफ से डाक्टर रहते हैं स्टेशन के पास है ॥

कलयान बड़ा पुराना बन्दर गाह है । स्टेशन पर तांगे और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

कसूर ।

पंजाब के जिला लाहौर, तहसील कसूर में नगर और म्यूनि-सिपैलिटी है और नार्थवैस्टर्न रेलवे (पंजाब लैन) की लाहौर फीरोज़पुर शाख पर लाहौर से ४२ मील है । लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ॥) है । कहते हैं कि इस नगर को रामचन्द्र जी के पुत्र कुश ने बसाया था अब यह नगर लाहौर के सिवा जिले में सब से बड़ा है बड़े बाज़ारों में ईंटों का फर्श लगा है और उस के बीच में और इधर उधर नालियां गन्द। पानी बाहर जाने के वास्ते बनी है

पुलिस भी इन्तज़ाम के वास्ते काफ़ी है। कसूर, चमड़े के काम के लिये बहुत मशहूर है, काठियां, देसी जूतियां और लुंगियां अच्छी बनती हैं। मेथी खरबूज़े और मिट्टी के बर्तन अच्छे होते हैं और अनाज का व्योपार होता है॥

कसूर के इर्द गिर्द यह मेले होते हैं।

(१) इमामशाह का मेला जो कसूर से ३ मील पर फ़र्वरी के महीने की १४ तारीख के क़रीब होता है इस मेले में २ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

(२) बुल्लेशाह का मेला कसूर से ७ मील पर अगस्त के अख़ीर में होता है, ३ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

(३) बसंत का मेला फ़र्वरी की १२ या १३ के क़रीब सदर दिवान की ख़ानगाह पर होता है जिस में ५ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं।

(४) चक्कियांवाली में होली मार्च के आख़ीर में होती है जिस में ७ हज़ार के क़रीब लोग होते हैं॥

(५) माड़ी में चेत्र चौदस का मेला मार्च के आख़ीर में होता है ३ हज़ार लोग आते हैं॥

(६) घड़ियाले में शेरशाह का मेला अपरैल में होता है ५ हज़ार आदमी आते हैं॥

(७) खेमकर्न में शाह शम्मस का अगस्त में मेला होता है ७ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

(८) शाह शम्मन का मेला राओखां वाले से ४ मील पर अपरैल के महीने में होता है यह मेला सब मेलों से बड़ा है और इसमें ६ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

यह सब मेले एक दिन रहते हैं और इन में हिन्दू और मुसलमान दोनों आते हैं॥

शाह थम्मन और कसूर के सिवा किसी मेले की जगह सराये या धर्मशाला नहीं, कसूर में सवारी के लिये थके मिलते हैं॥

खटमंडू।

रियासत नीपाल की राजधानी है और एक घाटी में समुद्र से ४५०० फ़ीट की ऊंचाई पर वाक़े है। शहर के बीच में राजा के महल के पास एक पुरानी इमारत है जिस के सबब इस शहर का नाम खटमंडू हो गया है। महल के सामने अहाते में बहुत से छोटे छोटे मन्दिर हैं जिन में से बाज़े कई मंज़िल ऊंचे हैं और उन में सुनहरी और बेल बूटे का बहुत काम किया हुआ है॥

मछिन्द्रनाथ नीपाल का सरपरस्त देवता ख़याल किया जाता है। कहते हैं कि एक दफ़ा नीपाल में १२ साल तक वर्षा न हुई जिस से मुलक के तबाह होजाने का डर हुआ सो नरिन्द्रदास ३४७ ई० के क़रीब आसाम में एक बुध महा पुरुष को बुलाने गया। उसका आदर करने के लिये ब्रह्मा ने सड़क पर झाड़ू दिया और वेदों से श्लोक पढ़े, संख बजाया विष्णुमहादेव जी ने सड़क पर पानी छिड़का, इंद्र ने छाता पकड़ा, यमाने धूप जलाई, कुबेरने धन लुटाया अग्निने चांदना किया वायू ने झंडा पकड़ा और ईशान ने प्रेतों को डराया इस महात्मा के आने पर बहुत पानी पड़ा और मुलक काल से बच गया॥

इस महात्मा के आने की यादगार में राजा नरिन्द्र दास ने एक मन्दिर बनाकर उसका नाम मछिन्द्रनाथ रक्खा और एक सालाना मेला भी क़ायम किया जो अब तक मुलक के सब तेहवारों से बड़ा माना जाता है। मेले के आख़री दिन मछिन्द्रनाथ की कमली झाड़ कर लोगों को दिखाई जाती है कि वह तुम्हारे पास से कुछ नहीं लिये जाता, ग़रीबी में है पर राज़ी है॥

खण्डवा ।

जी० आई० पी० रेलवे का जंकशन और नीमर जिलेका सिवल स्टेशन है। बम्बई से जी० आई० पी० रेल में ३५३ और दिल्ली से ६०४ मील है तीसरे दर्जे का किराया सवारी गाड़ी में दोनों जगह से ३॥=) और ५।) है। आर० एम० आर रेल का यहां जंकशन है। स्टेसन पर वेटिंग रूम याने मुसाफिरखाने बने हुए हैं और पास एक सराए है जो स्टेशन से दिखाई देती है दूर के मुसाफिरों के लिये आराम करने की यह बहुत अच्छी जगह है तूलजा भैवानी का मेला यहां से ४ मील के फासलेपर हर साल जनवरी और फरवरीके महीनों में होता है जिसमें १० हजार के करीब लोग जमा होते हैं, ओंकार मंधाटा मन्दिर को जाने वालों को आर० एम आर० रेलवे के सनावद स्टेशन पर उतरना चाहिये यह स्टेशन खांडवा से ३४ मील और तीसरे दर्जे का किराया।-)॥ और अजमेर से ३५६ मील और तीसरे दर्जे का किराया ३।-) हैं। ओंकार मंधाटा मन्दिर यहां से ५० मील है यात्रियों की सवारी के लिये बैलगाड़ियां मिल सकती हैं। यह पवित्र स्थान नर्वदा दरिया के बीच में वाके है शिवजी के बेशुमार मन्दिर निहायत पवित्र और पुराने समझे जाते हैं बाज इन में से बनावट और तारीख के लिहाज से बहुत मशहूर हैं॥

स्वर्गवासी रिचर्ड टेम्पल साहब लिखते हैं कि नर्वदा भयानक जंगलों से निकलकर यहां फिर खूबसूरत बन जाता है। बड़े ज़ोर शोर से चटानों पर गिरकर फिर चुपचाप ऊंची ऊंची पहाड़ियों के नीचे से होताहुआ ओंकार मंधाटा के पवित्र टापू के गिर्द जिसपर मन्दिर और पुजारियों के घर बने हुए हैं बहता है यहां फिर दर्या में गहरे गहरे गढे हैं जिन में से सारे मकान और पहाड़ियां नज़र आती हैं और यहां पर अकसर मेले होते रहते हैं जो जगह की खूबसूरती को और बढाते

हैं। पहले ज़माने में यात्री अपने आप को चिट्टानों की चोटियों से गिराया करते थे कि नर्मदा में मरकर मुक्ति पावें ॥

खंडवा बड़े व्योपार की जगह है यहां कई रुई निकालने और दबाने के कारखाने हैं। स्टेशन से ४ मील मोघट मकान पर वाटर वर्कस यानी पानी का कारखाना है जहां से शहर में पानी आता है॥

ग्वालियर ।

रियासत ग्वालियर की राजधानी और महाराजा सिन्धिया के रहने की जगह है जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ७८८ और दिल्ली से १९५ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १०।≈) और २॥-) है और सवारी गाड़ी में ८॥≋) और २।-) हैं ॥

गवालियर की तीन बातें बड़ी अजीब हैं पहिले यह जैनियों की सब से पुरानी यात्रा की जगह है दूसरे हिन्दुओं के अच्छे से अच्छे समय के सुन्दर महलों के नमूने मौजूद हैं तीसरे हिन्दुस्तान देश के सब से बुद्धिमान राजा की राजधानी किले में है ॥

यहां दो अनूठे मन्दिर हैं एक सास बहू का मन्दिर जो पद्मनाथ छठे तीर्थंकर के नाम है से। कहते हैं कि यह अंग्रेज़ी सम्बत् १०९३ के करीब बनाया गया था अब इसका डेउढ़ी बाकी है जो १०२ फीट लम्बी और ६३ फीट चौड़ी है और पूजा की जगह और उसके सिकरे की सिरफ नीव है डेउढ़ी तीन मंजिल ऊंची है पर उसकी छत टूट गई है दीवारों पर फूलों, पशुओं और मनुष्यों की मूर्ति बनी हैं बीच का कमरा ३० फीट लम्बा चौड़ा है और उस के अन्दिर चार बड़े २ पीलपावे हैं जिन पर छत टिकी हुई है छत पर बड़ा सुन्दर बेल बूटे का काम किया हुआ है ॥

दूसरा मन्दिर जो गवालियर के किले में है तेली का मन्दिर कहलाता है। कहते हैं कि उसको एक धनवान तेली ने बनाया था यह मन्दिर ६० फीट लम्बा चौड़ा है और पूर्व की तर्फ ड्योढ़ी है पहले यह मन्दिर विष्णु का मन्दिर था पर पीछे इस को शिव जी की पुजा के लिये बना लिया, यह मन्दिर दस या ग्यारह सदी ई० में बना था॥

गवालियर में जैनियों ने चट्टान के इर्द गिर्द काट कर अनूठी, मूर्तियां बनाई हुई हैं जिन में ५७ फीट ऊंची से मामूली आदमी के कद की मूर्तियां हैं पर उन में से बहुत सी आदिनाथ पहले तीर्थंकर की हैं पास चौकी पर बैल बैठे हुए हैं। नेमीनाथ की मूर्ति ३० फीट ऊंची है और उस के पास संख है। बड़ी अचम्भे की बात यह है कि यह सब ३३ वर्ष में खोदी गई थीं॥

मानसिंह का बनायाहुआ महल हिन्दुओं के काम का अच्छा और मनभावना नमूना है, बाहर से यह महल ३०० फीट लम्बा और १६० फीट चौड़ा है और पूर्व की तर्फ से १०० फीट ऊंचाहै, इसकी दो मन-ज़िल धरती के नीचे हैं इस के हर एक रुख पर ऊंचे २ सुन्दर बुरज बने हैं और उन पर सोने की झाल फिरी हुई है तांबे के गुम्बज हैं यह और विक्रमाजीत, जहांगीर और शाहजहान के बनाए हुए महल मिल कर एक भुराड बनगया है जो सुन्दरताई में सेंटरल इण्डिया में सब से बढ़कर है॥

अंग्रेजी ऊनी रेशमी और सूती कपड़े, लोहे के चाकू, कशमीरी दोशाले, लंका के हीरे मोती बाहर से आते हैं और सोना, चांदी, पारा तांबा, कलई, जस्त और अफीम बाहर जाती हैं॥

गया या बुद्ध गया ।

गया जिले का सदरमुकाम है। यहां पटना गया रेलवे खतम होती है, यह जगह कलकत्ते से २६२ मीलहै तीसरे दरजे का किराया ३)॥ लगता है। यह शहर बड़ा पुराना और मशहूर है और पहले बुद्ध लोगों का नगर था। उनका बड़ा मन्दिर बुद्ध गया में स्टेशन से ७ मील के फासले पर अबतक मौजूद है और उस में बुद्ध की बड़ी खूबसूरत मूर्ति और बहुत से बुद्ध पुजारी हैं। गया के मन्दिर अब ब्राह्मणों के हाथ में हैं और हिन्दू लोग इस जगह श्राद्ध करने आते हैं॥

गढ़दीवाला ।

पंजाब के जिला और तहसील हुश्यारपुर में एक नगर है जो शकर की बड़ी व्योपार की जगह है, यहां देवी का मार्च और सितम्बर में बड़ाभारी मेला होता है, जिस में हजारों लोग आते हैं यहां एक धर्मशाला हैं यक्के और टट्टू हुश्यारपुर से गढ़दीवाले तक मिलते हैं॥

गढ़दीवाला जाने को अच्छा स्टेशन जालन्धर है जहां सवारी मिल जाती है जालन्धर लाहौर से नार्थवैस्टर्न रेलवे में ८१ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥।≈)। लगता है॥

गढ़मुक्तेश्वर ।

अवध रोहेलखण्ड रेलवे की गाजीयाबाद मुरादाबाद शाख पर मेरठ से २६ मील एक पुराना नगर गंगाजी के दाहने किनारे पर है। असल में यह नगर हस्तनापुर (जो भगवतपुराण और महा भारत में मशहूर है) का एक मुहल्ला था इसका नाम गङ्गादेवी

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

बुद्ध—गया।
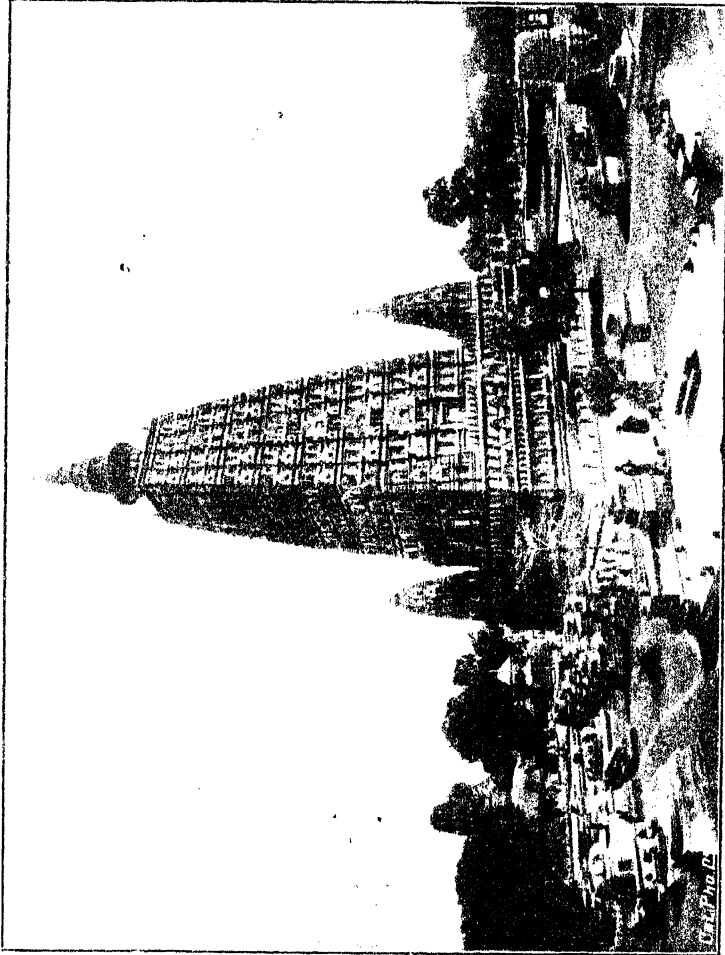
मुकतेश्वर महादेव के नाम से बना है इस मन्दिर में चार जुदे २ स्थान हैं दो पहाड़ी की चोटी के ऊपर और दो नीचे, पास ही ८० सतीयों के लाठ है। कातिक में पूरे चांद के मौक़े पर यहां स्नान का मेला होता है जिस में २ लाख के क़रीब लोग आते हैं। यहां ज्यादा ब्राह्मन रहते हैं॥

यांह लकड़ी और बांस के सिवाय जो डेहरादून और गढ़वाल से गंगाजी के रसते आता है और कोई व्योपार नहीं॥

गढ़मुक्तेश्वर दिल्ली से ५४ मील और तीसरे दरजे का किराया ॥।) है॥

गारबेड़ा।

बङ्गाल नागपुर रेलवे की शाख मिदनापुर झेरिया पर एक स्टेशन है॥

यहां पर सर्बा मंगला और कंगेश्वर शिवजी के बडे ऊचे और पुराने मन्दिर हैं पर यह मालूम नहीं कि कब और किस ने यह मन्दिर बनाए थे, रायकोट में राजा तेजचन्द के महिल के खण्डर हैं अब क़िले का भी काम देते हैं। यहां सोलवहीं या १७ सदी ई० के बने हुए ७ बड़े २ ताल हैं और हर एक के बीच में एक २ मन्दिर है जिन में से शिवजी का मन्दिर सबसे ऊंचा है, इन मन्दिरों में पूजा का खर्च नया ग्राम बंश के लोग देते हैं। स्टेशन से ३ मील के फ़ासले पर एक बंगला है जिस में एक रुपया रोज़ किराया लगता है॥

गारबेडा कलकत्ते से १११ मील है और तीसरे दरजे का किराया १।≈)। है॥

गिरोट।

सूबा पंजाब के ज़िला शाहपुर तहसील खुशाब में गांव है

और इस को सब से नज़दीक खुशाब और हदाली स्टेशन है जो नार्थवैस्टर्न रेलवे (पंजाब लैन) की लाला मूस्सा शेरशाह शाख पर वाक़े हैं, हदाली लाहौर से १६६ मील है और खुशाब १८७ मील तीसरे दरजे का किराया २।)॥। और २=) है ॥

अपरैल के महीने में बैशाखी के मौक़े पर यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में ४००० के क़रीब लोग आते हैं। यह मेला एक दिन रहता है। रमज़ान के महीने में एक मुसलमान पीर मुहम्मद अमाल का मेला होता है इस में भी बहुत लोग खुशाब, शाहपुर साहीवाल और और इर्द गिर्द के गाओं से आते हैं ॥

इस गांव में हिन्दुओं के लिये दो धर्मशाला और मुसलमानो के लिये एक दारा और कई मसजिदें हैं ॥

हदाली में सवारी के लिये ऊंट मिलते हैं ॥

गिरनार पर्ब्बत।

शत्रुंजयापर्बत के बाद गिरनार पर्बत को जैनी लोग बहुत पवित्र मानते हैं। यह पर्वत काठियावार में जूनागाढ़ नगर से १० मील पूर्व की ओर है। पहाड़ी पर चढ़ते हुए रस्ते में ६ विश्राम के स्थान आते हैं, पहाड़ी की पहली चोटी पर अम्बा माता का मन्दिर है यहां नए बियाहे लोग बहुत आते है दूल्हा और दुल्हन के कपड़े बांधे होते हैं और नाते के लोग साथ होते हैं, देवी को नारयल और और चढ़ावे चढ़ाते हैं और विनती करते हैं कि जोड़ा सदा सुखी रहे ॥

सब से ऊपर की चोटी से ६०० फ़ीट नीचे क़िले का डौल का मन्दिरों का झुण्ड है जिन में से सब से बड़ा और सब से पुराना नेमिनाथ का मन्दिर है। यह मन्दिर एक अंगन में बना है और १९५ फ़ीट लम्बा और १३० फ़ीट चौड़ा है। आंगन के गिर्द ७० मठ हैं जिन

के आगे छत वाला रस्ता बना है इन सारे मठों में नेमिनाथ की एक एक मूर्ती रक्खी है॥

जूनागढ़ गिरनार पर्वत के नीचे बसा हुआ है और भाव नगर गोंडाल जूनागढ़ पोरबंदर रेलवे पर स्टेशनहै बम्बई से इसका फासला वीरम गाम, बधवान् और जलालसर जंकशनों के रस्ते ५५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ७।≈) और सवारी गाड़ीमें ५॥।≈) लगता है॥

जूनागढ़ में एक डाक बंगला है और स्टेशन पर वेटिंग रूम याने गाड़ी के इन्तज़ार करनेका कमराहै। जूनागढ़ स्टेशन से गिरनार पर्वत पर जाने के लिये डोलियां, बैलगाड़ियां और तांगे मिलते हैं॥

गुजरात।

सूबा पंजाब के जिला गुजरात का हेड कुआर्टर और नार्थ वेस्टरन रेलवे की बड़ी लाय्न पर लाहौर से ७० मील है। लाहौर से तीसरे दरजे का किराया ॥।-) लगता है। इस शहर में एक मुसलमान पीर शाहदौला शाह का बड़ा मशहूर माजार है सिक्खों की दूसरी लड़ाई के सबब भी यह नगर काबिल यादगार है इस लड़ाई से सारा पंजाब अंग्रेजों के कबजे में आगया॥

हाड़ के महीने में यहां शाह जहांगीर साहब का मेला होता है जिस में इर्द गिर्द गांओं से ३ हज़ार के करीब लोग आते हैं॥

गुजरातमें पुराने मुकाम देखने के लायक यहहैं, शाही हम्माम, एक शाही बड़ा कुआं जिस में पानी तक सीढ़ियां बनी हुई हैं और शाहदौला पीर का माज़ार। यहां बहुत मुसलमानों की मसजिदें हिन्दुओं के मन्दिर और सिक्खों की धर्म्मशालायें हैं॥

गुजरात व्योपार की बड़ी मण्डी है। काश्मीर से सूखा मेवा और शहरों को इसी रस्ते से जाता है। यहां सूती कपड़ा पशमीने की चादरें पीतल के बर्तन, तलवारें, जीन बनते हैं और मीनाकारी का काम होता है॥

गुजरात सोहनी की जनम भुमि होने के सबब भी मशहूर है॥

गुद्यातम।

मद्रास रेलवे पर मद्रास से ६६ मील एक बड़ा देसी नगर है मद्रास से तीसरे दरजे का किराया १) लगता है। यहां मई के महीने में एक मेला होता है जिस को गंगामल जठरई कहते हैं बहुत लोग इस मेले में आते हैं। जटके और बैलगाड़ियां सवारी के लिये हर वक्त मिलती हैं। हर मंगल के दिन एक मेला जिसको शांडी कहते हैं खाने पीने की चिजें और माल वगैरा के लेने के लिये लगता है॥

गोकर्ण।

अर्थात् गऊ का करन। यह नगर बम्बई अहाते के जिला कानारा में है और हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है। यात्री और योगी लोग जो तीर्थों में फिरते रहते हैं हिन्दुस्तान देश के सब हिस्सों से आते हैं कहते हैं कि महाबलेश्वर के मन्दिर में असली लिंग का एक टुकड़ा है जो शिवजी ने रावण को दिया था। सौ से ऊपर दीवे उस रुपये से जो यात्री लोग मन्दिर को देते हैं दिन रात जलते रहते हैं फर्वरी के महीने में यहां एक मेला होता है जिस में २००० से ८०००० तक लोग इकट्ठे होते हैं। गोकर्ण का जिकर रामायण और महाभारत में है॥

गोदावरी ।

सैंटरल इण्डिया (हिन्दुस्तान देश के बीच के हिस्से) का बड़ा दरिया है जो दक्खिन दक्खनी घाट से पूर्वी घाट को जाता है। पवित्रपन, नज़ारे और मनुष्यों को काम देने में गंगाजी और अटक के सिवा इस से बढ़कर और कोई दरिया नहीं। इस की लम्बाई ८९८ मील है और कहते हैं कि इसका निकास अहाता बम्बई जिला नासिक के गांव त्रिम्बक के पीछे एक पहाड़ी पर है जो बहर हिन्द (समुद्र) से ५० मील के फ़ासले पर है। इस जगह एक हौज बनायाहुआ है जिसमें बूंद बूंद पानी एक पत्थर की मूर्ती के मुंह में से गिरता है। सेंटरल प्राविनसेज में पहुंचकर गोदावरी बड़ी भारी नदी बन जाती है और पाट एक मील और बाजी बाजी जगह दो मील होजाता है। साबरी नदी के संगम से नीचे समा ऐसा भला और सुहावना होजाता है कि लोग गोदावरी को हिन्दुस्तान देश का * राइन कहते हैं॥

इस दर्या का खास पवित्रपन रामचन्द्र जी ने आप गौतम ऋषि को बताया था इस दर्या को गोदा भी कहते हैं। कहते हैं कि यह दरिया उसी निकास से जहां से गंगा जी निकलती हैं। निकल कर धर्ती के नीचे नीचे आता है और यह सारा पवित्र है और इस में स्नान करने से बड़े से बड़ा पाप नष्ट होजाता है १२ साल के पीछे इस के किनारों पर पुश्करम का मेला होता है॥

यात्री लोग त्रिम्बक, भद्राचलम जो दरिया के बाएं किनारे राजमंदरी से सौ मील ऊपर की तरफ है और जहां रामचन्द्र का पुराना मन्दिर है, राजा मन्दिरी और कोटीपल्ली गांव बहुत जाते हैं

---

* यूरुप के फ्रांस देश में एक दरिया है जो खूबसूरती के सबब सारे जगत में बढ़कर मानाजाता है॥

गोरे गाऊं ।

बी० बी० ऐंड सी० आई रेलवे का स्टेशन है और बम्बई से १८ मील है और तीसरे दरजे का किराया ≈)॥ है यहां से एक मील के करीब जगेश्वरी का मशहूर खोह का मन्दिर है जो अन्दर से १२० फीट मुरब्बा है ॥

स्टेशन के पास मुसाफिरों के वास्ते एक धर्मशाला है ॥

गोलागोकर्णनाथ ।

अवध के जिला खेड़ी में नगर है और उस सड़क पर वाके है जो लखीमपुर से शाहजहानपुर को जाती है । यह नगर छोटी छोटी पहाड़ियों के नीचे जो आधे घेरे की शकल में है बसा हुआ है पहाड़ियों पर साल के बन हैं और दक्खिन की तरफ एक झील है इस सबब से यह बड़ा सुन्दर मालूम होता है । यहां पर गुसाईं मत का एक स्थान है और उनके महापुरुषों की कबरें हैं, फाल्गुन और चैत्र के महीनों में यहां हिन्दुओं के दो बड़े मेले होते हैं जो पंद्रा २ दिन तक रहते हैं इन में ७५ हजार से एक लाख तक यात्री और व्योपारी इकट्ठे होते हैं ॥

चीनी भी यहां बहुत बनती है ॥

इस नगर में स्टेशन के पास यात्रियों की आराम के लिये ५ धर्मशालायें हैं । यहां कोई डाकबंगला नहीं । गोला गोकरननाथ रुहेल खण्ड कुमाऊं रेलवे की लखनऊ बरेली शाख पर एक स्टेशन है इसका लखनऊ से फासला १०५ मील और तीसरे दरजे का किराया १~)॥ लगता है ॥

गोहटी ।

आसाम बंगाल । बंगाल सन्टरल और ई० बी० ऐस रेलों क जंक्शन और आसाम के जिला काम रूप का सब से बड़ा नगर है दरिया ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर बसाहुआ है बरपेटा नगर के सिवा इस नगरी की ब्रह्मपुत्र घाटीके सब नगरों से जियादा आबादी है और दो मुरब्बा मील में फैला हुआ है यहां के लोग कहते हैं कि पिछले जमाने में यह ही प्रयागज्योतिषापुर था और राजा नरक और उस के पुत्र भगदाता जिनका जिकर महाभारत में है उनकी राजधानी था, पुराने पुश्ते और बहुत से किलों के निशान अब तक मौजूद हैं जो ब्रह्मपुत्र दरिया के किनारों पर है ॥

इस नगर के पासही कामाख्या या दुर्गा का मन्दिर है जहां हिन्दू लोग अकसर यात्रा के लिये आते रहते हैं नगर के सामने दरिया ब्रह्मपुत्र के बीच में एक चटानी टापू पर उमानन्द या शिवजी का मन्दिर है इस को भी हिन्दूलोग बहुत पवित्र मानते हैं ॥

पहले यहां छावनी थी पर बाद में उठा ली गई थी, आसाम व यह नगर बड़े व्योपार की जगह है ॥

गौहटी चिटागांग से ४८० मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥) लगता है ॥

गंगोत्री ।

सूबा आगरा और अवध की रियासत गढ़वाल में एक पहाड़ी मन्दिर है जो भगीरथी या गंगाजी के दाहने किनारे पर वाके है सागर में गंगाजी का मुख और उसका निकास गंगोत्री में मान कर पवित्र ख्याल किये जातेहैं । दरिया के निकाससे ८ मीलके फासले पर मन्दिर है जिस में गंगाजी और भागीरथी की मूर्तियां हैं । यात्री

लोग इस जगह को अपने सफर की हद समझते हैं और इस जगह रहने के लिये कोई घर नहीं इस वास्ते यात्री लोग दरिया में से पानी लेकर जलदी लौट आते हैं ॥

गंगोत्री पहुंचने के लिये सब से नजदीक रोहेल खण्ड कमाऊं रेलवे पर काठगोदाम स्टेशन है जो बरेली से ६६ मील और लखनऊ से २६५ मील है तीसरे दरजे का किराया इन दोनों जगह से १॥) रुपया और ३≈) हैं ॥

हरिद्वार से भी गंगोत्री जाते हैं वहां झम्पान सवारी के लिये मिल सक्ते हैं ॥

हरिद्वार सहारनपुर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥≈)। लगता है ॥

घुम्मनविंडोरी ।

नार्थवैस्टरन रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख पर। बटाला स्टेशन के पास गांव है यहां जनवरी के महीने में हरसाल नामदेव का बड़ाभारी मेला होता है जो तीन दिन तक रहता है। इस में २० हजार के करीब लोग आते हैं ॥

बटाला अमृतसर से २४ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥ लगता है। बटाले में यक्के सवारी के लिये मिलते हैं ॥

चम्पा ।

बंगाल अहाते में हासदेव दरिया पर चम्पा रियासत का बड़ा नगर है। इस के उत्तर पश्चिमकी तरफ दो मील के फासले पर पीतनपुर गांव है जिस के पास शिव पिंत्तियेश्वरका मन्दिर है। होली के मौके पर महादेव देवता को बड़े चढ़ावे चढ़ते हैं। कहते हैं कि

यह देवताशरीर के कुल रोग उसी दम अच्छे कर देता है। बारह वर्ष हुए कि मेला शुरू किया गया था, जो हर साल बढ़ता जाता है। कोरवा गांव जहां कहते हैं कि कोयले की खानें हैं चम्पा के पास वाक़े है॥

चम्पा रेलवे स्टेशन के पास एक सराए है और पबलिक वर्कस डीपार्टमेंट का बंगला थोड़े फ़ासले पर है पर पीतनपुर में अंगरेज़ी और देशी लोगों के टिकने के लिये कोई जगह नहीं लोगों को आप बन्दोबस्त करना पड़ता है॥

पीतनपुर गांव जाने के लिये चम्पा में बैल गाड़ियां मिलती हैं।

चम्पा बंगाल नागपुर रेलवे कलकत्ते से ४१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥) लगता है॥

चन्दोद।

गुजरात काठियावार की गायकवाड रियासत में दबहोई नगर से १० मील दक्खिन की तरफ़ नर्बदा दरया के किनारे पर एक गांव और तीर्थ की जगह है। दक्खिन में यह तीर्थ सब से ज़ियादा पवित्र माना जाता है। यहां और कुरनाली में बड़े २ मेले कार्तिक और चैत्र के महीनों में होते हैं जिनमे २० हज़ार से २५ हज़ार तक यात्री आते हैं। इस गांव में दो धर्मशाला भी हैं॥

चंदोद बम्बई बड़ोदा एण्ड सैंटरल इण्डिया और गायकवाड दबहोई रेलवे में बिश्वामित्री के रस्ते बम्बई से २७६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।=) लगता है॥

चिंगलिपत।

अर्थात् ईंटों का नगर यह नगर अहाता मदरास के ज़िला

चिंगलेपत का बड़ा शहर और साऊथ इण्डियन रेलवे की अरकोनाम बरांच का स्टेशन है। मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से इस का फ़ासला ३७ मील है और तीसरे दरजे का किराया।≡)। लगता है। स्टेशन पर पहले और दूसरे दरजे के मुसाफ़िरों के लिये वेटिंगरूम और अंग्रेज़ों और देशियों के लिये खाने के कमरे बने हैं। स्टेशन पर यक्के और बैल गाड़ियां मिलती हैं। महाबलीपुर या सात पगोडों को यहां से आसानी से जा सक्ते हैं। तीरुकलुकुन्दरम का शिवजी का मन्दिर चिंगलिपत से ६ मील दक्खिन पूर्व की तरफ़ है। इस के दर्शन को यात्री लोग साल भर बहुत आते हैं। इस मन्दिर के पास ६ चतरम हैं। चिंगलिपत से १६ मील उत्तर पूर्व की तरफ़ तीरुप्पोरूर जगह है जिस में सबरा मान्या स्वामी का मन्दिर है इस के दर्शन को भी किरथी के तेहवार पर अनगिनत यात्री आते हैं

यहां जिलेकी कचहरी, जेल क़ैदियों का स्कूल, अस्पताल मौजूद हैं

चिंचवद ।

जी० आई० पी रेलवे की बम्बई रायचूर शाख़ पर एक स्टेशन और गांव है, बम्बई से फ़ासला १०६ मील और तीसरे दरजे का किराया १॥≡) है॥

स्टेशन के पास दो बड़े मन्दिर हैं एक गांव में जिस को मोराया गुसांई का मन्दिर कहते हैं और दूसरा पौना दरया के किनारे पर है और श्री गणपति का मन्दिर कहलाता है। दूसरे मन्दिर के दर्शन को यात्री लोग बहुत आते रहते हैं। दिसम्बर के महीने में इस मन्दिर का बड़ा भारी मेला होता है जो तीन दिन तक रहता है।

श्रीगनपति के मन्दिर पास एक धर्मशाला भी है॥

चिदम्बरम या चितम्बलन ।

अर्थात् बुद्धि की हवा । यह ज़िला दखिनी अरकाट की चिदम्बरम तहसील में बड़ा नगर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है । इसका फ़ासला मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से १५७ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥।) लगता है । यह नगर मन्दिरों के सबब बहुत मशहूर हैं । सब से बड़ा मन्दिर सभानेकन कोविलया कनक सभा (सुनैहरी मन्दिर) शिवजी और पार्वती का है । कहते हैं कि इस मन्दिर के पुराने हिस्से सुनहरी रंग के राजा हिरण्यवर्ना चक्रवर्ती ने बनवाये थे क्योंकि उसका कोढ़ इस जगह एक तालाब में नहाने से जाता रहा था । यह मन्दिर ३९ एकड़ पर बने हुए हैं उनकी लम्बाई ६०० गज़ और चौड़ाई ५०० गज़ है । इर्द गिर्द ३० फुट ऊंची दो दीवारें बनी हुई हैं, और चारों कोनों पर १२२ फ़ीट ऊंचा एक एक गपूरा है, कहते हैं, कि पतंजली, व्याघ्रहपद, उपामान्या और दूसरे ऋषि इस जगह रहते हैं पर नजर नहीं आते ॥

इस नगर में संस्कृत स्कूल । दो अंग्रेज़ी स्कूल एक पुत्री पाठशाला है और कई और पाठशालायें हैं जिन में वेद पढ़ाये जाते हैं । यहां कई चोलतरियां और चत्तरम भी है जिन में से आठ कुशादा और अच्छी हैं इन में से सब से बढ़ कर नट्टूकोटई चत्तरम है जहां बैरागियों और ब्राह्मनों को रोज़ खाना दिया जाता है ॥

चिदम्बरम में दो बड़े तेहवार, जून और दिसम्बर में होते हैं उन दिनों में ३० हज़ार से ४० हज़ार तक यात्री आते हैं, चिदम्बरम के पश्चिम की तरफ़ वरिउद्दाचलम, मन्नारगुदी और श्रीमुश्नम भी यात्रा को नामी जगह हैं ॥

रेशम का कपड़ा और कली (कैली कपड़े को उस इलाक़े के मुसलमान पहनते हैं) चिदम्बरम में बन्ता है ॥

स्टेशन पर यक्के और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं नगर में भी जो स्टेशन से चौथाई मील के क़रीब है बैल गाड़ियां मिलती हैं ॥

चित्तौड गढ़ ।

राजपूताना मालवा और उदैपुर चित्तौड़ रेलवे का जंकशन (मिलने की जगह) है और नीमच से ३५ मील और अजमेर से ११५ मील के फ़ासले पर उदैपुर रियासत में वाक़े है। चित्तौड़गढ़ का मशहूर क़िला एक अलग पहाड़ी पर है जो मैदान से ५०० फ़ीट ऊंची है और ३॥ मील के करीब उत्तर और दक्खिन की तरफ फैला हुई है तारीख़ दोनों के लिये यह बड़ी मन भावनी जगह है क्योंकि तुन्द राजपूतों की आज़ादी के वास्ते बड़ी २ लड़ाइयां यहां हुई थीं। १२९० में लक्ष्मी के राज में चित्तौड़ पर अलाउद्दीन खिलजी ने चढ़ाई करके इसको फ़तह किया इस मौक़े पर हज़ारों राजपूत औरतों ने अपनी पत रखने के लिये आत्मघात कर लिया इन में खूबसूरत रानी पदमनी भी थी, जिस के वास्ते अलाउद्दीन ने चढ़ाई की थी। पहाड़ी पर अब भी कई पुराने मन्दिर तालाब और घर देखने के लायक़ हैं ॥

चित्तौड़िया या छोटा चित्तौड़ पास ही दक्खिनी तरफ़ को है, यह छोटी सी पहाड़ी है पर दुशमनों को यहां से क़िले पर गोले मारने को अच्छा मौक़ा मिल जाता था। यह पहाड़ी स्टेशन से दो मील के फ़ासले पर है। पर गाऊं के लम्बरदार से सांडनियां टट्टू और बैल गाड़ियां सवारी के वास्ते मिल सक्ती हैं ॥

स्टेशन के पास उदैपुर राज का बनाया हुआ डाक बंगला है पर यहां कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोग स्टेशन के पीछे बाजार में खाली दुकानों में ठहरते हैं ॥

चित्तौड़गढ़ बम्बई से ५२६ मील और अजमेर से ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया ५॥) और १≡) लगता है ॥

चित्राकोट ।

चित्राकोट स्टेशन से इसी नाम का मशहूर पर्ब्बत ३॥ मील है और बड़ी यात्रा की जगह है, जितने यात्री यहां आते हैं बुन्देलखंड में और किसी जगह नहीं जाते, राजा रामचन्द्र जी अपने बनवास के दिनों में यहां आये थे जबसेही यह जगह पवित्र समझी जाती है महाभारत में भी इसका जिकर है। रामचन्द्र जी सीता जी और लक्ष्मण के पाओं के निशान परिकम्मा पर चर्ण पदिकर मन्दिर में अब तक हैं ॥

पहाड़ी के गिरद एक चबूतरा है जिस पर यात्री लोग परिक्रमा करते हैं। यह चौतड़ा पन्ना के राजा रामचन्द्र कुंवर ने डेढ़ सौ बरस हुए बनाया, था इर्द गिर्द की छोटी छोटी पहाड़ियों पर, पैसूनी नदी के किनारे, घाटी और मैदान में ३३ पूजा पाठ की जगह हैं। जिन में से हरएक जूदा २ देवता के नाम पर है। इन में से ७ कोट तीर्थ दीवान गंगा, हनूमान धारा, फटकासिला, अन्सविया। गुप्त गोदावरी और भारत कूप ५ कोस के गिरदे में हैं और पांच कोसी तीर्थ कहलाते हैं। यहांपर यात्री और जगहों से जियादा स्नान और तप करने के लिये आते हैं। इन में से बहुत से तीर्थ बुन्देलखण्ड की छोटी २ रियासतों में हैं ॥

चित्राकोट में मार्च अपरैल और अक्तूबर नवम्बर में राम नौमी और दीपमाला के बड़े भारी मेले होते हैं। नए चन्द्रमा और ग्रहण के मौकों पर भी छोटा सा मेला होता है॥

चित्राकोट जी० आई० पी० रेलवे में झांसी से १५७ मील है तीसरे दरजे का किराया २ᐟ) लगता है॥

चिन्तपुरनी।

पंजाब के जिला हुश्यारपुर में एक पर्ब्बत है जो बिना सिर की देवी के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है। मार्च के महीने में अनगिनत यात्री दूर २ से यहां आते हैं॥

हुश्यारपुर में यक्के चिन्तपुरनी जाने के लिये मिल जाते हैं। मामूली किराया एक यक्के का १ᐟ) पड़ाओं के हिसाब से लगता है पर मेले के दिनों में किराया बहुत बढ़जाता है॥

चिन्तपुरनी के लिये सब से पास जालन्धर स्टेशन है जो नार्थवैस्टरन रेलवे पर लाहौर से ८१ मील है लाहौर से जालन्धर तक तीसरे दरजे का किराया ॥।≈)। लगता है॥

चिनियोट।

सूबा पंजाब के जिला झंग में तहसील चिनियोट का हेडकुआर्टर है और चनाब दरिया से २ मील दक्खिन की तरफ वाके है। नगर स्टेशन से १६ मील है पर स्टेशन पर यक्के नगर को जाने के लिये मिलते हैं एक सवारी का किराया ॥।) लगता है यह नगर मुसलमानों के हिन्दुस्तान में आने से पहले बसा था दुरखानी के हमले और १८४८ के आपस के झगड़ों से इस को बहुत नुक़सान

पहुंचा। अब फिर रौनक पर है, बहुत से घर पक्के ईंटोंके बड़ेसुन्दर बने हुए हैं। यहां के खोजे धनवान् हैं अमृतसर, कलकत्ता, कराची और बम्बई में उनकी कोठियां हैं। नबाब सादुल्ला की जो शाहजहान के राज्य में यहां का हाकिम था बनाई हुई एक बड़ी सुन्दर मसजिद भी है और एक मुसलमान वलीशाह बुर्हान का मजार है जिस को हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। चिनियोट लकड़ी और राज गीरी के काम के लिये बहुत मशहूर है कहते हैं कि आगरे में ताज-महल बनाने के लिये बहुत से राज चिनियोट् से गए थे। अमृतसर का दर्बार साहब भी एक चिनियोट के राजा ने बनाया था। यहां एक बड़ा सुन्दर बाग है जिस में मेवों के दरख्त बहुत हैं॥

चिनियोट में देशी कपड़ा बनता है यहां से रुई, लकड़ी, घी हड्डियां, सींग, और चमड़ा बाहर जाता है। नगर में एक अच्छी सराय और कई धर्मशालायें हैं॥

चिनियोट रोड लाहौर से १४८ मील है तीसरे दरजे का किराया वजीराबाद के रस्ते १॥=)॥ लगता है॥

चितूर।

नार्थ अरकाट जिले में चितूर तालुक का हैडक्वारटर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मदरास बीच जंकसन से इस का फासला २२१ मील है। और तीसरे दरजे का किराया २।=) लगता है। स्टेशन से पौने मील के फासले पर एक बंगला और देशियों के लिये दो चत्तरम या धर्मशालायें हैं। लाल पत्थर यहां से बाहर जाते हैं॥

इन्द्रपुरीमें जिस को लोग यदागारी कहते हैं श्रीवद्राजा स्वामी और कोरन्द्रस्वामी के बड़े मशहूर मन्दिर हैं। इन्द्रपुरी स्टेशन से ५ मील है। मई के महीने में यहां एक बड़ाभारी तेहवार दस दिन तक होता है जिस में अनगिनत लोग आते हैं॥

छपार।

तहसील और जिला लुधियाना में गांव है और नार्थवैस्टर्न रेलवे की शाख लुधियाना धुरी जाखल का स्टेशन है लुधियाना जंकशन से १७ मील और जाखल जंकशन से ६४ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥ और ॥) है। लुधियाना फिल्लौर से ६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ~)॥ है॥

सितम्बर के महीने में (तारीखका ठीक पता नहीं) यहां गुग्गे का बड़ाभारी मेला होता है जो तीन दिन तक रहता है इस मेले में इर्द गिर्द के गावों और देशी रियासतों से ७५ हजार के करीब लोग आते हैं यहां के लोगों का ख्याल है कि जो कोई गुग्गे को पूजा न करे उसके बच्चे सर्प के काटने से मरते हैं, मन्दिर के अन्दर एक छेद है जिस में से ठंडी हवा आती है पुजारी लोग कहते हैं कि यह हवा गुग्गे के सांस लेने से आती है॥

गांव स्टेशन से २॥ मील है लोगों को वहां तक पैदल जाना पड़ता है क्योंकि यहां पक्की सड़क नहीं और न कोई सवारी मिलती है गांव में कोई सराये या धर्मशाला नहीं॥

छीपिया।

अवध के जिला गोंडा में एक छोटा सा गांव है यहां सहजानन्द विष्णुमत के सुधारनेवाले का बड़ा सुन्दर मन्दिर है, सो

साल के करीब हुए सहजानन्द ने इसी गांव में जन्म लिया था और होते होते जूनागढ़ के विष्णुस्थल का सरदार उस के आधीन हो गया कहते हैं कि वह ऋषि था और कृष्ण जी का अवतार था और स्वामी नारायण के नाम से उस की पूजा करते हैं॥

५० वर्ष के करीब गुज़रे कि उस के मानने वालों ने उस की जन्म भूमि पर मन्दिर बनाया जो सारा मिरजापुर और जयपुरी संगमरमर का है। मन्दिर की पिछली तरफ एक बड़ा बाजार है और दो चौकोने ईंटों के घर हैं जिनके कोनों पर प्रोहितों के लिये बुर्जियां बनी हैं। यहांपर दो बड़े मेले होते हैं, एक रामनौमी पर और दूसरा कातिक महीने के पूरे चांद के मौके पर इन मेलों में हिन्दुस्तान के दूर २ के हिस्सों से यात्री आते हैं॥

जखलौन।

बम्बई से ६३६ मील और दिल्ली से ३२२ मील के फासले पर जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है। बम्बई से तीसरे दरजे का किराया ७=) और दिल्ली से ३।) लगता है। इस स्टेशन से ८ मील देवगढ़ के खण्डर देखने के लायक हैं वहां तक कच्ची सड़क जाती है पर मुसाफिरों को सवारी और खानेका आप बन्दोबस्त करना चाहिये इन खण्डरों में गुप्ता के जमाने का एक बड़ा अजीब मन्दिर है और एक जैनियों के मन्दिरों का सुन्दर झुण्ड एक पहाड़ी पर घने जंगल में है जिस को बेतवा दरिया से पत्थर की सीढ़ियां जाती हैं। जूलाज

जब्बलपुर ।

ई० आई० आर० और जी आई० पी० रेलवे का जंकशन है। स्टेशन पर देशियों और अंगरेजों के लिये वेटिंग रूम याने मुसाफिर खाने बने हुए हैं और पास ही एक सराय है। देशीबस्ती और छावनी के बीच में से रेल गुजरती है। गाड़ियां तांगे और यक्के स्टेशन पर मिलते हैं। यहां कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर, असिसटेंट कमिश्नर इंजिनियर, तार के अफसरों की कचहरियां और दफ्तर हैं ईसाईयों के गिरजे और स्कूल और कालिज भी हैं, कालिज में सूबाजात मुतवस्सतके बहुत से राजोंके लड़के पढ़ने आतेहैं। जब्बलपुर की छावनी बड़ी भारी है। यहां अंगरेजी और देशी पलटनें, तोपखाना और सवारों का दस्ता रहता है। जब्बलपुर में ठगी जेल और दस्तकारी का स्कूल देखने लायक है। स्कूल में खेमें, गलीचे और मोटा कपड़ा बनकर बिकता है। यहां से मार्बल राक्स याने संगमरमर की चाटानें देखने के लिये सवारी मिलती है। चटानें यहां से ११ मील हैं। जब्बलपुर बम्बई से ६१६ मील और कलकत्ते से ७३३ मील है तीसरे दरजे का किराया बम्बई से डाकगाड़ी में ६॥) और सवारी गाड़ी में ६।=) और कलकत्ते से ६॥।)। हैं॥

जरग ।

नार्थ वैस्टर्न रेलवे के दोराहा स्टेशन से १४ मील के फासले पर एक गाऊं है। यहां मार्च के महीने में शीतला का मेला होता है जिस में ५ हजार के करीब हिन्दूलोग आते हैं।

जरग में कोई सराय या धर्मशाला नहीं और न दोराहा स्टेशन पर जरग जाने के लिये कोई सवारी मिलती है॥

दोराहा लाहौर से १३० मील और दिल्ली से २१६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥)॥ और २॥-) लगता है ॥

जलगांऊ।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन और अमालनर जलगाऊं शाख़ का जंकशन है। नगर स्टेशन से एक मील के क़रीब है स्टेशन पर वेटिंग रूम (मुसाफ़िर खाना) है और पास ही एक डाकबंगला और देसी मुसाफ़िरों के लिये सराये है। गरना दरया नगर के पश्चिम की तरफ़ बहता है और स्टेशन से ३॥ मील के फ़ासले पर उसपर एक पुल बना हुआ है। हर हफ़ते एक बड़ा भारी बाज़ार लगता है जिसमें खांदेश के सब हिस्सों से पैदावार बिकने आती है। स्टेशन से दो मील के क़रीब एक बड़ी भारी झील है जिस को मेहरुनी कहते हैं। जलगाऊं खांदेश में बड़े ब्योपार की जगह है। यहां कई रूई निकालने और कातने की कलें हैं रूई और सूती कपड़ा बहुत बाहर जाता है॥

अजन्टा की खोहों के मन्दिरों को जो रेलवे स्टेशन से ३८ मील है जलगांऊं से अच्छी सड़क जाती है। टट्टू छकड़े और बैल गाड़ियां मामलतदार को पहिले से लिखने से मिल सक्ती हैं। यह खोहें पहाड़ काट कर बनाई गई हैं और देखने के लायक़ है इनके अन्दर बहुत अजीब बेल बूटे बने हुए हैं इन खोहों का ज़ियादा हाल अजन्टा के नीचे लिखा जा चुका है॥

जलगाऊं बम्बई से २६१ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४-) और सवारी गाड़ी में २॥।) लगता है॥

ज्वालामुखी ।

सूबा पंजाब के ज़िला कांगड़ा, तहसील देहरा में पुराना नगर है। किसी ज़माने में यह बड़ा भारी और धनवान नगर था पुराने खंडरों से भी मालूम होता है। इसमें एक बड़ा पवित्र मन्दिर है जिसको लोग लाटांवाली देवी का मन्दिर कहते हैं इस मन्दिर के अन्दर सदा अग्नि की लाट निकलती है। सितम्बर के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से ५० हज़ार के क़रीब यात्री आते हैं। इस नगर के पास गरम पानी के सोते भी हैं॥

ज्वालामुखी में ८ धर्मशालायें यात्रियों के ठहरने के लिये हैं एक सराय भी महाराजा पटियाला की बनाई हुई है॥

ज्वालामुखी के लिये नार्थवेस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख का पठानकोट स्टेशन सब से पास है वहां यक्के मिलते हैं बहुत लोग जालन्धर से भी हुशियारपुर के रस्ते ज्वाला जी जाते हैं। हुशियारपुर और जालन्धर में यक्के बहुत मिलते हैं। पठानकोट अमृतसर से ६७ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है जालन्धर लाहौर से ८१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥॥=)। है

जाजपुर ।

अहाता बंगाल के ज़िला कटक में बैतरनी नदी के किनारे पर है और जाजपुर सब डवीज़न का सदर मुक़ाम है। केसरी वंश के राज्य में यह सब से बड़ा नगर था। ग्यारहवी सदी ईस्वी में कटक राजाधानी बनाया गया। यहां शिवजी के सेवक ब्राह्मण बहुत रहते हैं और यह जगह उड़ीसा के बड़े चार तीर्थों में से है॥

जाजपुर में शिवजी के मन्दिरों के बहुत से खंडर हैं। यह नगर उड़ीसा में पांचवें दरजे पर है और वारुनी के मेले पर अनगिणत यात्री पवित्र नदी वैतरनी में स्नान करने के लिये आते हैं। उन दिनों में जाजपुर में बहुत धन आता है।

जाजपुर बंगाल नागपुर रेलवे पर है। इसका फासला हौड़े से २०२ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥⁄)। लगता है॥

जालन्धर।

पंजाब में ज़िला और कमिश्नरी जालन्धर का सदर मुकाम है और नार्थवेस्टर्न रेलवे पर लाहौर से ८१ मील और दिल्ली से २६८ मील है। तीसरे दरजे का किराया ॥⁄)। और २॥⁄) है॥

जालन्धर बड़ा पुराना शहर है और सिकन्दर के हमले से पहले कटोच राज्य की राजधानी थी, कटोच का जिकर महाभारत में भी है। उस पुराने आर्य्या नगर की निशानी अब एक तालाब बाकी है जिसको देवी तालाब कहते हैं॥

जून के महीने में एक मुसलमान महात्मा इमामनासरुद्दीन के रौजे पर मेला होता है। जो चार दिन तक रहता है, इस मेले में ४ हजार के करीब लोग आते हैं। और बड़े दिन की छुट्टियों में एक हिन्दू साधू की यादगार में राग का जलसा होता है जो साधु के नाम पर हर वल्लभ का जलसा कहलाता है। यह साधु हिन्दुस्तान देश में राग का उस्ताद माना जाता है। जलसे पर देश २ के रागी दूर दूर से आते हैं जिनकी खातिरदारी के वास्ते रुपया इकट्ठा किया जाता है रियासत कपूरथले से भी बहुत रुपया मिलता है। हजारों लोग इस जलसे में आते हैं॥

शहर में दशहरे का मेला भी बड़ी धूम धाम से होता है उस मौके पर बड़ा भारी मालमण्डी लगती है ॥

शहर में कई धर्मशाला और तीन सरायें हैं एक सराए स्टेशन से थोड़े गज के फासले पर है ॥

छावनी शहर से ४ मील है। छावनी और शहर में सवारी हर वक़्त मिलती है ॥

जालन्धर से रेशम बाहर जाता है और लकड़ी का काम बहुत अच्छा होता है ॥

जेजूरी ।

पूंना से ३२ मील के फासले पर एक गांव है। यहां खण्डोबा का मन्दिर है जो बम्बई अहाते में बहुत पवित्र माना जाता है और हजारों यात्री इस के दर्शन को आते रहते हैं। कहते हैं खण्डोबा राजा था कभी कभी उसकी मूर्ति घोड़े पर सवार बनाई जाती है और उसकी रानी और कुत्ता साथ होता है। जिन लोगों के बच्चे नहीं होते वह यहां आकर वचन कहते हैं कि उनके बच्चे होजायें तो पहिला बच्चा खंडोबा को चढ़ायेंगे। अगर लड़का होता है तो खंडोबा का कुत्ता कहलाता है और खुल्ला फिरता है और जो लड़की हुई तो मामूली पवित्रता के बाद तपा के उस के मोहर लगाते हैं और फिर बड़ी धूमधाम से देवता के साथ उसका विवाह कर देते हैं

पूना से जैजूरी तक तीसरे दरजे का किराया डाकगाडी में ।≈)॥। और सवारी गाड़ी में ।-)। लगता है ॥

जयपुर ।

रियासत जैपुर या अमबर की राजधानी और हिन्दुस्तान में

बड़ा सुन्दर और सुहावना नगर है। इस की लम्बाई दो मील और चौड़ाई एक मील है। इर्द गिर्द पक्की दीवार बनी हुई है जिस पर ऊंची ऊंची बुर्जियां हैं और बीच में मज़बूत दर्वाजे हैं इस नगर का बड़ा बाज़ार ४० गज़ चौड़ा और एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधा चला गया है दूसरे बाजार जगह जगह इस से आ मिलते हैं और मिलने के मुकाम पर खूबसूरत चौक बने हुए हैं॥

महाराज साहिब का महल शहर के बीच में है। इसका घेरा और बाग़ आधे मील तक चले गये हैं। बाग़ में फवारे, भांति भांति के दरख़्त, फुलदार पौदे लगे हैं और चबूतरे बने हैं। महल के अन्दर दीवान खास, दीवान आम, और सुख निवास बहुत खूब सूरत हैं इन के सिवाय देखने के लायक यह मुकाम हैं॥

(१) आम लोगों की सैर के बाग़ जो ७० एकड़ में फैले हुए हैं और डाक्टर डिफेवेक की तजवीज से ४ लाख रुपये के खर्च से बनाए गये हैं हिन्दुस्तान में यह बाग़ सब से खूबसूरत है॥

(२) मेओ अस्पताल॥

(३) अैलबर्ट हाल जिस को करनल जेकबने तजवीज़ किया था और जिस में जैपुर का अजायब घर है॥

(४) दस्तकारी का स्कूल॥

(५) टकसाल॥

(६) हवा महल॥

(७) राम निवास बाग़ और चिड़िया घर। यहां हर सोमवार की शाम को अंग्रेजी बाजा बजा करता है॥

(८) कालेज॥

(९) सेंटरल जेल॥

रियासत की पुरानी राजधानी अम्बर भी जो यहां से ७ मील है देखने के लायक है पर इस के देखने के लिये रेज़ीडेंट साहिब की

इजाज़त लेनी पड़ती है। अम्बर में एक छोटा मन्दिर भी है जहां काली देवी को रोज एक बकरी चढ़ाई जाती है ॥

जैपुर में दो होटल हैं सवारी मिलती है ॥

जैपुर राजपूताना मालवा रेलवे और जैपुर स्टेट रेलवे का जंकशन है इसका फासला बम्बई से ६९९ मील और दिल्ली से१९१ मील है तीसरे दरजे का किराया ६॥।≈) और २) लगता है ॥

तुंग भद्रा ।

मद्रास रेलवे पर तुंगा भद्रा दरया के किनारे पर वाके है। बनारस से लौटतेहुए यात्री तुंगाभद्रा पवित्र दरिया में स्नान करने के लिये इस जगह पर ठैरते हैं। स्टेशन के पासही सब जात के लोगों के लिये एक चोलतरी है। इस जगह से ६ मील पूर्व की तरफ मेचले में रगवंद्रास्वामी का मशहूर मन्दिर है जिसको मनत्रालायम भी कहते हैं। अगस्त में इस मन्दिर पर एक मेला होता है जो ६ दिन तक रहता है। यह जगह भी तुंगभद्रा दरया के किनारे आबाद है। और रेल के स्टेशन से इस को सड़क जाती है। देशी गाड़ियां सवारी के वास्ते मिलती हैं मद्रास से तुंगभद्रा स्टेशन ३९४ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४।≈) और सवारी गाड़ी में ३।/) है ॥

तमलुक ।

अहाता बंगाल के जिला मिदनापुर में तमलुक सब डवीज़न का सदर मुकाम है और रूपनारायन दरया के किनारे पर बसाहुआ है। यह बड़ा पुराना नगर है और पिछले जमाने में बहुत मशहूर

था। हिन्दुओं की धर्म्मपुस्तकों में लिखा है कि पहले यह एक बड़ी भारी रियासत थी॥

तमलुक में वर्गभीमा देवी या काली का रूपनारायन दरया के किनारे बड़ा पवित्र मन्दिर है। बाजे लोग कहते हैं कि इस को देवताओं के इञ्जनीयर विश्वकर्म्मा ने बनाया था पर और लोग कहते हैं कि इस को चक्रधारी वंश के एक राजा ने बनाया था यह मन्दिर बड़ा सुन्दर है और देखने के लायक है॥

इस देवी का डर बड़ा है। कहते हैं कि रूपनारायण दरया भी जब मन्दिर के पास आता है तो चुप हो जाता है मन्दिर से आगे या पीछे थोड़े फासले पर इसके पानी का बड़ा शोर होता है। दरया का पानी कई दफ़ा मन्दिर के पास आगया और एक दफ़े मन्दिर से ५ गज़ के फ़ासले तक आगया था उस मौक़े पर पुजारी भी मन्दिर को डरकर छोड़गये थे और उनका ख़्याल था कि मन्दिर जरूर बह जायेगा पर दरया आगे न बढ़ा जब पानी आगे आता था तो ईश्वर की मर्जी से पीछे हटाया जाता था। यहां एक विष्णु का भी मन्दिर है जिसको विष्णुहारी कहते हैं। इस की सूरत वर्गभीमा के मन्दिर से मिलती है। कहते हैं कि विष्णु राक्षसों को मारते मारते गरम होगए और उनका पसेव तमलुक में गिरा इस सबब से यह जगह बड़ी पवित्र मानी जाती है॥

तमलुक बंगाल नागपुर रेलवे के कोलाघाट स्टेशन से १० मील है। कोलाघाट से हर रोज सुबह को कलकत्ता स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के अग्निबोट चलते हैं और तमलुक में ९ या १० बजे के करीब पहुंचते हैं देशी किश्तियां भी मिलती हैं॥

तमलुक में कोई सराय या धर्म्मशाला नहीं लोग ठैहरने की जगह का आप बंदोबस्त करते हैं पर मन्दिरों में खाने को मिल जाता है॥

ओला गाट कलकत्ते से ३४ मील है तीसरे दरजे का किराया।ॽ)। आने लगता है ॥

तलेगाऊं ।

ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला रेलवे पर स्टेशन है। स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है और गाऊं में देशी मुसाफिरों के वास्ते एक धर्मशाला है। तलेगाउं में हर साल अपरैल के महीने में मेला होता है। अलंदी में भी जो यहां से १४ मील है हर साल नवम्बर और जून में मेले होते हैं इन में इर्द गिर्द के गाओं से बहुत हिन्दू आते हैं। इन्द्रायनी दरिया स्टेशन से डेढ़ मील के फासले पर बहता है और स्टेशन से ३ मील दक्खिन की तरफ एक पुराने किले इन्दुरी के खंडर हैं। तलेगाऊं बम्बई से ८८ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥ॽ) लगता है ॥

तदपतरी ।

मदरास रेलवे का स्टेशन है और नगर में राजा रामचन्द्र जी, ईश्वर और चितराया के मन्दिर हैं जिन को विजायग नगर के राजों ने ४०० बरस के करीब हुए बनाया था इन में बड़ा संगतराशी का काम किया हुआ है जिस से रामचन्द्र जी कृष्ण जी और और देवताओं के युद्धों का हाल मालूम होता है। एक और मूरत है जिस के हाथ में कमान है। गाउं में धर्मशाला है। यहां एक डाक बंगाला भी है ॥

तदपतरी मदरास से २२८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ३) और सवारी गाड़ी में २।ॽ) लगता है ॥

तरण तारण।

पञ्जाब के ज़िला अमृतसर तहसीलतरण तारण का सदर मुक़ाम है। इस को गुरू रामदास के लड़के गुरू अर्जुन ने बसाया था गुरु अर्जुन ने नगर के अन्दर एक तालाब बनाया और उसके किनारे पर सिक्खों का का मन्दिर बनवाया कहते हैं कि जो लोग तैर कर इस तालाब के पार चले जाते हैं उनका कोढ़ दूर होजाता है। महाराजा रणजीतसिंह इस मन्दिर का बड़ा आदर करता था उस ने इस के ऊपर सुनहरी तांबे का पत्तरा चढ़वाया और इस को खूब सजाया॥

अपरेल के महीने में यहां चैत चौदश का मेला होता है जिस में अमृतसर शहर, ईर्द गिर्द के गावों और लाहौर, फ़ीरोज़पुर जालंधर और गूरदासपुर के ज़िलों से एक लाख के क़रीब लोग आते हैं। मार्च और अगस्त के महीनों में सोमावति अमावस्या और भदरी अमावस्या के मेले भी होते हैं पहले में ६० हज़ार और दूसरे में एक लाख से भी ज़ियादा लोग आते हैं॥

तरण तारण में कचहरी, डाकख़ाना, थाना, स्कूल, अस्पताल और सरायें हैं और बाहर कोढ़ियों के लिये एक घर बना हुआ है॥

यह नगर नार्थवेस्टर्न रेलवे की अमृतसर पट्टी शाख़ पर है। इसका फ़ासला अमृतसर से १५ मील है और तीसरे दरजे का किराया ≈)॥। लगता है॥

तंजोर।

यह नगर कावेरी के डेलटा (दरिया में उस जगह को कहते हैं जो तीन कोनी हो) यह ऐसी जगह बसा हुआ है जिस के सुन्दर होने के सबब इस को दक्खिनी हिन्दुस्तान का बाग़ कहते हैं। इस के इर्द गिर्द खेतों को पानी देने के वास्ते बहुत सी नहरें बनी हुई हैं।

तंजोर वाला बंश के राजों की सब से आखरी राजधानी थी उस के बाद बिजाया नगर की तरफ़ से नायक इस का हाकम हुआ, १६५६ और १६७५ के बीच में मरहट्टों के हाथ में रहा, १७७६ में तंजोर की रियासत अंगरेज़ो के पास आगई और सिवाजी के मरने के बाद राज धानी भी १८८५ में अंगरेज़ों के हाथ में आगई॥

यह नगर मन्दिरों के सबब बहुत मशहूर है। सब से बड़े मन्दिर के दो आंगन हैं। एक बाहर जो २५० फ़ीट चौकोर है और दूसरा अन्दर का जो ५०० फ़ीट लम्बा और २५० फ़ीट चौड़ा है इसी के बीच में मन्दिर है जिसकी बीच की बुर्जी हिन्दुस्तान में सब बुर्जियों से सुन्दर है। यह बुर्जी जड़ के पास चारों तरफ़ ९६ फ़ीट है और ऊंचाई २०८ फ़ीट है। ऊपर का बड़ा गोल गुम्बद एक ही पत्थर का है। कहते हैं के इस बड़े भारी पत्थर को चढ़ाने के लिये ५ मील तक ज़मीन ढालू की गई थी॥

दरवाजे की बुर्जी मन्दिर के सब हिस्सों से पुरानी है और शिव जी के नाम पर है, इस को कोलोवर्म के एक राजा ने १३३० ई० में बनाया था। बड़े दरवाजे और मन्दिर के बीच में शिवजी के बैल नन्दी का मन्दिर है। बैल की मूर्ति पक्के पत्थर को काट कर बनाई गई है और १६ फ़ीट लम्बी और १२ फ़ीट ऊंची है। इस मूर्ति को रोज़ तेल मला जाता है जिस से वह कांसी की तरह चमकती है। इस मन्दिर में अनूठी बात यह है कि गढ़ों पर विष्णु की मूर्तियां बनाई हुई हैं पर आंगन में सब शिवजी की मूर्तियां हैं॥

बड़ी बुर्जी के उत्तर की तरफ़ शिवजी के पुत्र सब्रहमानिया का मन्दिर है इस पर बेल बूटे का बड़ा सुन्दर काम किया हुआ है इस की बाहर की दीवार के साथ एक पानी की नलकी है जिस का
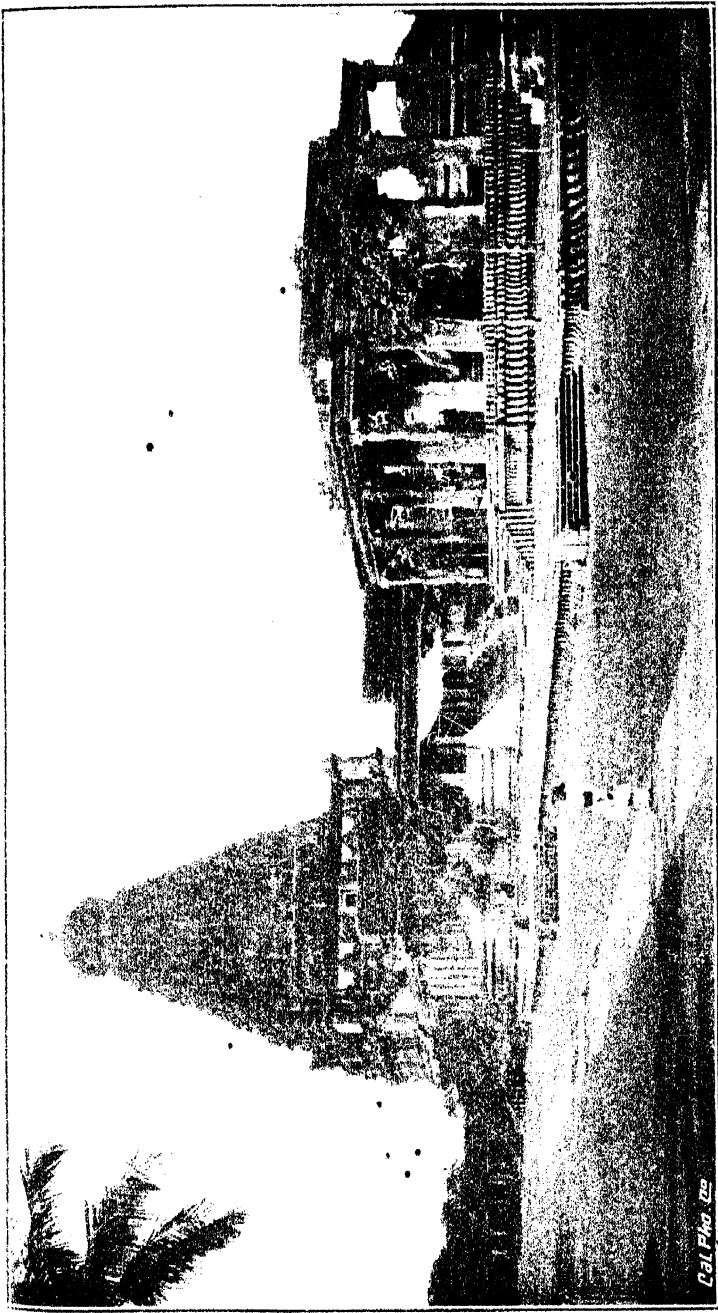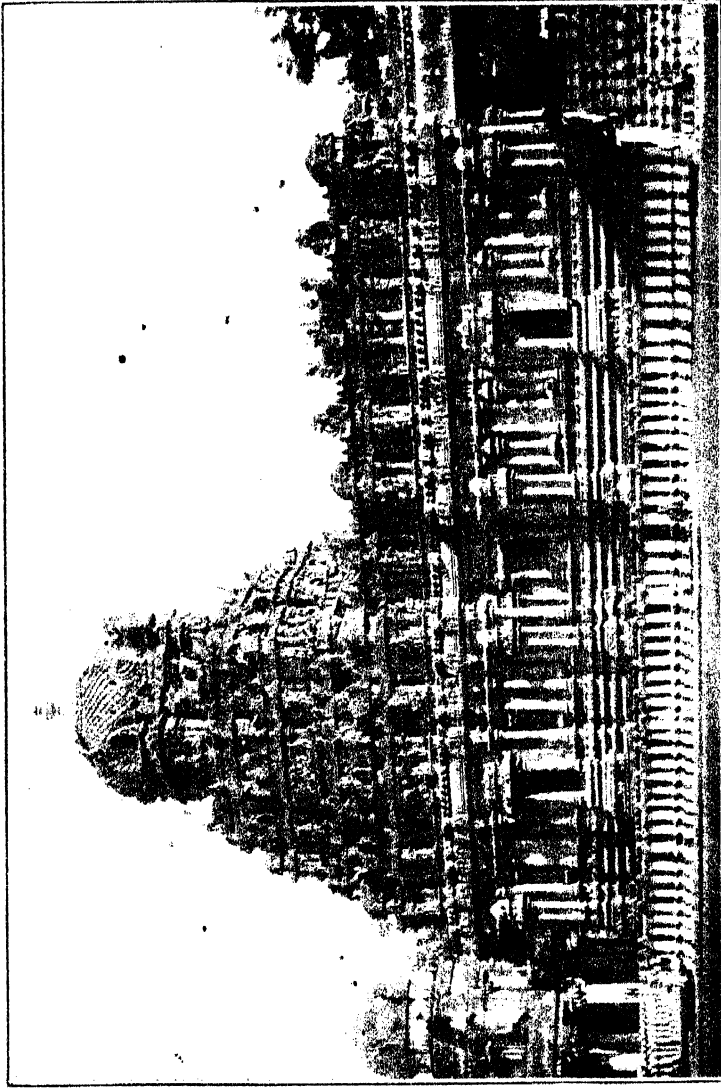
Cal Pho. Co

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

तंजोर का बड़ा मन्दिर ।

Photo, by Bourne and Shepherd, Calcutta.

सुब्रह्मान्या मन्दिर—तंजोर।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

ब्रहि स्वर मन्दिर—तंजोर।
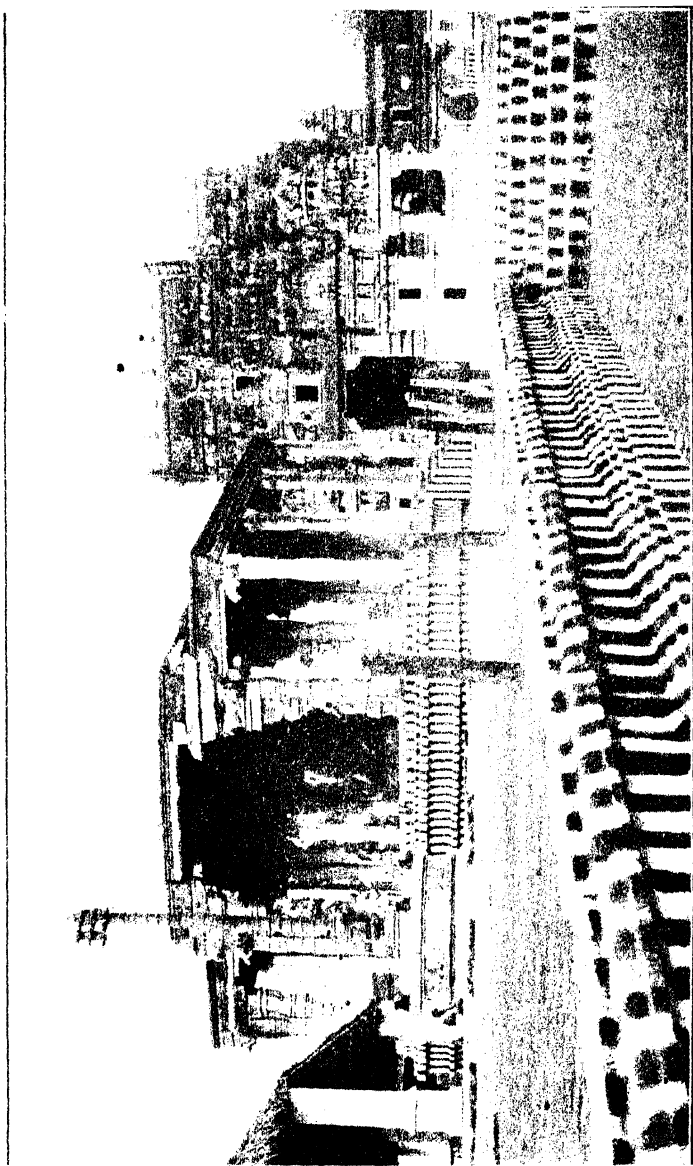
पानी मूर्तियों पर डाला जाता है और पीछे पवित्र समझ कर लोग पीते हैं ॥

तंजोर विद्या, धर्म और राज्य विषय का सदा दक्खिन में घर रहा है इस सबब से बहुतमशहूर है। यहां रेशमी गलीचे, जेवर तांबे की चीजें और अजीब अजीब नमूने बनते हैं ॥

तंजोर में देशियों के लिये ६ चत्तरम और ५० होटल हैं और अंग्रेजों के लिये स्टेशन पर रिफ्रेशमेण्ट रूम सोने की भी जगह है। स्टेशन पर देशियों के लिये भी रिफ्रेशमेण्ट रूम याने खाने का कमरा है जिसका इन्तिज़ाम एक ब्राह्मण के हाथ में है। तंजोर में सवारी मिलती है ॥

तंजोर साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच जंकशन से २२० मील है तीसरे दरजे का किरांया २।≈) लगता है ॥

तारकेश्वर ।

अहाता बंगाल के जिला हुगली में गांव और रेलवे स्टेशन है। यहां एक बड़ाभारी और मशहूर शिवजी का मन्दिर है, जिस के दर्शन को हजारों यात्री साल भर आते रहते हैं। चढ़ावों के सिवा मन्दिर के साथ जमीन है और रुपया भी आता है। यह मन्दिर एक महन्त के हाथ में है जो मन्दिर के रुपये में से अपना गुजारा करता है ॥

तारकेश्वर में दो बड़े मेले होते हैं, पहला शिवरात्री के मौके पर फर्वरी के महीने में होता है और शिवजी के आधीन इस मेले को सब से अच्छा जानते हैं। यह मेला तीन दिन तक रहता है। और २० हजार के करीब यात्री इस में आते हैं। यात्री दिन को व्रत रक्खते हैं और रात को शिवजी की पूजा करते हैं। दूसरा मेला

चैत्र शंक्राती के मौके पर अपरैल में होता है। इसी मौके पर झूलन यात्रा के तेहवार होते हैं। इन दिनों में बहुत से लोग यहां आकर तप करते हैं। झूलन तेहवार आज कल बेजोखों है क्योंकि उपासकों को पेटी के साथ लटका देते हैं पहले उनकी दोनों पसलियों के इधर उधर का मांस चीर कर और उस में हुक्क लगाकर लटकाते थे। दूसरा मेला ६ दिन रहता है और उस में १५ हजार के करीब लोग आते हैं॥

इस गाउं में महन्त सतीशचन्द्र गिरी और बाबू बिपनविहारी सैन की दो धर्मशाला हैं एक का नाम "तारकेश्वर" है और दूसरी बैदयापुर कहलाती है, यहां कंगालों को दान पुण्य किया जाता है॥

तारकेश्वर कलकत्ते से ईस्टइण्डियन और बंगाल प्राविनशल रेलवे में ३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है॥

तांदो महम्मदखां।

मुलक सिंध, जिला हैदराबाद सब डवीजन तांदो महम्मदखां का हेडकुआरटर और बड़ा नगर है और हैदराबाद से २२ मील के फासले पर गुनी नहर के किनारे पर बसा हुआ है। कहते हैं कि इस को मीर महम्मदखां तलपुर शाहवानी ने बसाया था। चावल, रेशम, धांत, तम्बाकू और रंग का व्योपार होता है। जूतियां और लकड़ी की चीज़ें यहां बनती हैं॥

इस नगर में एक मुसलमान वली की जो उस इलाके में बहुत मशहूर है खानगाह है। गडरिये इस वली को बहुत मानते थे क्योंकि जब कोई भेड़ या बकरी खोई जाती थी तो वह उसका पता बता देता था। लोग कहते हैं कि यह वली अन्धापन और शरीर के

और रोग भी दूर कर देता था, सितम्बर के महीने में ८ दिन तक इस खानगाह का मेला होता है जिस मे ५ हजार के करीब लोग आते हैं॥

यहां एक हिन्दु महात्मा दो दौ बोचर का मन्दिर भी है। कहते हैं यह महात्मा लोगों के दिल का भेद बता देते थे उन्हों ने और भी बहुत से आश्चर्य कर्म किये थे। यह मन्दिर हैदराबाद के सारे जिले में मशहुर है॥

तांदो महमदखां में एक सराय और अफ़सरों के लिये पबलिक वर्कस डीपार्टमेण्ट का बंगला है स्टेशन पर ऊंट और गाड़ियां नगर जाने के लिये मिलती है॥

तांदो महम्मदखां नार्थ वैस्टर्न रेलवे की हैदराबाद कोटरी बदीन साख पर है इसका फासला कोटरी से २८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।-)। लगता है॥

तीरुवलयूर।

मदरास रेलवे पर स्टेशन है यहां श्री तयागा राजा स्वामी का मन्दिर है जहां हर शुक्रको मेला होता है जिस से मदरास से बहुत यात्री आते हैं फरवरी या मार्च में ब्रह्म ऊतशावम और मोलुगार्दा सरवई मेला होता है इस में ५० हजार के करीब यात्री आते हैं। अप्रैल में एक और बलावली नचियरका ब्रह्म ऊतशावम होता है जो १५ दिन तक रहता है इस में भी बहुत यात्री आते हैं तीरुवलयूर से चौथाई मील दक्खिन की तरफ कलांदोपत है जहां श्रीवरदा राजा विष्णु का मन्दिर है, इस का ब्रह्म ऊतशावम मई में होता है॥

स्टेशन के पास चोलत्रियां याने टिकने के स्थान बने हुए हैं।

तीरुवत्तयूर रायापुरम मदरास से ७ मील है तीसरे दरजे का किराया ‑)। लगता है ॥

तीरुपती ।

मदरास से ८० मील के करीब उत्तर पश्चिम को है । पहाड़ी के नीचे का नगर नीच तीरुपती कहलाता है और पहाड़ी के ऊपर के मन्दिर को ऊपर का तिरुपती कहते हैं पर्वत की ७ चोटियों में से एक के पास जिसको सेश चिल्लम कहते हैं यह मन्दिर है । कहते हैं यह पहाड़ी पहिले मेरु पर्ब्बत का हिस्सा थी पर एक दफा अदीशेष्ण (हजार सिर वाले सर्प) और वायु (पौन का देवता) में झगड़ा हुआ कि दोनों में से कौन जियादा बली है आदिशेष्ण ने अपना जोर दिखाने के लिये मेरु पर्ब्बत की एक चोटी अपने एक सिर पर उठाई पर वायु ने अपने सांस से ऐसा झकड़ चलाया के पहाड़ की चोटी अदीशेष्ण के सिर से उड़गई और धरती पर गिर कर तीरुपती की पहाड़ी बन गई ॥

बड़ा मन्दिर नीचा तीरुपती से ६ मील है पर उस के बाहर के दरवाजे एक मील सेही शुरू होजाते हैं । यहां ३ तीर्थम या तालाब हैं । जो सब पवित्र समझे जाते हैं सबसे बड़े मन्दिर के पास स्वामी पुश्कार्नी तालाब है जो १०० गज लम्बा और ५० गज चौड़ा है उस के गिर्द पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं सब यात्री उसमें स्नान करते हैं । कहते हैं साल में एक दफा सारे पवित्र दरियाओं और तालाबों का पानी इकट्ठा होजाता है और उस समय स्वामी पुश्कार्नी का पानी चढ़ जाता है उस वक्त इस में स्नान करने से कहते हैं सब पाप नष्ट होजाते हैं ॥

मन्दिर में विष्णु की ७ फीट ऊंची पत्थर की खड़ी उस के चार हाथ हैं एक दाहने हाथ में गुरज है और एक बायें हाथ में चक्कर है। दूसरे हाथ से इशारा कर रहे हैं कि किस तरह पवित्र पर्व्वत बन गया और दूसरे बायें हाथ में कमल का फूल है॥

जिन लोगों को कोई रोग हो या जिनके लड़का न होता हो वह इस मूर्ति के आगे बचन करते हैं। औरतें सिर के बाल चढ़ाती हैं बड़ी ड्योढ़ी के पास ही नाई उनका सिर मूडने के लिये बैठे रहते हैं।

उत्तर देश के यात्री इस मूर्ति को बाला जी ब्राह्मण की मूर्ति कहते हैं जिस को वह विष्णु का अवतार मानते हैं॥

सितम्बर महीने में यहां ब्रह्म ऊतशावम का तेहवार होता है जिस में अनगिनत यात्री आते हैं॥

तीरूपती साऊथ इण्डियन रेलवे के वेल्लुपुर गडूर सैकशन पर स्टेशन है। मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से पश्चिमी तीरूपती २६५ मील और पूर्वी तीरूपती २६६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३) लगता है॥

तिलोठू।

अहाता बंगाल के जिला शाहआबाद में गाऊं है जो उस बाटी से ५ मील पूर्व की तरफ है जहां से कुरदा दरिया की शाख तुरतराही निकलती है। यह जगह तोतला देवी का स्थान माना जाता है और बड़ी पवित्र ख्याल की जाती है। यहां पर एक मूर्ति है जिस पर सम्बत् १३८१ लिखा हुआ है यह मूर्ति स्त्रिया की है जो एक भैंसे की गर्दन पर से कूद कर एक मनुष्य को मार रही है।

कार्तिक के अखीर दिन यहां मेला होता है जिस में १० हज़ार के करीब लोग दूर दूर से आते हैं॥

इस गाओं के लिये सब से पास स्टेशन ईस्टइण्डियन रेलवे पर देहरी है जो कलकत्ते से ३४५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥ﾉ)॥। लगता है। देहरी में यक्के और बहलियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

देहरी में एक सराय और एक बंगला है पर तिलोठू में कोई नहीं॥

तिरुलई विल्लागाम।

गांव स्टेशन से २॥ मील दक्खिन पश्चिम की तरफ है। यहां विष्णु के मन्दिर में जनवरी, जुलाई, सितम्बर, अकतूबर के महीनों में मेले होते हैं। ३० वर्ष हुए रामचन्द्र जी, लक्ष्मन, सीता जी और हनूमान की बड़ी बड़ी मूर्तियां यहां धरती के नीचे से निकली थीं॥

यह स्टेशन साऊथ इंडियन रेलवे की तंजोर डिस्टरिक्ट बोर्ड शाख पर है। इसका फासला मदरास बीच जंकशन से २२५ मील तीसरे दरजे का किराया २॥) है॥

तिन्निवेली पुल।

यह नगर मदरास अहाते में जिला तिन्नीवेली का सदर मुकाम है, इस की आबादी २५००० है। यहां एक ईसाइयों का कालिज और कई छोटे छोटे स्कूल हैं। इस जगह से डेढ़ मील पूर्व की तरफ पलमकोटा नगर है, जिस में १८००० की आबादी है। इस नगर में पहिले छावनी थी पर अब उठा ली गई है। २०

मील पश्चिम की तरफ पपानसम में रुई कातने का एक बड़ा भारी कारखाना है वहां के लिये अम्बासमुद्राम स्टेशन पास है। तिन्नीवैली से ३६ मील कोर्टलम ठण्ढी जगह है जहां अंगरेज़ लोग बहुत जाते हैं। तेनकाशी स्टेशन से कोर्टलम पहुंचते हैं कोर्टलम में हिन्दू यात्री भी बहुत जाते हैं। स्टेशन के पास दो चीनी साफ करने के कारखाने हैं॥

तिन्नीवैली नगर।

यहां नेल्लियप्पन कएटीमथाम्मनकोविल का मन्दिर शहर के बीच में है, और तम्बरापुरनी दरया के बीच में शहर से पौने मील के फ़ासले पर एक मन्दिर सत्रहमानिया स्वामीकोविल भी है॥

तिन्नीवैली ब्रृज (पुल) स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे में मद्रास बीच जंकशन से ४४६ मील और तिन्नीवैली नगर ४४८ मील है तीसरे दरजे का किराया दोनों जगह से ४॥।=) है॥

तिरुत्तनी।

इस स्टेशन से करीब एक मील पश्चिम की तरफ कुमार स्वामी का मशहूर मन्दिर है जहां हर महीने मेला लगता है जिस में बहुत लोग आतेहैं। अगस्त और जनवरी में आदि कथेकई और तप कथें कई दो बड़े भारी मेले होते हैं जिन में अनगिनत यात्री दूर २ से आते हैं॥

यहां तीन सौ के करीब चोलत्रियां (टिकने की जगह) और चत्तरम (धर्म्मशाला) हैं और पांच ब्राह्मण होटल हैं जिन में थोड़ी देर पहिले कहने से खाना मिल सकता है॥

तीरुत्तनी मद्रास रेलवे पर मद्रास शहर से ५१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥≈) और ॥~) लगता है ॥

तिरूर ।

मल्लापुरम छावनी के लिये यह सब से पास रेलवे स्टेशन है। यहां खासी सड़क है पर सवारी के लिये देसी गाड़ियां मिलती हैं मार्च के महीने में मुरगों का मेला होता है जिस में १० या १२ हजार मलायम यात्री आते हैं॥

तिरूर में देसियों के वास्ते कई होटल हैं और स्टेशन के पास एक धर्म्मशाला है॥

तिरूर मद्रास रेलवे की साऊथ वैस्ट लाइन पर मद्रास से ३८८ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ५~) और सवारी गाडी में ४~) लगता है॥

तीरुवन्नमलई ।

यहां तीरुवन्नमलई का बड़ाभारी मन्दिर है। जहां हजारों यात्री आते हैं। यात्रियों के विश्राम के लिये इस जगह ४० चत्तरम हैं। किर्थगई और चैत्र बसथम को दो बड़े तेहवार भी होते हैं जिन में एक २ लाख के करीब लोग आते हैं। हर मंगल को एक मेला भी होता है। बांस, लकड़ी, अनाज और पत्थर यहां से बाहर जाता है और रुई बाहर से आती है। स्टेशनपर चाह, काफी और अंगरेजी पानी मिलता है॥

तीरुवन्नमलई साऊथ इण्डियन रेलवे पर मद्रास बीच स्टेशन से १४३ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥~) लगता है॥

तीरुवलंगदू ।

यह मद्रास रेलवे का स्टेशन मद्रास नगर से ३६ मील है तीसरे दरजे का किराया।=) लगता है ॥

स्टेशन के पास एक मन्दिर है जो बहुत मशहूर है ॥

तीरुवदामरुदूर ।

साऊथ इंडियन रेलवे का स्टेशन है और मद्रास बीच स्टेशन से १६१ मील है तीसरे दरजे का किराया २=) है । यहां महालिंग स्वामी का मन्दिर है, और साल में दो मैले दिसम्बर या जनवरी और अपरैल या मई में होते हैं जिन में बहुत यात्री आते हैं यह दोनों मेले एक एक हफ्ता रहते हैं और दूसरे मेले के बाद तैरने का तेहवार होता है । इस जगह कपड़ा बनता है । तीरुवदामरुदूर में सब रजिस्टरार का दफ्तर, थाना, अस्पताल और एक महल है जिस में तंजोर के राज बंश के लोग रहते हैं ॥

तीरुप्पवनाम ।

यह साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन और अहाता मद्रास में शिवगंगा जमींदारी का तालुक है । शिवजी का मन्दिर इस स्टेशन से ३ फरलांग उत्तर पश्चिम की ओर है जून और जूलाई के महीनों में यहां रथयात्रा का मेला होता है । पास ही थाना और सब रजिस्टरार का दफ्तर है । यहां धान, नारियल पान और केला होते हैं हर मंगलवार को एक मेला लगता है ॥

तीरुप्पवनाम मद्रास बीच स्टेशन से ३६१ मील है तीसरे दरजे का किराया ४=) लगता है ॥

यहां एक चत्तरम है जिस में यात्री ठहरते हैं और उन को खाना मिलता है। स्टेशन से एक फर्लांग के करीब एक बंगला भी है अगर खाली हो तो इस में अङ्गरेज़ ठहर सकते हैं॥

तीरुप्पूर।

मद्रास रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन के पास विन्नी साहिब और कम्पनी का रुई दबाने का कारखाना है। तीरुप्पूर से ५ मील के करीब अवनेशी जगह है जिस में एक मन्दिर है। इस के दर्शन को यात्री जिले के सब हिस्सों से आते हैं॥

तीरुप्पूर मद्रास से २७५ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ३॥~) और सवारी गाड़ी में २॥≈) लगता है॥

तीरुपत्तूर।

मद्रास रेलवे पर नगर है और स्टेशन के पासही है यहां दो मन्दिर हैं एक ब्रह्मेश्वरम कहलाता है और दूसरा कोरात्ती में स्टेशन के पश्चिम की तरफ ५ मील है जिसको ईश्वरम कहते हैं यहां बहुत यात्री आते रहते हैं, हर सोमवार को एक मेला जिस को शांडी कहते हैं इसजगह होता है॥

तीरुपत्तूर मद्रास रेलवे का स्टेशन है। मद्रास से इस का फासला १३७ मील और तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में १॥~) और सवारी गाड़ी में १।≡) है॥

तीरुपत्तूर में कोरात्ती जाने के लिये यक्के और बैल गाड़ियां मिलती हैं। यक्के का किराया १) और बैल गाड़ी का ॥) है॥

तीरुपत्तूर में दो चोलत्रियां हैं जिन में से एक स्टेशन से पौन मील के करीब है और दूसरी एक मील के करीब है ॥

तीरुवल्लूर ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की तंजोर डिस्टरिक्ट बोर्ड और नगौर शाखों का जंकशन है इसका फासला मद्रास बीच स्टेशन से २५४ मील और मायावरम से २४ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥/) और ।)॥ लगता है ॥

यहां शिवजी का एक बड़ा भारी मन्दिर है और एक बड़ा तालाब है जिस को कमालायम कहते हैं । इस मन्दिर का हर साल मार्च और अपरैल के महीने में दस दिन तक रथरापत्थम तेहवार होता है जिस में हजारों यात्री आते हैं यहां बृहस्पति को एक मेला भी होता है ॥

तीरुवल्लूर में सब मेजिस्टरेट और मुनसफ़ की कचहरियां सब रजिस्टरार का दफ़्तर, एक मशहूर हाई स्कूल है और दो चोल-त्रियां हैं इन में से एक पचियप्पा मूडिलियर की है जिस में लोग ठहरते हैं और दूसरी यदापत्थि मंगलम मूडिलियर की इस में रोज़ सौ ब्राह्मणों को खाना मिलता है । स्वर्गवासी महाराजा तंजोर का एक बंगला भी है जिस में अंग्रेज़ ॥) रोज़ किराया देकर ठहर सकते हैं ॥

स्टेशन पर चाह काफी और अंग्रेज़ी पानी मिलता है ॥

तीरुपर्षकुन्दरम ।

मद्रास अहाते में साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इस

के पास एक पहाड़ी है। जिस को सेकंथामलई कहते हैं। पहाड़ी के पास एक पुराना मन्दिर है। हर महीने और हर साल अपरैल के महीने में किर्थिगई का यहां तेहवार होता है और शिवजी के मन्दिर में पंगूनी ऊतशावम मेला होता है। पहाड़ी की चोटी पर एक मुसलमान की भी कबर है॥

यह स्टेशन मद्रास बीच स्टेशन से ३५२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥।≈) लगता है॥

इस जगह देशियों के आराम के लिये तीन चतरम हैं॥

तीरुकोएलूर।

अहाता मद्रास के दक्खिनी अरकाट में पन्नार दरियापर नगर है। यहां थीरुविक्रम गोपालामूर्ति का बड़ा मन्दिर है, जिसमें हरसाल अपरैल और दिसम्बर के महीनों में मेले होते हैं। इस नगर के पास किलूर और अरिकन्दनालूर दो गांव हैं। उन में भी मन्दिर हैं। पहिले गांव में मार्च के महीने में रथयात्रा का मेला होता है। यहां हर बुद्ध के दिन एक मेला होता है। दरिया स्टेशन और नगर के बीच में बहता है और जब उस में जियादा पानी आजाता है तो किश्तियों में पार उतरते हैं। इस नगर में लूथरन इसाइयों का मिशन है जिस में लस बहुत अच्छा बनता है। यहां से मन्दिरों के वास्ते बाहर पत्थर जाता है और धान ईख और सुपारियां यहां पैदा होती हैं॥

तीरुकोएलूर साऊथ इण्डियन रेलवे के विल्लूपुरम गदूर सेक्शन पर स्टेशन है। मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से इस का फासला १२१ मील है तीसरे दरजे का किराया १।≈) लगता है॥

तीर्थबल्ली ।

अहाता मद्रास के जिला शिमोगा में गांव है जो, शिमोगा नगर से २० मील दक्खिन पश्चिम की तरफ तुंगा दरया के किनारेपर बसा हुआ है । बहुत से तीर्थों और तुङ्गादरया पर नहाने के बहुत से घाटों के सबब इस गांव का नाम, तीर्थबल्ली होगया है । दरया के किनारे पर एक गढा है कहते हैं इस को परशुराम ने खोदा था और रामेशवाडा तेहवार के मौके पर जो मार्गशिर या अगहन महीने में तीन दिन तक होता है हजारों यात्री इस गढे मे स्नान करने आते हैं । यहां दो पुराने मठ भी हैं, स्नान के मौके पर बड़ा व्योपार होता है ॥

मोगा और तीर्थबल्ली के बीच में तांगे चलते हैं, एक सवारी का किराया १॥) लगता है पर शिमोगा के पोस्टमास्टर को एक दिन पहले खबर देनी चाहिये ॥

शिमोगा से १८ मील तुङ्गा दरिया के किनारे पर मुन्दागुद्दी में एक धर्मशाला है और एक तीर्थबल्ली में भी है जहां ब्राह्मणों को बिना दाम भोजन मिलता है ॥

शिमोगा सदरन मरहट्टारेलवेमें पूना शहर से ५३२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ८॥-)॥ और सवारी गाडी में ५॥)॥ लगता है ॥

तुगलकआबाद ।

इस स्टेशन से दो या तीन मील तुगलक आबाद के अजीब खण्डर हैं इसी सबब से इस स्टेशन का नाम तुगलक आबाद रक्खा गया है । खण्डर रेल से दो या तीन मील पश्चिम की तरफ दिखाई देते हैं । कुतुब मीनार उन से परे है । यह नगर और किला गयास-उद्दीन तुगलकबादशाह ने सन् १३२१ और १३२३ के बीचमें बनाये थे ।

तुगलकशाह का मक़बरा नई दिल्ली के बाहर बहुत सुन्दर बना हुआ है। तुगलआबाद से ५ मील पश्चिम की तरफ पुरानी दिल्ली के खण्डर हैं जिसको चौहान राजपूत राजा पृथ्वीराज या राय पिथोड़ा ने बसाया था और इसी राजा ने शहाबउद्दीन गोरी से बचने के लिये लालकोट ११८० ई० में बनाया था। ११९३ में कुतुब उद्दीन ऐबक ने दिल्ली को फतह किया और मुसलमानों की दिल्ली बसाई। शहाबउद्दीन के मरने के पीछे कुतबउद्दीन हिन्दुस्तान का बादशाह हो गया और गुलामों के खानदान की नींव रक्खी कुतब साहिब की मसजिद, कुवत मीनार, लोहे की लाठ, इलाही दरवाजा और ख़ुवाजा कुतबउद्दीन बख़तियार काकी का मक़बरा देखने के लायक हैं॥

तुगलकआबाद बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ९४५ मील और १२ मील दिल्ली से है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ११) और ≶) है और सवारी गाड़ी में ९।≶) और ≶)॥। है॥

तेनकासी।

तहसीलदार और सबमजिस्टरेट का सदर मुक़ाम है चितर दरिया पर वाक़े है और बड़े व्यापार की जगह है यह नगर त्रावन-कोर की हद पर सब से बड़ा है और कोर्तलम के लिये रेलवे स्टेशन है कोर्तलम ठण्ढी जगह है और यहां नज़ारे और पानी की आदरों के सबब बहुत लोग आते रहते हैं। स्नान करने को भी बड़ी अच्छी जगह है। कोर्तलम स्टेशन से ३ मील दक्खिन पश्चिम की तरफ है, यहां शिवजी का मशहूर मन्दिर है, जो पन्दरहवीं सदी ई० में बना था। यह मन्दिर देखने के लायक है॥

तेनकासी में धान और मसाला पैदा होता है। यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

तेनकासी में देशियों के विश्राम के लिये ३ चत्तरम या चौलत्रियां हैं पर अंगरेजों के लिये कोई बंगला नहीं। कोतलम में बंगले किराए पर मिलते हैं॥

तेनकासी साऊथ इण्डियन रेलवे में मद्रास बीच जंकशन से ४६१ मील है तीसरे दरजे का किराया ५।≈) लगता है॥

त्रिवलोर।

मद्रास रेलवे पर है। यहां और श्रीपरम्बुथुर में जो यहां से १० मील दक्खिन पूर्व की तरफ है कई मशहूर मन्दिर हैं जो देखने के लायक हैं, त्रिवलोर में हर महीने नए चांद के मौके पर एक मेला होता है जिस में मद्रास और दूसरी जगहों से यात्री आते हैं ब्रह्म उतशावम का मेला जो हरसाल अपरैल के करीब होता है १० दिन तक रहता है इस में बहुत यात्री आते हैं। त्रिपासोर का पुराना क़िला जिस को ईस्ट इण्डियन कम्पनी ने बनाया था यहां से ४ मील के करीब है वहां तक अच्छी सड़क जाती है॥

गाऊं में देसी मुसाफ़िरों के वास्ते चत्तरम याने धर्मशाला हैं॥

त्रिवलोर मद्रास से २६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ।-) और सवारी गाड़ी में ।)॥ लगता है॥

त्रिम्बक।

अहाता बम्बई के नासिक जिले में नासिक शहर से २० मील दक्खिन पश्चिम की तरफ़ एक नगर है। यह बड़े तीर्थ की जगह है और इस में तीन बड़े बड़े मेले होते हैं। पहला मेला कार्तिक पर्णमा का नम्बर में, दूसरा नवरिथा का जनवरी में, और तीसरा

महा शिवरात्री का फर्वरी में होता है। नासिक जाने वाले यात्री भी यहां आते हैं पर सब से बड़ा मेला बारहवें साल त्रिम्बकेश्वर महादेव का उस वक्त होता है जब बृहस्पति सिंहराशि में जाता है। अगला मेला १६०८ में होगा और शायद एक साल रहेगा॥

त्रिम्बक में १२ धर्मशाला बम्बई के भटियों की बनाई हुई हैं पर उन में उनकी बिरादरी के लोग ठहरते हैं और यात्री अपने प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं या और बन्दोबस्त करते हैं॥

त्रिम्बक के लिये सब से पास जी० आई० पी० रेलवे का असवली स्टेशन है पर यात्री लोग नासिक में उतरते हैं क्योंकि वहां तांगे और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

नासिक रोड स्टेशन बम्बई से ११७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १॥-) और सवारी गाड़ी में १।) है॥

त्रिचूर।

मदरास रेलवे पर है और कोचीन रियासत की पहले राजधानी थी। यह नगर बहुत पुराना है और बड़ा पवित्र माना जाता है। कहते हैं कि इस को विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने बसाया था। नगर के बीच में वदाकुन्नाथन का बड़ा भारी मन्दिर है जिस के उत्तर दक्खिन पूर्व पश्चिम की तरफ चार दरवाजे हैं। इस मन्दिर का मेदम के महीने हर साल पुरम का तेहवार होता हैं जिस में हज़ारों लोग आते हैं यहां एक पवित्र कालिज भी है जहां पर प्रोहत बनने वाले ब्राह्मण वर्षों अकेले चुपचाप तप करते हैं॥

रेज़ीडेन्सी और राजा साहिब के महल के सिवा जिले के मैजिस्टरेट की कचैहरी, चीफ इंजनीयर रेवेनियू सुपरिन्टेन्डेंट तालीम के सुपरिन्टेन्डेंट और पुलिस के दफ्तर हैं और एक असपताल भी है और स्टेशन के पास डाक बंगला है॥

जून से मार्च तक कोकाल नहर के रस्ते समुद्र के किनारे के शहरों को आ जा सकते हैं ॥

त्रिचूर में मन्दिर से आधे मील के फासले पर एक चत्तरम भी है ॥

त्रिचर मदरास रेलवे की साऊथ वैस्ट लाइन पर स्टेशन है इसका मदरास से फासला ३८१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४॥।७) और सवारी गाड़ी में ४) है ॥

त्रिवेणी ।

अर्थात् तीन दरिया । यह गाउं सूबा बंगाल के जिला हुगली में है और त्रिवेनी इस लिये कहलाता है कि गंगा, जमना और सरस्वती के संगम पर वाके है । सरस्वती के उत्तर की तरफ चौड़ा और ऊंचा त्रिवेनी घाट है जिस पर बड़ी सुन्दर सीढ़ियां बनी हैं, कहते हैं इस घाट को उड़ीसा के गजपति वंश के आखीरी राजा मुकुन्ददास ने जो सोलहवीं सदी में राज करता था बनाया था. सरस्वती के दक्खिन की तरफ त्रिवेनी गाऊं है जो बहुत पवित्र माना जाता है और पहिले विद्या के वास्ते मशहूर था और यहां ३० से भी जियादा संस्कृत पाठशाला थे, यहां ५ बड़े २ मेले होते हैं पहला मकर संक्रान्ति या उत्तरायन का पौषके आखीरी और माघ के पहले दिन होता है जब सूर्य मकर में जाता है पुरखा भतों को जो घर की चौकसी करते हैं और सब देवताओं को चढ़ावा चढ़ाया जाता है यह रीति घर का प्रोहत घर मेंही कराता है, स्नान मकरा संक्रान्ति के मौके पर सागर टापू में होता है और त्रिबेनी में मेला होता है जिस में ८००० लोग आते हैं दूसरा विश्वा संक्रान्ती जो फरवरी में उस मौके पर होता है जब सूर्य मेख की पहिली रेखा में पहुंचता

है । तीसरा मेला बारुनी का जो बंगाल में स्नान का सब से बड़ा मेला है बारुना देवता की यादगार में फरवरी या मार्च में होता है । चौथा दशहरे का मेला जो गंगा जी के राजा सागर के ६० हज़ार लड़कों को जो एक ब्राह्मण महापुरुष के श्राप से भस्म होगये थे मुक्ति कराने के लिये पृथ्वी पर आने की यादगार में होता है । पांचवां कार्तिक मेला जो दुर्गा के पुत्र कार्तिकया की यादगार में होता है ॥

त्रिवेनी में धर्मशाला कोई नहीं यात्री सराय और किराया की दुकानों में ठैहरते हैं । हुगली में अग्निबोट, किश्तियां और गाड़ियां त्रिवेनी जाने के लिये किराये पर मिलती हैं ॥

हुगली कलकत्ते से २४ मील है तीसरे दरजे का किराया इस्ट इण्डियन रेलवे में ।~) लगता है ॥

त्रिचनापल्ली ।

अहाता मदरास में त्रिचनपाली जिले का बड़ा नगर कावेरी दरिया के दहाने किनारे पर है और बहुत सी लड़ाइयों के सबब बहुत मशहूर है ॥

एक किला छावनी और कई गांव जो मियूनिसिपैलिटी की हद में है त्रिचनापाली में शामिल हैं । किले की दीवारें गिरा दी गई हैं पर नगर जो इस के अन्दर था और छावनी में फर्क करने के लिये शहर को अब तक क़िला कहते हैं । शहर के उत्तर की तरफ त्रिचनापली की चट्टान हैं जिसकी चोटी बड़े बाजार से २०६ फ़ीट ऊंची है । इस चट्टान पर शिवजी का मन्दिर है और इस की चोटी पर पिल्लयार (गणपति) का मन्दिर है । अगस्त में गनपति के मन्दिर का मेला होता है, जिस में अनगिनत यात्री आते हैं । चट्टान की चोटी पर से कावेरी दरिया और श्रीरंगम टापू का बड़ा

अच्छा नज़ारा दिखाई देता है। चट्टान के नीचे जेसूट कालिज और एस० पी० जी० कालिज है। स्टेशन के पश्चिम की तरफ़ वारिआर गावं है जो किसी समय बड़ा भारी नगर और चोला राज की राज धानी था। त्रिनापली की आबादी ६० हज़ार है, और यह नगर मदरास अहाते में दूसरे दरजे हैं। यहां के सुर्ट और ज़ेवर बहुत मशहूर हैं॥

त्रिचनापली जंक्शन या छावनी के स्टेशन के पास सेण्टजान का गिर्जा है जिस में कलकत्ते के लाट पादरी हेबर साहिब जिनका यहां १८२६ में काल हुआ दफ़न हैं। छावनी में कलक्टर और मेजिस्ट्रैट की कचहरियां और साऊथ इण्डियन रेलवे के दफ़तर हैं दक्खिन की तरफ़ एक मैदान में छोटी छोटी पहाड़ियां हैं जिनमें से एक को सुनहरी और दूसरी को फ़क़ीर की पहाड़ी कहते हैं। जब कलाइव और लारन्स यहां लड़ रहे थे तो दूसरी पहाड़ी पर अङ्गरेज़ों और फ्रांसिसियों से लड़ाई हुई थी। स्टेशन पर अंग्रेज़ों को सोने की जगह मिलसकती है, और अङ्गरेज़ों और देसियों के लिये खाने के कमरे भी हैं अङ्गरेज़ों के कमरे का इन्तज़ाम सपेन-सर साहिब के हाथ में है और देसियों के कमरे का एक ब्राह्मण के पास है। स्टेशन से पौने मील के फ़ासले पर म्यूनीसिपालिटी का बंगला है जिस में खानसामा भी है॥

शहर त्रिचनापली छावनी से २॥ मील है। छावनी का स्टेशन जिस को त्रिचनापली जंकशन कहते हैं मदरास बाच जंकशन से २५१ मील और त्रिचनापली फ़ोर्ट या शहर का स्टेशन २५४ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥-) और २॥=) लगता है॥

चिन्नपठ्ठा।

मदरास रेलवे का स्टेशन है। इस से ५ मील के करीब चिन्ता

तिरुपत्ती में श्री बंकातासा पेरुमल का मन्दिर है, जहां सितम्बर के महीने में मेला होता है और बहुत यात्री आते हैं ॥

थिन्नपट्टी मद्रास नगर से रेल में ११७ मील है तीसरे दरजे का किराया २-) लगता है ॥

थंगा चिमादम.

पोर्ट पेमण्टहिल यहां से सवा मील है। कहते हैं कि वेलोरिनी थीर्थम में जो इस स्टेशन से एक मील उत्तर की तरफ़ है रामचन्द्र जी को पहले पीने का पानी मिला था इस सबब से यात्री यहां बहुत जाते हैं। थंगाचिमादम में दो चत्तरम है, एक स्टेशन से एक फ़र्लांग और दूसरी एक मील के फ़ासले पर है पोर्ट पेमण्टहिल और बेलोरिनी थीर्थम में कोई चत्तरम या डाक बंगला नहीं। यहां पोर्ट पेमण्टहिल और वेलोरिनी थीर्थम जाने के लिये गाड़ियां मिलती हैं किराया ॥) से १॥) तक लगता है ॥

थंगाचिमादम साऊथ इण्डियन रेलवे में मद्रास बीच जंकशन से ४४४ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।) लगता है ॥

थम्बीकोट्टई ।

साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। गावं स्टेशन से एक मील उत्तर की तरफ़ है यहां नार्यल बहुत होता है जिस के सबब यह गावं बहुत मशहूर है । स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर मरावाकदू गांव में हर बुध के दिन मेला होता है और स्टेशन से ३ मील पश्चिम की तरफ़ मजानाथल गावं में चैत्र पुर्णिमा ऊशावम मेला हर साल दस दिन तक होता है जिस में बहुत यात्री आते हैं, गावं में देशियों के लिये दो होटल हैं। स्टेशन से २॥ मील पुथाव-दायरकोइल गावं में एक मन्दिर है जिस में सोमबार को आधीरात

के वक्त माथवस्थम परिमूयंस्वामी की शिव पूजा होती है। करथी गई सिभावर्म तेहवार पर जो नवम्बर दिसम्बर में होता है बहुत यात्री आते है॥

गांव में कुल दो बैल गाड़ियां हैं जिन का किराया पुथावदायर कोईल तक ॥।) और ॥) लगता है॥

थम्बिकोटई मद्रास जंकशन से २३५ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥=) लगता है॥

थानेश्वर-कुरुक्षेत्र।

दिल्ली अम्बाला कालका रेलवे पर पंजाब के ज़िला अम्बाला में एक नगर है कलकत्ते से १००० मील और दिल्ली से ६६ मील उत्तर की तरफ़ है पुराने ज़माने में एक बड़े राजा की राजधानी थी, बड़े तीर्थ की जगह है और वहां का मन्दिर और तालाब बहुत पवित्र माने जाते हैं क्योंकि सब से पहले आर्या यहां आकर बसे थे और आर्य धर्म्म फैलाया, यह देश का पवित्र हिस्सा ७० मील लम्बाई में और २० मील चौड़ाई में है। और इस में ३५२ तीर्थ हैं जिन में थानेश्वर का पवित्र तालाब स्टेशन से २० मील दक्खिन की तरफ़ है सब से बड़े हैं, थानेश्वर का पवित्र तालाब स्टेशन से एक मील के क़रीब है और चौकोना बना हुआ है जो क़रीब एक मील लंबा और चौथाई मील चौड़ा है और उसके उत्तर पूर्बी और दक्खिनी किनारों पर नहाने के घाट हैं और उन पर बड़े बड़े अच्छे बने हुए पुराने युग के मन्दिर हैं और पश्चिमी किनारे पर जंगल में बहुत से खण्डर है, तालाब के बीच में एक मन्दिर है जिस को जाने के लिये रास्ता बना है यह और मन्दिरों से पुराना है और बहुत माना जाता है, कुरुक्षेत्र का ज़िकर संस्कृत की किताबों में भी है इसका नाम ब्रह्मावर्त और इसकी जगह सरस्वती और दृशद्वती दरयाओं के

बीच में लिखा है, थानेश्वर और पेहोवा में हमेशा बहुत यात्री जाते हैं कहते हैं कि बाज़ी दफ़ा १० लाख के क़रीब होजाते हैं, ६ अप्रैल १८९४ के बड़े मेले पर जब चांद ग्रहण हुआ था और जो रेल के खुलजाने से पीछे पहला बड़ा मेला था। साढ़े सात लाख यात्री थे॥

थानेश्वर में पेहोवा जाने के लिये यक्के और बैल गाडियां मिलती हैं यक्के का किराया १) और बहली का १।) लगता है॥

कलकत्ते से थानेश्वर तक तीसरे दरजे का किराया ईस्ट इण्डियन रेलवे में ११=) और अम्बाले से ।=) है॥

थाना।

ग्रट इण्डियन पैनिनशुला रेलवे पर बम्बई से २१ मील एक नगर है। बम्बई से तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ।-) और सवारी गाड़ी में ।) लगता है। बुद्ध लोगों के कनेरी की खोहों के मन्दिर यहां से ६ मील हैं। स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर श्री गुणठाली का मेला होता है जिस में बहुत लोग आते हैं थाना खाड़ी सलसत्ते टापू और थाना के बीच में है इस में छोटी छोटी देसी किश्तियां चल सक्ती हैं बम्बई का पागलखाना इस स्टेशन से एक मील के क़रीब है। पकुरनी झील जिस से थाना शहर में पानी आता है यहां से ४ मील है और देखने के लायक़ है॥

स्टेशन पर सवारी मिलती है। स्टेशन पर जण्टलमैनों और लेडियों के लिये वेटिंग रूम बने हुए हैं और पास ही देसियों के लिये होटल और धर्मशाला हैं॥

डकोर।

बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे के अनन्द जंकशन से २० मील बड़ी तीर्थ की जगह है। यहां ज़िले की सब से बड़ी झील है

पर यह नगर कृष्णजी के मन्दिर के सबब बहुत जियादा मशहूर है कहते हैं इस मन्दिर में कृष्ण जी की मूर्ति द्वारका से लाकर रक्खी गई है मन्दिर पर एक लाख रुपया खर्च हुआ था और देवता का सिंहासन लकड़ी का है जिस में बड़ा सुन्दर बेल बूटा खोदा हुआ है और थोड़ी देर हुई महाराजा साहब गायकवाड़ ने इस को सवा लाख रुपया खर्च करके सोने और चांदी से सजाया है।

डकोर बड़ी मशहूर तीर्थ की जगह है ब्राह्मण से लेकर ढेड़ तक यात्रा को आते हैं पर छोटी जाति के लोगों को अन्दर नहीं जाना मिलता वह दूर सेही दर्शन कर लेते हैं॥

इस जगह के बड़ेमेले अस्सू (अक्तूबर) और कार्तिक (नवम्बर) में होते हैं जब ५० हजार से एक लाख तक यात्री इकट्ठे होते हैं जिन में से कुछ बड़ी बड़ी दूर से आते हैं और पूरे चन्द्रमा के मौकों पर यात्री ५ से १० हजार तक होते हैं॥

डकोर से २० मील उत्तर की तरफ कपाड़वंज नगर है जिस में बहुत व्योपार होता है। साबण शीशे और घी के कुप्पे बनते हैं नगर में एक सुन्दर हौज़ और पूर्वी दर्वाजे के पास एक आश्रम है। इस नगर में मुसलमानों की मसजिदों और कबरों के खण्डर हैं और एक जैनियों का मन्दिर है जो २५ साल हुये डेढ़ लाख रुपये के खर्च से बना था इस मन्दिर में संगमरमर के बड़े सुन्दर पील पावे और पच्चरकारी कियाहुआ संगमरमर का बड़ा फ़र्श है। डकोर और कपाड़वंज के बीच में लसुन्द्रा के गरमपानी के सोतेहैं। इनका पानी बाजी जगह ११५ दरजे गरम और उस में गन्धक की बू आती है। कहते हैं कि यह पानी शरीर की खलड़ी के रोगों को अच्छा है॥

डकोर और कपाड़वंज के बीच में तांगे चलते हैं। डकोर में १० धर्मशालायें हैं और कपाड़वंज में भी कई हैं॥

द्कोर बी० बी० ऐंड सी० आई रेलवे की आनन्द गोवरा शाख पर स्टेशन है। इस का फासला बम्बई से २८६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥)॥ लगता है॥

नगर स्टेशन से १॥ मील के करीब है गाड़ियां किराये पर मिलती हैं॥

दमराओं।

ईस्ट इण्डियन रेलवे के बक्सर स्टेशन से १० मील है कहते हैं कि इस जगह के मन्दिर में रामचन्द्र जी और अहिल्या बाई की मूर्त्तियां हैं। अहिल्याबाई बड़ी बुद्धिमान् थी पर अपने पति गौतम के श्राप से पत्थर की हो गई थी जब रामचन्द्र जी यहां आये तो फिर अपने रूप में आगई और परलोक को चली गई॥

दमराओं में एक डाक बंगला और एक सराय है। बक्सर में भी हाकिमों के वास्ते स्टेशन से एक मील के फासले पर एक बंगला है॥

बक्सर कलकत्ते से ईस्ट इंडियन रेलवे म ४११ मील है तीसरे दरजे का किराया ४) लगता है॥

दलमौ।

अवध के जिला रायबरेली में गंगाजी के किनारे पर लखनऊ से ६० मील और कानपुर से ४८ मील एक नगर है। यह नगर दरिया के किनारे एक ऊंची चट्टान पर बसा हुआ है और बड़ापुराना शहर है। वर्षा के दिनोंके सिवाय यहां की आबहवा अच्छीहै। कार्तिक के महीने में जिले का सब से बड़ा मेला इस जगह होता है इस को कातकी का मेला कहते हैं यह मेला तीन दिन तक रहता है। ३ लाख के करीब यात्री गंगा जी में स्नान करने के लिये मेले के मौके पर दूर दूर से आते हैं॥

अवध रुहेलखण्ड रेलवे का स्टेशन रायबरेली यहां से १६ मील है जहां से पक्की सड़क दलमौ को जाती है और सवारी मिलती है ॥

सनसन और तेल के बीज का व्योपार होता है और चमड़ा यहां से कानपुर को जाता है ॥

दलमौ में एक सराय भी है। रायबरेली मुग़ल सराय से १८८ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है ॥

द्वारका।

अहाता बम्बई में काठियावाड़ के पश्चिम की तरफ़ एक बन्दर और हिन्दुओं की बड़ी तीर्थ की जगह है। विष्णुपुराण में लिखा है कि जब कृष्ण जी के वंश के यादवलोग कमज़ोर होगए तो उन्होंने द्वारका नगर बसाकर उस के इर्द गिर्द दीवार बनाई और नगरको सुन्दर बागों पानी के हौज़ों और मंदरों से सजाया और वहां जनारधन मथुरा के लोगों को लेगया ॥

जिस दिन कृष्ण जी का काल हुआ समुद्र का पानी चढ़ गया और सारा द्वारका पानी में डूब गया पर कृष्णजी का स्थान बचा रहा मन्दिर अब तक बचा हुआ है और केशव उस में रहता है जो कोई इस तीर्थ की यात्रा करता है उस के सब पाप नाश हो जाते हैं ॥

हिन्दु लोग कहते हैं कि यह मन्दिर एक रात में बना था इस में पूजा की जगह एक बड़ा दालान है और छत ६० पत्थर के पीलपाओं पर खड़ी है और कलश १७० फीट ऊंचा है। १० हज़ार के करीब यात्री हरसाल इस मन्दिर के दर्शन को आते हैं ॥

द्वारका बेटी बन्दर से अग्नबोट में जाते हैं। बेटी बन्दर भावनगर गोंडाल जूनागढ़ पोरबन्दर रेलवे के जाम नगर स्टेशन से

५ मील है। भावनगर से जामनगर स्टेशन २०४ मील है तीसरे दरजे का किराया ३) लगता है॥

दांतन।

अहाता बंगाल के जिला मिदनापुर में दांतन परगने का बड़ा गांव है और बंगाल नागपुर रेलवे पर कलकत्ते से १०४ मील के फासले पर वाक़े है। कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया १।-)॥ लगता है। इस गांव में शमालेश्वर का मन्दिर है। जिस के दरवाज़े पर एक बैल की बड़ी मूर्ति है जिस की लातें काला पहाड़ ने काट डाली थीं॥

कहते हैं कि राजा भोज ने इस मन्दिर को बनाया था। इस जगह का नाम इस वास्ते दांतन होगया है कि चैतान्या ने जगन्नाथ जाते हुये यहां दान्तन की थी पर आदुनाथ की तारीख़ से मालूम होता है कि यह नगर चैतान्या से बहुत पुराना है॥

इस जगह के विद्याधर और सशंकर ताल बहुत पुराने हैं। पहले कोतलिंगा के राजा मुकुन्दा देव के वज़ीर विद्याधर ने खुदवाया था। और दूसरेको राजा सशंकर देव ने जगन्नाथको जातेहुए खुदवाया था। कहते हैं कि इन दोनों तालाबों के बीच में धरती के नीचे रास्ता है॥

टसर और सूती कपड़े का जो मौरभंज रियासत में बनता है बड़ा बयोपार होता है॥

स्टेशन के पास अङ्गरेजों के लिये बंगला और नगर में जो स्टेशन से डेढ़ मील है सराय और कई धर्मशाला हैं स्टेशन पर देसी गाड़ियां सवारी के लिये अकसर मिलती हैं॥

दादार।

बम्बई बड़ोदा ऐंड सेंटरल इण्डिया और जी० आई पी० रेलवे का जंकशन है। बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे का स्टेशन इस स्टेशन के पासही है। दादार में मेहरा बाग और मट्टी के बर्तनों के कारखाने देखने के लायक़ हैं बी० बी० ऐंड सी० आई० और जी० आई० पी० रेलों के स्टेशनों के बीच में एक बड़ी अच्छी हिन्दुओं के लिये धर्मशाला है। स्टेशन के पास दो ऊन के और दो कपड़ा रंगने के कारखाने हैं॥

दादार बम्बई के विक्टोरिया टरमीनस से ६ मील और कोलाबा से ८ मील है तीसरे दरजे का किराया ⌐)। और ⌐)॥ लगता है॥

दिन्दी गुल।

मदरास अहाते के मदूरा जिला और दिन्दीगुल तालुक में नगर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मदरास बांच स्टेशन का इस जगह से फासला ३०१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३।≤) लगता है। यह जगह तमाकू के वास्ते बहुत मशहूर है। दिन्दी गुल समुद्र से ६०० फीट ऊंचा है इस वास्ते यहां रातें अकसर जियादा गरम नहीं होतीं। बांई तरफ की पहाड़ियां जिनका रुख दक्खिन की तरफ को है सिरुमलए कहलाती हैं और दाहने हाथ की पहाड़ियां छोटी पलनी कहलाती हैं। दिन्दीगुल का पुराना किला एक २८० फीट ऊंची चट्टान पर बनाहुआ है यहां बहुत सी लड़ाइयां होचुकी हैं। १७८३ में इस को अंग्रेजों ने टीपू साहिब से लिया। सपैनसर साहिब और कम्पनी का चुरटों का कारखाना नगर में है। यह नगर लोहे और कांसी के काम के वास्ते मशहूर है और यहां चमड़ा रंगने के कारखाने हैं॥

दिन्दीगुल से ३६ मील पलनी पहाड़ियों पर पलनी अन्दावरका बड़ा मशहूर पगोड़ा है। यात्री यहां दक्खिनी हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से आते हैं। जनवरी और मार्च के महीनों में यहां तेहवार होते हैं। लूथरन ईसाइयों का मिशन और गिर्जे स्टेशन के पास है। रुई, प्याज, अरिण्ड का बीज, सुपारी, जुट, साफ किया हुआ चमड़ा, बांस, जलाने की लकड़ी और शराब तौर यहां से बाहर जाते हैं और चमड़ा साफ करने की छाल, गीला चमड़ा और नमक बाहर से आता है॥

दिन्दीगुल में देसियों के विश्राम के लिये दो चत्तरम हैं जहां खाना भी मामूली दाम पर मिल जाता है और स्टेशन से एक मील के करीब अंग्रेज़ों के वास्ते बंगला भी है, इस का एक रुपया रोज़ किराया लगता है खाना स्टेशन पर सपिनसर साहिब और कम्पनी के रिफरेशमेन्ट रूम से मिल सक्ता है। पलनी पर देसियों के लिये कई चत्तरम और अंग्रेजों के लिये बंगले हैं॥

घोड़े और बैल गाड़ियां दिन्दीगुल में पलनी जाने के लिये मिलती हैं। घोड़े का किराया ५) और बैलगाड़ी का ३) लगता है॥

पलनी जाने वाले मुसाफरों को अम्मायनायाकनूर स्टेशन उतरना चाहिये वहां स्टेशन पर ठहरने की जगह है और खाना मिल सक्ता है। बैलगाड़ियां किराये पर मिलती हैं और पलनी में पहाड़ी पर जाने के लिये तांगे और सवारी के घोड़े मिलते हैं॥

अम्मायनायाकनूर मद्रास बीच स्टेशन से ३२२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥-) लगता है॥

दिल्ली ।

जमुना जी के पश्चिमी किनारे पर कलकत्ते से ९०३ मील, बम्बई से जी० आई पी० रेलवे में ९५७ मील और आगरे से १२२ मील के फ़ासले पर वाक़े है। बी० बी० एण्ड सी० आई० इक्सटेनिशन, अवधरुहेलखण्ड, जी० आई पी और नार्थवेस्टर्न रेलवे का जंकशन है, तीसरे दर्जे का किराया ८-)॥, ४॥=) और २॥-) लगता है। यह शहर पुराने ज़माने में हिन्दुस्तान की राजधानी था अब सूबा पंजाब में ज़िला और कमिश्नरी दिल्ली का सिवल सदर मुक़ाम है। असली शहर दिल्ली या दिल्लीपुर कहलाता था और उसको राजा दिलू, नए शहर से ५ मील के फ़ासले पर ईसवी सम्वत से ५० साल पहले बसाया था पर हिन्दू और मुसलमानों के राज में इस की जगह बहुत दफ़ा बदली और पुराने शहरों के खण्डहर नए नगर के दक्खिन और दक्खिन पूर्व की तरफ़ ४५ मील चारों तरफ़ फैले हुए हैं। नए नगर को शाह जहानबादशाह ने बसाया था और उस के नाम पर यह नगर शाहजहान आबाद कहलाता था। बार-हवीं सदी ईस्वी तक यह नगर हिन्दुओं के पास रहा और फिर मुसलमानों के हाथ आया और बहुत से हेर फेर के बाद सरकार अंग्रेज़ी के क़बज़े में आ गया और उस वक़्त से इसमें बड़ी रौनक़ हो गई है। क़ुतब साहिब की लाट दिल्ली से ११ मील दक्खिन की तरफ़ है। यह मीनार गाओदुम बना हुआ है और २३८ फ़ीट ऊंचा है और जगत के सब मीनारों से ऊंचा है। चोटी पर जाने के लिये ३७९ सीढ़ियां बनी हुई हैं और ऊपर से दूर दूर तक बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है इस लाट के पास एक और धात की लाट २३ फ़ीट ८ इंच ऊंची है। कहते हैं इस को हिन्दूओं ने ३१९ ई० में बनाया था यह लाठ जगत में निराली है, इस का बोझ १७ टन याने ४७६ मन के क़रीब है। इसको फ़िरोज़ शाह की लाट कहते हैं॥

लाल किले के गिर्द एक डेढमील दीवाल बनी हुई है इस किले में दीवान खास है जो देखने के लायक़ है यह संगमरमर का बना हुआ है और उस में बड़ी सुन्दर पच्चरकारी की हुई है इसी दीवान में तख़्त ताऊस था जिस को नादरशाह दुर्रानी १७३६ में ईरान ले गया। इस तख़्त का मूल ३ करोड़ रुपया बताते है। दीवान खास के पास बड़ी सुन्दर मोती मसजिद है॥

कश्मीरी और दिल्ली दर्वाजों के बीच में जुमा मसजिद है जो हिन्दुस्तान की सब मसजिदों से खूबसूरत है। स्टेशन के पास कम्पनी बाग़ और उस में अजायब घर भी सैर की जगह है। हुमायूं का खूबसूरत मुक़बरा शहर के दक्खिन की तरफ़ दो मील पर है। यह मक़बरा लाल पत्थर का बना हुआ है, और उस में चिट्टे पत्थर से पच्चरकारी की हुई है। दिल्ली में और जगह देखने के लायक यह हैं॥

(१) जनरल निकलसन और उस के साथियों का मीनार जी० आई० पी० के दिल्ली सदर स्टेशन के साम्हने

(२) सफदर जंग का मक़बरा।

(३) शाही हम्माम।

(४) काली मसजिद पठानों के राज में बनी थी।

(५) अमीर खुसरो का मक़बरा।

(६) निकलसन का बाग और अंग्रेजों का कबरिस्तान।

दिल्ली की फसील ५॥ मील है और उस में दस दरवाजे हैं। शहर में जमना दरिया की नहर है शहर में वाटर वर्कस से पानी लाया जाता है। चांदनी चौक दिल्ली का बड़ा खूबसूरत बाज़ार है इस में जगह २ के लोग भांत २ के कपड़े पहने हुए नज़र आते हैं॥
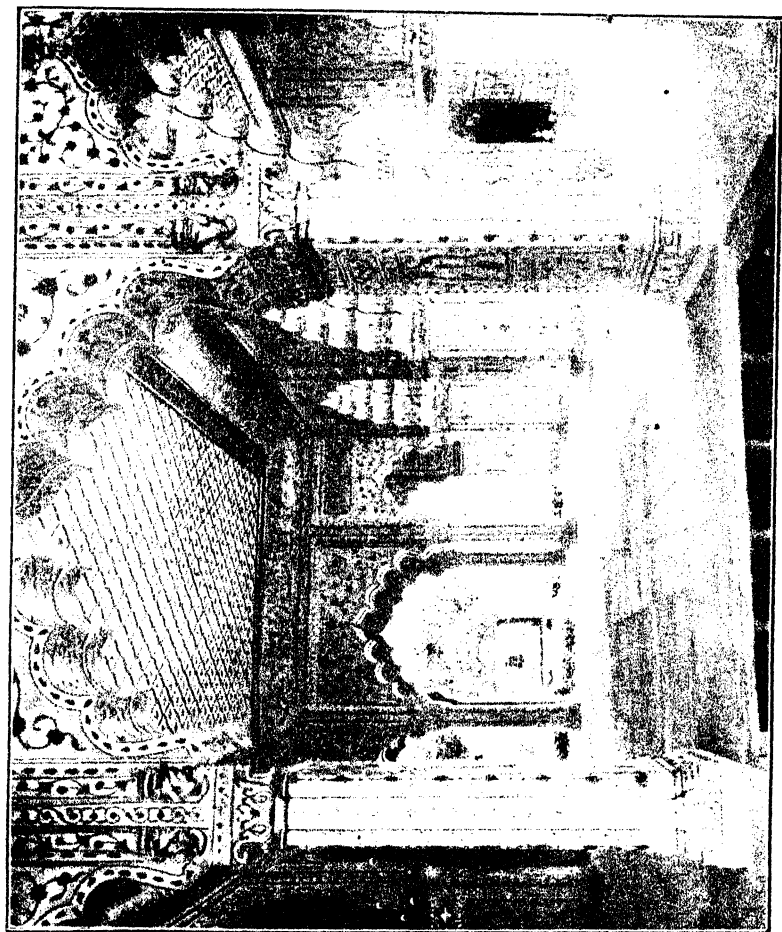
Photo-etch. by ... Shop, Calcutta

दीवाने ख़ास—देहली।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

हुमायूं का मक़बरा—देहली।
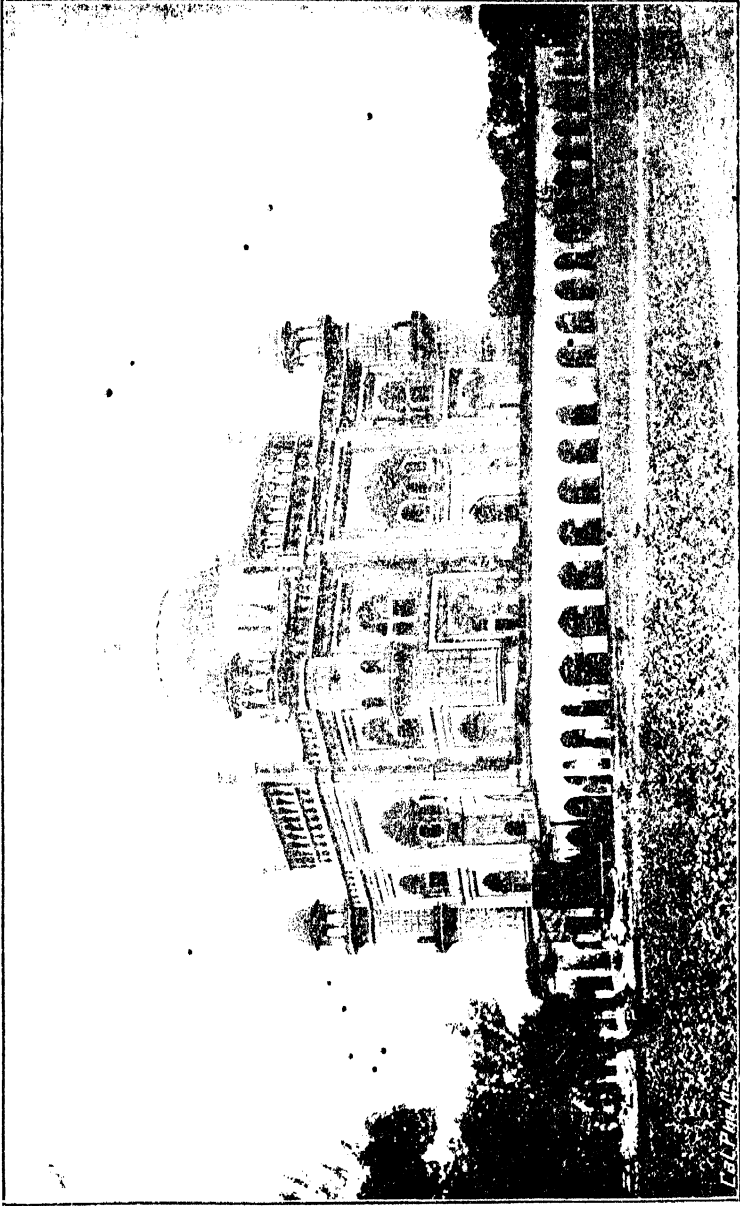
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

सफ़दर जंग का मक़बरा—देहली।

दिल्ली से ११ मील मैहरोली में पुरानी दिल्ली के क़रीब हिन्दुस्तान में सब से अच्छा फुलों की सैर का मेला होता है जिस में हज़ारों लोग दूर २ से आते हैं॥

दिल्ली में कई रुई कातने, आटा पीसने, बिसकुटों वगैरा के बहुत से कारखाने हैं और ज़रदोज़ी और चांदी सोने के काम के लिये मशहूर है॥

इस जगह देशियों के लिये कई अच्छे होटल और स्टेशन के पास बहुत सराये हैं। स्टेशन से चौथाई मील के फासले पर लाला छुन्नामल की धर्मशाला है इस में मुसाफ़िरों से किराया नहीं लियाजाता। खाना भी मामूली दाम पर मिल जाता है दिल्ली में सवारी हर वक्त मिलती है॥

दोद करुगोद

सदरन मरहटा रेलवे पर स्टेशन और गांव है। इस जगह दरया के किनारे पर एक बड़ा पुराना अंजीर का रूख है जिसको विदुरसावस्थम कहते हैं। चार हज़ार बरस हुये इस रूख को विदुरा ने लगाया था कहते हैं कि इस रूख के मन्दिर की यात्रा करने से यात्रियों के बड़े २ रोग दूर होजाते हैं इसी सबब से यह बड़ी तीर्थ की जगह है॥

स्टेशन के पास एक बंगला है और एक मील के करीब दो चत्तरम हैं॥

दोद कुरुगोद बङ्गलोर स्टेशन से ५१ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥-) लगता है॥

देवगढ़ ।

बंगाल अहाते के संथाल परगना में देवगढ़ सब डिविज़न का सदर मुकाम है और ईस्ट इण्डियन की कार्ड कार्डन से ४ मील पर है यहां शिवजी के २२ मन्दिरों का एक झुण्ड है जिस की यात्रा को लोग हिन्दुस्तान के दूर २ हिस्सों से आते हैं । सब से पुराने मन्दिर को वैद्यनाथ कहते हैं इस में शिवजी के १२ सब से पुराने लिंग में से एक लिंग है । इस जगह तीन बड़े मेले हरसाल होते हैं। भद्र पूर्णिमा का मेला सितम्बर के महीने में १५ दिन तक होता है, श्री पंचमी का मेला डिसम्बर और जनवरी में एक महीने तक होता है, और शिवरात्री का मेला फरवरी में होता है । इन मेलों पर ३० से ४० हज़ार तक लोग आते हैं ॥

मेले के दिनों में लोग मोहनी के घरों में और गवरमेण्ट की बनाई हुई झोपड़ियों में ठहरते हैं । नगर स्टेशन से आधे मील पर है और इस में दो धर्मशाला हैं ॥

देवगढ़ ईस्ट इंडियन रेलवे में कलकत्ते से २०५ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥) लगता है ॥

देवबन्द ।

ज़िला सहारनपुर में नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर मुज़फ्फ़ नगर से १५॥ मील उत्तर की तरफ एक कसबा और मिऊनसिपेलटी है, कसबे से आधे मील के फासले पर एक छोटी सी झील है जिस को देवी कुण्ड कहते हैं इसके किनारों पर मन्दिर, घाट और सतियों की छतरियां हैं यात्री लोग यहां बहुत आते हैं देवबन्द एक पुराना कसबा है पहले इस को देववन याने पवित्र जंगल कहते थे । बस्ती के पास

जंगल में जहां देवी का मन्दिर है अब भी मेला होता है । पांडवों ने अपने बनवास का पहला हिस्सा इस कसबे के पास गुजारा था ॥

यहां से अनाज, चीनी और तेल बाहर जाता है बारीक कपड़ा भी बनता है ॥

नगर में जो स्टेशन से डेढ़ मील है एक आश्रम है टेशन पर थके गाड़ी के वक्त मुसाफिरों को नगर ले जाने के लिये मिलते हैं। नगर तक एक सवारी का ≈) किराया लगता है ॥

देवबन्द लाहौर से २५८ मील और दिल्ली से ९० मील है तीसरे दरजे का किराया ३)॥ और १≈) लगता है ॥

देवलवाड़ा ।

अहाता बम्बई के वर्धा जिले और अरवी तहसील में वर्धा दरिया पर और अरवी से ८ मील पश्चिम की तरफ एक छोटा सा गांव है। यह गांव मेले के सबब मशहूर है जो नवम्बर के महीने में दरिया पर होता है। मेला २० से २५ दिन तक रहता है और इन दिनों यात्री और व्योपारी नागपुर, पूना, नासिक, जब्बलपुर से रुकमनी देवी के मन्दिर के दर्शन को अनगिनत आते हैं और व्योपार भी बहुत होता है । देवलवाड़ा के ठीक सामने कुन्दनपुर नगर था जिसके विषय में पवित्र पुस्तक और भागवत के दसवें अध्याय में लिखा है के विदरभा (वरधा) दरया से अमरावती तक फैला हुआ था और विधरबा देश पर भीमक राजा राज करता था इस राजा ने अपनी पुत्री का शिवजी के साथ विवाह कर दिया था ॥

इस गांव के पास अरवी रोड स्टेसन है जो सदरन महट्टा रेलवे पर पूना से ९० मील है । पूना से अरवी तक तीसरे दरजे का किराया १।)॥ है ॥

अरवी में बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। देवलवाड़ा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं यात्री दरया के किनारे पर खुले मैदान में ठहरते हैं॥

देवीपटन।

अवध के जिला गोंड़ा में गांव है। यहां बहुत से मन्दिर हैं और एक बड़ा मेला दस दिन तक होता है जिस में एक लाख के करीब यात्री और व्योपारी आते हैं। कहते हैं कि हिन्दुस्तान के उत्तर के हिस्से में यह सब से पुरानी शिवजी के मानने वालों की जगह है और इस को राजा कर्ण कुन्ती के पुत्र के साथ भी लगाओ है। राजा कर्ण अपने पालने में गंगा जी के किनारे छोड़ दिया गया था और उस को राजा अदिरथ ने जिस के कोई बच्चा नहीं था कर्ण को अपना पुत्र बना लिया था। जब बड़ा हुआ दरोना ने उस को ब्रह्म के हथियार न दिये क्योंकि वह हस्तनापुर के दर्बार में पला था कर्ण ने परसराम की सेवा करके आखिर हथ्यार ले लिये। पीछे वह दुर्योधन के साथ जिसका जिकर महाभारत में है स्वामीवाड़ा गया और बड़ी लड़ाई में सूरमापन दिखाने के सबब मगध के राजा जरासिन्धु ने मलीनी शहर उस को दे दिया। मेले में पहाड़ी टट्टू, कपड़ा, कलकी चटाई, घी, लोहा, दालचीनी का व्योपार होता है। मेले के दिनों में बहुत से भैंसे बकरे और सूअर मन्दिर में बलि दिये जाते हैं॥

धम्मनगांव।

यह नगर बड़े व्योपार की जगह होता जाता है। इस में कई रुई निकालने और दबाने के कारखाने हैं। और वून जिले के सिवल सदर मुकाम ये ओतमल के वास्ते स्टेशन है। ये ओतमल यहां

से २६ मील है और उस में डिप्टी कमिश्नर की कचहरी हैं। ये ओ-तलम में रुई दबाने और निकालने के कारखाने हैं। पले गांव में जो ८ मील परे है रुई निकालने की एक कल है और अजोनीसिंह में ७ मील और परे एक रुई निकालने की कल है। मारच महीने के करीब बागा जी हुआ का मेला यहां से १२ मील वारूद गांव में होता है। यह मेला १५ दिन तक रहता है और इस में बहुत ब्योपार होता है। डाकखाने की तरफ से तांगे चलते हैं जिन में मुसाफरों को भी जगह मिलसक्ती है॥

स्टेशन पर वेटिंरूम बना हुआ है और पास ही एक बंगला और ३ धर्मशाला हैं। धम्मन गांव में बारूद जाने के लिये ३) किराया पर बैल गाड़ियां मिलती हैं॥

धम्मनगांव जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ४४१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥।≈) और सवारी गाड़ी में ४॥≈) लगता है॥

धूलिया।

खानदेश की कलकटरी का हैडकुआरटर और जी० आई पी० रेलवे पर बड़े ब्यौपार की जगह है। यहां हरसाल पंजरा दरिया के किनारे एक बड़ा मेला होता है। धूलिया से २४ मील के फासले पर सुलतानपुर और उस के किले के खण्डर बहुत मशहूर हैं। दो मील परे एक अनूठा कुआ है इसका गुम्बद और सीढ़ियां देखने के लायक हैं। धूलिया से ४० मील के फासले पर पिम्पलनोर जगह है जिस में बहुत सी पुरानी चीज़ें देखने के लायक हैं उन में से पाखसेन का पुराना मन्दिर और कई खोहें बहुत अजीब हैं। इन में

से पत्थर की मूर्तियां निकलती हैं। धूलिया से ३५ मील भामर की खोहें भी देखने के लायक हैं॥

धूलिया बम्बई से चालीस गाऊ के रस्ते २२६ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥~) लगता है॥

धौलपुर।

चम्बल दरया पर रियासत धौलपुर की राजधानी है। महाराना साहिब और पुलिटिकल एजण्ट साहिब इसी जगह रहते हैं। शाहजहान के जमाने की १६३६ की बनी हुई एक बड़ी भारी मसजिद है और एक मुसलमान महात्मा का मकबरा है॥

कहते हैं कि असली नगर को राजा धौलन देव ने ग्यारहवीं सदी ई० में बसाया था। बाबर बादशाह लिखता है कि उसने धौलपुर को १५२६ ई० सो० में फतह किया और उसके बेटे हुमायूं ने दरया से बचाने के लिये नगर को परेजा बसाया। एक पक्की सराय अकबर के जमाने की बनी हुई है। नगर का नया हिस्सा और राना साहिब के महल राना कीर्तिसिंह ने बनाये थे। अक्तूबर में यहां आछा पूरा मेला १५ दिनतक होता है और उन दिनोंमें घोड़े, पशू और और वस्तु का बड़ा व्योपार होता है धौलपुर से दो मील के करीब मंचूदेव का पवित्र ताल है जो कृष्ण जी का ताल माना जाता है। स्टेशन पर अच्छे वेटिंगरूम बनेहुये हैं॥

धौलपुर जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ८७४ मील और दिल्ली से १५४ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में १३) और २) और डाक गाड़ी में १०।०) और २३) है॥

नवसरी।

पारसी मोहला का सदरमुकाम है और यहां अग्नि का एक

मन्दिर है जहां जवान मोबद याने प्रोहत पक्के होने के लिये भेजे जाते हैं। स्टेशन पर वोटिंग रूम है और पास एक धर्मशाला है॥

यह स्टेशन बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे पर बम्बई से १४८ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है॥

नवाबगंज।

अवध के उन्नाव ज़िले में लखनऊ की सड़क पर उन्नाव से १२ मील उत्तर पूर्व की तरफ़ एक नगर है। पहले यहां थाना और तहसील थी जो अब उठा लिये गए और नगर में वह रौनक़ नहीं रही। चैत्र के महीने के आख़ीर में दुर्गा और कुसाहरी देवी का मेला होता है जिस में इर्द गिर्द के लोगों के सिवाय कानपूर और लखनऊ से बहुत लोग आते हैं॥

उन्नाव बङ्गाल नार्थ वैस्टरन रेलवे की काठिहार कानपुर शाख पर कानपुर से १३ मील है तीसरे दरजे का किराया ≈) लगता है। उन्नाव में नवाबगंज जाने के लिये सवारी मिलती है॥

नरसिंहपत।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच जंकशन से १८८ मील एक स्टेशन है। इस का मदरास बीच से तीसरे दरजे का किराया २~) लगता है यहां से क़रीब दो मील पूर्व की तरफ़ शिवजी के अधीन शूद्रों का प्रोहत थम्बीरन धीरुवदुथीरई में रहता है। शिवजी के मन्दिर में यहां हर साल जनवरी के महीने में ब्रह्म उतशवम तेहवार होता है। स्टेशन से एक मील उत्तर की तरफ़ थुगिलि गांव में देशी कपड़ा बहुत अच्छा बनता है॥

नल्लासोपारा ।

बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे पर बसीन रोड स्टेशन से तीन मील के फासले पर एक स्टेशन और ब्योपार की जगह है। इस स्टेशन से ५ मील पश्चिम की तरफ़ निर्मल जगह है जहां ८ मन्दिर हैं। कहते हैं यहां एक बड़ा शंकराचार्य दबा हुआ है जिस की यादगार में नवम्बर के महीने में एक हफ़ते तक बड़ा भारी मेला होता है, जिस में कई हज़ार यात्री थाना, गुजरात, बम्बई, दक्खिन और दक्खिनी कोनकन से आते हैं। स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर जिरथन पहाड़ी भी पवित्र मानी जाती है इस पर क़िलों के खण्डर और कई बहुत पुरानी खोहें हैं जिनको कहते हैं पांडवों ने बनाया था। मेले के दिनों में लोग खासकर बांझ औरतें इन खोहों में जाकर एक देवता को चढ़ावे चढ़ाते हैं कहते यह देवता एक मनिहार के छूने से इसी जगह एक ताक में अलोप हो गया था॥

स्टेशन के पास तुन्घर पहाड़ी भी पवित्र समझी जाती हैं, इस के ऊपर ४ मन्दिर हैं जिनको बसीन के सर सूबेदार ने बनाया था। ग़रीब लोग जो मथेरन पर ज़ियादा खर्च के सबब नहीं जा सकते इस पहाड़ी पर आबहवा बदलने के लिये जाकर रहते हैं इस पहाड़ी पर शेर रीछ साम्भर और जंगली सूअर भी पाए जाते हैं।

इन के सिवा सोपार के पास बुद्ध लोगों का स्टूपरा जिसकी उस जगह के लोग बरुध राजा का कोट कहते हैं, बड़ा अजीब है। सर जेम्स कैम्पबेल और पण्डित भगवत लाल ने इस स्टूपे को १८८२ में मालूम किया था॥

निर्मल में तीन या चार धर्मशालाएं हैं और सोपारा में भी ठहरने की बहुत जगह हैं॥

नल्ला सोपारा दिल्ली से ८१३ मील और बम्बई से ३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥) और ।=)॥। लगता है।

नानिलम ।

अहाता मदरास के ज़िला तंजोर में तालुक और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है और स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफिरों के लिये वेटिंगरूम हैं। इस जगह ३ या ४ मील के अन्दर थीरुपुगुर तीरुकन्नापुरम, थीरुचेंगातनगुदी। श्रीवनविजयम और तीरुपनायूर पवित्र स्थान हैं। इन को जाने के लिये बैल गाड़ियां ननिलम में सवारी के लिये मिलती हैं। इन सब स्थानों में यात्रियों के लिये जगह बनी हैं ननिलम में भी धर्मशालाय और अंगरेज़ों के लिये बंगला है ननिलम से धान और चावल बाहर जाते हैं।

ननिलम मदरास बीच स्टेशन से १८२ मील है तीसरे दरजे का किराया२=) लगता है॥

नरसिंहपुर ।

जी० आई० पी० स्टेशन पर वेटिंगरूम और दो मील पे फासले पर एक डाक बंगला है और नगर में स्टेशन से ३ मील देशी मुसाफिरों के वास्ते एक सराय है नरसिंहपुर डिप्टी कमिश्नर का सदर मुकाम है और यहां कुछ ब्योपार भी होता है। यहां से १४ मील बीरमन में हर साल दरिया नर्बदा के किनारे पर एक मेला होता है। नरसिंहपुर में भी एक मन्दिर है जिस को नरसिंह जी कहते हैं। यह नगर बड़ा मशहूर है गोंड लोगों सागर के मरहट्टों का सभा है नागपुर के भोंसेला राजों और अंग्रज़ों के पास रहा है। नागपुर के राजों से जरनैल हार्डीमैन ने इसको १८१७ ई० में लिया था। सवारी मिलती है॥

नरसिंहपुर जी० आई० पी० रेलवे को बम्बई जब्बलपुर लाइन पर बम्बई से ५६४ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ८॥।~) लगता है सवारी गाड़ी में ५॥।≈) लगता है॥

नासिक।

पश्चिमी हिन्दुस्तान का बनारस है, गोदावरी दरिया के किनारे पर वाके है और ऐसा ही पवित्र समझा जाता है जैसा बनारस गंगा जी के किनारे पर कहते हैं कि इस दरिया का पवित्र होना गोतम ऋशि ने रामचंद्र जी को बताया था कि यह दरिया उसी जगह से निकलकर धरती के नीचे २ आता है जिस से गंगा जी निकलती है इस दरया का हर एक हिस्सा पवित्र है और इस में स्नान करने से बड़े से बड़ा पाप नष्ट हो जाता है. दरया के किनारों पर स्थान. मन्दिर, धर्मशालायं और पत्थर की सीढ़ियां यात्रियों और स्नान करने वालों के लिये बनी हुई हैं। कहते हैं कि रामचन्द्र जी ने अपने बनबास का बड़ा हिस्सा यहां गुज़ारा था॥

पंचवटी का मन्दिर सारे पश्चिमी हिन्दुस्तान में मशहूर है. यह पांच बड़ के दरख्तों के नीचे बना है और दरिया के पूर्वी किनारे पर शहर से आधे मील के फ़ासले पर है इसी मन्दिर को नासिक कहते हैं क्योंकि लक्ष्मन जी ने सरुपनखा का नाक इसी जगह काटा था, यहां शिवजी का मन्दिर है जो सब से पुराना है और बालाराम का मन्दिर सब से खूबसूरत है. पंचवटी का कुण्ड राम चन्द्र जी का कुण्ड कहलाता है क्योंकि वह यहां नहाया करते थे॥

नासिक में अंगूर और तरकारियां बड़ी अच्छी होती हैं और ताम्बे और पीतल का बड़ा व्योपार होता है॥

नासिक जी० आई० पी० की बम्बई दिल्ली लायन पर बम्बई से ११७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १॥‑) और दूसरी गाड़ी में १।) है॥

नाथद्वारा।

उदयपुर रियासत में उदयपुर नगर से २२ मील बनास नदी के दाहिनें किनारे पर एक नगर है इस नगर में हिन्दुस्तान में सब से मशहूर विष्णु का मन्दिर है कहते हैं कि इस मन्दिर में कृष्णजी की असली मूर्त्ति है जिसकी मथुरा में पूजा होती थी १६७१ ई० में० उदयपुर का राना राजसिंह इस मूर्ति को बड़ी धूम से कोटाह और रामपुर के रास्ते मेवाड़को लाया, पर जब मेवाड़ की हद में पहुंचे तो दिलवाड़ा के गांव सियार में देवता के रथ के पहिये फंस गए। दिलवाड़ा के राओ जो मेवाड़ के १६ बड़े सरदारों में से था बोल उठा कि कृष्णजी ने इस शुभ से बता दिया कि वह इसी जगह अपना स्थान बनाना चाहते हैं और गांव की सारी जमीन नाथजी के नाम कर दी। मूर्ति के लिये एक मन्दिर बनाया गया जिस के गिर्द एक बड़ा नगर बस गया और उसका नाम नाथद्वारा अर्थात् कृष्ण जी का द्वारा होगया। इस मन्दिर की हद में जीवहत्या नहीं होती और अपराधी को यहां कोई नहीं पकड़ सक्ता। अनगिनत यात्री यहां आते हैं और अच्छे अच्छे चढ़ावे चढ़ते हैं॥

मोर्वी रेलवे पर मूली स्टेशन नाथद्वारा से १५ मील है और मूली बम्बई (कोलाबा) से वीरमगाम और बधवान जंकशनों के रास्ते ४०३ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।‑)॥ लगता है॥

नागपुर ।

सूबाजात मुतवस्सत के चीफ कमिश्नर, जूडीशल कमिश्नर और सब महकमों का सदर मुकाम है । यहां दो रुई कातने और कपड़ा बुनने के कारखाने हैं एक का नाम एम्प्रेस और दूसरे का स्वदेशी हैं। एम्प्रेस देखने के लायक है। नागपुर में आम लोगों की सैर का बाग़ और सड़कें अच्छी हैं और आस पास कई तालाब और झीलें हैं जिन में से नगर में पानी आता है। यहां रुई दबाने और रुई निकालने के कारखाने भी हैं। नागपुर के सिविल स्टेशन को सीता बर्दी कहते हैं और इसी नाम का क़िला नगर के सिर पर है। इसी पहाड़ी पर १८१७ में वहां के राजा आपा साहिब भोंसला ने नागपुर के रेज़ीडेण्ट पर धावा किया था पर जरनैल गोहन साहिब ने थोड़े से आदमियों के साथ राजा को भगा दिया और थोड़े दिनों बाद जब मदद आ पहुंची तो जैनकिंन साहिब ने राजा को ताबे कर लिया। सीताबर्दी का किला १८१८ में बना था यह क़िला देखने के लायक़ है इसमें बहुत से पुराने हथियारों के नमूने हैं ॥

नागपुर में अजायबघर जिस में एक अच्छी पुस्तकशाला भी है, महाराजा का बाग़ शहर में तुलसी बाग़ सोना गाओं में पलटी करादी और बाहर तेलनकेरी सब देखने के लायक़ हैं नागपुर में हिसलाप और मारिस दो कालिज और कई स्कूल हैं । नागपुर के संगतरे सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं और बम्बई, हैदरआबाद दक्खिन, कलकत्ता, दिल्ली और दूसरी जगह को बहुत जाते हैं । शहर में अभी एक सुन्दर टाऊनहाल बना है जिसका नाम सर अनटनी मेकडानल पहले चीफ़ कमिश्नर के नाम पर है। नागपुर से अनाज सागन की लकड़ी बाहर जाती है ॥

नागपुर बंगाल नागपुर और जी० आई० पी० रेलों का जंकशन है। इस का फासला कलकत्ते से ७०१ मील और बम्बई से ५२० मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥) और ५।≈) लगता है॥

निदबन्दा।

सदर्न मरहट्टा रेलवे पर शिवगङ्गा पवित्र पहाड़ी को जाने के लिये सब से पास रेल का स्टेशन है। यह पहाड़ी गाओदुम्म सूरत की है और उसकी खोहों में कई बड़े बड़े मन्दिर हैं पहाड़ी के चाक में एक पवित्र बेथाह तालाबहै जिस को पाताल गङ्गा कहते हैं एक में से दक्षिणायन सूर्य के दिन पानी रिसता है जिस को हिन्दू लोग आश्चर्य काम समझते हैं। माघ (जनवरी) के महीने में मकर शंक्रान्ती को बड़ाभारी मेला होता है जिस में हजारों लोग आते हैं॥

यात्रियों के विश्राम के लिये पहाड़ी पर २ धर्मशालायें हैं निदबन्दा में इस पवित्र पहाड़ी को जाने के लिये बैलगाड़ियां और यक्के मिलते हैं॥

निदबन्दा पूना से ५६७ मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥)॥ लगता है॥

नोयल।

मदरास अहाते के जिला कोएम्बाटोर में करूड़ से १५ मील के फ़ासले पर वाक़े है। इस स्टेशन से करीब १०० गज के फासले पर सेल्लनुदियम्मनकोईल मन्दिर है जहां हरसाल मार्च के महीने में एक तेहवार होता है और मन्दिर के पास शनिश्चर के दिन मेला होता है॥

नोयल साऊथ इण्डियन रेलवे की इरोद शाख के रास्ते मद्रासबीच जंकशन स्टेशनसे ३१२ मील है तीसरे दर्जे का किराया ३।≈) लगता है ॥

स्टेशन के पास देशियों के लिये टिकने की जगह है जिस को चत्री कहते हैं और आधे मील के फासले पर अङ्गरेजों के लिये बंगला है ॥

नैनी ।

ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन और जब्बलपुर शाख का जंकशन है, नैनी के करीब एक मील पश्चिम की तरफ जमना जी बहती हैं और उस के ऊपर बड़ा अच्छा रेल का पुल और रास्ता बना है जब्बलपुर लैन के बहुत से यात्री नैनी में उतर कर जमना जी के स्नान करते हैं ॥

स्टेशन के पास उत्तर की तरफ लाला बिहारीलाल कुञ्जलाल सिंहानिया की बनाई हुई देशी मुसाफिरों के लिये धर्मशाला है जहां कंगालों को दान पुण्य किया जाता है । स्टेशन के बाहरही एक सराय है ॥

नैनी कलकत्ते से ५०६ मील है तीसरे दर्जे का किराया ५)। लगता है ॥

नौलास ।

सूबा पंजाब की पटियाला रियासत के राजपुरा जिला और तहसील में गांव है । शिवरात्री के मौके पर फर्वरी में यहां दो दिन तक मेला होता है जिस में ३ हजार के करीब लोग आते हैं । गांव में एक मामूली धर्मशाला है । राजपुरे में नौलास जाने के लिये बैल गाड़ियां मिल सकती हैं ॥

राजपुरा नार्थ वैस्टरन रेलवे का स्टेशन है । इस का फ़ासला लाहौर से १७० मील है तीसरे दरजे का किराया २) लगता है ॥

पपानसम ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की बड़ी लायन पर मदरास बीच जंकशन से २०५ मील के फ़ासले पर एक स्टेशन है। मदरास बीच से यहां तक तीसरे दरजे का किराया २।-) लगता है ॥

मार्च और अपरैल के महीने में यहां हर साल ब्रह्मऊतशावम का तेहवार विष्णु के मन्दिर में होता है। और एक शिवजी के पुराने मन्दिर में १०८ लिंग हैं। कहते हैं कि रामचन्द्र जी ने रावण को मारने के बाद लंका से लौट कर राक्षसों को मारने के दोष से अपने आप को साफ़ करने के लिये इसी जगह पूजा की थी। इस जगह रोमन कैथलिक ईसाईयों का गिर्जा भी है ॥

परामककुदी ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की मन्दापम बरांच पर मदरास बीच स्टेशन से ३१३ मील के फ़ासले पर एक स्टेशन है। मदरास बीच से यहां तक तीसरे दरजे का किराया ४॥=) लगता है ॥

उत्तर की तरफ़ पन्दीकनमोई और परामकुदी के बीच में नैनरकोईल मशहूर मन्दिर है। यहां मई के महीने में चित्रई तेहवार होता है और हर बृहस्पति के दिन एक मेला होता है। स्टेशन पर रिफ़रेशमेण्ट रूम और आधे मील के फ़ासले पर बंगला है और चौथाई मील के फ़ासले पर अस्पताल है। इस जगह मुनासिफ़ और सब मैजिस्टरेट की कचहरियां भी हैं ॥

पमबान।

साऊथ इण्डियन रेलवे की रामेश्वर शाख पर स्टेशन है। यात्री लोग यहां से अगिनबोट में मन्दापम और वहां से रामेश्वरम जाते हैं स्टेशन के पास लोकल फराड की चोलतरी याने टिकने की जगह है। भैरव और फर्पि थीर्थम भी जो स्टेशन से आध मील उत्तर की तरफ है पवित्र माने जाते हैं॥

पम्बान बीच स्टेशन मदरास बीच जंकशन से ४४१ मील है तीसरे दरजे का किराय ४॥।=) है॥

पल्लावर्म।

पल्लावर्म छावनी में देसी पलटन रहती है। नगर के पूर्व की तरफ ४०० या ५०० फीट ऊंची पहाड़ियां हैं॥

पुराने सिपाही और बहुत से अंगरेज़ पैनशन लेकर यहां रहते हैं। इस जगह कंकर की खान भी है जिन में से अच्छा कंकर निकलता है और बहुत सा कंकर मदरास बन्दर बनाने के लिये यहां से गया था। स्टेशन से तीन मील के करीब रघुनाथ स्वामी का मशहूर मन्दिर है जिसका मेला मई में होता है और हजारों यात्री आते हैं। पल्लावर्म से मदरास को कई लोकल गाड़ियां जाती हैं। स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफिरों के वास्ते वेटिङ्गरूम बना हुआ है। यहां इण्डियास्टीर कम्पनी की एजन्सी भी है॥

पल्लावर्म साउथ इण्डियन रेलवे की मदरास टूटी कारन लाइन पर मदरास बीच स्टेशन से १४ मील है तीसरे दरजेका किराया डाक गाड़ी में ≈) और सवारी गाड़ी में ≈)॥ लगता है॥

पटन।

बम्बई बड़ोदा रेलवे का स्टेशन और बड़ोदा रियासत में सरस्वती नदी के किनारे पर पटन सब डिविजन का बड़ा नगर है बड़ी आबादी इस नगर में जैनियों की है जिनके १०८ मन्दिर हैं उनकी यहां कई बड़ी बड़ी पुस्तकशालाये हैं जिनमें बहुत पुस्तकें खजूर के पत्तों पर लिखीहुई हैं, इनकी बड़ी खबरदारी होती है पटन गुजरात में सबसे पुराना और मशहूर नगर है इस के बाहर कई खण्डर अच्छे अच्छे मकानों के अब तक मौजूद हैं॥

अङ्गरेजी सम्बत् ७४६ से ११९४ तक कई राजपूत राजों की राज धानी रही और मुसलमानों के राज्य में भी बड़ा नगर था, नगरमें तल वारें, भाले और मिट्टी के बर्तन और रेशम रुई का कपड़ा बनता है।

नगर स्टेशन से आधे मील के फासले पर है उस में जैनियों के लिये एक धर्मशाला है। स्टेशन पर यक्के और बैलगाड़ियां किराये पर मिलती हैं किराया ।) लगता है॥

पटन बम्बई से अहमदआबाद और मैहसाना के रस्ते ३७८ मील है तीसरे दरजे का किराया ४-)॥। लगता है॥

पटना या अजीमाबाद।

बगाल अहाते के जिला पटना का बड़ा नगर गंगा जी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ है,और ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन कलकत्ते से ३३२ मील है॥

पटना बड़ा पुराना नगर है और पालिपुत्र या पालिबोत्रा के साथ पहिचाना गया है। पालिबोत्रा का जिकर यूनानी इतिहासी मेगास्थनज़ ने जो सेलियूकस निकटर की तरफ़ से अङ्गरेज़ी सम्बत्

से ३०० बरस पहिले चन्द्रगुप्त राजा के पास राज्य दूत होकर आया था किया, वायु पुराण में लिखा है कि पाटलि पुत्र या कुसमपुर नगर राजा अजाता शत्रू के पौत्र उदायास्वा ने बसाया था मेगस्थनज लिखता है कि उस ज़माने में पाटलिपुत्र की लम्बाई ८० स्टेडिया और चौड़ाई १५ स्टेडिया थी और इसहिसाब से उसका गिर्दा १९० स्टेडिया या २४ मील हुआ, नगर के गिरद ३० हाथ गहरा खाई बनी हुई थी और दिवारों में ६४ बड़े दर्वाजे और ५७० बुर्ज थे पटने का जिकर चीनी यात्री ने भी किया है, मुसलमानों के ज़माने में औरंगजेब के पौत्र अज़ीम के नामपर पटने का नाम अज़ीम-आबाद होगया था ॥

पटने में शाह अर्ज़ानी की दर्गाह बड़ी मशहूर है हिन्दू और मुसलमान दोनों इस दर्गाह पर बहुत आते हैं, इस दर्गाह पर जिकाद के महीने में हर साल तीन दिन तक मेला होता है जिस में ५००० लोग आते हैं, दर्गाह के पास ही कर्बला है वहां मुहर्रम के दिनों में लाख के करीब लोग इकट्ठे होते हैं, पास एक तालाब है जो इस महात्मा ने अपने हाथों से खोदा था इस पर भी साल में एक दफा बहुत लोग इकट्ठे होते हैं। शेरशाह की मसजिद जो पटने में सब से पुरानी है और सैफ़खां का मदरसा जो सब से खूबसूरत है देखने के लायक़ हैं ॥

सिक्खों के लिये भी पटना पवित्र जगह है यहां उनका हरि मन्दिर है और गुरुगोबिन्दसिंह ने इसी जगह जन्म लिया था ॥

पटने से कपड़ा तेल के बीज नमक, सज्जी, खाण्ड अनाज चावल, धान बाहर से आते हैं और तमाकू, नारियल, रुई, गर्म मसाला बाहर जाते हैं ॥

पटना में २ धर्मशाला हैं एक स्टेशन के पास लाला गुर

मुख राय सरावगी की बनाई हुई दूसरी स्टेशन से आधा मील मंगल तालाब के पास स्वर्गवाली शाला अनन्तलाल अगरवाले की बनाई हुई और तीसरी चौक में स्टेशन से डेढ़ मील मारवाड़ियों की बनाई हुई है ॥

पटना कलकत्ते से ३३२ मील है और तीसरे दर्जे का किराया ३॥=)। लगता है ॥

पटास ।

जी० आई० पी० रेलवे की पूना रायच्चूर शाख का स्टेशन है स्टेशन पर वेटिंगरूम और गांव में देशी मुसाफ़रों के लिये धर्मशाला है, यहां नागेश्वर नाम हिन्दुओं का मन्दिर और एक मुसलमानों की मसजिद भी है, गाड़ियां सवारी के लिये मिल सकती हैं ॥

पटास बम्बई से १५६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥) और सवारी गाड़ी में १॥=) लगता है ॥

पश्चिमवाहिनी ।

अर्थात् पश्चिम को बहने वाला दरया, इसी सबब से बहुत पवित्र माना जाता है। यह नदी कावेरी दरया की शाख है और इस पर राजाओं के स्नान के घाट बने हैं ॥

यहां से पश्चिम की तरफ़ सड़क पलहल्ली से होती हुई कुर्ग को जाती है पलहल्ली में पहले एक बड़ा कारखाना था जिस में चीनी बनती थी यलवॅल में रैज़ीडेंट साहिब के लिये सुन्दर बंगला है और हनसूर में काफ़ी बनाने के कारखाने के सिवाय अमृत महल नामी पशुओं का स्थान है जहां पशु फ़ौज के लिये पाले जाते हैं ॥

पश्चिमवाहिनी सदर्न मरहट्टा रेलवे का स्टेशन है जो पूना से ७०३ मील है। तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ८॥=) और सवारी गाड़ी में ६॥)॥ लगता है ॥

स्टेशन से एक फ़र्लांग पर ६ चोलत्रियां हैं और कभी कभी बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिल जाती हैं॥

चांद ग्रहण के मौक़े पर पश्चिमवाहिनी में स्नान मेला होता है

पतूर।

बरार, ज़िला अकोला के बालापुर ताल्लुक़ में एक नगर है जो अकोला से १८ मील दक्खिन की तरफ़ वाक़े है। नगर के पूर्व की तरफ़ पहाड़ी की ढाल पर बुद्ध लोगों की चट्टान काट कर बनाई हुई अस्थल है। एक और मठ और एक किसी मुसलमान महात्मा का मज़ार है। हर साल हिन्दुओं का मेला जनवरी फ़रवरी में होता है जो एक महीने से भी ज़ियादा रहता है और मुसलमानों का मेला शेख बब्बू के मज़ार पर होता है यह तीन दिन रहता है॥

अकोला जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ३६३ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ५॥=) और सवारी गाड़ी में ३॥।-) लगता है

पत्तुकोट्टै।

अहाता मदरास के ज़िला तंजोर में तालुक और नगर है। नगर, स्टेशन से आधे मील के फ़ासले पर है और उसमें कई हिन्दुओं के मन्दिर और सरकारी दफ़तर हैं यहां एक बंगला और २५ चतरम हैं॥

पगूनी के तेहवार में जो मार्च के महीने में होता है बहुत लो आते हैं। हर सोमवार को एक मेला भी होता है॥

पत्तुकोट्टै साऊथ इण्डिन रेलवे की तंजोर डिस्टरिक्ट बोर्ड बरांच पर स्टेशन है इस का फ़ासला मदरास बीच जंकशन से २४८ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।) है॥

परयार ।

अवध के ज़िला और तहसील उनाओ में नगर है और परयार परगने का सदर मुक़ाम है । यह नगर उनाओ से १२ मील पश्चिम की तरफ़ वाक़े है और हिन्दू इस को रामायन के वक़्त की वारदातों के सबब बहुत पवित्र मानते हैं कार्तिक की पूर्णमासी के मौक़े पर यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में एक लाख के क़रीब यात्री आते हैं ॥

उनाओ अवध रुहेलखण्ड रेलवे की लखनऊ कानपुर शाख पर लखनऊ से ३४ मील है तीसरे दरजे का किराया ।≥) लगता है ॥

परकाशा ।

अहाता बम्बई के खानदेश ज़िले में एक नगर है और शाहादा से जो टापटी दरया के और दो दरयाओं के संघम पर वाक़े है ७ मील है । नगर के पूर्व की तरफ गन्तामेश्वर महादेव का पुराना मन्दिर है जिसका मेला बारहवें साल होता है जब गुरु सिंह की राशि में जाता है। इस नगर के इर्द गिर्द और भी कई मन्दिर देखने के लायक़ हैं ॥

टाप्टीवेली रेलवे के स्टेशन रनाना और दौंदैचे इस नगर के पास हैं । इन दोनों स्टेशनों का सूरत से फासला ११४ और १२२ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) और १॥≥) लगता है ॥

पन्तम्बा ।

यह नगर जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है और पवित्र दरया गोदावरी के किनारे पर बसा हुआ है और बड़ा पुराना नगर है, बहुत यात्री इस जगह दरिया में स्नान और उन सुन्दर मन्दिरों

में जो दरया क किनारे हैं पूजा पाठ करने आते हैं। पहले इस नगर में बड़ी रौनक थी ॥

स्टेशन के पास अंग्रेजों आर देशियों के लिये धर्मशाला है। दरिया पर रैल का बड़ा सुन्दर पुल बनाहुआ है॥

पन्तास्था मनमाद जंकशन के रस्ते बम्बई से २०२ मील है तीसरे दरजे का किराया २।) लगता है ॥

पंठरपुर।

बारसी छोटी लैन का स्टेशन और बम्बई के दक्षिण पूर्व की और जिला शोलापुर में एक नगर है, जो विथोबा के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है कहते हैं कि एक यति सती ब्राह्मण के एक कपूत पुत्र था जिस का नाम पंडालिक था वह अपनी माता और पिता को बहुत दुख देता था पर होते होते सुधर गया और बड़ा भक्त बनगया एक दिन कृष्ण जी अपनी स्त्री रुक्मणी को ढूंढ़ते वहां गये और पंडालिक का अपने माता पिता से मोह का हाल सुनकर उसे देखने गए और उसे अपने पिता के पैर धोते पाया देवता को देख कर उस ने कहा कि आप ठहरें और अपना काम करता रहा परन्तु जब उसने कृष्णजी को पहचाना तो जिस ईट से अपने पिता के पांव धो रहा था उनके बैठने के वास्ते देदी उसी ईट पर बैठी हुई कृष्णजी की मूर्ति आजतक मौजूद है। मूर्ति में कृष्णजी के हाथ कूल्हों पर हैं। जैसे कि वह रुकमिनीको ढूंढ़त २ थक कर पंडालिक के सामने आये थे।

मन्दिर ३५० फीट लम्बा और १७० फीट चौड़ा है और नगर उसके हिस्से में है जो बहुत पवित्र माना जाता है और पंठारी क्षेत्र कहलाता है विथोबा को पठारी नाथ भी कहते हैं॥

पंढरपुर बम्बई से बारसी रोड जंकशन के रस्ते २६४ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।≈)॥ लगता है ॥

पांडिचरी।

फ्रांसीसियों की सब से बड़ी बस्ती का रुमंडल के किनारे पर बसी हुई है। इस जगह अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों में बहुत लड़ाइयां हुई थीं इस सबब से बहुत मशहूर है। इस का पूरा पूरा हाल इस किताब में नहीं आ सका। यहां गवर्नमैन्ट हाऊस, ईसाइयों के गिरजे, दो पगोडे, डूपले का बुत, लाइट हाऊस, बाग़, टाऊनहाल, कारखाने देखने के लायक़ हैं। पांडिचरी में अंग्रेज़ों के लिये दो होटल हैं ॥

यह स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे के वेल्लूपुरम पांडिचरी जंकशन पर मद्रास बीच से १२५ मील है तीसरे दरजे का किराया १।≈) लगता है ॥

पार्श्वनाथ पर्ब्बत।

यह पर्ब्बत बङ्गाल में कलकत्ते से २०० मील उत्तर पश्चिम को है। चोटी को जैन लोग सम्मेद शिखर कहते हैं उस पर इनके २० मन्दिर हैं जिनके इधर उधर २० और छोटे २ मन्दिर हैं ॥

जैन लोग कहते हैं कि उनके २४ तीर्थकरों में से २० ने इस पवित्र पर्ब्बत पर निर्वाण पाया और पार्श्वनाथ तेईसवें तीर्थकर के नाम पर इस पर्ब्बत का नाम पार्श्वनाथ है। कहते हैं कि २० तीर्थकर इस पर्ब्बत पर से मोक्ष गये हैं, कई मन्दिर बड़े सुन्दर हैं और एक छोटा सा संगमरमर का मठ जिस पर एक लाख २० हज़ार रुपया लगा था बहुत अच्छा है। हर साल १० हजार यात्री इस पर्ब्बत पर आते हैं ॥

पार्श्वनाथ पर्ब्बत पर पहले अंग्रेजी फौजों की हवा पानी बदलने की जगह थी। इस जगह एक डाक बंगला भी है॥

पार्श्वनाथ पर्ब्बत से ईस्ट इण्डियन रेलवे का गिरधी स्टेशन पास है वहां पुशपुश रथ और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिल जाती है इन का किराया १) और १) से ६) रुपये तक होता है। पहाड़ी के नीचे ३ धर्मशालायें हैं पर मन्दिर के पास कोई नहीं॥

गिरधी कलकत्त से २०६ मील है तीसरे दरजे का किराया २।≈)॥ है॥

पाचोरा

जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन पर वेटिंगरूम (मुसाफ़रखाना) बना हुआ है और पास एक डाक बंगला और देशी लोगों के लिये सराय है। शेदोरनी में जो पाचोरे से १८ मील है एक मेला होता है जो १५ दिन रहता है। शेदोरनी बाजीराओ पेशवा के गुरू के वंश के के०जे०डिकिशत के पास जागीर है। पाचोरा में मामलतदार (तहसीलदार) की कचहरी और रुई की कलें हैं। सवारी के लिये बैल गाड़ियां और तांगे स्टेशन पर मिलते हैं॥

पाचोरा बम्बई से २३२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ३॥≈) और सवारी गाड़ी में २।≈) लगता है॥

पालीताना

काठियावार के पूर्ब की तरफ़ पालीताना रियासत का बड़ा भारी नगर है और शत्रुंजय पर्वत की जड़ में पूर्ब की ओर बसा हुआ है। पर्वत की सारी चोटी पर मन्दिर बने हुए हैं जिन में से आदिनाथ कुमार पाल बिमलासाह, सम्पतिराजा और चत्रमुख

बहुत नामी है। चत्रमुख का मन्दिर २५ मील पे साफ़ दिखाई देता है। किनलाच फ़ोरबस साहिब रासमाला में लिखते हैं कि यह पर्वत सब तीर्थों से पवित्र है और जो यहां आते हैं उनको सदा के लिये सुख मिलता है। जहां से चढ़ाई शुरू होती है वहां बहुत कोठरियां बनी हुई हैं और उन में पत्थर की सिलों पर चरणों के निशान बने हैं। जो जैनी हनुमान का मन्दिर नहीं बना सके वह यह कोठरियां बना देते हैं। यत्रियों को पूजा करने के बाद लौट आना चाहिये। पवित्र पहाड़ों पर सोना और रसोई करना मना है॥

पालीताना बी० बी० एण्ड सी० आई० और भावनगर गौंडाल जूनागढ़ पोर बंदर रेलवे में अहमदाबाद, वीरमगाम और बधवान जंकशनों के रस्ते बम्बई से ४८८ मील है। बम्बई से सोनगढ़ तक ४७६ मील रेल में और वहां से १२ मील गाड़ी में आते हैं। बम्बई से सोनगढ़ तक तीसरे दरजे का किराया ५।~)॥। लगता है॥

पिंडोरी।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे के गुरदासपुर स्टेशन के पास एक गांव है इस जगह अप्रैल में बैसाखी का बड़ा भारी मेला तीन दिन तक होता है जिस में ८ हज़ार के करीब लोग आते हैं। गुरदासपुर में यक्के सवारी के लिये मिलते हैं॥

गुरदासपुर अमृतसर से ४५ मील है। तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है॥

पुट्टी।

मदरास रेलवे की नार्थवेस्टरन लाइन का स्टेशन है। वहां देवी अलामल्लामल का मन्दिर है जिस के दर्शन को बहुत यात्री आते हैं

पुरी मद्रास से ७८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १) और सवारी गाड़ी में ॥।-) लगता है ॥

पुरी ।

लोग इस को जगन्नाथ कहते हैं। बंगाल नागपुर रेलवे का स्टेशन और हिन्दुओं का सब से बड़ा और नामी तीर्थ है। साल में यहां ३ लाख के करीब यात्री आते हैं और रथ यात्रा के मौके पर जो जुलाई में होती है एक लाख यात्री होते हैं। पवित्र घेरा चौकोना है और ६५२ फ़ीट लम्बा और ६३० फ़ीट चौड़ा है और उस के गिर्द २० फ़ीट ऊंची पत्थर की दीवार बनी हुई है। इस घेरे के अन्दर कई देवताओं के सौ से भी जियादा मन्दिर हैं पर सब से बड़ा जगन्नाथ का मन्दिर है जिसपर बाहर की ओर देवियों और देवताओं की मूर्ति बनी हैं कहते हैं इस मन्दिर को राजा अनग भीम देव ने सन् ११७४ ई० से २८ वर्ष में साढे सात लाख रुपया खर्च करके बनाया। मूर्ति मन्दिर से भी पहले की है। मन्दिर से इन्द्र दमना तक डेढ़ मील लम्बी अच्छी और चौड़ी सड़क जाती है। इन्द्र दमना में देवता रथयात्रा के दिनों में ८ दिन तक रहता है। जगन्नाथ का मन्दिर जिस को श्री मन्दिर भी कहते हैं बहुत बड़ा है और उसका बड़ा दर्वाज़ा सिंह दर्वाज़ा कहलाता है। मन्दिर के आंगण में यात्री रात दिन के ठहराए हुए वक्तों पर जगन्नाथ उस के भाई बलभद्र और उस की बहिन सुभद्रा की मूर्तियों के दर्शन को इकट्ठे होते हैं। यह मूर्तियां रत्ना बेदी पर रक्खी हैं। जगन्नाथ और बलभद्र की मूर्तियों के हाथ छोटे छोटे हैं और सुभद्रा के हाथ नहीं हैं। इसका यह सबब बताते हैं कि मन्दिर में जगन्नाथ जी आप बुढे खाती का भेष करके काम कर रहे थे पर काम हो चुकने

से अठवारा पहिले रानी के कहने से मन्दिर का दवाज़ा खोल दिया गया था। मूर्तियों को सुन्दर गहने और कपड़े पहनाते हैं और एक बड़ा हीरा जगन्नाथ जी के माथे पर चमकता है। कपड़े दिन और रात में कई बार बदले जाते हैं और भोग या प्रसाद भी कई बार चढ़ाया जाता है। इस प्रसाद में से कुछ यात्रियों को दिया जाता है जो उस के दाम देते हैं और जो बचता है उस को अनन्द बाज़ार में जो हाते में है बेचने के लिये भेज देते हैं इस भोग को एक लाख लोग खाते हैं और इस के बनाने के लिये २८० रसोईए रखे हुए हैं यह बहुत पवित्र माना जाता है और इस को ब्राह्मण और शूद्र एक ही थाली में खा सक्ते हैं॥

रथयात्रा से १५ दिन पहिले स्नानयात्रा होती है देवता स्नान करता है और उस के पीछे १५ दिन तक बीमार रहता है इन दिनों में मन्दिर के दर्वाजे बन्द रहते हैं और किसी को अन्दर जाना नहीं मिलता। उसका रथ जिस के १६ पहिये हैं और उस के भाई और बहिन के रथ तैयार किये जाते हैं १५ दिन के बाद मूर्त्तियां रथ में बिठाई जाती हैं और बाजे बजाते और हज़ारों लोग रथों के रस्सों को खींचते जनकपुर लेजाते हैं जहां देवता १०दिन रहता है॥

पुरी में अंग्रेज़ लोगों के घर बड़े सुन्दर हैं समुद्र के किनारे बने हुये हैं वहां की आब हवा अच्छी है गठिये के रोगियों को बहुत फ़ायदा करती है॥

पुरी कलकत्ते से ३११ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ४-) और मद्रास मेल में ४॥=) लगता है॥

पुरी में लोग अकसर पांडे या प्रोहतों के घरों में और बाजे मंदिर में ठहरते हैं यहां धर्मशाला भी है॥

पुन्नूर ।

मद्रास रेलवे की नार्थ ईस्ट लाइन का स्टेशन और डिप्टी तहसीलदार, सब मजिस्टरेट, सब रजिस्टरार अफ़सर माल का हैड कुआरटर (सदरमुकाम) है यहां थाना और डाकखाना भी है यह नगर गंटूर से १८ मील दक्षिण पूर्व की ओर है और बीच में सड़क बनी हुई है। यह स्थान श्री बाबा नारायण स्वामी के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है जहां मई के महीने के करीब एक बड़ा भारा जलसा होता है ॥

पुन्नूर का फासला रायापुरम मद्रास से २३५ मील है तीसरे दर्जे का किराया २=) लगता है ॥

पुष्कर ।

राजपूताना के ज़िला अजमेर से ७ मील के करीब दक्षिण पश्चिमी कोने में एक नगर है झील और तीर्थ की जगह है सारे हिन्दुस्तान देश में यहही नगर है जिस में ब्रह्म का मन्दिर है कहते हैं यहां ब्रह्म ने यजन किया था और इसी सबब से झील ऐसा पवित्र मानी जाती है कि पापी से पापी को इस में स्नान करने से स्वर्गलाभ होजाता है इस नगर में पांच बड़े २ मन्दिर ब्रह्म, सावित्री, बद्रीनारायण वराह और शिव आत्मेश्वर के हैं ॥

ताल के किनारों पर स्नान करने के लिये घाट बने हुए हैं और पास पास राजपूताना के राजों के घर हैं। इस नगर की हद में जीवहत्या करनी मना है। अक्तूबर और नवम्बर में यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में लाख के करीब यात्री ताल में स्नान करने के लिये आते हैं इस मौक़े पर घोड़े और टट्टुओं का बड़ा व्योपार होता है। यहां जियादा ब्राह्मणों की आबादी है ॥
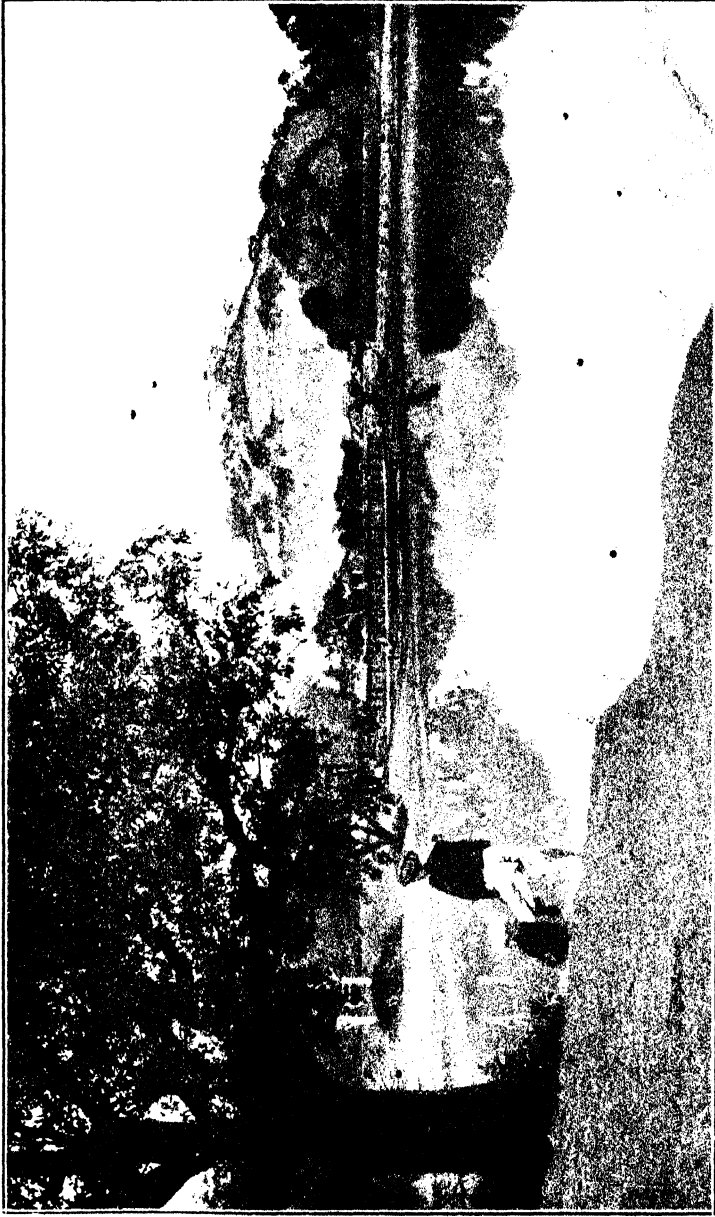
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

पारवती का मन्दिर और तालाब पूना।

अजमेर बी० बी० ऐन्ड सी० आई० याने बम्बई की छोटी लाईन में बम्बई से ६१५ मील है और दिल्ली से २३५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।) और २।≈) लगता है ॥

पूना ।

सदन महेट्टा रेलवे का स्टेशन है । जी० आई० .पी० रेलवे भी यहां मिलती है पूना दक्षिण में बड़ा शहर है और यहां की आबहवा जून से सितम्बर तक बड़ी मन भाओनी होती है, वर्षा की साल भर की औसत २६ इंच है, बम्बई के लाटसाहब वर्षा के दिनों में पूना में रहते हैं और यह नगर बम्बई अहाते की फौजों का सदर मुकाम है । यह नगर पेशवाओं की राजधानी था । और आज कल बड़े व्योपार की जगह है, मिट्टी की मूर्तें धातु की चीज़ें और किमखाब यहां बहुत बनती हैं पूना मूला दरया पर मूला और मूथा दरियाओं के संगम से थोड़ी दूर पर वाके है, पारवती का नामी मन्दिर उसी नाम की पहाड़ी पर नगर के दक्षिण पश्चिम की तरफ है, और देखने के लायक है पहाड़ी के नीचे पेशवाओं का हीराबाग़ है अब उस में टाऊनहाल है, पूना में इसाइयों के कई गिर्जे और काऊंसिलहाल, दक्खिन कालज, इंजनियरों का कालिज और जेल, फईनन्स बिलडिंग, ससून हस्पताल डाकखाना, गवर्नमेण्ट हाऊस, बनस्पति का बाग़ स्टेशन से ४ मील गनेश खिंड में सरकारी मकान है ॥

किरकी छावनी जो बम्बई अहाते के तोपखाने का सदर मुकाम है स्टेशन से ४ मील है, बम्बई अहाते के गोला बारूद का कारखाना स्टेशन से ४॥ मील है, मूला और मूथा दरियाओं का बन्ध, पानी की चादर, सुन्दर पुल और सुहावने बाग़ देखने लायक हैं, धर्मसाला

वाटरवर्क्स से जो पूना से १० मील है शहर और छावनी में पानी पहुंचता है और खेतों को पानी दियाजाता है, किला सिंघर और पुरन्धर जो पूना से १० और २० मील के फासले पर है आबहवा बदलने के स्थानो का काम देते हैं नगर के भदवार पेट में एक टिकट घर बना हुआ है जहां पर जी० आई० पी० और सदरन महट्टा रेलों पर जानेवालों को सब दरजों के टिकट मिल सक्ते हैं। सिंहर और पूना के बीच में हर रोज डाक का तांगा चलता है॥

स्टेशन पर वेटिंग और रिफ्रेशमेण्ट रूम अर्थात् आराम और खाने के कमरे हैं और स्टेशन के पास एक हिन्दू होटल है॥

पूना बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥८) लगता है॥

पूनपून।

ईस्ट इण्डियन रेलवे पर कलकत्ते से ३४ मील और बांकी पुर से ८ मील छोटा सा गांव है जो इसी नाम की नदी के किनारे पर बसा हुआ है, इस नदी को हिन्दूलोग पवित्र मानते हैं और गया जाने वाले यात्री इस स्टेशनपर उतर कर नदी में स्नान करते हैं॥

कहते हैं कि इस के पानी में स्नान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं और पिण्ड नदी में डालते हैं कि उन के मरे हुए सम्बन्धियों की आत्मा को पहुंच जाएं॥

इस जगह कोई सराय, धर्मशाला या बंगला नहीं बहुत लोग खुले मैदान में ठहरते हैं और कुछ बनियों की दुकाने किराये पर ले लेते हैं॥

कलकत्ते से पूनपून का तीसरे दरजे का किराया ३॥=)॥ लगता है ॥

पहोवा ।

पंजाब के ज़िला करनाल में एक पुराना नगर है और थानेश्वर से १७ मील पश्चिम की तरफ पवित्र दरया सरस्वती के किनारे पर आबाद है। पहोवा को पहले पृथिदका अर्थात् चौड़ा पानी कहते थे, इसका सबब यह है कि जब सरस्वती में बहुत पानी आ जाता है तो इस नगर के इर्द गिर्द की नीची ज़मीन पानी से ढक जाती है, यह नगर थानेश्वर की हद्द में वाक़े है और थानेश्वर से दूसरे दरजे पवित्र समझा जाता है, यहां पुराने मीनारों के कुछ निराले खण्डर हैं और दो दरवाजे हैं जिन में से हर एक पर मूर्तियां बनी हुई हैं। सरस्वती पर हर साल चैत्र और कार्तिक (मार्च सितम्बर) के महीनों में एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में २० से २५ हजार तक और कभी कभी एक लाख तक यात्री जमा होजाते हैं ॥

थानेश्वर में पहोवा जाने के लिये यक्के और बहलियां मिलती हैं यक्के का किराया १) और बहली का १।) लगता है इस नगर में एक बड़ी सराय ४ धर्मशालायें और एक बंगला है ॥

थानेश्वर कलकत्ते से १००० मील और अम्बाले से २६ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।=) और ।=) लगता है ॥

पिण्डरारोड ।

यह बंगाल नागपुर रेलवे का स्टेशन पिण्डराघाट की चोटीपर बसा हुआ है इस के २५ मील पश्चिम की तरफ अमर नाथ

का बहुतही पवित्र मन्दिर है जो नर्बदा दरिया के निकास पर है ॥

यहां से तीन दरिया नर्बदा, सोन और जोहिला निकलते हैं और सब का एक ही जगह निकास है। जहां से यह दरया अलग अलग होते हैं वह जगह बड़ी सुहावनी है और हिन्दू लोग उस को बहुत दिनों से पवित्र मानते हैं। अमरकंकट के सिरपर मैकाल पर्ब्बत है उस पर के हुई गिर्द बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। कपिल-दवाड़ा, मण्डवा और गुलबकावली के महल यात्री लोग देखने जाते हैं, माघ के महीने में यहां एक मेला होता है पर सूर्य और चान्द ग्रहण के दिन स्नान करने के लिये हज़ारों यात्री नर्बदा को जाते हैं ॥

फोरसाइथ साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि देवताओं ने कलियुग के ५००० वर्ष के लिये गङ्गा जी को अच्छा माना पर नर्बदा सारे दरियाओं से पवित्र है, कलियुग अङ्गरेजी सम्बत १८९९ में हो चुका और अब नर्बदा के ब्राह्मण आश कर रहे हैं कि नर्बदा सब तीर्थों से बढ़जाये गा ॥

अमरकंटक को अब पक्की सड़क बन गई है और वहां जाने वालों को पेन्डरा रोड स्टेशन पर सब भांति की मदद दी जाती है अमर कंटक में कई धर्मशालायें हैं ॥

पेन्डरा रोड स्टेशन कलकत्ते से बंगाल नागपुर रेलवे में ५०८ मील है तीसरे दरजे का किराया ५।≈)॥। लगता है ॥

पेम्बेरु ।

मदरास रेलवे की नार्थवेस्टर्न (उत्तर पूर्वी) लैन पर एकस्टेशन है जो मदरास शहर से २३६ मील है और तीसरे दरजे का किराया

२॥) लगता है। स्टेशन से दो मील दक्षिण की पेन्नेरु दरिया के किनारे एक छोटा सा मन्दिर है जिसको असूवुथ नारायण कहते हैं इसके दर्शन को बहुत लोग आते हैं। इस मन्दिर के असले की बाबत कहते हैं कि एक पुरुष जिसका नाम सुइगम बटलू था इस जगह तप किया करता था एक दिन देवता उसके साम्हने आया और उसकी बिनती मंजूर होगई। इस पुरुष की यादगारी में यह मन्दिर बनाया गया था। स्टेशन पर और इर्द गिर्द के गाओं में बैल गाड़ियां मिल सक्ती हैं यहां धर्मशाला कोई नहीं यात्री लोग एक टोप के नीचे ठहरते हैं॥

इस जगह कपड़ा बनता है और रूई, नील और अनाज का व्योपार होता है॥

पेरुवरूनी।

साऊथ इण्डियन रेलवे की डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ब्रांच लाइन पर स्टेशन है। इसका फासला मद्रास बीच स्टेशन से २६१ मील और तीसरे दरजे का किराया २।।।≋) लगता है। नगर स्टेशन से एक मील दक्खिन पश्चिम की तरफ है। यहां से १० मील नगराम में एक मन्दिर है जिस के थईपुशम और पगूनी ऊतशावम दो तेहवार होते हैं जिन में पांच पांच हज़ार लोग आते हैं। नगराम जाने के लिये पेरुवरुनी में बैलगाड़ियां मिलती हैं एक गाड़ी का किराया १) लगता है॥

नगराम और पेरुवरुनी में एक एक चोलतरी है पर अंग्रेजों के ठहरने की कोई जगह नहीं॥

पैगन ।

यह नगर बर्मा में ईरावदी दरिया पर प्रोम से १६० मील उत्तर की तरफ और बर्मा की पहिली राजधानी अमरा पुरा से ७० मील नीचे को वाके है पहले यहां दो नगर थे जो पुराने और नए पैगन कहलाते थे। पुराने पैगन की जगह पर अब ईंटों के मकानों और डुगबों के खण्डर हैं ॥

यह नगर उजड़ गया है पर अब भी करीब सौ मकानों के बाकी हैं जिन में से बाज़े बहुत बड़े हैं और ६०० छै सौ साल के बाद अबतक अच्छी हालत में है ॥

पगौडों के सिवाय पैगन में अनगिगत मन्दिर हैं इन में मूर्त्तियों और पूजा के लिये जगह बनी हुई हैं और छत में संगतराशी और गिल्ट का काम किया हुआ है ॥

मूवेलो रेलवे पर माइगयान स्टेशन प्रोम के पास है। यह स्टेशन रंगून से ३७७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ५॥०)। लगता है ॥

प्रोम ।

मुल्क ब्रह्मा में यह नगर रंगून से १६० मील उत्तर की ओर ईरावदी दरिया के किनारे पर है। पिछले युग में एक बड़े राजा की राजधानी थी। इस नगर का बड़ा पगोडा जिस को शवेसानडा कहते हैं ईरावदी से आधा मील एक पहाड़ी पर ८० फीट ऊंचा है और एक चवूतरे पर बना हुआ है इस के गिर्द ८३ और सुनहरी मन्दिर हैं, जिन में बुद्ध की मूर्त्तियां रक्खी हैं। इस मन्दिर की बाबत कहते हैं कि यह एक ज़मुर्रद के सन्दूक पर बना हुआ है जो ७ सोने की सिलाओं पर टिका हुआ है। सन्दूक में बुद्ध

के सिर के तीन बाल हैं। राजे और धनी लोग सदा इस मन्दिर को बढ़ाते और सजाते रहे हैं। मार्च के महीने में हरसाल यहां एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में हज़ारों बुद्ध यात्री आते हैं। शवैनटडा पगोड़ा जो १६ मील दक्षिण को है। ऊंची जगह पर बना हुआ है। इसके नीचे मैदान है जहां साल के शुरू में एक मेला होता है जिस में २० हज़ार यात्री एकट्ठे होते हैं। कहते हैं यह पगोड़ा दत्तरत्त बांग की स्त्री ने बनवाया था। राजा दत्तरत्ता बांग अंग्रज़ी सम्वत् से पहिले ४४३ से ३७२ तक राज करता था सूर्य निकलने से छुपने तक जहां तक पगोडे की छांप पड़ती थी राजा दत्तरता बांग ने सारी ज़मीन पगोडे के नाम कर दी थी॥

प्रोम ब्रह्मा रेलवे पर रंगून से १६१ मील है तीसरे दर्जे का किराया २॥)। लगता है॥

फतवा।

अहाता बंगाल के ज़िला पटना में ईस्ट इण्डियन रेलवे पर पटना शहर से ८ मील और कलकत्ते से ३२४ मील एक नगर है जो गंगा जी और पूनपून के संगम पर बसा हुआ है। डाक्टर बुकनन हेमिलटन साहिब १८१२ में लिखते हैं कि उस वकत यह बड़ा शहर था और इसमें २००० घर और १२ हज़ार की आबादी थी और इस जगह पर कपड़ा बनता था और बहुत व्योपार होता था। रेल और दरिया के किनारे पर होने के सबब व्योपार के लिये यह बहुत अच्छी जगह है॥

फ़तवा में हर साल ५ तेहवार होते हैं और उन दिनों में अनगिनत यात्री यहां आते हैं और वार्नी द्वादशी के मौके पर १० से १२ हज़ार तक यात्री स्नान करने के लिये आते हैं॥

कलकत्त से फतवा तक तीसरे दरजे का किराया ३॥-)। लगता है

फरेंचराक्स।

मद्रास अहाते में है। इस जगह का नाम फ्रेंच राक्स इस सबब से है कि हैदर और टीपू की फ़रांसीसी पलटनें इसी जगह रहा करती थीं। देशी लोग इस नगर को हिरोदी कहते हैं। यहां से कई जगहों को सड़कें जाती हैं। उत्तर पश्चिम की तरफ़ सड़क चिंकुराली को जाती है जहां वेब साहिब एक पहिले अंग्रेज़ी रेज़िडण्ट का यादगार मीनार है। आज कल इस मीनार को रामखम्मा कहते हैं क्योंकि मैसूर की पलटनों और अंग्रेज़ों की बागी फ़ौज को जो सेरंगापटम को जारही थी इस जगह लड़ाई हुई थी। चिंकुराली में एक और बड़ी लड़ाई हुई थी जिस में हैदर को मरहट्टों से हार हुई थी। उत्तर की तरफ़ और आगे जैनियों के गावं सरवन बेलगोला में एक ऊंची पहाड़ी पर गोमेश्वाड़ा की बड़ी भारी मूर्त्ति और अनगिनत मन्दिर हैं। पत्थर पर पुराने कतबों से मालूम होता है कि भद्रबाहु जो जैनमत का बढ़ाने वाला था और उस का चेला चन्द्रगुप्त जिस को यूनान के तारीख़ वालों ने सन्ड्राकोपटिस लिखा है इसी जगह मरे थे उत्तर पूर्व की तरफ़ सड़क मेलूकोट को जाती है। वह श्रीवैष्णव लोगों की बड़ी पवित्र जगह है यहां उनका गुरू रामानुजा रहा करता था। इस जगह उनके बहुत से मन्दिर भी हैं। मेलूकोट के रस्ते में तेन्नूर है जो होयसाला राज्य की पहले राज्यधानी थी। पास एक सुन्दर तालाब है जिस को मोतीतला कहते हैं। लोग कहते हैं कि इसको रामानुजाचार्य्य ने बनाया था। इसका आज कल का नाम दक्खिन के सूबादार नासिरजंग ने रक्खा था। फ्रेंचराक्स से मेलूकोट का फ़ासला १८ मील और हिरोदी

से १५ मील है। हिरौदी में बैल गाड़ियां बहुत मिलती हैं। एक गाड़ी का किराया एक रुपये से २ रुपये तक होता है॥

फ़रेंचराक्स सर्दनमरहटा रेलवे की शाख पूना नंजनगढ़ पर स्टेशन है पूना से इसका फासला ७०० मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥।=)॥ लगता है

बकसर ।

अवध के ज़िला उन्नाओ में गंगाजी के बाएं किनारे पर एक गांव है चंदीका देवीका इस जगह बड़ा मशहूर मन्दिर है और हिन्दू लोग गंगाजी को इस जगह पर और सब मुकामों से ज्यादा पवित्र समझते हैं। कार्तिक के महीने में यहां स्नान का बड़ा भारी मेला होता है जिस में १००००० के क़रीब लोग गंगाजी में स्नान करने के लिये आते हैं। गांव में एक मदरसा और एक संस्कृत पाठशाला है॥

बकसर ग़दर में वफ़ादारी और जूलाई १८५७ के कानपुर के क़तल के बचे हुए लोगों को पनाह देने के सबब स्वर्गवास महाराजा दिग्विजैसिंह के० सी० एस० आई० को सर्कार की तर्फ़ से मिला था॥

उन्नाव बङ्गाल एन्ड नार्थवेस्टर्न रेलवे का स्टेशन है लखनऊ से इस का फासला ३४ मील है और तीसरे दरजे का किराया ।≈) लगता है॥

बड़ा पिंड ।

यह गांओं सूब पंजाब के ज़िला जालन्धर में नार्थवेस्टर्न रेलवे के गुराया स्टेशन से तीन मील के फासले पर वाक़े है फर्वरी के महीने में सखी सरवर साहिब की यादगार में जिन को आम लोग

निगाह वाला पीर कहते हैं चौकी पीर का बड़ा भारी मेला होता है, २०००० के क़रीब हिन्दू और मुसलमान उस में आते हैं॥

गुराया स्टेशन से बड़ा पिएड को यक्के की सवारी हर वक़्त मिल सकती है। यह स्टेशन लाहौर से १०१ मील है और तीसरे दरजे का किराया १=) है। दिल्ली से २४६ मील और किराया २॥=) है॥

बड़ौदा।

रियासत बड़ौदा की राजधानी है। यहां के महाराजा साहिब को गायकवाड़ कहते हैं। बड़ौदा में देखने के लायक जगह यह है :— नज़र बाग़, महल, मकनपुर महल, सोने चांदी की तोपें। इन के सिवा कई नई इमारतें हैं मसलन कालिज, कचहरी, लेडी डफ़रन अस्पताल जिन के सबब शहर की खूबसूरती और भी बढ़ गई है। नया राज महल ४५ लाख रुपये के खर्च से तैयार हुआ था। बड़ौदा से अहमदाबाद तक का हिस्सा अंग्रेज़ी सैरगाह की शकल में चला गया है॥

इस जगह हिन्दुओं के मन्दिर बहुत हैं जिन में से देखने के लायक वित्थल मंडवी, स्वामी नरायन मंडवी और खंडोबा के हैं। इस शहर के इर्द गिर्द कई अजीब पानी की बौलियां भी हैं जिन में से बाज़ी ५०० साल की पुरानी हैं और कूओं की शकल में पानी तक गेलरीदार कमरों से घिरी हुई हैं बाक़ियों के गिर्द खुली बारादरी हैं।

बड़ौदा का रंगेलिया महल अर्ज़ी देने पर देखा जा सकता है। जवाहरात जो महाराजा साहिब दरबारी मौक़ों पर पहनते हैं बड़े कीमती हैं इन में से एक ५०० हीरों का कंठा है जिस के हीरे बहुत बड़े २ हैं मोतियों का गलीचा जो १० फ़ीट लम्बा और ६ फ़ीट चौड़ा है बिलकुल मोतियों का है तीन साल में ३० लाख रुपये की लागत से बना था॥

बड़ौदे के महाराजा साहिब को कुश्ती का बहुत शौक है, पहल-वान दूर दूर से आकर यहां नौकरी करते हैं ॥

स्टेशन पर वेटिंगरूम है और डेढ़ मील पर एक डाक बंगला है शहर में कई धर्मशालायें हैं। सवारी मिलती है ॥

बम्बई से बड़ौदा २४८ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥-) दिल्ली से ६०२ मील और किराया ५॥) है ॥

बकेश्वर या काना।

बंगाल में एक छोटा सा दरिया है जो बीर भूम जिले से निकलता है इस नदी में गन्धकवाले गर्म पानी के सोते हैं। तंतिफसारा गांव से एक मील दक्खिन की तरफ गरम पानी के सोतों का एक झुंड है जिस को भूम बकेश्वर कहते हैं यहां हर साल बहुत लोग यात्रा के वास्ते आते हैं इन्हीं लोगों ने महादेवजी के ३०० से भी ज़ियादा मन्दिर बना दिये हैं ॥

बगेश्वर।

ज़िला कुमाऊं सूबाजात आगरा और अवध में एक कसबा है। अलमोडे से २७ और कलकत्ते से ६११ मील है वस्त एशिया से इस रस्ते बड़ा व्योपार होता है तिब्बत के साथ भी व्योपार यहां से होता है। जनवरी के महीने में एक बड़ाभारी मेला होता है उन दिनों में छोटे पहाड़ों की पैदावार का बड़े पहाड़ों की पैदावार के साथ लेन देन होता है। मेले में १० हज़ार से २५ हज़ार तक लोग आते हैं ॥

बगेश्वर रुहेलखण्ड कुमाऊं रेलवे के काठगोदाम रेलवे स्टेशन से ६२ मील है और काठगोदाम स्टेशन बरेली जंकशन से ६६ मील

है। बरेली से काठगोदाम तक तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है। काठगोदाम में टट्टू, कुली और गाड़ियां किराये पर मिलती हैं कुली की मज़दूरी ।) पड़ाओ, बोझे के टट्टू का किराया ॥) और सवारी के टट्टू का २) पड़ाओ लगता है॥

अलमोड़े, बगेश्वर और सब पड़ाओं पर डाक बंगले हैं। बगेश्वर में धर्मशाला भी है॥

बटेश्वर।

एक पुराना गाओं जमना दरिया के दाहिन किनारे पर आगरे से ४१ मील और बाह से जो बाह तहसील का सदरमुकाम है और जिसमें बटेसर वाके है ६ मील है बटेश्वर उस सड़क पर है जो आगरे से इटावे को जाती है॥

बटेसर के पुराने हालात ठीक ठीक मालूम नहीं पर ख़ियाल किया जाता है कि इसका नाम बटेश्वरनाथ से जो शिव जी का एक नाम है और जिस के माने बड़ के दरख़्त का सरदार निकला है कहते हैं कि पहले यहां एक शहर सूरजपुर आबाद था और जैनी इस जगह को अब तक इसी नाम से पुकारते हैं भदावड के राजा बदनसिंह के ज़माने से जो सतरहवीं सदी में हुआ है यह नगर बढ़ना शुरू हुआ। राजा बदनसिंह ने १६४६ में महादेवजी का मन्दिर बटेश्वरनाथ बनाया। बटेश्वर का मेला जो कातिक की १५ तारीख़ के करीब शुरू होकर एक महीना रहता है बहुत मशहूर है। इस में एक लाख यात्री गंगा जी में स्नान करने आते हैं टट्टू, ऊंट, भैंसे, हाथी पशु, गाड़ियां भी बहुत बिकने के वास्ते लाये जाते हैं मेला जमनाजी के रेते पर होता है॥

ईस्ट इंडियन रेलवे का शिकोहाबाद स्टेशन इस जगह से १२ मील है वहां यक्के बटेश्वर जाने के लिये मिलते हैं ॥

बटेश्वर में सराय या धर्मशाला कोई नहीं लोग मैदान में ठैहरते हैं ॥

शिकोहाबाद कलकत्ते से ७५४ मील है तीसरे दरजे का किराया ६॥।ॐ) लगता है ॥

बड़ोच ।

बम्बई बड़ोदा और सैंटरल इण्डिया रेलवे पर गुजरात में एक बड़ा तिजारती शहर है यहां से रूई कसरत से बाहर जाती है और कई कलें भी हैं बम्बई अहाते में जो बड़ी अच्छी हालत में हैं। तरी के रस्ते भी शहर का बड़ा ब्योहार है जहाज़ कस्टमस बंदर तक याने जहां जहाज़ो से महसूल लिया जाता है सौदागरी के लिये जाते हैं लेकिन रेल के खुलने से अब पानी के रस्ते तिजारत कम होगई है ॥

बड़ोच में देखने के लायक बहुत थोड़े मुक़ाम हैं पर यहां से १० मील ऊपर की तरफ़ नर्बदा दरिया के किनारे पर सकल तीरथ है जिस को हिन्दू लोग बड़ा पवित्र समझते हैं यहां नवम्बर के महीने में बड़ा मेला होता है जो पांच दिन तक रहता है। बहुत लोग यात्रा के वास्ते आते हैं ॥

सकल तीर्थ के पास मशहूर और बड़ा बड़ का दरख़्त कबीर बद है। कहते हैं यह दरख़्त कबीर की दांत कुरेदनी से उगा था और १०००० आदमी उसके नीचे आजाते हैं ॥

स्टेशन के पास एक उमदा धर्मशाल है जिस में अंग्रेज़ों के वास्ते भी कमरे हैं। स्टेशन पर स्वारी मिलती है ॥

बड़ोच बम्बई से २०४ मील है और तीसरे दरजे का किराया २।=) है। देहली से ६४५ मील और किराया ६) है॥

बदनेरा।

जी० आई० पी० रेलवे और अमराओती शाख का जंकशन है यहां से एलिचपुर को नज़दीक सड़क गई है। कुन्दनपुर में जो बदनेरे से १८ मील है नवम्बर और दिसम्बर के बीच में मेला होता है यह मेला एक महीना रहता है और ६०००० के क़रीब लोग उसमें जमा होते हैं। उन ही दिनों में बदनेरे से ८ मील भिड्डा में वैसा ही मेला होता है और ऊम्बरबद्दा में माल मवेशी का मेला एक महीने तक लगता है इन मौक़ों पर ताम्बे और पीतल के बर्तन, देसी कपड़ा, लोहे की चीज़ें खिलौने बहुत बिकते हैं बदनेरे में ८ मील गनूजा और तूलाम्बा में भी दिसम्बर और फ़रवरी में मेले होते हैं॥

बदनेरा बम्बई से ४१३ मील और सवारी गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४।-) है। अमराओती स्टेशन यहां से ६ मील है॥

बदरीनाथ।

ज़िला गढ़वाल सूबाजात आगरा और अवध में हिमाल्या पर्वत की चोटी का नाम है। समुद्र से २३२१० फ़ीट ऊंचा है। उत्तर देश के लोगों के लिये सब से नज़दीक रेलवे स्टेशन हरीद्वार है जो अवध रुहेलखण्ड रेलवे की हरिद्वार देहरा शाख़ पर वाक़े है हिन्दुस्तान के और हिस्सों के यात्रियों के लिये काठ गोदाम रुहेलखंड कमाऊं रेलवे पर सब से नज़दीक स्टेशन है। बदरीनाथ इन दोनों स्टेशन से पैदल या झम्पानों में पहुंच सकते हैं इस की एक चोटी

पर श्रीनगर से ५६ मील उत्तर पूर्ब की तरफ़ विष्णु का मन्दिर है जिसको बद्रीनाथ भी कहते हैं ८०० साल हुए यह मन्दिर शंकर स्वामी ने बनाया था जिस ने देवता की मूर्ति को दस बार दरया में गोता मार कर निकाला था हिन्दू लोग इस मन्दिर को बड़ा पवित्र मानते हैं और यात्रा के लिये आते हैं मन्दिर के नीचे पहाड़ की तरफ एक पवित्र तालाब है जिस में पानी गरम और एक टूटी वाले सोते से नालियों के रास्ते से आता है हर साल पचास हज़ार के क़रीब यात्री आते हैं और उस पवित्र तालाब में स्नान करते हैं देवता की मूर्ति को हर रोज़ सोने चांदी के बर्तनों में भोजन दियाजाता है। और बहुत से सेवक उसकी सेवा में लगे रहते हैं यहां का बड़ा पुजारी जिसको रावल कहते हैं हमेशा कुल मालाबारसूबा दक्खिन का ब्राह्मण होता है। यात्रियों के लिये धर्मशाला बनी हुई हैं॥

घनावार।

सदर्न मरहट्टा रेलवे पर एक स्टेशन है यहां से सड़क हलेबिद और बेलूर को जाती है हलेबिद को पुराने ज़माने में दोरासमुद्रा कहते थे और यह होयसाला बलाला वंश के राजों की राजधानी थी अब भी इस में अजीब हिन्दू मन्दिरों के खंडर हैं। इन में से बड़ा होयशालिश्वरा का मन्दिर ग्यारहवीं सदी में शुरू हुआ था पर कभी पूरा नहीं हुआ। फरगुस्सन साहिब जो इमारत के काम में सनद माने जाते हैं लिखते हैं कि अगर यह मन्दिर पूरा हो जाता तो हिन्दू लोगों को जितना गर्व होता ठीक था। गाथिक इमारतों में कोई भी ऐसा खूबसूरत नहीं इसी ढंग के वास्ते दरमियानी ज़माने के लोग कोशिश करते थे पर कभी पूरे २ कामयाब नहीं हुये। आगे वह कहते हैं

कि केदारेश्वाड़ा मन्दिर और भी खूबसूरती में बढ़कर है और शायदही कोई ऐसी और इमारत हो लेकिन अब वह टूटी फूटी हालत में है जैनियों के मन्दिर भी जिन में काले रोगन के चमकते हुए पीलपाये हैं देखने के लायक हैं। गर्ज़ जो उन्हों ने लिखा है पढ़ने के काबिल है॥

बेलूर में चलूकयां तरज़ का चन्नाकेश्वा का मन्दिर भी बड़ा खूबसूरत है। इस को बारहवीं सदी में होयसाला वंश के राजा विष्णु वर्धना ने बनाया था लेकिन मुसलमानों के हमले के वक्त इस को नुकसान पहुंचा था और इसकी बुर्जी फिर बनाई गई थी इस में बड़ी अजीब संगतराशी की हुई है हर डेवढ़ी के बाहर जो मेहनत की गई है फरगुस्सन साहब कहते हैं जगत् में किसी मकान के उतने हिस्से पर नहीं की गई होगी॥

बेलूर इस रेलवे स्टेशन से २६ मील है और बैलगाड़ियों के लिये वहां तक अच्छी सड़क जाती है गाड़ियां स्टेशन मास्टर की मारफ़त ३) गाड़ी के हिसाब से मिल सकती हैं॥

बनावार पूना से ५१२ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ५।−)॥ और डाकगाड़ी में ६॥=) है॥

बनावार में बंगला और धर्मशाला है और स्टेशन पर भी एक धर्मशाला है॥

बनारस या काशी।

अवध रुहेलखण्ड और बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलों का जंकशन है और गंगा जी के उत्तर के किनारे पर बसा हुआ है। इस का फासला कलकत्ते से ४२६ मील, बम्बई से इलाहाबाद के रस्ते ६३८ मील और मदरास से १५५० मील है। हिन्दुओं के लिये पृथ्वी पर बनारस से बढ़कर पवित्र और कोई जगह नहीं। कहते हैं कि यह नगर भूमि पर नहीं बना था बल्कि शिवजी के त्रिशूल
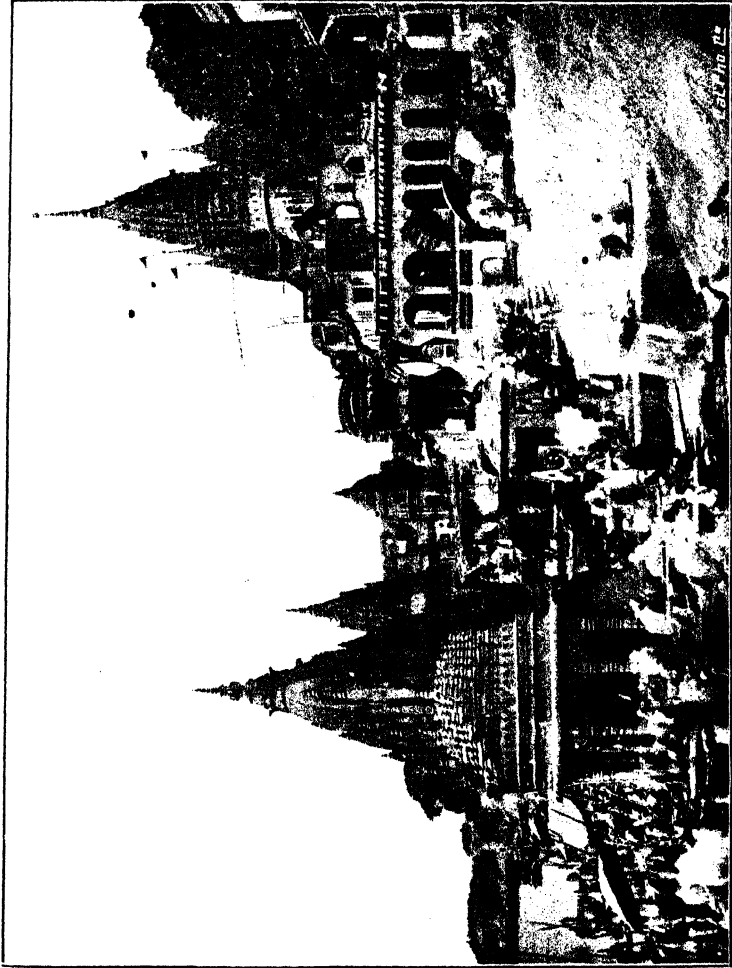
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

बनारस के और मन्दिर।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

मरघट—बनारस ।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

विश्वेश्वर नाथ का मन्दिर—बनारस।
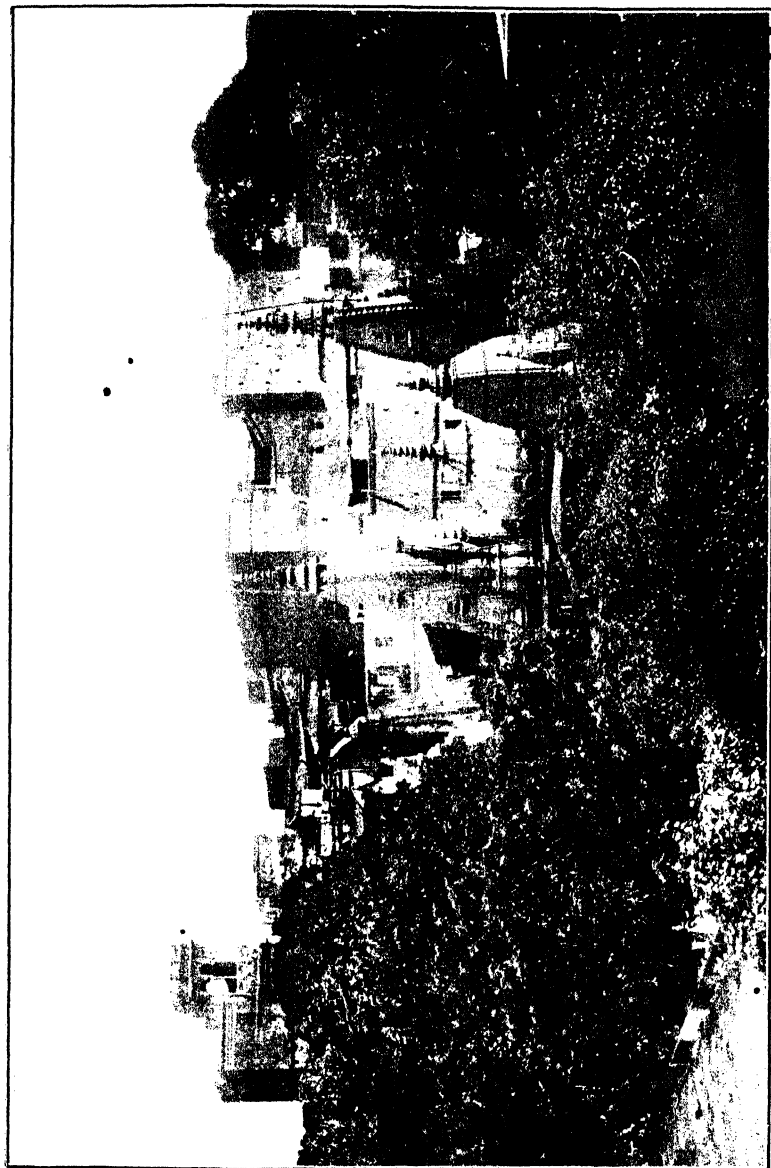
पर बना था और पहले युग में सोने का था पर कलियुग में मिट्टी और पत्थर का बन गया थागां जो निकास से आखिर तक पवित्र मानी जाती है पर काशी के पास बहुत ही पवित्र समझी जाती है। जो लोग पांच कोशी या शहर के आस पास पांच कोस के अंदर मरते हैं उन्होंने कितने ही पाप किये हों सीधे स्वर्ग को जाते हैं ॥

बनारस में अनगिनत मन्दिर हैं उन में से विशेश्वर, भैरव नाथ और दुर्गा के मन्दिर बहुत नामी हैं। विशेश्वर का मन्दिर शिवजी का मन्दिर है और काशी के सब मन्दिरों से जियादा पवित्र समझा जाता है। यह मान मन्दिर आकाश लोचन से थोड़ी दूर है इसमें एक लिंग है। विशेश्वर देवता काशी का धर्म्मउप-देशक है और भैरवनाथ जिसका मन्दिर विशेश्वरनाथ के मन्दिर से कुछ फासले पर है उस का परम मन्त्री है बनारस के लोग और सब यात्री विशेश्वर के मन्दिर में जाकर पूजा करते हैं इस मन्दिर को अंग्रेज़ लोग सुनहरी मन्दिर कहते हैं क्योंकि इस के गुम्बद और कलश पर सुन्हरी पत्रा चढ़ा हुआ है। अन्नपूर्णा का मन्दिर विशेश्वर के मन्दिर के साम्हने है और यहां यात्री बहुत आते हैं दुर्गा का मन्दिर और उस का सुन्दर ताल काशी के दक्खिनी किनारे में वाके हैं ॥

मन्दिरों के सिवाय काशी में बहुत से घाट, ताल और कुएं हैं बड़े घाट पांच हैं --

(१) असी संगंम जहां असी गंगा जी के साथ शहर के दक्खिन की तरफ मिलती है ॥

(२) दशास्वमेध, कहते हैं कि शिवजी के कहने से ब्रह्मा ने इस जगह अश्वमेध किया था और इसी सबब से घाट का यह नाम हो गया है ॥

(३) मनीकर्ण का घाट, यहां मरे हुये लोग जलाये जाते हैं॥

(४) पांच गंगाघाट, हिन्दुओं का ख्याल है कि यहां पांच पवित्र दरया धौतपपा, अरनन्दा, कीरनन्दी, सरस्वती और गंगाजी यहां मिलती हैं॥

(५) बर्ना संगम, यहां बर्ना और गंगा जी मिलते हैं।

बाकी घाटों में से केदारनाथ, नागपुर के राजा का घाट और सिन्धिया का घाट देखने के लायक हैं॥

काशी में पवित्र ताल यह हैं:—

(१) मनिकर्निका, इसी नाम के घाट के पास है। हर एक यात्री को यहां स्नान करना होता है॥

(२) पिशाच मोचन, काशी के सब लोग साल में एक दफा भूत प्रेतों से बचने के लिये इस ताल में स्नान करते हैं॥

(३) और अगस्त्य का कुण्ड है॥

काशी के कूएं यह हैं:—

(१) गयाण कुप जो औरंगज़ेब की मसजिद और विशेश्वर नाथ के मन्दिर के बीच में है कहते हैं कि इस में शिवजी रहते हैं॥

(२) अमृत कुण्ड, कहते हैं कि इस के पानी से स्नान करने से कोढ और शरीर के और रोग दूर हो जाते हैं॥

(३) नाग कुण्ड यह कुंआ सब से पुराना है और जिस मुहल्ले में यह कुंआ है उस का नाम भी इसी के नाम पर है इस जगह हर साल एक मेला होता है उस मौक़े पर लोग सर्प के काटे से बचने के लिये इस कुएं के पानी से स्नान करते हैं॥

बनारस में और बहुत से मकाम देखने के लायक हैं उन में से बड़े बड़े यह हैं:—

(१) प्रेन्स आफ़ वेल्ज़ का हस्पताल जो उस सड़क पर है। छावनी से राजघाट को जाती है॥

(२) टाऊन हाल जिस को महाराजा विजियानगराम ने अपने खर्च से बनवाया है ॥

(३) गवर्नमेन्ट और हिन्दू कालिज ॥

(४) राजा कालीशंकर का अन्धे और कोढ़ियों के लिये शरण स्थान जिस के खर्च के लिये राजा कालीशंकर रुपया छोड़ मरे हैं और कुछ सरकार से मिलता है ॥

(५) पागलखाना ॥

(६) सेन्टरल और डिस्टरिक्ट जेल ॥

(७) कमिश्नर और कलक्टर के दफ्तर और कचहरीयां ॥

(८) लण्डन मिशन इन्स्टीटियूट ॥

अज़मत गढ़ के रईस बाबू मोतीचन्द ने अंग्रेज़ों के घाट देखने के वास्ते एक सुन्दर किश्ती बनाई हुई है इसके वास्ते २४ घण्टे पहले खबर देनी चाहिये ॥

छावनी नगर से ३ मील है और वहां अंग्रेजी और देशी पलटनें रहती हैं ॥

बनारस में दो अंग्रेज़ों के होटल हैं और काशी स्टेशन के पास एक धर्मशाला है। नगर में बहुत धर्मशालाएं हैं ॥

काशी स्टेशन पर यक्के और छावनी के स्टेशन पर गाड़ियां सवारी के लिये किराया पर मिलती हैं ॥

काशी मुगल सराय से ७ मील और कलकत्ते से ४२६ मील है तीसरे दरजे का किराया -)॥ और ४।=)॥ लगता है। सहारन पुर से फ़ासला ५१३ मील किराया ४॥-)॥ है ॥

बम्बई ।

हिन्दुस्तान में सब से बड़ा बन्दर और बम्बई अहाते के लाट साहब का सदर है ॥

१६६१ में शहर बम्बई पुर्तगाल मुल्क के बादशाह ने इंगलिस्तान के बादशाह चार्लस दोयम को उसकी मलका केथ्रीन आफ बरीगंजा के दहेज में दिया था पर मालूम होता है कि बादशाह चार्लस को यह दूर के जागीर फायदेमन्द न मालूम हुई क्योंकि १६६८ में उसने इस को १० पाउण्ड सालाना पर ईस्ट इन्डिया कम्पनी को दे दिया । १७७३ में बम्बई गवर्नर जनरल के मातहत हो गया और उस वक्त से यह अहाता बनगया है । मरहट्टों की पहिली लड़ाई के बाद जो १७७४ - १७८२ में हुई और और बहुत सी गरदिश के बाद बम्बई पूरे तौर पर अंग्रेजों के कबजे में आगई ॥

बम्बई जजीरों के एक भुण्ड पर वाके है जो जजीरा नुमा की शकल में है । इसका खूबसूरत नज़ारा और तिजारत के लिये अच्छे मौके पर होने के सबब एशिया के सब शहरों से बढ़कर है बंदर शहर के पूर्बी किनारे फैलाहुआ है और उसपर बेशुमार देशी किश्तियां बड़ी खूबसूरत मालूम होती हैं बंदर जहाजों और अगन बोटों के लिये बेजोड़ जगह है । शहर के इधर के हिस्से में आबादी बड़ी घनी है ॥

बम्बई के पास एलिफन्टा की खोहों के मन्दिर देखने के लायक हैं जो टकसाल के पास मजागाओं या अपालो बन्दर से जहाज में एक घण्टे का रास्ता है । बसीन में पुर्तगाल वालों के पुराने किलों के खंडर देखने के लायक हैं दरिया के रस्ते आने से बसीन का सफ़र बड़ा भला मालूम होता है और अगर आते हुए रास्ता देखना मंजूर हो तो बम्बई बड़ोदा और सेंटरल इन्डिया रेलवे में बसीन रोड स्टेशन से सवार होकर बम्बई आसक्ते हैं कनेरी की खोहें जो भील तुलसी से तीन मील और बड़ी सुन्दरी है वहां आसानी से पहुंच सकते हैं वेहरा और तुलसी भीलें जिन से बम्बई में पानी आता है पहाड़ी के नीचे बड़ी सुहावनी जगह में करीब दो घंटे के रास्ते पर वाके हैं ॥

ख़ास बम्बई में नीचे लिखी हुई जगह देखने के लायक़ हैं :—

(१) नेचरल हिस्टरीसोसायटी याने चीज़ों की ख़ासियतें जानने वालों की सोसायटी का अजायब घर।

(२) प्रोंग का लायट हाऊस याने मुनारा जिस पर जहाज़ों को रस्ता दिखाने के वास्ते रौशनी की जाती है देखने के लिये टिकट बंदरगाह के अफ़सर से मिलते हैं।

(३) कलाबे का गिरजा जो उन लोगों की यादगार में बनाया गया था जो अफ़ग़ानिस्तान की पहली लड़ाई में मारे गये थे, दिन निकलने से शाम तक खुला रहता है।

(४) एलफ़िनस्टोन सर्कल में रायल एशियाटिक सोसायटी की बम्बई शाख़ का किताब घर और अजायब ख़ाना ६ बजे सवेरे से साढ़े छे बजे शाम तक खुला रहता है, किसी मेम्बर की सिफ़ारिश से देख सक्ते हैं।

(५) एलफ़िनस्टोन सर्कल में टाऊन हाल के पास शाह टकसाल रोज़ खुलता है टकसाल के अफ़सर की इजाज़त से देख सक्ते हैं।

(६) चर्च गेट स्टरीट में सेंट टामस का गिर्जा, बाग़ मासटरी के दफ़तर का बड़ा डाकख़ाना।

(७) फ़ोर्ट में एलफ़िन्सटन बाग़।

(८) एसपलेनेड में क्राफ़ोरड मारकिट।

(९) गवर्नमिंट डाक यार्ड याने जहाज़ गोदाम और कारख़ाने अपाली स्टरीट में सोमवार और बृहस्पत को अफ़सर से दर्ख़ास्त करने पर देख सकते हैं।

(१०) एसप्लेनेड रोड में तार घर।

(११) मेयो रोड पर सरकारी दफ़्तर और हाईकोर्ट।

(१२) एसपलेनेड में योहिन का बनाया हुआ बादशाह का बुत।

(१३) एसप्लेनेड रोड पर राजा बाई का यूनीवर्सिटी मुनारा और किताब घर सैसून मिकैनिक इनस्टीटियूट, सरकावस जी का यूनिवार्सिटी हाल।

(१४) जी० आई० पी० रेलवे का विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन हार्नबी रोड पर।

(१५) चर्च गेट स्टरीट में बी० बी० और सी आई रेलवे के दफ़तर।

(१६) विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन के सामने म्यूनिसिपल कमेटी का दफ़तर।

(१७) भुलेश्वर में जानवरों का हसपताल।

(१८) ग्रांट मैडिकल कालेज और जमसट जी जी जी भाए का हसपताल, ग्रांट मडिकल कालिज के अफ़सर की इजाज़त से देख सकते हैं।

(१९) पारल और वारली में रूई कातने की कलें।

(२०) प्रिन्स और विक्टोरिया डाकलवाले घाट, फरीर रोड पर।

(२१) चौपती में चुप का मनारा, पारसी पंचायत के सेक्रेटरी से देखने के लिये टिकट मिलते हैं।

(२२) मालावार पहाड़ी का हौज़।

पारल भी देखने वाली जगह है वहां बम्बई बड़ौदा और सेंटर्ल इण्डिया और जी० आई० पी रेलों के इंजनों के कारखाने हैं।

बम्बई में रूई के बड़े कारखाने हैं और यहां की आबहवा अच्छी है गर्म महीनों में भी यहां ज़ियादा गरमी नहीं होती॥

बम्बई में हिन्दुस्तान की बड़ी बड़ी रेलें मिलती हैं जी०
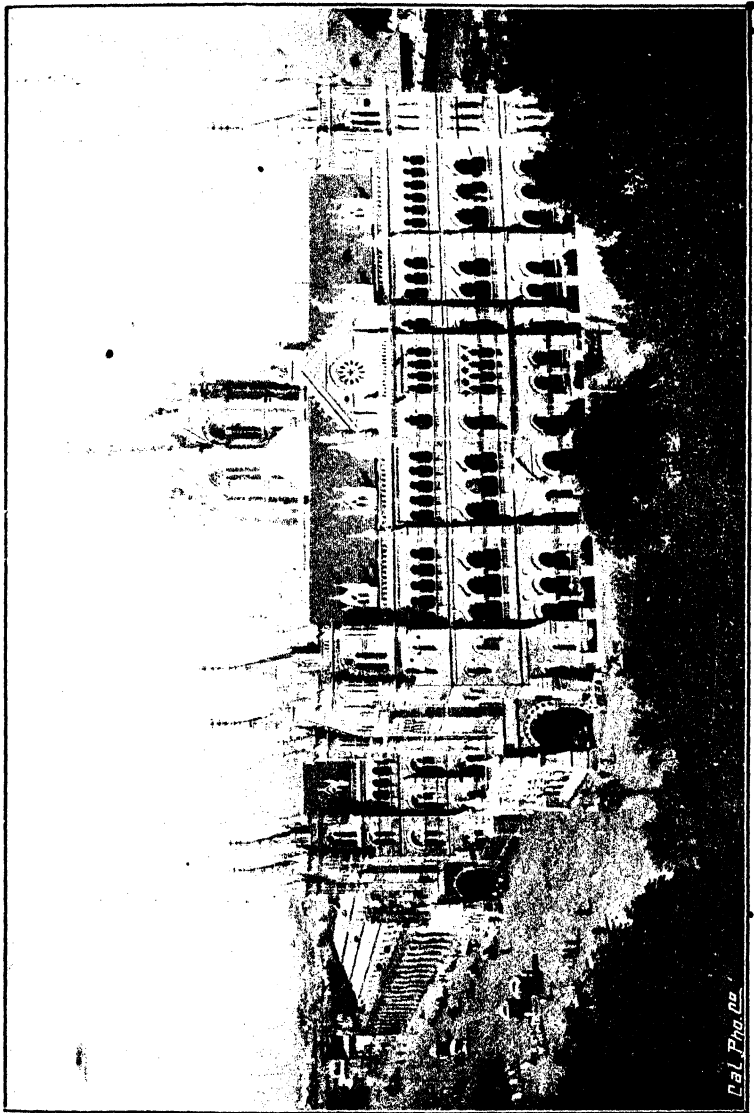
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन—जी० आई० पी० रेलवे—बम्बई ।

आई० पी० रेलवे का बड़ा स्टेशन विक्टोरिया टरमीनस बोरी बन्दर में है और बाईकुला स्टेशन से मालबार और कम्बाला पहाड़ियां पास हैं ॥

इस शहर में कई होटल और धर्मशाला हैं सवारी हर किसम की हरवक्त मिलती है ॥

बम्बई दिल्ली से जी० आई० पी० रेलवे में ६५७ मील लखनऊ से ८८५ मील हौड़े से १२२१ मील और लाहौर से १३०६ मील है इन जगहों से तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ६।।।=) १०=), १२।।।=) और १३।।-) है ॥

बलदेवा ।

ज़िला मथुरा में एक गांव और तीर्थ है इस के बीच में एक मन्दिर है जहां पर बेशुमार यात्री रोज आते हैं । इसी मन्दिर के सबब इस गांव का नाम बलदेव हो गया है । मन्दिर के पास एक पवित्र तालाब है जिस को खीरसागर कहते हैं । पुराने गांव का नाम रोहड़ा था अब यह गांव नए कसबे के साथ मिल गया है । देशकृत में हर साल सितम्बर के महीने में मेला होता है जिस में दस हज़ार के करीब लोग आते हैं । एक और बलदेव पूनू मेला होता है उस में २०००० हज़ार के करीब लोग आते हैं । यह दोनों मेले ठाकुर बलदेव जी की यादगार में होते हैं ॥

बलदेव में १२ कुंज दो धर्मशाला और एक डाक बंगला है मथुरा में बलदेव आने के लिये यक्के और गाड़ियां मिलती हैं यक्के का किराया १।) से २) तक और गाड़ी का ४) से ५) तक

मथुरा जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ८६८ मील और दिल्ली से ८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में १०॥॥) और १।॥) हैं और सवारी गाड़ी में ६-) और १।) लगता है ॥

बल्लबपुर ।

बंगाल अहाते के ज़िला हुगली में सिरामपुर के गिर्दनवाह का नाम है यहां और पास के गांव महेश में जगन्नाथ देवता के दो मेले बड़ी धूम धाम से होते हैं जिन में अनगिनत लोग आते हैं। पहले मेले का नाम स्नान यात्रा है, वह मेला मई के महीने में होता है और एक दिन रहता है दूसरा मेला जो रथयात्रा कहलाता है पहले मेले के ६ हफ़्ते बाद होता है। देवता को महेश के मन्दिर से निकाल कर एक रथ में रखते हैं और बल्लब पुर को जो महेश से एक मील के फ़ासले पर है खेंच कर लाते हैं देवता यहां राधा बल्लभ के मन्दिर में ८ दिन रहता है जिस से उस को फिर रथ में बिठाकर अपने मन्दिर में ले आते हैं। इस मौके पर महेश में मेला होता है जो ८ दिन रहता है पहले और आठवें दिन यात्रा की रसमें की जाती हैं और बाकी दिनों में व्योपार होता है। पहले और आठवें दिन एक लाख के करीब लोग जमा होते हैं ॥

सिरामपुर हौड़े से १२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ढाई आने है ॥

बलिया ।

अहाता बंगाल के ज़िला दीनाजपुर में एक नगर है यहां एक बड़ा मशहूर मेला अलावाखावा कृष्ण जीकी यादगार में हर साल अक्तूबर या नवम्बर के महीने में रासपूर्णिमा तेहवार के मौके पर होता है। देवता को सूखे चावल चढ़ाकर पूजा की जाती है और

इसी सबब से इस मेले का नाम अलावाखावा यानें सूखे चावल खाना हो गया है यह मेला ८ दिन से १५ दिन तक रहता है और ७५ या ८० हज़ार के क़रीब लोग इस में जमा होते हैं। मेले के मौक़े पर बड़ा व्योपार होता हैं॥

बलिया ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे के हलदी बाड़ी स्टेशन से ३० मील है, हलदी बाड़ी में बैल गाड़ियां बलिया जाने के लिये मिलती हैं। गांव में कोई सराय या धर्मशाला नहीं लोगों को ठहरने की जगह का आप बन्दोबस्त करना पड़ता है॥

कलकत्ते से हलदी बाड़ी २६२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।।।) लगता हैं॥

बलीघटयम ।

या बलीघटम मदरास अंहाते के विजागापटम ज़िले में गांव है। यहां शिवजी का जिन को ब्रह्मेश्वरादू कहते हैं मन्दिर है जो बहुत पवित्र माना जाता है इस मन्दिर में अनूठी बात यह है कि स्वामी या मूर्ती का मुंह पश्चिम को है। दरिया पंदेरु या वर्हानादू जो पहाड़ी के नीचे जिस पर मन्दिर खड़ा है बहता है थोड़ी दूर तक दक्खिन से उत्तर की तरफ़ उलटा चलता है। इस को हिन्दू लोग बड़ा सुभ समझते हैं और मन्दिर को जिस का नाम उत्तर वाहिनी है बहुत पवित्र मानते हैं।

दर्या के किनारे थोड़ी सी जगह में एक क़िस्म का टूटा पत्थर है जिस की शकल राख से मिलती है। पुजारी लोग कहते हैं कि यहां बली चक्रावर्ती ने यज्ञ किया था॥

मदरास रेलवे की नार्थ ईस्ट लाइन का नरसापटनाम स्टेशन यहां से २३ मील है वहां पर बलीघटयम जाने के लिये बैल गाड़ियां

मिल सक्ती हैं नरसापट्टनाम रायापुरम मद्रास से ४३१ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।) लगता है ॥

बलीपट्टयम में कोई सराये या धर्म्मशाला नहीं ॥

बसाराकोडू ।

एक छोटा सा गावं और मद्रास रेलवे के स्टेशन अदौनी से ६ मील पर वाक़े है । इस गावं में और उस के आस पास बहुत से मन्दिर हैं पर इस तालुक़ में सब से बड़ा नामी मन्दिर गावं से थोड़े फ़ासले पर दक्खिण पूर्व की तरफ़ एक खोह में है । हर साल चैत्र महीने का पहिली तारीख़ को यहां पूजा की जाती है जब हनूमान की मूर्ति गाव के एक छोटे मन्दिर से यहां लाई जाती है कहते हैं कि अगर पहले वर्षा न हो तो इस पूजा के बाद ज़रूर वर्षा होती है सोमेश्वाड़ा का मन्दिर इस गावं से एक मील के क़रीब है ॥

अदौनी मद्रास से ३०८ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ३।) और डाक गाड़ी में ४) लगता है ॥

बसीम ।

बरार में एक नगर और ज़िला बसीम का सदर है । जी० आई० पी० रेलवे के अकोला स्टेशन से ५२ मील है । अकोला से बसीम के रास्ते हिंगौल छावनी को तांगे जाते हैं उन में जगह मिल सक्ती है ॥

बसीम बड़ा पुराना नगर है कहते हैं कि बच्छ ऋषि ने बासाया था और इस का असली नाम उस ऋषि के नाम पर बच्छ गुल्मि था क़सबे के बाहर एक तालाब है जो पद्मा तीर्थ कहलाता है । कहते हैं कि राजा बासुजी का कोढ़ यहां नहाने से अच्छा हो

गया था अब भी हज़ारों लोग इस में नहाते हैं तालाब में जो चीज़ पड़ जाती है पत्थर बन जाता है ॥

बालाजी का मन्दिर और तालाब बहुत खूबसूरत हैं इन को भोंसला राजों के एक जनरैल भवान काली ने बसाया था ॥

अकोला बम्बई से नागपुर लाईन पर है, बम्बई से ३६२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।) लगता है ॥

बसतर ।

सूबाजात मुतवस्सत के चन्दा ज़िला में बाजगुज़ार रियासत है राजा साहब जगदलपुर में जो रियासत का बड़ा नगर है रहते हैं सारी रियासत में दन्तेश्वरी या माता जिस को भवानी या काली से शनाख़्त करते हैं और माता देवी की सब लोग पूजा करते हैं बड़ी जातों के लोग और देवताओं को भी मानते हैं लेकिन दन्तेश्वरी यहां के राजाओं की सरपरस्तदेवी समझी जाती है । उसी देवी की सरपरस्ती में यहां का राज वंश हिन्दुस्तान छोड़कर वरंगल में जा बसा था और जब मुसलमानों ने उन्हें तेलिंगानाकी रियासत से निकाल दिया तो देवी उनको दन्तीवाड़े में लेगई और अपना वासा भी वहीं बना लिया उसका मन्दिर संखनी और डंकनी दरियाओं के संगम के पास है और मौरूसी पुजारी इस के अहाते में रहता है कहते हैं कि किसी ज़माने में यहां मेरियाह या आदमी भेट किये जाते थे और इसी सबब से सरकार ने १८४२ के बाद कई साल तक मन्दिर पर पहरा रक्खा आजकल बहुत से राह गीर जब मन्दिर के पास से गुज़रते हैं तो देवीको बकरा चढ़ातेहैं और बाज़े देवी की मूर्ति के सिर पर फूल रखकर शगून भी लेते हैं अगर फूल दाहिनी तरफ गिरता है तो अच्छा शगून समझा जाता है नहीं तो खराब । मूर्ति काले पत्थर की बनी हुई है । और अकसर उसको सफैद मलमल की साड़ी और ज़ेवर पहनाये होते हैं ॥

बहड़ायच ।

अवध के ज़िला बहड़ायच का सब से बड़ा शहर है । पटना रेलवे ब्रांच यहां पर ख़तम होती है यहां सब से बढ़कर देखने के लायक़ जगह मसऊद का मज़ार है यह महात्मा बड़े शूरमा और भगत गुज़रे हैं । मज़ार के ख़र्च उनके चेलों की औलाद के ज़िम्मे है मारिच के महीने में यहां एक बड़ा मेला लगता है और करीब डेढ़ लाख हिन्दू और मुसलमान इस मौके पर इकट्ठे होते हैं उन के बड़े बड़े चेलों के मज़ारों के भी दर्शन किये जाते हैं इस मुकाम पर एक मशहूर खानगाह अब तक मौजूद है जो कि मुलतान के किसी महात्मा ने १६२० में कायम की थी ॥

दौलतखाना जो किसी ज़माने में खूबसूरत मकानों की कतार थी नवाब आसफउद्दौला ने बनवाया था यहां हर साल मालमण्डी भी लगती है ॥

बहड़ायच में एक डाक बंगला और सराये है सवारी मिलती है ॥

बहड़ायच बंगाल ऐंड नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर गोंडा जंकशन से ३८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।=)। लगता है ॥

बंगलोर ।

मदरास और सदर्न मरहट्टा रेलवे का जंकशन है उसका फासला मदरास से २१६ मील और बम्बई से ६९८ मील है यहां की आबहवा बहुत अच्छी है ॥

किला, रेज़ीडेन्सी, लाल बाग, गिबनपार्क देखने के लायक हैं । किला १५३७ में केम्पे गौड़ा ने बनाया था । १६३८ में बंगलोर को बीजापुर के जनरैल ने फतह किया १७५८ में हैदरअली को दियागया और १७९१ में इस को अंग्रेज़ी फौज ने फतह किया और १७९९ में वदियार वंश की औलाद में से एक आदमी को दिया गया । लालबाग

आम लोगों की सैर का बाग है और बड़ा सुन्दर है। गिबनपार्क में भी शाम को बहुत लोग जाते हैं यहां हफते में कई बार अंग्रेजी बाजा बजा करता है और लानटेनिस (गेंद बल्ला) खेलने की जगह बनी हुई हैं॥

बंगलोर में ८ अच्छे होटल और बोर्डिंग हाऊस और ६ धर्म्मशाला हैं। इन में से एक धर्मशाला जिस को थोप्पाह चट्टी की चोलतरी कहते हैं शहर के स्टेशन से २०० गज के फासले पर है और एक छावनी के स्टेशन से आधे फलांगके फासल पर है। बैलगाड़ियां और थक्के दोनों स्टशनों पर हर वक्त मिलते हैं॥

मद्रास से बंगलोर तक तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥।ॽ) और सवारी गाड़ी में २।ॽ) है॥

बन्दुकपुर।

तीर्थ की जगह है। जनवरी और फरवरी के महीनों में बसन्त पंचमी और शिवरात्री के मौकों पर मेले होते हैं जिन में हज़ारों यात्री लोग चढ़ावे चढ़ाने और जागेश्वर महादेवजी की मूर्ति पर गंगाजल डालने आते हैं। यह मन्दिर १७८१ में इलाका दमोह के नाजाजी बलाल के पिता ने बनाया था जिस को सुपने में मालूम हुआ था कि बन्दुकपुर की एक जगह में जगेश्वर महादेवजी की मूर्ति गड़ी हुई है॥

बन्दुकपुर जी० आई० पी० रेलवे की कटनी बीना ब्रांच पर स्टेशन है इसका फासला कलकत्ते से ईस्ट इण्डियन रेलवे में ७३७ मील है तीसरे दरजे का किराया ७ॽ)। है और बंगाल नागपुर रेलवे में फासला ७०४ मील और तीसरे दरजे का किराया ६।) है॥

बाईकुला बम्बई।

मालबार कम्बाला ओचकरबी, महालक्ष्मी और मजागांओं के मुसाफिरों को यहां उतरना चाहिये। विकटोरिया बाग जो स्टेशन से थोड़ी दूर है देखने के लायक है उन में एक अंजायबघर, चिड़ियाघर, और बादशाह अलबर्ट का बुत है अजायब घर के नजदीक पलटन का बाजा अकसर बजा करता है। विकटोरिया टेकनीकल इन्स्टीच्यूट भी स्टेशन के पास है। सवारी मिलती है॥

बाईकुला जी० आई० पी० रेलवे पर विकटोरिया टरमिन्स स्टेशन से २ मील है तीसरे दरजे का किराया) ॥ लगता है॥

बादामी।

अहाता बम्बई के ज़िला बीजापुर और बदामी सबडिविज़न में एक नगर है और सदर्न मरहटा रेलवे के बादामी स्टेशन से तीन मील है यह जगह देखने के लायक है। जैनियों के खोहों के मन्दिर बहुत सुन्दर हैं कहते हैं कि अंग्रेज़ी सम्वत ६५० में बनाये गए थे। तीन मन्दिर ब्राह्मनी मन्दिरों के ढंग के हैं उन पर सन् ५७९ ई० है जैनियों की खोहें ३१ फीट लम्बी चौड़ी और १६ फीट गहरी हैं यह खोहें उस ज़माने की हैं जब बुद्ध मत पर हिन्दु मत ने फिर गलबा पाया नरसिंह अवतार (विष्णु पांच सिरवाले सर्प अनन्ता पर बैठे हुए) और किस्म किस्म की पत्थर की मूर्तियां अबतक बाकी हैं एक मन्दिर के सामने के पीलपायों पर मनुष्यों स्त्रियों और बोनों की मूर्तियां खोदी हुई हैं बाजे पीलपाये बहुत खूबसूरत हैं। स्टेशन से ६ मील के फासले पर पारसगढ़ गांव में श्रीयनाशंकरी देवी का बड़ा मन्दिर है जहां हरसाल जनवरी के महीने में बड़ा भारी मेला होता है जिस में सैकड़ों यात्री आते हैं॥

बादामी बम्बई से ४२३ मील और तीसरे दरजे का किराया ४।≈)॥। है॥

एक स्टेशन के पास और एक बादामी नगर में देशियों के विश्राम के लिये धर्मशाला है पर पारसगढ़ में कोई नहीं॥

स्टेशन पर बादामी नगर और पारसगढ़ जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं॥

बाबाबुडन या चन्द्रा द्रौना।

रियासत मैसूर के ज़िला दादर में घोड़े के सुम की शकल की एक पर्वतों की कतार है हिन्दुस्तान में पहिले काफ़ी यहां बोई गई थी कहते हैं कि क़रीब दो सौ साल गुज़रे कि एक मुसल्मान महात्मा मक्के से काफ़ी का पौदा लाया था और उसी महात्मा के नाम पर इस पर्व्वत का नाम रक्खा गया उसकी (लोथ) पर्व्वत के पश्चिम की तरफ़ एक खोह में है एक कलन्दर उसकी खबरदारी करता है जो एक मील के फ़ासले पर आतेगन्दी गांव में रहता है। हिन्दू भी इस जगह को बहुत पवित्र मानते हैं क्योंकि वह दत्तात्रय का इस को सिंहासन समझते हैं॥

इस पर्व्वत के पंक्ति में एक जगह कलहट्टी है जहां साहब लोग गर्मी में आकर रहते हैं यहां सिंकोना कोनैन बोए जाने का तजरुबा किया गया था पर्व्वत के पास दो खोदी हुई झील हैं॥

सदर्न मरहट्टा रेलवे के कदुर स्टेशन से २ फ़रलांग पर एक बंगला है और पर्वत पर कई आश्रम देसियों के लिये बने हुए हैं। पर्वत कदुर से ४० मील है और वहां जाने के लिये कदुर में बैल गाड़ियां मिल सक्ती हैं॥

कदुर पूना से ४१८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ८।) और सवारी गाड़ी में ५≈)। लगता है॥

बालासोर ।

ज़िले का सदर मुक़ाम और क़सबा और बंगाल नागपुर रेलवे पर एक स्टेशन है बराबालांग दरिया के दाहने किनारे समुद्र से ६ मील के फ़ासले पर वाक़े है जहां चंदीपुर में सरकार ने १८९६ से हथियार बनाने का कारखाना खोला हुआ है॥

स्टेशन के पास जरहेसवई महादेव जी का मन्दिर है जिस की बाबत कहते हैं कि धरती से आप ही निकला था शिवरात्री की रात को यहां एक मेला होता है जिस में दो तीन हज़ार यात्री जमा हो जाते हैं। स्टेशन से ६ मील के फ़ासले पर गोपीनाथ का मशहूर मन्दिर है वहां तक सड़क बनी हुई है और गाड़ियां मिलती हैं॥

बालासोर हौड़े से १४४ मील तीसरे दरजे का किराया १॥ॽ) लगता है॥

बालुगान ।

बंगाल नागपुर रेलवे का एक स्टेशन है जो रामपुर थाना से तीन मील है इस जगह भागवती ठाकुरानी का एक मन्दिर है यह नगर खुरदा के जनूबी हिस्से की बड़ी भारी तिजारत की जगह है॥

यह स्टेशन हौड़े से ३२७ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।) है।

राजपूताना की जोधपुर रियासत में लूनी नदी के दाहने किनारे पर एक क़सबा है यह क़सबा जोधपुर से ६२ मील है और उस शाही सड़क पर वाक़े है जो द्वारका से जोधपुर को जाती है। यह हिन्दूओं का बड़ा तीर्थ है। मार्च के महीने में यहां से १ मील

के क़रीब तिलवाड़ा गांव में मालिनाथ का १५ दिन तक मेला लगता है जिस में ३०००० के क़रीब लोग जमा होते हैं ॥

बलोत्रा जोधपुर बीकानेर रेलवे पर स्टेशन है इस का फ़ासला दिल्ली से ४११ मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।-) लगता है। स्टेशन पर पहले और दूसरे दरजे के मुसाफ़िरों के वास्ते वेटिंगरूम हैं और नगर में देसी लोगों के लिये एक धर्मशाला है ॥

बाराबार पर्वत ।

अहाता बंगाल के ज़िला गया में पर्वत है और पटना गया रेलवे के वेला स्टेशन से ६ और ८ मील के बीच में है। सब से ऊंचा चोटा बाराबार पर सिद्धेश्वाड़ा मन्दिर है जिस में एक लिङ्ग है कहते हैं कि इस लिङ्ग को इस मन्दिर में दिनाजपुर के असूर राजा बाड़ा ने रक्खा था। राजा बाड़ा की कृष्ण के साथ खूनी लड़ाइयां आज तक मशहूर हैं। शिवजी की यादगार में यहां पर अनन्त चतुर्दशी को मेला सितम्बर के महीने में बड़ी धूम से होता है। १० से २० हज़ार तक मनुष्य यात्री इस मेले में आते हैं। देवता की पूजा रात को होती है। उस दिन यहां एक बाज़ार लगाया जाता है जिस में मिठाई और चढ़ावे की वस्तु बिकती हैं। दक्खिन की तरफ़ और पहाड़ी की जड़ के पास अजीब खोहें हैं जिनको सतघर कहते हैं। इन में से तीन खोहों में बड़ी सुन्दर शिक्षा की हुई है चौथी खोह अभी तक अधूरी है। बाक़ी तीन खोहें नगरजुनी पहाड़ी में हैं। थोड़ी दूर पर पवित्र पातल गंगा है और कावाडोल के पास बुद्ध की बड़ी भारी मूर्त्ति है। इन पहाड़ियों में और बहुत सी मूर्त्तियां हैं ॥

बेला स्टेशन पर इस पर्वत को जाने के लिये कोई सवारी

नहीं मिलती यात्रियों को पैदल जाना पड़ता है। बेला में या पहाड़ी पर कोई धर्मशाला नहीं यात्री खोहों में ठहरते हैं ॥

बेला कलकत्ते से ३०५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।=)॥। लगता है ॥

बारसी रोड।

बारसी छोटी लैन का जी० आई० पी० के साथ जंकशन है। बारसी क़सबा यहां से २२ मील, बम्बई से २५६ मील और पूना से ११५ मील है तीसरे दरजे का किराया इन जगहों से ।-)॥ २॥)॥ और १॥-) है। पन्ढरपुर बारसी छोटी लैन पर बार्सी रोड स्टेशन से ३१ मील के फ़ासले पर है और किराया ।=)॥। लगता है। यहां भीमा दरिया के किनारे पर विथोवा का मन्दिर है जहां जूलाई और नवम्बर मे बड़े बड़े मेले लगते हैं ॥

बांसदा।

अहाता बम्बई के सूबा गुजरात काठियावार में देसी रियासत है उनाई मुक़ाम पर जो यहां से ७ मील है एक गर्म पानी का चश्मा है यहां माघ महीने में पूरे चांद के मौके पर हर साल स्नान मेला होता है जो ६ दिन तक रहता है। ६ या सात हजार यात्री जमा होते हैं ॥

बासोदा।

जी० आई० पी० रेलवे की इंडियन मिडलैंड शाख पर स्टेशन है। यहां से १५ मील पश्चिम की तरफ रियासत टोंक में एक बड़ा

व्योपारी नगर सेरोंज है वह जनवरी की १५ से फरवरी को १५ तक भारी मेला होता है स्टेशन पर वेटिंग रूम है ॥

बांसोदा दिल्ली से ३७६ मील और बम्बई से ५७६ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ४॥।≈) और ६।-) और डाक गाड़ी में ५॥≈) और ६-) है ॥

बिजनौर ।

सूबा आगरा और अवध में कसबा है और जिला बिजनौर का सदर मुकाम है । गंगाजी के बायें किनारे से तीन मील के फासले पर वाके है शहर बड़ा सुथरा और साफ है और इस के बीच में एक चौड़ी पक्की सड़क बनी है । जिस के दोनों तर्फ उमदा नालियां हैं । यहां की चीनी बहुत मशहूर है और उसका बड़ा व्योपार होता है । जनेऊ, रूई के कपड़े और चाकू यहां बनते हैं ॥

बिजनौर से ६ मील दक्षिण की तर्फ दारानगर में गंगास्नान का मेला नवम्बर के महीने में होता है जो ५ दिन तक रहता है ४०००० के करीब यात्री लोग इस मेले में जमा होते हैं ॥

दारा नगर और बिजनौर में एक सराय और बिजनौर में हस्पताल के सामने डाक बंगला भी है ॥

बिजनौर अवध रुहेलखण्ड रेलवे के नगीना स्टेशन से १६ मील है । नगीने से बिजनौर जाने के लिये मेल कार्ट गाड़ियां और यक्के मिलते हैं । मेल कार्ट का किराया।-) से ॥) तक और यक्के का ।) से ।-) तक एक सवारी का होता है बिजनौर से दारा नगर जाने के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं ॥

सहारनपुर जंकशन से नगीना ७३ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥।-) लगता है ॥

बिठूर (बरमा वर्त)

नानासाहिब के रहने की जगह थी इस लिये काबिल यादगार है । इस कसबे में उस के कई बड़े बड़े महल थे । यहां पर एक खुशनुमा घाट बना हुआ है जिस को ब्रह्मा घाट कहते हैं इस जगह नवम्बर में पूरे चांद के मौके पर स्नान का मेला होता है बेशुमार यात्री जमा होते हैं ॥

बिठूर बी० बी० एंड सी० आई० रेलवे पर है इस का फासला कानपुर से १६ मील हौड़े से ६५४ मील दिल्ली से हाथरस के रस्ते २७८ मील और बम्बई से कानपुर और इटारसी के रस्ते ८६० मील है, तीसर दरजे का किराया ७)॥।, ६।-), ३=) और ६॥।=) लगता है। स्टेशन के पास एक बंगला और दो धर्मशालाएं हैं और बहुत से पांडों के घर भी हैं ॥

बीर नगर ।

बंगाल अहाता जिला नदिया रानी घाट सब डिवीजन में क़सबा है मई में तीन दिन तक हैज़े की देवी उलाई का जो शिव जी की स्त्री का एक नाम है मेला होता है उस में १०००० यात्री आते हैं ॥

बिरनगर नाम सरकार की तरफ लोगों की बहादुरी के सबब मिला था इसका पहिला नाम ऊला है ॥

मुकर जी बाबू ने अतिथिशाला खोली है जिस में मुसाफिरों को मकान और खाना बिना दाम मिलता है । बैहलियां पालकियां और गाड़ियां किराये पर मिल सक्ती हैं ॥

बीर नगर ई० बी० एस० रेलवे पर कलकत्ते से ७३॥ मील है तीसरे दरजे का किराया १=)॥ लगता है ॥

विरुर ।

सदर्न मरहट्टा रेलवे पर बाबा बुधन पहाड़ के लिये स्टेशन और शिमोगा शाख का जंकशन पूना से ४६४ मील के फासले पर है मुसाफिर गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ६।≈)। है ॥

बाबा बुधन पहाड़ घोड़े के नाल की शकल का है । बाबा बुधन ने जिस के नाम पर इस पहाड़ का नाम है पहले मैसूर में काफी बोई थी । उसका मज़ार पहाड़ की एक खोह में है जो जनूबी हिन्दुस्तान का मक्का खियाल किया जाता है हिन्दू लोग भी इस जगह को वैसाही पवित्र मानते हैं जैसा मुसलमान । वह इस को दत्तातिरया की गद्दी कहते हैं और कहते हैं वह इस जगह पिछले ज़माने में गायब हुआ था फिर आये गा और यह विष्णु का आखीरी अवतार और सतयुग के शुरू होने का निशान होगा ॥

विरुर में नारियल और सुपारी की बड़ी मण्डी है ॥

स्टेशन के पास बंगला और नगर में जो स्टेशन से ३ मील है दो धर्मशालायें हैं ॥

बिलासपुर जंकशन ।

बंगाल नागपुर रेलवे पर कलकत्ते से ४४५ मील है, करीब १५ मील उत्तर की तरफ रतनपुर है, जो पुराने ज़माने में बंश राजपूतों का जो अंग्रेजी सम्वत् से ५०० साल पहले हुए हैं राजधानी था यह जगह ज़िले में सब से जियादा पवित्र समझी जाती है । शहर अब उजाड़ हालत में है पर पुराने किले को देखकर इस जगह की पहिली शान शौकत मालूम होती है । शहर की तरफ अनगिनत सत्तियों की पक्की समाधें हैं जिन में से सब से बढ़कर एक मीनार राजा लक्ष्मण की २० रानियों की यादगार में है जो अपने पती के साथ सती होगई थीं । यहां मन्दिर भी बहुत हैं

जो सब बड़े पुराने, और पवित्र समझे जाते हैं रतनेश्वर का मन्दिर जिस सबब से शहर का नाम रतनपुर है बहुत बड़ा है। पहाड़ियों के बीच में एक पवित्र झील है जिस में चन्द्रमा पूरा होनेपर सब जाकर नहाते हैं॥

बिलासपुर में स्टेशन से २ मील एक सराय और एक धर्म्मशाला है और ३ मील बंगला है। रतनपुर में भी बंगला है सराय या धर्मशाला कोई नहीं॥

बिलासपुर रतनपुर को पक्की सड़क है और तांगे जाते हैं॥
कलकत्ते से बिलासपुर का तीसरे दरजे का किराया ४॥।~)॥ लगता है॥

बिन्त्रागंटा।

मद्रास अहाते के ज़िला नेलोर और कवाला तालुक में समुन्दर से ८ मील गांव है। यहां एक पहाड़ी पर विष्णु का मन्दिर है जिस का हरसाल मेला होता है, जिन लोगों की कहीं प्रीति हो और खर्च के सबब बिवाह न कर सकते हों वह यहां आकर विवाह करते हैं॥

हर साल फर्वरी के महीने के आखीर में श्री वेनकाटाचलापती या वेनकाटेश्वरुलू का ब्रह्म ऊतशावम होता है। पहाड़ी के पास तीन चत्तरम हैं पर वहां खाना ही मिलता है और लोग एक टोप के नीचे ठहरते हैं। बैल गाड़ियां स्टेशन पर मिलती हैं, आने जाने का किराया ॥।) लगता है॥

बिन्त्रागंटा मद्रास रेलवे पर मद्रास से १३१ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥≈) लगता है॥

बेजवादा ।

मद्रास रेलवे का शाख नार्थ इस्ट का जंकशन है और किस्टना के उत्तर के किनारे पर वाक़े हैं यह शहर नहरों के रास्ते से मद्रास एलोर, मसलीपटम, कोकोनेडा और राज मन्दरी से मिला हुआ है इसी लिये बड़ी ज़रूरी जगह है यहां पर पुरानी इमारतें भी हैं जिन में पहाड़ में खोदे हुए मन्दिर बुद्ध लोगों के ज़माने के मौजूद हैं और हिन्दुओं के बड़े पुराने मन्दिर याने पगोड़े भी हैं। नहरों के खोदने के वक़्त बड़ी २ अजीब पुरानी चीज़ें निकली थीं। १८०२ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का बनाया हुआ किला गिरा दिया गया था ॥

स्टेशन पर रिफरेशमैन्ट रूम और पास एक बंगला है और तीन चत्तरम और चोलतरियां भी हैं। एक चत्तरम स्टेशन से क़रीब ५० गज़ के फासले पर है। बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

बेज़वादा मद्रास से २६८ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है ॥

बेगमाबाद ।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला मेरठ में नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर नगर है। इसका फासला दिल्ली से २६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ।-)॥ लगता है ॥

इस नगर में रानी बाला बाई का बनाया हुआ बड़ा सुन्दर मन्दिर है और मार्च के महीने में सिकरी देवी का मेला एक और मन्दिर पर लगता है जो ४ दिन तक रहता है। ४ हज़ार के क़रीब लोग इस मेले में आते हैं। नगर में नवाब ज़फर अली की जिस ने इस नगर को बसाया था बनाई हुई एक टूटी हुई मसजिद है। यहां

स्कूल, डाकखाना और तार घर भी हैं स्टेशन के पास एक बंगला और एक कच्ची सराए है ॥

बेट्टियां ।

तिरहुत स्टेट रेलवे पर अहाता बंगाल के ज़िला चम्पारन में सब से बड़ा और तिज़ारती कसबा है। महाराज का महल जो कसबे के दक्खिन की तरफ़ है बहुत खूबसूरत है। महल के पास ही रोमन कैथलिक ईसाइयों का गिरजा और मिशन है इस मिशन को १७४६ में एक इटली मुलक के पादरी ने क़ायम किया था यहां के बहुत से ईसाई ब्राह्मणों की औलाद में से हैं ॥

अक्तूबर के महीने में वहां एक बड़ा मेला राजा रामचन्द्र जी की यादगार में होता है जिस में २०००० से २५००० तक लोग जमा हो जाते हैं ॥

बेट्टिया बंगाल ऐण्ड नार्थ वेस्टरन रेलवे पर कलकत्ते से ४५१ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥-) लगता है ॥

बेरी ।

पंजाब के ज़िला रोहतक की तहसील रोहतक में कसबा और म्यूनीसीपैलटी है और देहली से भिवानी को जो सड़क जाता है उस पर वाक़े है। एक डोगरे ने अंग्रेज़ी सम्वत् ६३० में बसाया था। यहां बहुत से मालदार शाहूकार रहते हैं और इर्द गिर्द के इलाके में बड़ा ब्योपार होता है फरवरी और अक्तूबर में देवी के दो बड़े मेले होते हैं दूसरे मेले में टट्टुओं की नुमायश होती है ॥

रोहतक लाहौर से २५४ मील और तीसरे दरजे का किराया २॥॥-)॥ लगता है। रोहतक में बेरी जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

बेलागाम ।

बम्बई अहाते के जनूबी डिवीज़न का ज़िला है। इस के पास पार सगड़ सब डवीज़न में यलमा देवी की पहाड़ी है जो इस ज़िले में सब से बड़ी तीर्थ की जगह है अपरैल और नवम्बर के महीनों में पूरे चन्द्रमा के दिनों में दो मेले होते हैं जिन में १५००० से ४०००० तक यात्री जमा होते हैं। नवम्बर का मेला देवी के पति का मरना ज़ाहर करता है। यह मेला बड़े मन्दिर से चौथाई मील के फ़ासले पर होता है और एक वक़्त मुक़र्रर पर सब लोग रोने का गुल मचाते हैं और औरतें अपने हाथों की चूड़ियाँ तोड़ डालती हैं। अपरैल का मेला देवी के पती के फिर जी उठने की यादगार में होता है॥

बेलगाम सदर्न महट्टा रेलवे का स्टेशन है इस का फासला पूना से २४५ मील और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में २॥)॥। और डाक गाड़ी में ३॥) लगता है॥

बेलूर ।

मैसूर रियासत के ज़िला हसन में यगात्री दरिया के दाहने किनारे और हसनसे सड़क के रस्ते २३ मील एक गांव है। हसन बड़ा पुराना शहर है पुराणों में उस को बेलापुरा लिखा है और उस इलाके में उस को दक्षिण वरनासीया-दक्खिनी बनारस कहते हैं। इस जगह की शोहरत चन्ना केसवा के मन्दिर के सबब से है जिस में कारीगर जकनाचारजया के हाथ के खूबसूरत बेलबूटे और संगतराशी की हुई है। इस मन्दिर को अंगरेजी बारहवीं सदी के बीच में कोएसाला बलाला खानदान के एक राजा ने जब वोह जैन मत से विष्णु मत में आया बनवाया था। यहां हरसाल अपरैल के महीने में मेला होता

है जिस में ५००० के करीब लोग आते हैं। यह गांव बेलूर तालूक का सदर भी है॥

बेलूर के लिये सदरन मरहट्टा रेलवे का बनावार स्टेशन पास है उसका फासला यहां से २८ मील है। यह स्टेशन पूना से ५१२ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ५।~)॥ है॥

बेलूर में बंगला और एक धर्मशाला भी है। बनारस के स्टेशन मास्टर की मारफत बैल गाड़ियां बेलूर जाने के लिये मिल सक्ती हैं एक गाड़ी का किराया ३) लगता है॥

बैराम घाट।

एक बड़ी पवित्र जगह इलाका करंजा ज़िला एलचपुर मुलक बरार में है यह स्थान एलचपुर से १४ मील के फासले पर है। अक्तूबर के महीने में यहां एक मेला होता है जिस में ५०००० के करीब लोग जमा होते हैं इस मौके पर एक टीले के साम्हने हज़ारों पशु भेंट दिये जाते हैं हिन्दू टीले के एक तरफ होते हैं और मुसलमान दूसरी तरफ होते हैं। एक अजीब और मोतबर बात यह है कि यहां हज़ारों पशु बलिदान किये जाते हैं पर कभी एक भी मक्खी नज़र नहीं आती॥

करंजा जी० आई० पी० रेलवे के मुर्तज़ापुर स्टेशन से २१ मील और अमरावती से ३३ मील है। इन दोनों स्टेशनों पर करंजा जाने के लिये तांगे और बैल गाड़ियां मिलती हैं॥

अमरावती बम्बई से बदनेरा जंकशन के रस्ते ४१६ मील और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥)। और सवारी गाड़ी में ४।~)। है और मुर्तज़ापुर ३८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६~) और सवारी गाड़ी में ४) है॥

बैकुण्ठपुर ।

बंगाल अहाते के ज़िला पटनां में गंगाजी के किनारे पर कसबा और बड़ा तीर्थ है शिवरात्री के तेहवार पर हजारों यात्री यहां आते हैं । पहले यह कसबा बड़ा था ॥

ईस्ट इण्डिया रेलवे का पूनपून स्टेशन इस जगह से पास है। इस स्टेशन का हौड़े से फ़ासला ३४१ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥=)। है ॥

बोधन ।

अहाता बम्बई के ज़िला सूरत और मंदवी सब डिवीज़न में गांव और तीर्थ है । हर बारहवें साल जब बृहस्पति सिंह के नक्षत्र में पहुंचता है तो यहां पर मेला होता है जिस में २००० के करीब लोग सूरत, बड़ोच और अहमदाबाद के ज़िलों और बड़ोदा और राजपीपला रियासतों से आते हैं । मन्दिर में गौतमेश्वर महादेव जी की मूर्ती रक्खी है उन्हीं की यादगार में मेला होता है । मन्दिर के साथ मुआफ़ी पर ज़मीन है ॥

बी० बी० ऐंड० सी० आई रेलवे का किम स्टेशन बोधन से १२ मील है और किम बम्बई से १८२ मील है बम्बई से इस स्टेशन तक तीसरे दरजे का किराया २।=) लगता है। किम में बोधन जाने के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं किराया एक गाड़ी का १।) लगता है। बोधन में एक ही धर्मशाला है और यात्री अपने प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं ॥

बोरयावी ।

नर्तल से डेढ़ मील है यहां एक स्थल और एक कृष्ण जी का मन्दिर है। इस नगर को १८१० में एक ब्राह्मण सहजानन्द स्वामी तपस्वी ने बसाया था, यह महात्मा बुरे कामों से लोगों और खासकर प्रोहतों को रोकते थे और इसी सबब से लोग उस पर बड़ी सख्ती करते थे पर अपने चेलों में जोश फैलाने से वोह जबरदस्त होगया॥

यहां हर साल दो बड़े मेले होते हैं एक चैत्र महीने की सुदी १५ (अपरैल) को स्थल कायम करने वाले की यादगार में होता है और दूसरा कार्तिक सुदी १५ (नवम्बर) को उस के बाप की यादगार में॥

बोरयावी बी० बी० एंड० सी० आई रेलवे पर बम्बई से २७५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।≈) लगता है॥

वर्तल में दो धर्मशालायें हैं पर बोरयावी में कोई नहीं यहां बैल गाड़ियां ≈) मील किराये पर मिलती हैं॥

बोरिवली ।

या दाईश्वर बी० बी० और सी० आई० रेलवे पर मांटपेजिर और एक जेसूट (ईसाइयों का एक मत) खानगाह के पास वाके है इस खानगाह पर रोमन कैथलिक ईसाई मुकरिर दिनों में बड़ी कसरत से जाते हैं। कनेरी की मशहूर खोहें जिनको कहते हैं कि बुध लोगों ने बनाया था इस स्टेशन से ४ मील हैं यह खोहों के मन्दिर १०० से ऊपर हैं पहाड़ की चट्टानों को काट कर ६ या १० सदी में बनाए गए थे बड़ा मन्दिर ८८॥ फीट लम्बा और ३८॥ फीट चौड़ा है और गुम्मजदार छत ४० फीट ऊंची अठ पहलू पील पायों पर खड़ी है दर्बा रखोह ६२॥ फीट लम्बा और ४२॥ फीट चौड़ा है लेकिन सिर्फ ६ फीट ऊंचा

है। रंग और पलस्तर के निशान अब तक हर खोह में मौजूद हैं। पहाड़ी के बड़े हिस्सों पर पक्के चबूतरों और बागों के निशान भी बाक़ी हैं और कई पत्थर की नालियां हैं जिन में से पानी निकल कर पहाड़ी में गाइब हो जाता है। पहाड़ी की चोटी पर से बम्बई शहर और बन्दर, बसीन और समुद्र दिखाई देते हैं॥

स्टेशन पर मुसाफिरखाना और उसके पास एक धर्मशाला है। यहां कनेरी की खोहें देखने के लिये बैलगाड़ियां मिलती हैं आने जाने का किराय २) लगता है॥

बोरवली बम्बई से २४॥ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)॥। लगता है॥

बौसी।

अहाता बङ्गाल के ज़िला भागलपुर में मन्दिर है पहाड़ी के नीचे एक गांव है। बेशुमार मकान, तालाब, बड़े २ कुएं और पत्थर की मूर्त्तियां एक दो मील तक इस पवित्र पहाड़ी के इर्द गिर्द मिलती हैं उन से मालूम होता है कि किसी ज़माने में यहां कोई बड़ा शहर बसता था, आस पास के लोग कहते हैं कि उस शहर के ५२ बाज़ार ५३ सराय आम और ८८ तालाब थे। और दिवाली तेहवार की रात को एक बड़े मकान में जिस के खण्डर अब तक बाकी हैं एक लाख दिये जलाये जाते थे हर घर को सिर्फ एक दिया जलाने की इजाज़त होती थी। इस मकान के विजयद्वार पर संस्कृत में कविता हैं जिस से मालूम होता है कि ३०० वर्ष भी नहीं हुए जब वह शहर आबाद था जब मन्दिर पहाड़ी पर मधुसूदन मन्दिर टूट गया तो देवता की मूर्त्ति बौसी में ले आये थे जहां यह अब तक मौजूद है पौष संक्रांती के दिन हर साल इस मूर्त्ति को बौसी से पहाड़ी के नीचे लाते हैं और विजयद्वार पर जिसका ऊपर ज़िकर हो चुका है झूला

झुलाते हैं। इस तेहवार पर ३०००० से ४०००० हज़ार तक यात्री देश के सब हिस्सों से पवित्र तालाब में स्नान करने आते हैं और एक मेला होता है जो १५ दिन रहता है॥

बौसी इस्टरन बङ्गाल रेलवे की माइमन सिंह जगन्नाथ जी शाख पर स्टेशन है इस का फासला कलकत्ते से ३६३ मील और तीसरे दरजे का किराया ४॥=) है॥

भुवनेश्वर।

बङ्गाल नागपुर रेलवे पर बड़ा तीर्थ है ६०० साल तक याने ५०० से ११३० तक यह उडीसा के शिव जी के आधीन केशर बंशी राजों की राजधानी रहा। किसी ज़माने में ७००० मन्दिर बिन्दु सरोवर की पवित्र झील के गिर्द थे पर अब उन में से ५०० के क़रीब २ रह गये हैं और इन में से क़रीबन सब के सब खाली और टूटी फुटी हालत में हैं। इन से उडीसा की तरह तरह की कारीगरी सातवीं सदी से बारवीं सदी तक जाहर होती है मुक्तेश्वर का खूबसूरत मन्दिर सातवीं सदी में बना था आम लोग इस को लिंगराज महादेव कहते हैं इस के इर्द गिर्द अनगिनत मन्दिर हैं॥

यहां से कोई तीन मील खोडगिरी और उदयगिरी पहाड़ियों पर खोहों में बने हुये बुद्ध लोगों के मन्दिर हैं जो अंग्रेज़ी सम्वत से ३ या ४ सौ साल पहिले के हैं। जगन्नाथ से लौटते हुए यात्री लोग भुवनेश्वर के दर्शन करते हैं। यहां कई धर्मशाला हैं॥

भुवनेश्वर कलकत्ते से २७१ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ४।) और सवारी गाड़ी में ३॥~) लगता है॥

भरतपुर ।

राजपूताना में भरतपुर रियासत का बड़ा शहर और किला है और राजपूताना मालवा रेलवे पर आगरे से ३५ मील और जयपुर से ११२ मील है ॥

इस शहर का नाम भरतराजा के नाम पर रक्खा गया है कहते हैं कि यह शहर कृष्ण जी की हिफ़ाज़त में है जिन की पूजा यहां बिहारी के नाम से की जाती है। किला तारीख़ में मशहूर है १८०५ और १८२७ में लार्डलेक और लार्ड कोम्बर मोयर ने इसे घेरा था। हर साल यहां बड़ा भारी मेला होता है ॥

भरतपुर में चौरियां अच्छी बनती हैं ॥

भरतपुर कलकत्ते से ८७७ और बम्बई से ८१५ मील है। कलकत्ते से आगरे के रस्ते तीसरे दरजे का किराया ८) और बम्बई से ८॥) लगता है ॥

भद्राचलम ।

अहाता मदरास के ज़िला गोदावरी में राजमन्दरी से करीब १०४ मील पर भद्राचलम तालुक का बड़ा कसबा है। इस का नाम भद्राचलम इसवास्ते है कि यह उस पहाड़ी के पास वाके है जिस पर भद्राद्रऋषि तपस्या करते थे इस जगह राजा रामचन्द्र जी का मशहूर मन्दिर है। कहते हैं कि लंका को जातेहुए वह गोदावरी दरिया से यहीं पार उतरे थे उनकी यादगार में यहां हर साल एक मेला लगता है। मन्दिर को ऋषि प्रातिस्था ने ४०० साल गुजरे बनाया था लेकिन कभी कभी उस में ज़ियादती होती रहती है। बड़े मन्दिर के दोनों तरफ २४ छोटे २ मन्दिर हैं। इस मन्दिर में जो जवाहरात

हैं बड़े कीमती हैं। निज़ाम की तरफ से भी रुपया मिलता है। भद्राचलम से २० मील एक और बड़ा पुराना मन्दिर है जिस को परनैसलर कहते हैं। यहां अपरैल के महीने में मेला होता है जिस में २०००० के करीब लोग आते हैं। इन में से जियादा समुद्र के किनारे के रहने वाले होते हैं। इस मेले में व्योपार भी बहुत होता है॥

भद्राचलम में एक बंगला और २ धर्मशालायें हैं। इस नगर से निजाम रेलवे का यलन्दू स्टेशन ५६ मील है वहां बैलगाड़ियां ५) से ८) तक किराये पर मिल सक्ती हैं। यलन्दू बेज़वादा से ६३ मील है और तीसरे दरजे का किराया १) लगता है॥

भागलपुर।

ईस्ट इण्डियन रेलवे पर साहिबगंज से ४६ मील है और समुद्र से १५७ फीट ऊंचे पर है। यह बड़ा सिवल स्टेशन और तिजारती कसबा है और गंगा जी के दाहिने किनारे पर वाके है॥

स्टेशन पर वेटिंगरूम है और पास ही डाक बंगला, एक बड़ी सराय और हिन्दू धर्मशाला है॥

कमिश्नर साहब भागलपुर में रहते हैं। यहां एक बड़ा देशी कालिज, हस्पताल और सेंटरल जेल है जेल के बने हुए परदे गलीचे और कम्बल मशहूर हैं॥

स्टेशन से ३ मील के करीब एक जैनियों का मन्दिर है जहां यात्री लोग कसरत से आते रहते हैं मन्दिर के पास एक बड़ी सराय है चम्पानगर जो बुद्ध लोगों की राजधानी था भागलपुर से ४ मील पश्चिम की तरफ है। सुलतानगंज भागलपुर से १५ मील के फासले पर है गोपीनाथ के मन्दिर के सबब मशहूर है। यह मन्दिर गंगा जी

के बीच में एक चट्टान पर बना हुआ है इस को देखने जाने वालों को किश्ती हर वक्त मिल सकती है॥

भागलपुर ईस्ट इण्डियन रेलवे पर वाक़े है इस का फ़ासला कलकत्ते से २६५ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३) लगता है॥

भागीरथी

बंगाल में दरिया और गंगाजी की शाख है। हिन्दू इस को बड़ा पवित्र मानते हैं। इस पवित्र दरिया के असले की बाबत कहते हैं कि राजा सगर जो राजारामचन्द्र जी का तेरहवां पित्तर था अश्वमेध यज्ञ ९९ दफ़ा कर चुका था यह इस तरह होता था कि एक घोड़ा छोड़ देते थे अगर वह सारे हिन्दुस्तान में फिरकर बिना रोक टोक वापिस आगया तो समझा जाता था कि छोड़ने वाले की सदारी मानी गई और तब घोड़े को देवताओं के बलदान किया जाता था। राजा सगर ९९ दफ़ा यह रसम पूरी कर चुका था और सौवीं दफ़ा की तैय्यारी कर रहा था पर इन्द्र देवता ने आप यज्ञ किया था और उस को जलन आई कि राजा सगर उस से बढ़ जाएगा सो उस ने राजा सगर का घोड़ा धरती के अंदर एक कोठरी में जहां एक धर्मात्मा तपस्या कर रहे थे छुपा दिया राजा सगर के ६०००० बेटे घोडे को ढूंडते ढूडते उस जगह जा पहुंचे जहां घोड़ा छुपा था और यह ख़याल कर के कि घोड़ा उस धर्मात्मा ने छुपाया है उस पर हमला किया उस ने उन लड़कों को सराप देकर भस्म कर दिया और वह नरक में गए राजा सगर का एक पोता था वह अपने बाप और चाचों को ढूडने निकला और फिरते फिरते उस धर्मात्मा के पास पहुंचा और मिन्नत खुशामद की उस महात्मा ने जवाब दिया कि अगर गंगा जी आकर उन के अस्थि को छुए तो उनका छुटकारा हो सक्ता है।

गंगाजी उस वक्त स्वर्ग में ब्रह्म की निगहबानी में थी और सगर के पोते ने उस से अर्ज़ की कि गगां जी को पृथ्वी पर भेज दें पर वह अरदास क़बूल होने से पहिले मर गया इस के कोई लड़का नहीं था लेकिन ईश्वर की मरजी से उस की विधवा के लड़का हुआ जिस का नाम भागीरथ रखा उस की तपस्या से गंगा जी को पृथ्वी पर आने की इजाज़त हो गई। भागीरथ ने गंगा जी को समुद्र के पास तक रस्ता दिखा दिया और कहने लगा कि बाक़ी रस्ता वह नहीं दिखा सक्ता गंगा जी ने वहां पहुंचने के लिये अपने आप को सौ धारों में बांट दिया जिन मे से एक कोठरी में राजा के लड़कों की राख तक पहुंच गई और उन का छुटकारा हो गया॥

भादंक।

सूबाजात मुतवस्सत के ज़िला चंदा से चंदा शहर से १८ मील के फ़ासले पर उत्तर पश्चिम की तरफ़ एक क़सबा है। कहते हैं कि यहां बड़ा शहर भद्रावती जिसका महाभारत में ज़िकर है और जहां श्यामकर्ण घोडे के लिये लड़ाई हुई आबाद था भामा घोड़े को धम्मी राजा के पास बलिदान करने के लिये उठाकर ले गया देवाला पहाड़ी पर उस के पांव के निशान अब तक दिखाये जाते हैं। भादंक में और देवाला और विंभासनी पहाड़ियों में खोह के मन्दिर और उन पहाड़ियों पर निशान, भद्रावती का मन्दिर और बेशुमार मन्दिरों, महलों और तालाबों के खंडर हैं जिन से मालूम होता है कि किसी ज़माने में यहां एक बड़ा शहर आबाद था॥

भादभूत।

बम्बई अहाते के ज़िला बड़ोच में बड़ोच शहर से ८ मील के

फासले पर और नर्बदा दरिया के किनारे पर गांव और तीर्थ है। अगस्त सितम्बर के महीनों में हर उन्नीसवें या बीसवें साल महादेव जी का मेला होता है जो पूरा महीना रहता है। इस में ६०,००० के करीब यात्री जमा होते हैं। यहां एक छोटा सा मन्दिर भी है॥

बड़ोच बम्बई से बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे में २०४ मील है तीसरे दरजे का किराया २।=) लगता है। भड़ोच में भादभूत जाने के लिये सवारी मिलती है॥

भादरसा।

अवध के ज़िला फैज़ाबाद में फैज़ाबाद शहर से दस मील सुलतानपुर की सड़क पर कसबा है कहते हैं कि राजा रामचन्द्र जी वनबास से वापिस आकर अपने भाई भरत से इस जगह मिले थे और इसी वास्ते इसका नाम भद्रारसा याने भाइयों का मिलाप से भादरसा बन गया। हर साल भरतकुण्ड पर मेला होता है जिस में ५००० हज़ार लोग आते हैं॥

लखनऊ से फैज़ाबाद अवध रुहेलखण्ड की लूपलाइन के रस्ते ८० मील है तीसरे दरजे का किराया १)॥ है फैज़ाबाद में भादरसा जाने के लिये सवारी मिलती है॥

भन्डूप।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है। तुलसा और विहार झीलें जिन से बम्बई में पानी आता है स्टेशन से चार मील हैं। भन्डूप के रास्ते से झीलों को जाने वाले मुसाफिरों को घोड़े या गाड़ी का इन्तिज़ाम पहले से करना चाहिये कनेरी की खोहों

से यह स्टेशन बहुत पास है लेकिन थाना स्टेशन से जो सड़क जाती है अच्छी है ॥

भन्डूप बम्बई से १७ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)
लगता है ॥

भीमघोड़ा ।

सूबाजात आगरा और अवध के जिला सहारनपुर में एक जगह और हिन्दुओं का तीर्थ है पहाड़ की एक छोटी सी खोह में जो देराडून की दखिनी हद पर वाके है और एक सीधी ३५० फीट ऊंची चट्टान पर एक कुण्ड है जिस में पानी गंगा जी की एक छोटी शाख से आता है इस कुण्ड के ऊपर चट्टान में ५ फीट चौकोनी एक जगह खोदी हुई है जिस में साधु रहता है । कहते हैं कि भीम को इस जगह मुकर्रर किया गया था कि गंगा जी किसी और रस्ते न चली जाए और भीम के घोड़े ने लात मारी थी तो वह खोह जिस का ऊपर जिकर हुआ बनी थी । कुण्ड के पानी में यात्री लोग पाप दूर करने के लिये स्नान करते हैं अब चट्टान में एक छोटा सा मन्दिर भी बनाया गया हैं यहां से सीढ़ियां कुण्ड तक जाती हैं ॥

भीरी ।

सैण्ट्रल प्राविनसिज़ के ज़िला वारधा में शहर वारधा से २० मील पर गांव है जो जन्मअष्टमी के मेले के वास्ते मशहूर है । मेला ८ दिन तक रहता और इस मौके पर कृष्णजी का जन्म दिन मनाया जाता है ॥

मेले में २ हजार के करीब यात्री आते हैं ॥

भोरी जाने के लिये जी० आई० पी० रेलवे का बारधा स्टेशन पास है। इसका फासला बम्बई से ४७२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ७।ः) और सवारी गाड़ी में ४॥ः) लगता है। भोरी में सराय या धर्मशाला कोई नहीं॥

भीलसा।

यह जगह बुद्ध लोगों के अजीब टोपों के लिये मशहूर है फर्गूशन साहब लिखते हैं कि हिन्दुस्तान में यह टोपों का भुण्ड सब से बड़ा और सब से जियादा अजीब है। इन्हों ने सांची के बड़े टोप और वहां की श्रीयाना नागपूजा का बहुत कुछ हाल लिखा है॥

भीलसा के टोप गिनती में करीब ६५ हैं और १७ मील लम्बाई में और ६ मील चौड़ाई में फैले हुए हैं। सांची में १० टोप हैं, सोनारी में जो भीलसा से ८ मील है ८, सधारा में जो भीलसा से ८ मील पश्चिम को हैं ६। अन्धेर में जो भीलसा से दक्खिनी पूर्वी कोने में १३ मील के फासले पर हैं ३। और भोजपुर में जो भीलसा से ८ मील है ३५ टोप हैं कहते हैं कि इन में से बहुत से असोका के जमाने के हैं। पर सांची का बड़ा टोप उस से भी ३०० साल पहले का है॥

भीलसा स्टेशन पर वेटिंग रूम है॥

यह स्टेशन जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ५५५ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ८॥ः) और सवारी गाड़ी में ६ः) लगता है॥

भीमावर्म।

अहाता मदरास के ज़िला नेलोर में गांव है जो सिंगारा आया

कोंदा मन्दिर के खर्च पूरा करने के लिये दिया गया था। कहते हैं कि पुराना वैष्णव का मन्दिर जो पासही एक पहाड़ी पर है अगस्त या मलाई मुनी ने बनवाया था उसी पहाड़ी पर एक खोह में मन्दिर है जिसका दरवाजा पत्थर की एक बड़ी मूर्ति से बन्द होगया है पर मन्दिर के सरप्रस्त उस मूर्ति को उठाने नहीं देते। विष्णु जी की यादगार में जिनको यहां नरसिंह स्वामी कहते हैं, हर साल अप्रैल में मेला होता है ॥

भेतरा गांव ।

सूबा अवध ज़िला रायबरेली की तहसील दलमौ में रायबरेली शहर से १२ मील एक कसबा है। इस जगह हर साल यहां की सरप्रस्त आनन्दा देवी का मेला होता है जिस में ५००० लोग आते हैं ॥

रायबरेली अवध रुहेलखण्ड रेलवे पर मुगलसराय से १४६ मील और सहारनपुर से ३७० मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) और ३।≈)॥। लगता है। रायबरेली में भतरा गाओं जाने के लिये सवारी मिलता है ॥

भेराघाट ।

सैंट्रल प्राविन्सिज़ के जिला जब्बलपुर में नरबदा दरिया के किनारे पर एक गांव है इस के इर्द गिर्द का नजारा बड़ा अजीब है खासकर चांदनी रात में निहायत खूबसूरत मालूम होता है। दरया का साफ पानी यहां १२० फीट ऊंची सीधी पहाड़ियों के बीच में से बल खाता हुआ गुजरता है। पहाड़ियां सुफैद रंग की हैं इसी सबब से संगमरमर की पहाड़ीयां मशहूर हैं। यह ऊपर से मिली हुई मालूम होती हैं बल्कि एक जगह पर इतनी पास पास हैं कि लोगों

ने उस जगह का नाम बन्दर की छलांग रक्खा है बहुत से मुसाफिर इस जगह को देखने आते हैं ॥

कहते हैं कि यह रास्ता दरिया के वास्ते इन्द्र देवता ने बनाया था उस के हाथी के पैर के निशान की अब तक पूजा की जाती है पास ही एक गांव दुम पहाड़ी पर मन्दिर है जहां से नज़ारा बड़ा सोहावना मालूम होता है। मन्दिर के तीन तरफ जंगल है और चौथी तरफ उसमें जाने की पक्की सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर के इर्द गिर्द कुटियां हैं जिन पर शिवजी और दूसरे देवताओं की मूर्तियां हैं। नवम्बर में यहां हर साल मेला भी होता है ॥

भेराघाट और संगमरमर की चट्टानें जा० आई० पी० रेलवे के स्टेशन मोरगंज से ३ मील है ॥

मोरगंज बम्बई जबलपुर लाइन पर बम्बई से ६०६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥) और सवारी गाड़ी में ६।-) लगता है ॥

भैरोंघाटी।

सूबा आगरा और अवध की रियासत गढ़वाल में एक पहाड़ी [illegible] और मन्दिर है यहां भागीरथी और जहनावी नदियां एक गहरी और तंग घाटी में मिलती हैं जिस के गिरद लाल पत्थर की सीधी पहाड़ियां हैं। यह जगह बड़ी पवित्र समझी जाती है और हिन्दू लोग हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से यात्रा के लिये आते हैं ॥

हरिद्वार से भैरोंघाटी को रस्ता जाता है ॥

मदूरा।

अहाता मदरास में मदूरा ज़िले का सदर मुक़ाम और साऊथ

इण्डियन रेलवे का स्टेशन वैगई नदी के किनारे मद्रास बीच जंकशन स्टेशन से रेल में ३४७ मील और तीसरे दरजे का किराया ३॥-) लगता है यह हिन्दुस्तान देश में बड़ा पुराना और नामी नगर है। पहले यह नगर विद्या और कालिज के सबब बहुत मशहूर था कहते हैं शिवजी ने पण्डितों को हिरेली तिपाई दी जिस पर भले आदमी बैठना चाहते तो बड़ी होजाती थी और खोटे लोगों को धक्का दे देती थी मुहल्ले के तो प्रोहत तिरुवल्लूर ने जो बड़ा कवि हुआ है इस तिपाई पर जगह मांगी पर ब्राह्मण पाण्डेती ने नहीं दी परन्तु जब कवि के बनाए श्लोकों की पुस्तक तिपाई पर रक्खी गई तो वह तिपाई इतनी बढ़गई कि जो उस पर बैठे थे सब गिर गये और पण्डित ऐसे लजाए कि पास एक तलाब में डूब गए और कालिज टूट गया॥

मदूरे के सुन्दर और नामी मन्दिर देखने के लायक़ हैं। इनमें से सुन्देश्वाड़ा का बड़ा मन्दिर २८२ गज़ लम्बा और २४८ गज़ चौड़ा है उसके ६ गमूरे हैं जिन में से एक १५२ फ़ीट ऊंचा है। हज़ार पीलपायों वाला दालान ५५५० में आर्या नायक ने बनवाया था तालाब बड़ा सुन्दर है और उसके गिर्द छत्ते बने हैं मन्दिर के अन्दर बहुत संगत्राशी की हुई है जो हिन्दुस्तान देश में सब से अच्छी है॥

तिरुमला की चोलत्री में १२० पीलपाए हैं सब पर बड़ी मेहनत से बेल बूटे और मूर्तियां खोदी हुई हैं। अगली और योद्धों घोड़ों, सिहों की मूर्तियां बनी हैं शिवजी ने राजा तिरुमला को वचन दिया था कि वह हर साल उसके पास १० दिन आकर रहा करेंगे और राजा ने यह चोलत्री उनके वास्ते बनवाई थी। कहते हैं कि बड़ा ताल टप्पाकूलम जो नगर से डेढ़ मील पुर्व की ओर है इसी राजा ने बनवाया था। यह ताल चौकोना है और उस के गिर्द कमरकटा बना है। बीच में एक चौकोर टापू है जिस में एक मन्दिर
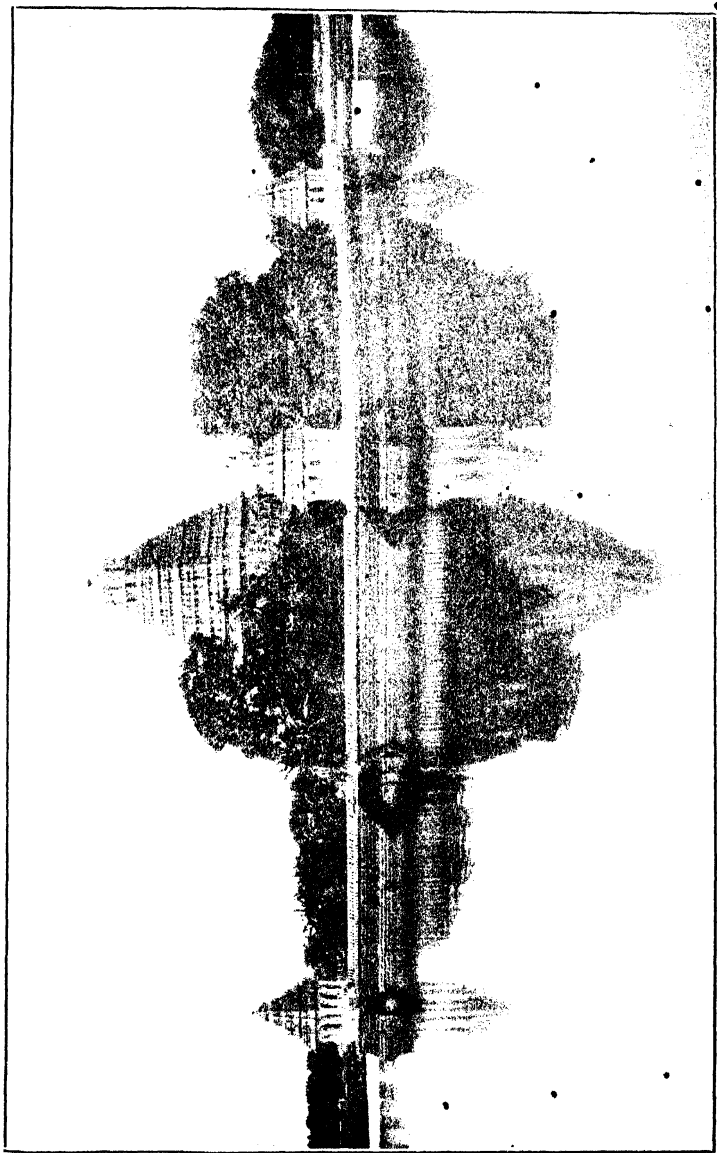
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

टप्पाकुलम ताल—मदूरा।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

किलिकूदा मंतापम—मदूरा ।
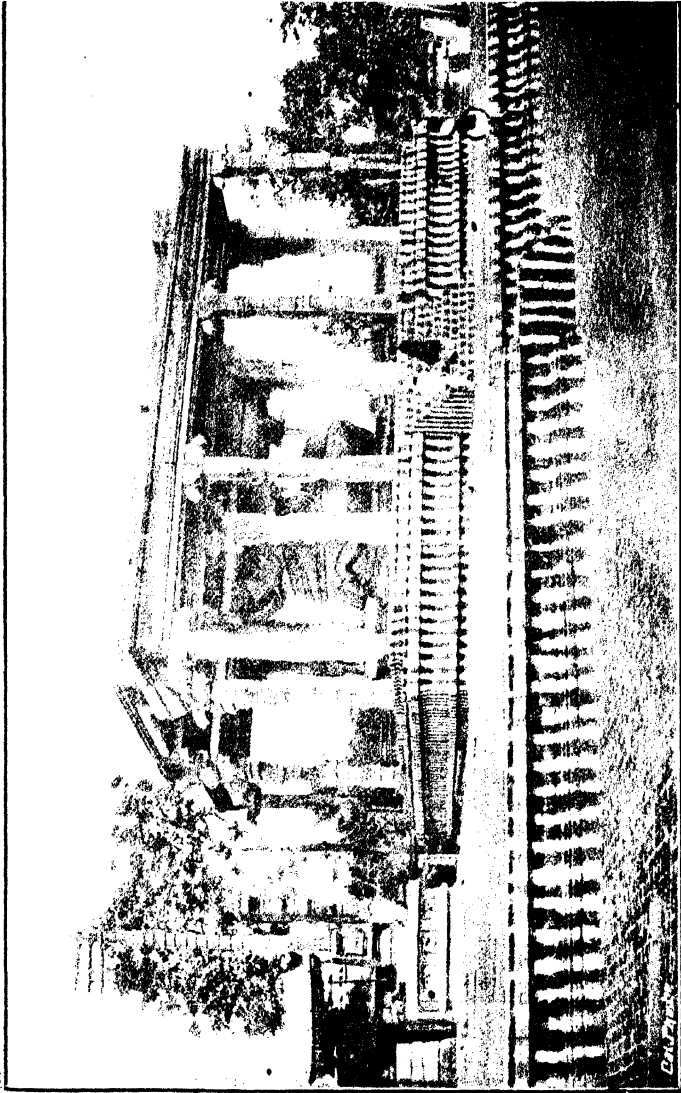
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

शिव जी का बैल नांदी—मदूरा ।

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.
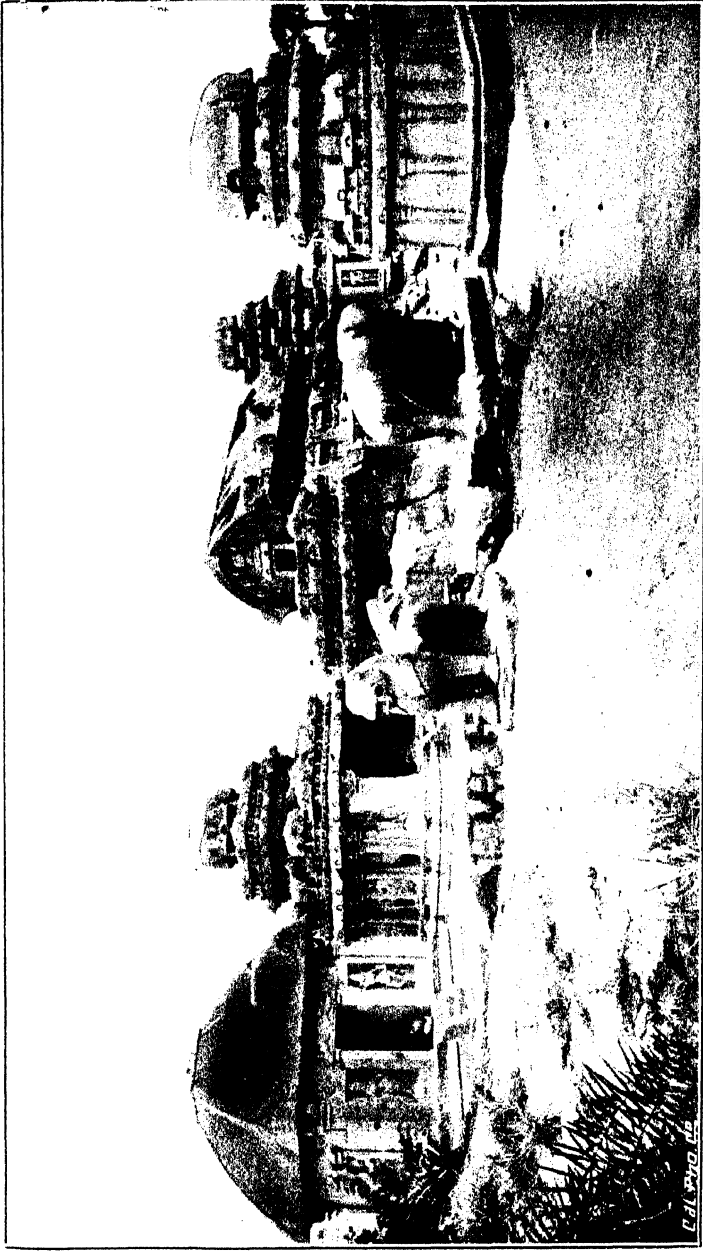
महाबल्लीपुर सेवण पगोडा के रथ ।

है और उसके कोनों पर स्थान बने हैं हर साल १स ताल पर जनवरी के महीने में एक दिन लाख दीये जलाते हैं और देवता की मूर्ति को पगोडे से लाकर टप्पम या बेड़ा में बिठाकर इस ताल पर फिराते हैं इसी सबब से इस ताल का नाम टप्पाकुलम हो गया है॥

मदुरा स्टेशन पर अंगरेजों और देशियों के लिये खाने के कमरे बने हैं, रामेश्वर जाने वाले यात्रियों को यहां गाड़ी बदलनी चाहिये॥

महाबली पुरम या ७ पगोडे।

अहाता मद्रास के जिला चिंगलिपत में गांव है। यह जगह प्राचीन वस्तुविद्या वालों के लिये दक्षिणी हिन्दुस्तान में सब से बढ़ कर अजीब है पुराने स्थानों के तीन हिस्से हो सक्ते हैं, पहिले ५ रथ जो समुद्र के किनारे पर गांव के दक्षिण की तरफ है, दूसरे गांव के पश्चिम की तरफ १८ या १९ ऋषियों के खोहों के मन्दिर जिन में संगआशी का एलोरा और अलिफन्टा की खोहों जैसा सुन्दर काम किया हुआ है और मूर्त्तियां बनी हुई हैं, तीसरे विष्णु और शिवजी के मन्दिर॥

कोल साहेब लिखते हैं कि कृष्णजी के मन्तापम में इन्द्र आकाश के देवता की मूर्त्ति है जिस ने बाला राजा के पशुओं को मारुत या आंधी के देव से बचाने के लिये बायें हाथ पर बादलों को रोका हुआ है। उसके पास पशुओं की सेवा हो रही है और दूध दोह रहा है उस की दाहनी तरफ एक बछड़े की मूर्त्ती है जिसका सिर एक तरफ को झुका हुआ है और एक पैर आगे बढ़ा हुआ है वह मूर्त्ति बहुत सुन्दर है उत्तर की तरफ अर्जुन के तप करने की जगह है यह एक ९६ फीट लम्बी और ४३ फीट ऊंची चट्टान पर है।

फर्गुसन साहिब लिखते हैं कि यह सारे हिन्दुस्तान में सबसे अनूठी है॥

महाबलीपुर में और बहुत से पुराने स्थान हैं पर ५ रथों को कोई नहीं पहुंचता ॥

सड़क के किनारे पर पत्थर की एक चौलरी है और यहां दो चत्तरम, या धर्म्मशालाएं और एक बंगला भी है। चिंगलीपत में स्टेशन से २ फर्लाङ्ग के फासले पर एक धर्म्मशाला और ४ फर्लाङ्ग पर एक बंगला है ॥

चिंगलीपत जो साउथ इण्डियन रेलवे की अर्कोनाम चिंगलीपत ब्रांच पर स्टेशन है यहां से १८ मील है। चिंगलीपत का फासला मद्रास बीच जंकशन से ३७ मील है तीसरे दरजे का किराया।=)। लगता है। चिंगलीपत में महाबलिपुरम जाने के लिये यक्के मिलते हैं अगर उसी दिन लौट आवें तो यक्के का किराया ५) लगता है पर रात को वहां ठहरें तो ≈) और ज़ियादा लगते हैं ॥

महा स्थानगढ़ .

बंगाल के ज़िला बोगरा में बोगरा नगर से ७ मील उत्तर की ओर एक मन्दिर और मेले की जगह है। कहते हैं कि पहिले राजा परशुराम की जिस को ब्राह्मण विष्णु का छठा अवतार कहते हैं और जो २२ राजों पर राज करता था यह नगर राजधानी था आम लोग कहते हैं कि यह परशुराम बहुत पीछे हुआ और एक मुसलमान वली ने जिस का नाम शाह सुलतान हज़रत अवलिया था इस को मारा था। इस सबब से उस जगह की बाबत हिन्दुओं और मुसलमानों की बहुत सी बातें मशहूर हैं दोनों धर्म्मों के बहुत से स्थानों के खंडर हैं और यह जगह देर तक मुसलमानों में बहुत पवित्र समझी जाती थी॥

दिल्ली के बादशाह ने ६५० एकड़ ज़मीन धर्म्मशाला को दी थी

जिस को ढाके के हाकम ने पक्का कर दिया था अब भी इस ज़मीन की पैदावारी से बहुत से फकीर पलते हैं अप्रैल के महीने में एक मेला होता है जिस से १००) रुपया आमदनी होती है प्राचीन वस्तु विद्यावालों के लिये खोदने से बहुत सी पुरानी चीज़ें निकलती हैं महा स्थान गढ़ में सराय, धर्मशाला या बंगला कोई नहीं पर बोगरे में एक डाक बंगला है । बोगरे में बैलगाड़ियां और घोड़ा गाड़ियां भी किराये पर मिलती हैं । एक गाड़ी का किराया ४) लगता है ॥

बोगरा ईस्टर्न बेंगाल स्टेट रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला कलकत्ते से २०६ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥=)॥ लगता है ॥

महेजी ।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है । महेजी देवता का नामी मेला इस जगह १५ जनवरी को शुरू होकर ६ हफ्ते रहता है । मन्दिर में महेजी की बड़ी मूर्ति रक्खी हुई है ॥

महेजी बम्बई से २४१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ३॥।) और सवारी गाड़ी में २॥) लगता है ॥

महेश ।

अहाता बंगाल के हुगली जिले में सिरामपुर के आस पास का नाम है यहां जगन्नाथ देवता के दो बड़े भारी मेले होते हैं एक स्नानयात्रा का मई में और दूसरा रथ यात्रा का उस से ६ दिन पीछे होता है । दूसरे मेले के मौके पर देवता को रथ में बिठाकर वल्लभपुर जो यहां से एक मील के फासले पर है ले जाते हैं और ८ दिन के बाद फिर ले आते हैं इन दिनों में ८ हज़ार के करीब यात्री आते हैं पर पहिले और आठवें दिन यात्री एक लाख के करीब होते हैं ॥

सिरामपुर स्टेशन के पास बाबू देवमोहन शाह की बनाई हुई धर्मशाला है जहां किराया कुछ नहीं लियाजाता और भोजन भी बिना दाम दिया जाता है ॥

सिरामपुर ईस्ट इण्डियन रेलवे में कलकत्ते से १२ मील है तीसरे दरजे का किराया ≈)॥ लगता है ॥

महोबा ।

सूबा आगरा और अवध के हमीरपुर ज़िले में नगर और जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है । यहां के लोग कहते हैं कि इस जगह का नाम बड़े यज्ञमहोतसवा के सबब जो चन्द्रवर्मा ने अंगरेजी सम्बत ८०० के करीब अपनी माता की कमजोरी के सबब किया था महोबा होगया है । यह ब्योपार के लिये अच्छी जगह है और मदन सागर भील के किनारे जिस को चंदेल राजों ने बनायाथा बसा हुआ है और उस के तीन अलग अलग हिस्से हैं एक बीच की पहाड़ी के उत्तर की तरफ जिस को पुराना किला कहते हैं दूसरा पहाड़ी की चोटी के ऊपर जिस को अन्दर का किला कहते हैं और तीसरा पहाड़ी के दक्खिन में जो दरीबा कहलाता है । कमकम वह जगह है जहां चन्द्रवर्मा ने काल किया था और तलाओं की बाबत कहते हैं कि सब पवित्र दरियाओं का पानी इन में आता है । किला अब सारा टूटा पड़ा है परन्तु उस पर से पहाड़ियों और भील का बड़ा सुहावना नजारा दिखाई देता है । मुमादेवी के मन्दिर के दरवाजे के सामने मदनवर्मा का मुनारा है । तालाओं में से दो मिट्टी से बहुत भर गए हैं पर कीरत और मदन सागर जो ११ और १२ ई० सदी के बने हुए हैं अब तक पानी से भरे और गहरे हैं इन तलाओं के किनारों पर और उन के बीच में

टापुओं पर बहुत पुराने टूटे हुये मन्दिर और बड़ी बड़ी पत्थर की मूर्तियां हैं तालों के बाजूओं पर बहुत से सुन्दर मन्दिर हैं और ऊपर पहाड़ियों पर पहले राजों के घर हैं जहां वह गर्मी में ठंडी हवा खाने के लिये आकर रहा करते थे। मदन सागर के उत्तर के किनारे नगर बसा हुआ है पत्थर की सीढ़ियां बनी हैं और उन के किनारों पर मन्दिर बने हैं जैनियों के मन्दिरों और बुद्ध लोगों के कतबे भी हैं। मुसलमानों के मज़ारों में खानजहान की क़बर और एक मसजिद है॥

महोबा जायंट मजिस्ट्रेट का हैडकुआटर (सदर मुक़ाम) है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, मदरसा हस्पताल भी हैं।

महोबा जी० आई० पी० रेलवे की झांसी मनिकपुर शाख पर झांसी से ८६ मील है तीसरे दरजे का किराया १≈) लगता है॥

नगर में स्टेशन से २ या तीन मील के फ़ासले पर एक डाक बंगला और एक सराए है। स्टेशन पर तांगे और यक्के मिलते हैं किराया आप ठहराना पड़ता है॥

महोबा से पान बाहर बहुत जाते हैं

मझौरा।

अवध के ज़िला फ़ैज़ाबाद, तहसील अकबरपुर में परगणा है यहां के लोग मड़हा और बिसवा नदियों के सबब इस को धाती कहते हैं और यह जगह बड़ी पवित्र मानी जाती है। कहते हैं कि यहां अंधा मुनी के पुत्र सरवण ऋषि को जब वह अपने प्यासे पिता के लिये पानी लेने आया तो राजा दशरथ ने उसे मृग समझ कर मारा था। अंधा मुनी ने राजा दशरथ को श्राप दिया और कहते हैं कि राम चन्द्र जी का बनवास इसी श्राप के सबब से हुआ था। हर साल

यहां एक मेला होता है जिस में ५ या ६ हज़ार लोग आते हैं मझौरे में सराये धर्मशाला या डाक बङ्गला नहीं लोगों को टिकने के लिये आप बंदोबस्त करना पड़ता है ॥

मझौरा अवध रुहेलखंड रेलवे के कटाहरी स्टेशन से ३ मील और अकबरपुर स्टेशन से १० मील है अकबरपुर में यक्के और बैल गाड़ियां मिलती हैं। यक्के का एक तरफ़ का किराया ॥।) और गाड़ी का १।) लगता है ॥

अकबरपुर लखनऊ से लूप याने शाख के रस्ते ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया १।≈)॥ लगता है ॥

मकलीडरग ।

सदर्न महेट्टा रेलवे का स्टेशन और एक भयानक जगह में पाहाड़ी क़िले का नाम है जहां रीछ बहुत होते हैं थोड़ी दूर पूर्व की ओर दगुमनहल्ली जंगल है वहां दिसम्बर में सब्रह्मान्या रथयात्रा का मेला होता है उस में हज़ारों लोग आते हैं ॥

मकलीडरग सदर्न महेट्टा रेलवे की बेज़वादा शाख पर है, इस का फ़ासला बेज़वादा से ४२० मील है और तीसरे दरजे का किराया ४।≈)॥ लगता है ।

मंदा ।

बंगाल के ज़िला राजशाही में अतरई दरिया के पशिचमी किनारे पर एक गावं है। मार्च या अपरैल के महीने में रामनौमी के मौक़े पर विष्णु के छुटे अवतार राम की यादगार में हर साल बड़ा भारी मेला होता है जिस में १५००० के क़रीब लोग आते हैं ॥

मंदा इस्टर्न बंगाल रेलवे पर संताहार स्टेशन से २७ मील राजशाही से ४० मील है इन दोनों जगह में मंदा जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं ॥

मन्द्रा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं पर यहां से ७ मील के फासले पर डिस्टरिक्ट बोर्ड का बना हुआ आश्रम है॥

सन्ताहार सुलतानपुर बिहार ब्रांच का जंकशन भी है इस का फासला कलकत्ते से १८४ मील है तीसरे दरजे का किराया २।≈)। लगता है॥

मांडले

बर्मा देश में मांडले जिले का सदर मुकाम है और ईरावदी दरिया के पूर्वी किनारे से २ मील के फासले पर एक पहाड़ी के नीचे बसा हुआ है॥

नगर चौकोर सूरत का है और हरतरफ से एक मील के करीब है। इस के गिर्द पक्की दीवाल बनी हुई है जो २६ फीट ऊंची और ३ फीट चौड़ी है। इस दीवाल में १२ दरवाज़े हैं और नगर के चारों तरफ एक गहरी और १०० फीट चौड़ी खाई है जिस में पानी सदा भरा रहता है खाई पर ५ पुल बने हुए हैं॥

राजा का महल नगर के बीच में है इस का रुख पूर्व को है और इस के अन्दर बड़ा २६० फीट लम्बा दीवान आम है जिस में बेल बूटे का काम किया हुआ है यह दीवान एक १० फीट ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है॥

बर्मा का सब से बड़ा पगोड़ा मांडले का पगोड़ा है जो अराकान पगोड़ा कहलाता है। इस में बुद्ध की कांसी की मूर्ति है जिस की बाबत कहते हैं कि सन् १७८४ ई० में अकनयाब से लाई गई थी यह मन्दिर बर्मा देश में सब मन्दिरों से सुन्दर है और सारा तिन

लोग बुद्ध की पूजा करते हैं और भजन गाते हैं। हजारों बत्तियां इस मन्दिर में जलती हैं॥

मांडले रंगून से ३८६ मील है तीसरे दरजे का किराया ६)॥ लगता है॥

मणधाटा।

राजपूताना मालवा रेलवे के मुर्तक्का स्टेशन से ७ मील है। स्टेशन से इस नगर को अच्छी सड़क जाती है॥

मणधाटा मुमालिक मुतवस्सत (मध्य देश) के नामर ज़िले में नर्बदा दरया के अन्दर एक टापू है और प्रसिद्ध मन्दिरों के सबब बड़ा नामी है। नर्बदा के दक्खिनी किनारे पर अमरेश्वर टापू के ओंकार देवता के सारे मन्दिर शिवजी के मन्दिर कहलाते हैं। नर्बदा खण्ड में जो स्कन्दपुराण का हिस्सा है लिखा है कि इस टापू को पहले वैडूरियामनी पर्वत कहते थे पर सूर्य वंश के सतरहवें राजा मन्धात्री ने ओंकार देवता का बडा यज्ञ किया था और देवता ने दान में यह नगर राजा को दिया इस सबब से इसका नाम मणधाटा हो गया। यहां विष्णु के भी कई मन्दिर हैं और एक झुण्ड जैनियों के मन्दिरों का है॥

ओंकार जी का बड़ा भारी मेला १५ कार्तिक (अकतूबर के आखीर) में होता है जिसमें १५००० के करीब यात्री देश के सब खण्डों से आते हैं

नर्बदा के यात्री कहते हैं कि यह दरया सब दरयाओं से पवित्र है और सिधपुर के पास सरस्वती में तीन दिन, जमना में ७ दिन और गंगा जी में एक दिन स्नान करने से पाप नष्ट होते हैं पर नर्बदा के दर्शन करने से ही पाप दूर हो जाते हैं और कहते हैं कि

कलियुग के ५००० वर्ष सन् १८९५ में पूरे हो गए और नर्बदा गंगाजी से जियादा पवित्र होगया और गंगाजी का उत्तर का किनारा पवित्र है पर नर्बदा ३० मील उत्तर की ओर और १८ मील दक्खिन की ओर पवित्र है नर्बदा के किनारे पर सौगन्द बड़ी पक्की समझी जाती हैं ॥

मोर्तका राजपूताना मालवा रेलवे में अजमेर शहर से ३५६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।~) लगता है। मोर्तका में मणधाटा जाने के लिये बैल गाड़ियां मिल सक्ती हैं। और मणधाटा में एक धर्मशाला भी है पर लोग प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं ॥

मंगला गिरी।

अर्थात् सुख का पर्व्वत। गण्टूर तालुक का नगर और सदर्न मरहट्टा रेलवे का स्टेशन है। इस में नरसिंह स्वामी के दो नामी मन्दिर हैं। जिन में से एक बहुत पुराना है और दो मंज़िल का है दूसरा बहुत पुराना नहीं पर उसका गपूरा बहुत सुन्दर है यहां एक बड़ा और गहरा हौज़ है जिसका पानी १८३२ में निकाला था तो दस हज़ार बन्दूकें निकली थीं इस गांव में एक बंगला भी है ॥

मंगलागिरी सदर्न मरहट्टा रेलवे की बेज़वादा बंगलोर शाख पर स्टेशन है। इसका फासला बेज़वादा से ७ मील है तीसरे दरजे का किराया ~)। लगता है ॥

मनीमाजरा।

सूबा पंजाब के ज़िला अम्बाला तहसील खरड़ में नगर है जो अम्बाला शहर से २३ मील उत्तर की तरफ एक पहाड़ी के

नीचे बसा हुआ है। सिक्खों से पहिले इस नगर का हाल मालूम नहीं। मुगलों के राज्य के बिगड़ने पर सिक्खों के सरदार गरीबदास ने जो मुसलमानों की तरफ से अफ़सर माल था ८४ गांव दबालिये और मनीमाजरे को अपनी राजधानी बनाया उस ने पिंजौर पर भी कबज़ा कर लिया था पर उस को राजा पटियाला ने उस से छीन लिया। गरीबदास के बाद उसका पुत्र गोपालसिंह गद्दी पर बैठा और भगवानसिंह के बाद रियासत अंग्रेज़ों के पास आगई॥

मनीमाजरा के पास मनसा देवी का मन्दिर है जहां हज़ारों यात्री आते हैं यह मन्दिर पहले नाहन रियासत में था पर एक दफा मनीमाजरा के राजा को सुपने में मालूम हुआ कि पहाड़ी लोग मन्दिर का पानी रोक रहे हैं उसने इस का बन्दोबस्त कर के फिर मन्दिर को मनीमाजरे में बना दिया॥

मन्दिर के चढ़ावों का रुपया राजा को मिलता था॥

बांस की चीज़ें और चक्की के पाट मनीमाजरा में बनते हैं। अदरक और मसाले का व्योपार होता है॥

अम्बाला शहर लाहौर से १८२ मील और दिल्ली से १६७ मील है तीसरे दरजे का किराया २=)। और १॥=)। लगता है॥

मनमाद।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन और धोन्द मनमाद शाख और हैदराबाद गोदावरी वैली रेलवे का जंकशन है स्टेशन पर वेटिंग और रिफरेशमेण्टरूम अर्थात् मुसाफिर खाने और खाने के कमरे बने हुए हैं और पास डाक बंगला बना हुआ है। हैदराबाद गोदावरी वैली रेलवे दौलतआबाद के बीच में से जाती है जहां से एलोरा की खोहें चार मील हैं वहां जाने के लिये दौलतआबाद में

सवारी मिलती है एलोरा की खोहों के मन्दिर गिनती में ३० हैं और उन में कैलाश का नामी मन्दिर है। मनमाद की आबहवा बहुत अच्छी है और सरकारी सड़क जो माली गांव से अहमदाबाद को जाती है मनमाद के बीच में से जाती है। अंकई तकिया क़िला जो एक ८०० फीट ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है स्टेशन से ४ मील है इस पर चढ़ते हुए रस्ते में कई अनूठे मन्दिर और खोहें मिलती हैं और चोटी पर एक मुसलमानों के क़िले के खण्डर हैं। कई निर्मल पानी के तालाब भी हैं स्टेशन के दक्खिन की ओर एक अलग पहाड़ी पर एक चौकोनियां लाठ आप से आप बनी हुई है जिस को लोग रामगुल्हनी कहते हैं॥

मनमाद स्टेशन से १८ मील के करीब एक नगर चंदोर है जो चंदोर तालुक का सदर मुकाम है। यहां एक बड़ा दरा है जो खांदेश से दक्खिन को जाता है। चन्दोर में एक पुराना किला। टकसाल दो और किले जिन को इन्दरई वदी और राजदार वदी कहते हैं और नामी अहल्या बाई हुलकर का महल देखने लायक हैं।

मनमाद जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से १६२ मील है। तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥-) और सवारी गाड़ी में १॥≈) लगता है॥

मंतसाला।

मदरास अहाते के ज़िला बिलारी में एक छोटा सा गांव है जो एक महात्मा श्रीरघुचंद्रा स्वामी की समाध के सबब बड़ा नामी हो गया है। समाध पर हर साल अगस्त के महीने में मेला होता है जिस में बम्बई, हैदराबाद रियासत और मैसूर से बहुत यात्री आते हैं। समाध के साथ माफ़ी की जमीन है॥

कहते हैं कि जब सरकार की तर्फ से ज़मीन ले लेने का चरचा हुआ तो यह महात्मा मनरो साहिब से बात चीत करने को समाध से बाहर निकल आये थे ॥

मनूर ।

मदरास रेलवे का स्टेशन है । इस जगह थिरुनन्देश्वाडा स्वामी का मन्दिर है जिस के मई और दिसम्बर के महीनों में ब्रह्म ऊतशात्रम के मेले होते हैं थीरुवलंगदू जहां एक बड़ा नामी मन्दिर है इस स्टेशन से २ मील पश्चिम की ओर है ॥

मनूर मदरास से ३४ मील है। तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ।≈) लगता है ॥

मनूर और थीरुवलंगदू में कोई धर्मशाला नहीं लोगों को टिकने का आप बन्दोबस्त करना पड़ता है ॥

मरियममनकोविल ।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मदरास बीच जंकशन से २२४ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥) लगता है

इस जगह दो बड़े मन्दिर हैं एक मरियामन का और दूसरा श्री कोठंदारामा स्वामी का अप्रैल और अगस्त के मेलों पर यात्री दूर दूर से आते हैं । देशी औरतों के लिये यहां रेशमी कपड़ा बहुत अच्छा बनता है ॥

मतंगा ।

जी० आई० पी० रेलवे की पूना रायचूर शाख पर स्टेशन है

इसका फासला बम्बई से ६ मील है तीसरे दरजे का किराया ~)॥ लगता है ॥

मतंगा में हर साल असाढ़ (जुलाई) के महीने में इकादशी के मौके पर विथोवा देवता के मन्दिर का मेला होता है। मन्दिर के पास एक धर्म्मशाला और स्टेशन से थोड़ी दूर कोढ़ियों के लिये एक मकान बना हुआ है ॥

मायावर्म।

अहाता मदरास के ज़िला तंजोर में नगर और म्यूनिसीपैलटी है। यह नगर कावेरी दरया के किनारे पर साउथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है और हिन्दुओं को बड़ी तीर्थ की जगह है स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफ़िरों के वास्ते वेटिंग रूम बना हुआ है और चौथाई मील के फासले पर एक बंगला है। और देशियों के लिये एक होटल भी है जिस में ~)॥ से ≈) तक एक वक़्त का खाना मिलता है। मायावर्म में शिव जी और विष्णु के मन्दिर हैं। स्नान यात्रा का मेला अक्तूबर और नवम्बर में एक महीने तक होता है उस में तीस हज़ार से ४० हज़ार तक यात्री आते हैं। स्टेशन के पास लोथाकद में हर सोमवार के दिन एक मेला होता है। इस गांव से एक मील के फासले पर एक और गांव है जिसमें देशी औरतों के लिये कपड़ा बनता है। यहां से रेशम की कजी का कपड़ा बाहर जाता है। इस जगह डिप्टी कलकटर और मुनसिफ की कचह-रियां भी हैं ॥

मायावर्म साउथ इण्डियन रेलवे पर मदरास बीच जकशन से १७७ मील है तीसरे दरजे का किराया २) लगता है ॥

मेरठ ।

सूबा आगरा और अवध में ज़िला और कमिश्नरी मेरठ का सदर मुकाम है ॥

ज़िले का सब से बड़ा नौचन्दी का मेला यहां मार्च के आखीर या अपरैल के शुरू में होता है जो ८ दिन रहता है इस मेले में ५० हज़ार के करीब लोग आते हैं। पहिले यह नये चन्द्रमा का मेला था पर १८८३ से माल मण्डी भी सरकार ने इसके साथ बढ़ादी जिससे मेला और भी अच्छा होगया ॥

मेरठ में यह मुक़ाम देखने के लायक है—

(१) सूरजकुण्ड जो १७१४ में बना था इस को गंगा जी की नहर के पानी से भरते हैं इसके किनारों पर छोटे २ मन्दिर धर्म्मशालायें और सतियों की छतरियां हैं ॥

(२) बालेश्वरनाथ का मन्दिर ज़िले में सब से पुराना है और मुसलमानो के देश पर चढ़ाई करने के वक़्त का बना हुआ है ।

(३) मनोहरनाथ का मन्दिर शाहजहान के राज्य में बना था ज़िले में सब से बड़ा है ॥

(४) महेश्वर का पुराना मन्दिर जिसकी बाबत कहते हैं कि पाण्डव के सन्तान में से किसी ने बनाया था ॥

छावनी शहर के उत्तर की ओर है कहते हैं कि इसकी ठण्डी सड़क हिन्दुस्तान देश में सब सड़कों से सुन्दर है यहां अंग्रेज़ो के कई सुन्दर मकान हैं ॥

मेरठ में चने, चीनी और घी का बहुत व्योपार होता है और साबन, (गिलसरीन एक अंग्रेज़ी दवा का नाम है) मोम की बत्तियां टीन के कनस्तर बाहर जाते हैं ॥

इस नगर में ६ धर्म्मशालाएं और ८ सराएं हैं। गंगा राम की धर्म्मशाला कसूर गंज में और रौनक सराये कम्बोह दरवाजे में स्टेशन से एक एक मील के फासले पर हैं। सवारी हर वक्त मिलती है॥

मेरठ से अच्छी पक्की सड़कें गाजीआबाद, दिल्ली, सहारनपुर गढ़मुक्तेश्वर, बिजनौर को जाती हैं॥

मेरठ शहर दिल्ली से ४१ मील है तीसरे दरजे का किराया।≥)॥। लगता है॥

मेलाघाट।

सूबा आगरा और अवध के जिले नैनीताल और परगना बिल्हेरी में गांव हैं। नवम्बर के शुरू में सरदा दरया के किनारे पर यहां हर साल ४ दिन तक मेला होता है जिस में ४० हजार के करीब लोग दरया में स्नान करने के लिये आते हैं। काशीपुर के मेले की तरह यहां भी उन दिनों में बड़ा ब्योपार होता है॥

मेला घाट को जाने के लिये रुहेलखण्ड कुमाऊं रेलवे का काठगोदाम स्टेशन पास है और वहां नैनीताल जाने के लिये तांगे और यक्के मिलते हैं॥

काठगोदाम बरेली से ६६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है॥

मिर्जापुर।

मिर्जापुर जिले का सदर मुकाम और ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है इसका फासला कलकत्ते से ४५८ मील है यह नगर गंगा जी के दक्खिनी किनारे पर बसा हुआ है और यहां का नहाने का घाट देखने के लायक है। यहां लाख बाहर से बहुत आती है

और इस जगह के गलीचे बहुत मशहूर हैं । पीतल के बर्तन भी बनते हैं ॥

बिन्धाचल, स्टेशन के खुलने से पहिले यात्री लोग गंगा जी में स्नान करने और बिन्धाचल के मन्दिर के दर्शन करने के लिये इस जगह रेल में उतरा करते थे ॥

मिर्जापुर में एक डाक बंगला और लाला भैरूमल की बनाई हुई धर्मशाला भी है ॥

कलकत्ते से मिर्जापुर तक तीसरे दरजे का किराया ४॥=)

लगता है ॥

मिसरिख ।

अवध के जिला सीतापुर में नगर और मिसरिख तहसील का दर मुकाम है और सीतापुर से हरदोई को जो सड़क जाती है उसपर सीतापुर से १३ मील के फासले पर वाके है अवध में यह बहुत पुराना नगर है और कहते हैं कि इसका नाम संस्कृत के शब्द मश्रित अर्थात् मिले हुए से निकला है । क्योंकि कहते हैं कि हिन्दुस्तान देश के सब तीर्थों का पानी यहां लाकर ताल में मिलाया गया था ॥

कर्नल सलीमान साहिब लिखते हैं कि मिसरिख में किसी युग में एक महात्मा जिन का नाम दधीच था वहां रहा करते थे और उन के सबब से यह नगर बहुत मशहूर है । एक दफा देवताओं और राक्षसों में बड़ा भारी लड़ाई हुई जिन में देवताओं को हार हुई उन्हों ने कैलाश पर्व्वत पर जाकर ब्रह्मा से मदद मांगी, ब्रह्मा ने कहा कि मिसरिख जाओ और दधीच की हड्डियों के हथ्यार बनाओ जब देवता मिसरिख पहुंचे तो दधीच को चंगा भला पाया पर उन्हों

ने ब्रह्मा का हुक्म उसको सुना दिया। दधीच ने कहा कि बड़ी खुशी है कि मेरी हड्डियां ऐसे अच्छे काम आवें पर मैंने बचन किया हुआ है कि मरने से पहिले हिन्दुस्तान के सब तीर्थों में स्नान करूंगा और मुझको अपना बचन पूरा करना चाहिये देवताओं ने इन्द्र देवता से कहा और इन्द्र ने बृहस्पति से पूछा बृहस्पति ने कहा कि ब्रह्मा ने आप सब तीर्थों के दूत नीमसार के इर्द गिर्द लगाये हुये हैं और देवता सब तीर्थों का पानी लाकर दधीच महात्मा पर छिड़कें देवताओं ने ऐसाही किया और जब दधीच का बचन पूरा होगया उसने प्राण छोड़ दिये देवताओं ने उसकी हड्डियों के हथियार बना कर राक्षसों पर चढ़ाई की, और लड़ाई मार ली॥

यहां का ताल बड़ा पुराना है। सौ साल से ऊपर हुये मरहट्टा राजा ने घाटों की मरम्मत कराई थी इस के किनारे पर दधीच ऋषिका पुराना मन्दिर है जिसका हरसाल होली के मौके पर मेला होता है मेले के दिनों में ब्योपार भी बहुत होता है॥

मिसरिख में मुसाफ़िरों के लिये एक सराय है और ब्राह्मण यत्रियों की खातिर करते हैं॥

सीतापुर रुहेलखण्ड रेलवे के रस्ते लखनऊ से ५५ मील है तीसरे दरजे का किराया ।।–)। लगता है। मिसरिख जाने के लिये सीतापुर में सवारी मिलती है॥

मुंघेर।

जिला मुंघेर का सदर मुकाम है यह बड़ा नगर गंगा जी के दाहिने किनारे पर बसा हुआ है। और समुन्दर से ३० फुट ऊंचा है यहां की आबहवा बहुत अच्छी है। स्टेशन से ३ मील के करीब सीताकुण्ड में गर्मपानी के सोते हैं, जहां हिन्दू यात्री बहुत जाते हैं। यह

इतिहासी नगर है क्योंकि मीरकासम की जो बंगाल बिहार और उड़ीसा का हाकम था अवध को भागने से पहिले इस जगह लड़ाई हुई थी। उसने अंग्रेजों की फौज को रोकने के लिये टुकरा नाले का पुल जो मुंगेर से ३ मीलथा उड़ा दिया था, पुल के बड़े बड़े टुकड़े अभी तक मौजूद हैं॥

मुंघेर का किला चट्टान के सिरे पर ऐसी जगह बना हुआ है जहां से गंगा जी दिखाई देती हैं किले के अहाते के अन्दर जो चार हजार फीट लम्बा और ३५०० फीट चौड़ा है एक ऊंची मेड़ है जहां पहिले कोट था कोट अब बाकी नहीं रहा॥

मुंघेर के जिले में कजरा स्टेशन के पास एक पहाड़ी है जिस पर कहते हैं बुद्ध आकर रहा था। पहले यह युग में बड़ी मशहूर यात्रा की जगह थी स्टेशन से पांच मील के फासले पर एक और पहाड़ी है जो श्रृङ्गीऋषि के नामपर ऋषियाश्रृङ्ग कहलाती है॥

मुंघेर कलकत्ते से ईस्ट इण्डियन रेलवे में २९६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।-)॥ लगता है॥

मुरादाबाद।

सूबा आगरा और अवध में जिला मुरादाबाद का सदर मुकाम और बड़ा नगर है। और रामगङ्गा दरया के दाहने किनारे पर रामपुर रियासत की हद से १०.मील के फासले पर वाके है। मुरादाबाद को रुस्तमखां कटूर के हाकिम ने सन् १६२५ ई० में बसाया था और उसने शाहजहान के पुत्र मुराद के नाम पर इस नगर का नाम मुरादाबाद रक्खा इस नगर के ११० मुहल्ले हैं और कई अच्छे बाज़ार हैं यहां के पुराने मकान देखने के लायक यह हैं रामगंगा के किनारे पर किला और जमा मसजिद जिन को रुस्तमखां

ने बनाया था मुरादाबाद के हाकम नव्वाब अज़मत उल्ला का मक़बरा, कमेटी घर, गवर्नमेण्ट और मिशन स्कूल, कोतवाली और शफ़ाख़ाना जो अभी बने हैं, डाक खाना, जेल के पास छावनी है पर पलटनें अब उठा ली गई हैं॥

अनाज़, चीनी, घी, तेल, और तेल कांबीज कपड़ा और धातें बाहर से आती हैं। मुरादाबाद के पारे की कलई किये हुये बर्तन बहुत मशहुर हैं हज़ारों जीव इस काम के सबब पलते हैं॥

शहर में एक बड़ी और सुन्दर सराये है और दूसरी स्टेशन के पास है, स्टेशन पर और शहर में यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये हर वक़्त मिलती हैं॥

मुरादाबाद अवध रुहेलखण्ड रेलवे पर सहारनपुर से १२० मील और दिल्ली से १०० मील है तीसरे दरजे का किराया १।≈)। और १।-) लगता है॥

मुराप्पूर ।

मद्रास रेलवे पर स्टेशन है और यहां से १७ मील पूर्व की ओर पवित्र पहाड़ा थीरथमलई है जिसकी चोटी पर रामनाथेश्वरम का मन्दिर है यहां बहुत यात्री आते हैं पहाड़ी की चोटी से पानी गिरता है जिस को हिन्दू लोग निरमल और पवित्र जानते हैं पहाड़ी के नीचे तीरथमलई नगर है यहां हरसाल रथ यात्रा का मेला होता है

मुराप्पूर स्टेशन पर देशी गाड़ियां और यक्के तीरथमलई जाने के लिये मिलते हैं। गाड़ी का किराया १॥) से १॥।-) तक और यक्के का २) से २।) तक होता है॥

मुराप्पूर स्टेशन के पास एक लोकल फण्ड चोलत्री या आश्रम है यहां हर जात के लोग ठैहर सक्ते हैं॥

अनाज, अरिंड का बीज, बांस और चमड़ा साफ करने की छाल बाहर जाती है और नमक, तमाकू सुपारी अंग्रेजी कपड़ा बाहर से आता है ॥

सुराम्पूर मद्रास से १६६ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥/ और सवारी गाड़ी में १॥।) लगता है ॥

मीरगंज।

जी० आई पी० रैलवे पर स्टेशन है बाकी हाल के लिये भेरा घाट देखो ॥

मुरस्सापुर ।

यह नगर अवध के प्रतापगढ़ जिले में मानिकपुर से जो रायबरली की सड़क पर आबाद है ४ मील है॥ दशहरे पर यहां बड़ा भारी मेला होता है जिस में ३०००० के करीब लोग आते हैं। यहां अबरे बहुत बनते हैं ॥

रायबरेली सहारनपुर से ३७० मील और मुगलसराये से १४१ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।≈)॥ और १॥।) लगता है ॥

रायबरेली में मुरसापुर जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

मुलाकला चेरुवू ।

मद्रास अहाते में साउथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है। इस का फासला मद्रास बीच जंकशन से ३१६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है। इस जगह एक पुराना मन्दिर है जिसका नाम चेनरगवी थेवालम है जिसका थवाजस्थम्बलम स्टेशन के दक्खिन

पूर्व की तरफ ८० फीट के करीब है। स्टेशन से दो मील के करीब एक और मन्दिर है जिसका नाम काऊसी कोंदारायाद थेवालम है जहां हिन्दूलोग जाकर वचन किया करते हैं। स्टेशन से तीन मील के फ़ासले पर हर शुक्र के दिन मेला होता है॥

स्टेशन के पास एक चोलत्री या आश्रम है॥

मूली।

मोरवी रेलवे पर स्टेशन और मूली रियासत की राजधानी है यहां कृष्ण जी का मन्दिर है जिसके हरसाल दो बड़े भारी मेले होते हैं पहला माघसुदी पंचमी और दूसरा श्रावण बदि अष्टमी का॥

स्टेशन से नगर ३ मील के करीब है पक्की सड़क जाती है और स्टेशन पर बैल गाड़ियां मिलती हैं एक सवारी का किराया ~) से ≈) आने तक लगता है॥

स्टेशन के पास एक धर्मशाला और बंगला है एक धर्मशाला मन्दिर के अहाते में भी है। बंगले का किराया १) एक दिनका और धर्मशाला का किराया एक पैसा एक आदमी का लगता है॥

मूली में रुई निकालने का कारखाना है। यहां से रुई बाहर जाती है

मूली बम्बई से ४०२ मील है बधवान और वीरमगाम के रस्ते तीसरे दरजे का किराया ४।~)॥ लगता है॥

मूञ्ज।

इटावा नगर से १४ मील सूबा आगरा और अवध में गांव और पुराने खण्डर हैं। यहां एक पुश्ता है। जिस की बाबत हिऊम साहब लिखते हैं कि यहां वह मूंज था जिस को महमूद गज़नवी ने १०१७ में सख्त लड़ाई के बाद फतह किया पर मूंज के लोग कहते हैं यहां पाण्डव और कौरव की लड़ाई हुई थी मूंजका राजा चरोनी चंद

था जिसका महाभारत में ज़िकर है और उस के दो लड़के राजा युधि-ष्ठिर की तरफ़ से लड़े थे बड़े फाटक और गढ़गज की जगह अबतक दिखाई आती है पुश्ते में से पुरानी ईंटें निकलती हैं जिन से गाम्रां वाले अपने घर बनाते हैं। यहां एक अनूठा चौकोर कुआं है ॥

इटावा ईस्ट इण्डियन रेलवे में कलकत्ते से ७२० मील है तीसरे दरजे का किराया ६॥=)॥। है ॥

मुर्तजापुर।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है, स्टेशन पर वेटिंग रूम बने हुए हैं और यहां एक सराय है करंजा नगर जो यहां से २१ मील के क़रीब है और जिस के गिर्द दीवार बनी हुई है व्योपार की जगह है इस नगर में कई पुराने मन्दिर और लकड़ी के काम के कई अच्छे नमूने मौजूद हैं कंजऋषि के नाम पर इस नगर का नाम कंजा होगया है यह ऋषि अपने पूर्व जन्म के पापों से दुःख पा रहे थे उन्हों ने यहां आकर तपस्या की तो मोक्ष हुई इसी सबब से हिन्दू लोग कंजा को बड़े तीर्थ की जगह मानते हैं। यहां हर साल अप्रैल के महीने में ४ यात्रा के मेले होते हैं और एक मेला नवम्बर में होत है हिङ्गलासपुर का मेला २० दिन रहता है ॥

कंजा में रुई दबाने और रुई निकालने की कलें और एक बड़ा तालाव है इस तालाब क किनारों पर कई मन्दिर बने हैं। मुर्तजापुर के स्टेशन के पास भी रुइ दबाने और रुई निकालने की कलें हैं अनाज और रुई का व्यापार होता है ॥

मुर्तजापुर जी० आई० पी० की बम्बई नागपुर लाइन पर बम्बई से ३८८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६=) और सवारी गाड़ी में ४) लगता है ॥

मथुरा ।

सूबा आगरा और अवध में जमुना दरया के दाहने किनारे पर बहुत पुराना नगर और हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है. और खास कर ब्रजमण्डल का जहां कृष्ण जी रहते थे हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं। और बड़ा आदर करते हैं॥

मथुरा से ६ मील नीचे की ओर महाबन नगर है जहां कृष्ण जी पले थे जब वह बालक थे तो उन के मामां कंस ने उन के मारने का हुक्म दिया पर उनकी टहलनी उन को महाबन में नन्द की स्त्री जशोदा की लड़की से बदल गई। नन्द के महल में मट-कियें अब भी हैं जिन में नन्द की स्त्री मक्खन निकाला करती थी और दीवार में एक जगह बनी हुई है जहां गोपियां हंसी से कृष्ण जी की बांसुरी छुपा देती थीं इस महल को हिन्दू औरतें बच्चा होने के पीछे ६ दिन तक पूजती हैं इसी सबब से इस को छटी पालना कहते हैं मथुरा से ५ मील उत्तर की ओर दरया के टापू में बृन्दाबन पवित्र नगर है इस में अनगिणत मन्दिर हैं पर सब से मशहूर गोविन्ददेवा, गोपीनाथ और सेठों का बनाया हुआ मन्दिर है बृन्दाबन बड़ी पवित्र जगह है और पुरी, थानेश्वर हरद्वार के बराबर समझी जाती है। दरया के बायें किनारे महाबन से एक मील के करीब गोकुल गांव है कहते हैं कि विष्णु कृष्ण जी के अवतार में पृथ्वी पर इसी जगह आये थे। इन सब तीर्थों में हजारों यात्री सारा साल आते हैं॥

मथुरा पर महमूद गजनवी ने १०१७ में चढ़ाई की और सिकन्दर लोदी ने १५०० में जिस से बहुत नुकसान हुआ।

अंग्रेजी सन् ४०० में मथुरा में बुद्ध लोग बहुत थे उनके स्थानों के निशान अब तक हैं॥

मथुरा जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ८६८ मील और दिल्ली से ८६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में १०॥≡) और ११≡) है और सवारी गाड़ी में ६-) और ११) है ॥

मथुरा में अनगिनत धर्मशालायें हैं इन में से चार हारडिंग दरवाजे में एक भरतपुर दरवाजे में और ४ डीग दरवाजेमें हैं छावनी में डाक बंगला भी है। स्टेशन पर और शहर में यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं ॥

——— ।

अहाता मद्रास में रियासत मैसूर की राजधानी है महाराजा साहब इसी जगह रहते हैं। मैसूर में किले का महल, जगन मोहन महल, गर्मी में रहने का महल, और दूसरे सरकारी मकान देखने के लायक हैं अक्तूबर के महीने में दशहरे का बड़ा भारी मेला होता है।

मैसूर के दक्खिन पूर्व की ओर चमन्दी पहाड़ी की चोटी पर चमन्दी देवी का बड़ा मन्दिर है और जो सीढ़ियां मन्दिर को जाती हैं उनपर शिवजी के बैल, नन्दीकी पत्थरकी मूर्ति है। यह मूर्ति दोदादेवा राजाकी जो मैसूर की गद्दी पर १६५६ में बैठा आज्ञा से बनाईगई थी ॥

स्टेशन पर खाने और आराम कमरे बने हैं ॥

मैसूर पूना से सदर्न मरहट्टा रेलवे में ७११ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गड़ी में ६)॥। और सवारी गाड़ी में ६॥≡) लगता है ॥

मारमुगाओं ।

मद्रास अहाते में है वैस्ट इण्डिया पुर्चगीज रेलवे यहां पर खतम होती है। मारमुगाओं लोंदा जंकशन से ७० मील और कैसल राक से ५४ मील है। कैसलराक और कोलम के बीच में घाट का नजारा बड़ा अच्छा है और दूध सागर पानी की चादर जो कैसल
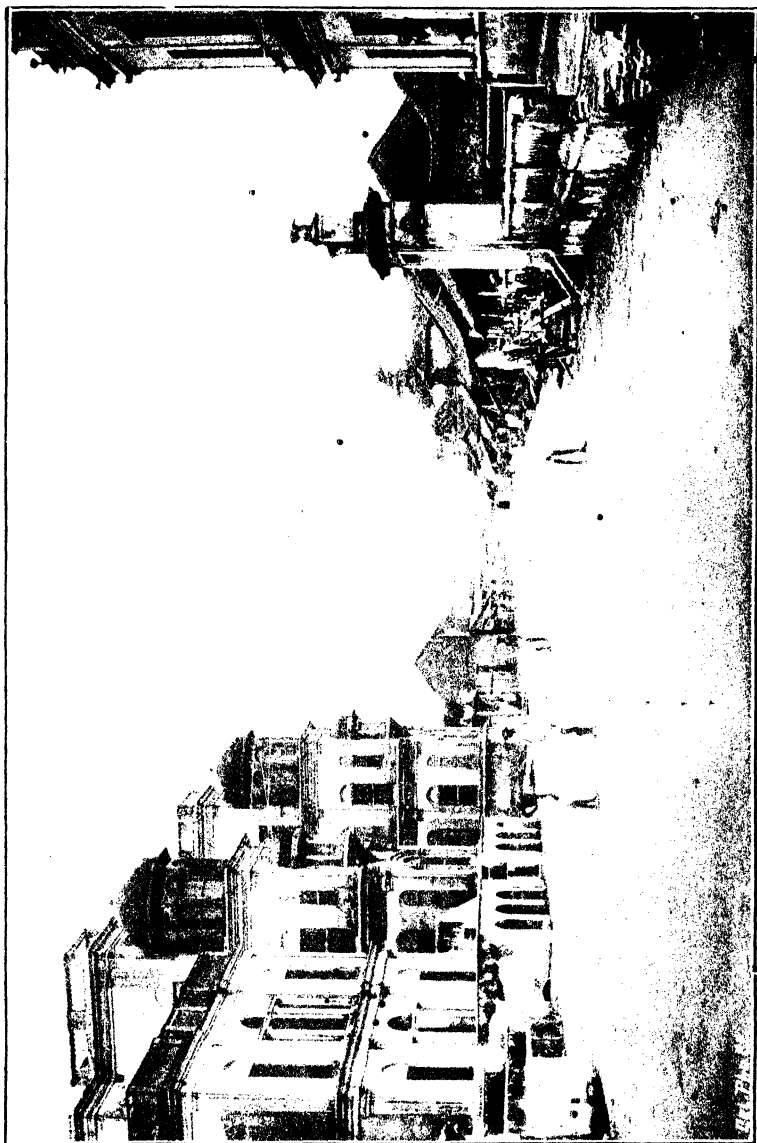
Photo by Bourne and Shepherd Calcutta.

तंजोर का बाज़ार।

Cal. Pho. Co.

महाराजा साहिब मैसूर का महल अन्दर से ।

महाराजा साहिब मैसूर का नया महल अन्दर से।

मारमुगाओ बन्दर ।
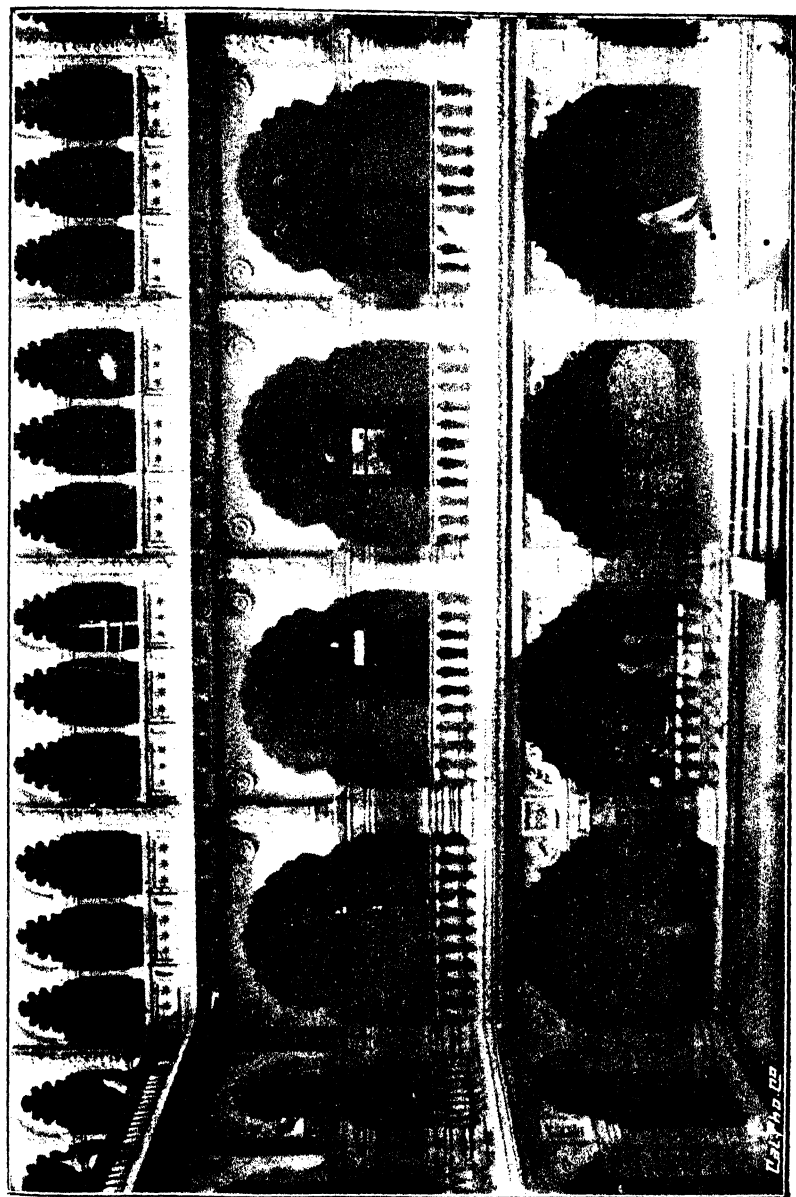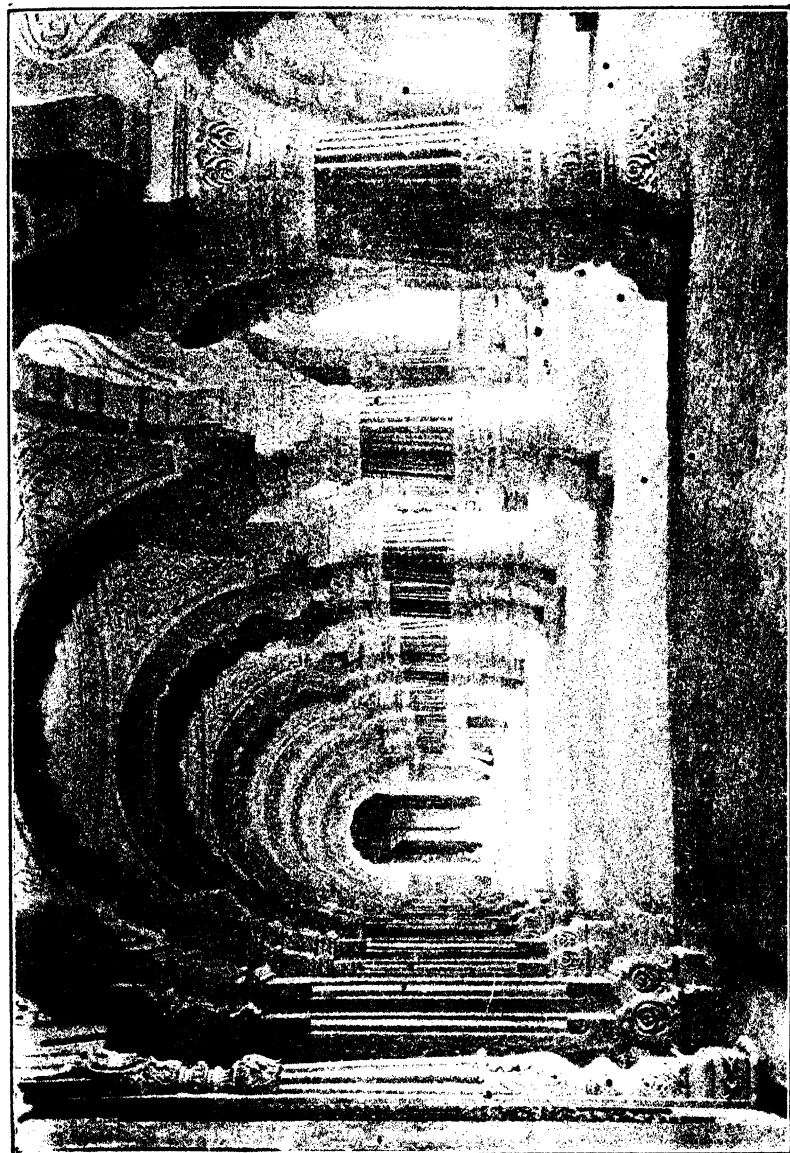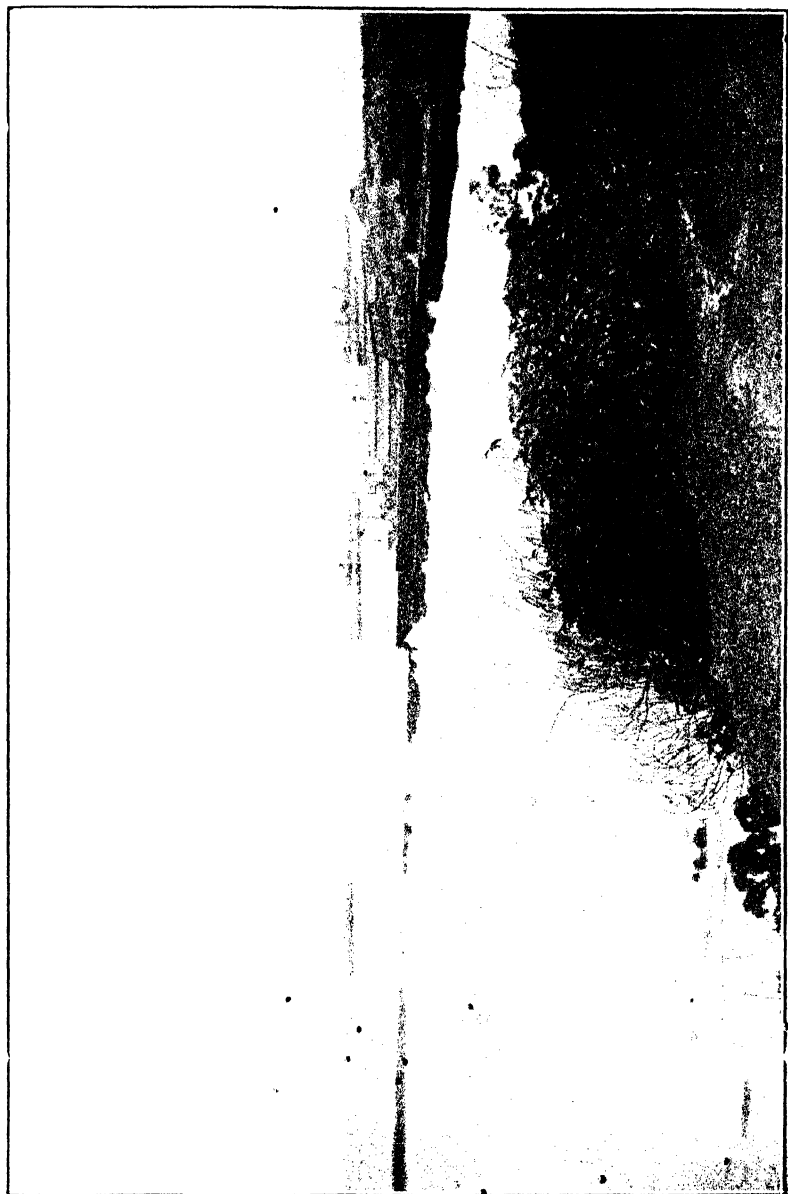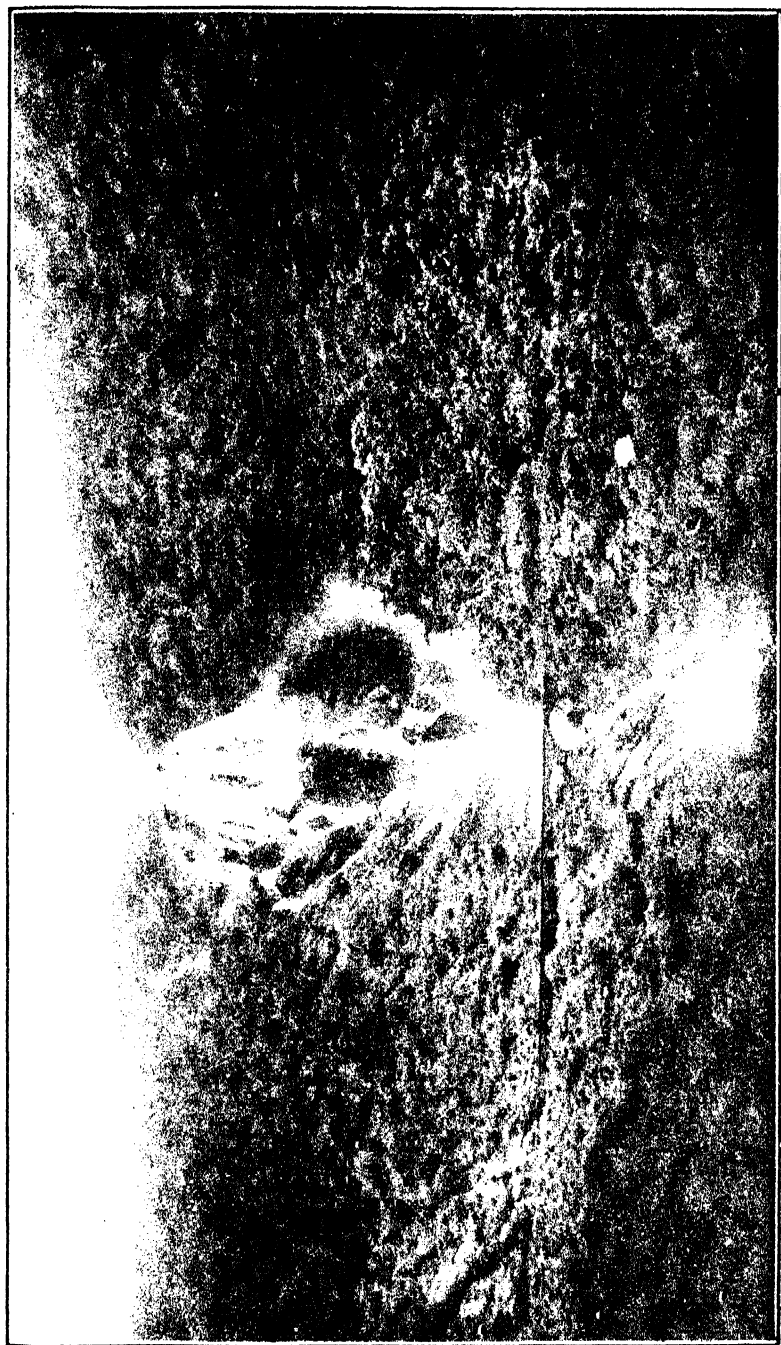
दूध सागर झरना

राक से ८॥ मील है देखने के लायक है। मारमुगाओं में अंग्रेजों के लिये एक बहुत अच्छा होटल है। मारमुगाओं से ७ मील पर पंजिम है जो हिंदुस्तान में पुर्तगाल देशवालो की राजधानी है और १० मील के फासले पर पुराना गवा नगर है। यह दोनों नगर देखने के लायक हैं पहले में चौक, सुन्दर सैर के बाग और अंग्रेजी बाजा बजने की जगह है और पुराने गवा में कई सुन्दर गिरजे हैं। सेंटफ्रांसोस जेवायर साहिब जो पूर्व में बड़े पादरी हुये हैं और जिन को गवा के लोग ऋषि मानते हैं सैंटवाम गिरजे में दफ़न हैं उन की लोथ चांदी के ताबूत में रक्खी हैं।

पंजिम से गवा तक नजारा बड़ा सुहावना है और मारमुगाओं के होटल के मैनेजर की मारफत बंदर से पार जाने के लिये किश्ती और दूसरी तरफ गाड़ी मिल सक्ती है।

मारमुगाओं पूना से ३६३ मील है तीसरे दरजे का किराया ४) रुपया लगता है॥

मदरास।

मदरास अहाते का सदर मुकाम और सब से बड़ा नगर है इस जगह हाई कोर्ट और बहुत से सिविल और फौजी महकमें हैं। आब हवा भी अच्छी है और यह इतिहासी नगर है॥

यहां देखने के लायक यह जगह हैं॥

(१) दस्तकारी का स्कूल (२) अजायब घर (३) तोपों का कारखाना (४) सकाच चर्च याने सक्राट लैंड देश के इसाइयों का गिरजा (५) पीपल्स पार्क (६) विकटोरिया मेमोरियल हाल (७) लार्ड मिनटो लार्ड कारनिवालिस और जनरल नील साहिब के बुत्त (८) नैपियर पार्क (९) हाईकोर्ट (१०) ला कालज (११) सैंट जार्जकिला जिस में गोला बारूद का कारखाना भी है इस क़िले में दो तोपें रक्खी हैं जो सुलतान टीपू से लड़ाई में हाथ आई थी (१२) नवाब

कर्नाटिक का महल जो किले से थोड़ी दूर है (१३) आकाश लोचन और गवर्नमेंन्ट हाउस ॥

मद्रास रेलवे और साउथ इण्डियन रेलवे के यहां छै छै स्टेशन हैं और यहां देशियों के लिये कई आश्रम हैं जिन में से राजा सर रामस्वामी मूडेलियर की चौलत्री मद्रास रेलवे के सेंटरल स्टेशन और सऊथ इण्डियन रेलवे के पार्क स्टेशन के पास हैं ॥

मद्रास के सब स्टेशनों पर घोड़ा गाड़ियां किराये पर मिलती हैं ॥

मद्रास बम्बई से ७६४ मील और नागपुर के रस्ते कलकत्ते से १०३२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ११॥) रु० और १३।≈) लगता है ॥

येवट ।

जी० आई० पी० रेलवे पर स्टेशन है । श्रावण के महीने में हर साल यहां से एक मील के फासले पर एक पहाड़ी में वलेस्वर के मन्दिर पर मेले होते हैं आब पाशी की नहरें पास बहती हैं बैल गाड़ियां इन्तजाम करने से मिलसक्ती हैं ॥

येवट जी० आई० पी० रेलवे की बम्बई रायचूर लाइन पर बम्बई से १४५ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २) और सवारी गाड़ी में १॥) लगता है ॥

रावर ।

जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है । यहां से ११ मील के फासले पर ईशापुर में ईशादेव का मेला होता है जिस में खानदेश से बहुत लोग आते हैं । स्टेशन के पास एक सराय है ॥

रावर बम्बई से २६८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४॥≈) और सवारी गाड़ी में ३) लगता है ॥

रेमुना ।

अहाता बंगाल के बालासोर जिले में बालासोर नगर से ५ मील पश्चिम की तरफ एक गांव है । यहां हर साल फरवरी के महीने में श्री चोरा गोपीनाथ कृष्ण जी के एक अवतार की याद गार में मेला होता है जो १३ दिन तक रहता है, १० से १२ हजार तक लोग इस मेले में आते हैं। फरवरी, अप्रैल और नवम्बर के महीनों में लोग मन्दिर के दर्शन को बहुत आते हैं ॥

बालासोर बङ्गाल नागपुर रेलवे में कलकत्ते से १४४ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥=) लगता है। बालासोर में घोड़ा, गाड़ियां सवारी के लिये किराये पर मिलती हैं ॥

रेनीगुंटा ।

मदरास रेलवे और साऊथ इण्डियन रेलवे का यहां जंकशन है । स्टेशन के बाहरही अंग्रेजों और देशियों के लिये खाने और टिकने की जगह बनी हुई हैं । चन्द्रगिरी में तलेगू राजों का बनाया हुआ राज महल यहां से १४ मील है वहां तक बैल गाडियां आसानी से आजा सकती हैं। यह महल पत्थर का बना हुआ है लकड़ी इस में नहीं लगी और देखने के लायक है इस के पास रामा महल है जो पहले महल से छोटा है यह दोनों महल चन्द्रगिरी पहाड़ी की जड़ में बने हुए हैं और पहाड़ी की चोटी पर विजयानगराम के राजा नरसिंहा का बनाया हुआ पुराना किला है । स्टेशन से ७ मील के करीब तीरुपती पहाड़ी पर श्री वैनकतासा पेरुमल का पुराना और नामी मन्दिर है जिस के दर्शन को यात्री देश के सब हिस्सोंसे सारा साल आते रहते हैं पर सितम्बर के महीने में ब्रह्म ऊतशावम तेहवार के मौके पर यात्री बहुत जियादा आते हैं ॥

मद्रास रेलवे में रेनीगुण्टा मद्रास से ८४ मील है तीसरे दर्जे का किराया डाक गाड़ी में १≈) और सवारी गाड़ी में ।।।≈) लगता है।

रानीपुर रोड ।

यह कसबा जी० आई० पी० रेलवे के रानीपुर रोड स्टेशन से २ मील सुखनई नदी के किनारेपर है इस में एक बहुत खूबसूरत मन्दिर है जिस के बड़े ऊंचे कलश हैं। बाजार में घर पुराने और खूबसूरत हैं इस की सुन्दरताई इस सबब से और भी जियादाहोगई है कि नगर के बीच में सड़क के किनारे पर जैनियों के छोटे छोटे मन्दिर हैं॥

रानीपुर को ऊर्छा के राजा पहाड़सिंह की रानी हीरा देवी ने १६७८ में बसाया था॥

यहां डाकखाना जैनियों का सुन्दर मन्दिर पुराना किला और एक अच्छी सराय है॥

रानीपुर रोड झांसी से ३४ मील और तीसरे दर्जे का किराया ।) लगता है कभी २ देशी गाड़ियां स्टेशन पर मिलती हैं॥

रामटेक ।

सेंट्रल प्राविन्सिज़ के जिला नागपुर से २४ मील के फासले पर नगर है। यह जगह सदा पवित्र मानी गई है सब से पुराना मन्दिर सुर्ख पत्थरों का बनाहुआ है और नगर के उत्तर की तरफ पहाड़ी पर है। और "हमार" पन्थ ब्राह्मण कहते हैं बाजे लोग कहते हैं कि वह राक्षस था। इस मन्दिर के पास परवार मन्दिरों का एक सुन्दर झुण्ड है जो नये बने हुए हैं पर इन सब से बढ़कर पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर रामचन्द्र जी का मन्दिर है। नगर के पास अम्बाला गांव में नवम्बर के महीने में एक मेला होता है जिस में एक लाख के करीब लोग आते हैं रामटेक पानों के लिये बहुत मशहूर है॥

Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

रंगून का बड़ा पगोडा।

नागपुर स्टेशन बङ्गाल नागपुर रेलवे के रस्ते कलकत्ते से ७०१ मील है तीसरे दरजे का किराया ७।) लगता है। नागपुर में सावरी मिलती है॥

रामटेक में एक धर्मशाला भी है॥

रंगून।

बर्मा देश की राजधानी है और समुद्र से २१ मील के फासले पर ईरावदी नदी की एक शाख के पूर्वी किनारे पर वाके है॥

कहते हैं कि इस वक्त के रंगून की जगह पर पहले एक गांव दो भाइयों ने अंगरेज़ी सन् से ५८५ वर्ष पहले बसाया था यह दोनों भाई एक दिन ५०० गाड़ियां सौदागरी माल की लेकर उस जंगल में से गुज़रे जहां बुद्ध रहता था उन्हों ने उस को कुछ शहद नज़र किया और अरज़ की कि कोई चीज़ देवें जिसका वह आप की निशानी समझ कर आदर करें। गौतम ने अपने सिर के आठ बाल उनको दे दिये जिनको वह अपने देश ले आये और रंगून के पास पगोड़ा बनाकर उस में रख दिया यह पगोड़ा शवे यानी सुनहरी डगौन कहलाता है और एक छोटी सी पहाड़ी पर बना हुआ है जिस को काटकर ऊपर नीचे चबूतरे बनाये हुए हैं जो ईंटों की दीवारों के सहारे खड़े हैं पगोड़ा ३०० फीट ऊंचा है और उसके गिर्द मठ बड़े २ शेर, झण्डे और बहुत मूर्तियां बनी हुई हैं। सवेरे आदमी और औरतें अपने २ चढ़ावे सामने रखकर घुटनों के बल पूजा करते हैं बूढ़े सब जगह झाड़ू देते हैं और दराज़ों में से घास निकालना पुण्य समझते हैं बड़े २ घण्टे बजते रहते हैं। हर एक आदमी चढ़ावा लाता है जो अकसर फूलों का गुच्छा होता है और बहुत करके अच्छे से अच्छा भोजन होता है जिस को पत्थर के बड़े २ बासनों में मन्दिर के गिर्द रख देते है। रंगून बड़ा सुन्दर शहर है यहां से चावल और लकड़ी के लट्ठे बाहर जाते हैं॥

हर इतवार के दिन या विलायती डाक आने के पीछे कलकत्ते से रंगून और मौलमीन को अग्नबोट जाते हैं॥

रामपुरा ।

राजपूताना की रियासत उदयपुर के सदरी दरे में पार्श्वनाथ के जैनियों के मन्दिर हैं। कहते हैं कि इन मन्दिरों को धम्मा सेठ ने १४४० ईसवी में ७५ लाख रुपया खर्च करके ब[illegible]या था। पहल या छोटे मन्दिर में काले संगमरमर की पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है और बाहर की तर्फ मूर्त्तें बनी हुई हैं। बड़ा मन्दिर २६० फीट लम्बा और २४४ फीट चौड़ा है और उसके गिर्द दीवाल है और अन्दर ८६ कमरे हैं जिन में हर एक में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति रक्खी है। यहां हर साल मार्च और सितम्बर में मेला होता है जिस में १० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

रामनाद ।

मद्रास अहाते के मदुरा ज़िला और रामनाद ज़मींदारी में सब से बड़ा नगर है जिस में तीरुपलानी या थेरबसायानम और देवीपत नम या नवापशनम दो पुराने मन्दिर हैं। यह दोनों मन्दिर स्टेशन से ५ और १० मील उत्तर और दक्खिन की तर्फ वाक़े हैं पहले मन्दिर का ब्रह्मऊतशावम जुलाई और अगस्त में होता है और चैत्रई तेहवार अप्रैल और मई में होता है। दूसरे मन्दिर के रामेश्वरम जाते हुए यात्री दर्शन करते हैं। हेड असिस्टैंट कलक्टर, असिस्टैंट सुपरिन्टेनडैंट और सब रजिस्टरार का यहां हैड कुआर्टर है। हर बुध को यहां एक मेला भी होता है॥

रामनाद साऊथ इण्डियन रेलवे की मंडापम ब्रांच पर स्टेशन है मद्रास बीच से इसका फासला ४१५ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥=) लगता है॥

राम कैला ।

बंगाल अहाते के मालदा जिले और सागर दिगी की गिर्द नवाह में पुराने गौर के पास जेठ (जून) के महीने में एक मेला होता है जिसमें २० हजार के करीब यात्री मालदा और आस पास के जिले से आते हैं। इस मौके पर कृष्ण जी की पूजा होती है। और चढ़ावे चढ़ाए जाते हैं। विष्णु के अधीन इस मौके पर विवाह करते हैं यह मेला ५ दिन तक दो भाइयों रूप और स्नातन गोस्वनी की यादगार में होता है। यह दोनो भाई गौर के बादशाह हुसैनशाह के वज़ीर थे पर पीछे बैरागी हो गए और विष्णुमत के सुधारने वाले चैतान्या के चेले होगये थे। इस जगह बहुत से ताल भी हैं॥

कटीहार गोदावरी रेलवे खुलने पर मालदा गौर के लिये सब से पास रेलवे स्टेशन होगा॥

रजीम ।

बङ्गाल नागपुर रेलवे की छोटी सी १० मील की शाख पर जो बड़ी लाइन से अमनपुर स्टेशन पर मिलती है रजीम स्टेशन है और महा नदी दरिया पर वाक़े है। इस के ५ मील उत्तर की तरफ चम्पा रख का रूखों का पवित्र कुण्ड है, कहते हैं बुद्ध इस में तप किया करता था। उस जगह बहुत जैनी यात्रा के लिये आते हैं॥

हिन्दुस्तान में जैनी लोग अकसर व्योपारी या शाहूकार हैं और यह लोग बहुत दान पुण्य करते हैं और पशुओं के हस्पतालों के लिये रुपया देते हैं। जैनीलोग कहते हैं कि जैन मत बुद्ध मत से भी पुराना है और बुद्ध का उपदेशक जैन मत से ही लिया हुआ है। यह लोग अपने तीर्थ पहाड़ों और २ सुहावनी जगहों में बनाते हैं॥

रजीम में चम्पारण्य जाने के लिये बैल गाड़ियां मिलती हैं,

एक गाड़ी का किराया १।) से २) तक होता है। रज़ीम और चम्पारण्य दोनों जगह सराये और डाक बङ्गले हैं। रज़ीम से अनाज और लाख बाहर जाती है। रज़ीम कलकत्ते से ५४१ मील है तीसरे दरजे का किराया ५॥।=)॥। लगता है॥

राजा गरीहा .

बङ्गाल अहाते के पटना ज़िले में एक प्रर्वत और खण्डरों के झुण्ड का नाम है यह जगह मगध देश की राजधानी राजगढ़ के साथ पहचानी गई है जहां बुद्ध रहा करता था। इसका जिकर चीनी यात्री हियून संगने किया है और महाभारत में भी है। पुराने नगर कुसनाग रापुरा की जगहके पास गरम पानी के सोते हैं पानी में से गंधक की बू आती है और हजारों लोग हिन्दू जैनी और मुसलमान यहां आते हैं॥

ईस्ट इण्डियन रेलवे के जमुआवन स्टेशन से यहां जाते हैं। जमुआवन कलकत्ते से लक्खी सराय के रस्ते ३०४ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।=)॥। लगता है॥

रोपड़।

जिला अम्बाला में कसबा और तहसील रोपढ़ का सदर मुकाम है। अम्बाला शहर से ४३ मील उत्तर की तरफ सतलुज दरिया के किनारे पर आबाद है। यह बड़ा पुराना शहर है। पिछले जमाने में रूप नगर कहलाता था १७६३ के करीब यह मुकाम एक सिक्ख सरदार हरीसिंह के हाथ आया जिसने सतलुज के दक्खिन का मुलक पहाड तक दबा लिया १७९३ में उस ने अपनी रियास्त के दो हिस्से करके अपने बेटों चढ़तसिंह और देवासिंह को दे दिये रोपढ़ चढ़तसिंह के हिस्से में आया। चूंकि १८४५ सिक्खों की लड़ाई

में यह खानदान भी सरकार अंग्रेजी के मुखालिफ था १८४६ में जागीर जब्त कर ली गई। सतलुज़ में से नहर यहीं से निकाली गई है॥

यहां दो बड़े मेले होते हैं एक मुसलमानों का जो जेठ के महीने में शाह खालिद के मजार पर होता है और जिसमें ५००० के करीब लोगआते हैं। दूसरा हिन्दुओं का स्नान मेला सतलुजके किनारे अप्रैल के महीने में होता है इस में भी उतने ही लोग आते हैं॥

सूती कपड़ा लोहे के हुक्के और लोहेकी और २ चीजें बनती हैं॥

यहां कई सरायें और धर्मशाला हैं सवारी के वास्ते तांगे और यक्के मिलते हैं॥

रोपड़ जाने के लिये नार्थ वैस्टर्न रेलवे के स्टेशन सरहिंद पर उतरना चाहिये सरहिंद दिल्ली से १९५ मील और तीसरे दरजे का किराया २)॥ है सरहिन्द से रोपढ़ २५ मील से ऊपर है॥

रामेश्वरम ।

अहाता मद्रास के मदूरा जिला और रामनाद जिमींदारी में टापू और नगर है। यह ११ मील के करीब लम्बा और ६ मील चौड़ा है और मालूम होता है कि किसी वक्त में बड़ी धरती के साथ मिला हुआ था। इस टापू में हिंदुस्तान का सबसे पवित्र मन्दिर है जिसकी बाबत कहते हैं कि रामचन्द्र जी ने आप इसको कायम किया था रामचन्द्रजी सीता जी को लंका से लाने के लिये इसी रस्ते गये थे और रामायण में इस का बहुत जिकर है। सैकड़ों वर्ष से हजारों यात्री हिंदुस्तान के सब हिस्से से यहां आते हैं। मन्दिर टापू के उत्तर के हिस्से में ऊंची जगह पर बना हुआ है। इस का अहाता हजार फीट लम्बा और सौ फीट चौड़ा है, मन्दिर की ऊंचाई १२० फीट है और इस की बुर्जियों बगैरा पर बेल बूटे खोदे हुये हैं। कहते हैं कि मन्दिर में जो लिङ्ग है उस को

रामचन्द्रजी ने आप यहां रक्खा था। इस को गंगा जल से धोते हैं और वह पानी बेचा जाता है। रामेश्वरम में ६ चत्तरम या टिकने के स्थान हैं यहां हिन्दु यात्रियों को खाना भी बिना दाम मिलता है।

रामेश्वरम साउथ इंडियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मदरास बीच जंकशन से ४४८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ५॥।≈) और सवारी गाड़ी में ४॥।≈) लगता है॥

स्टेशन पर बैलगाड़ियां और पांडे मिलते हैं॥

लाहौर।

सूबा पंजाब का सदर मुकाम है और सरदी के दिनों में पंजाब के लाट साहिब इसी जगह रहते हैं। लाहौर बहुत पुराना शहर है और रावी दरया के बायें किनारे पर बसा हुआ है। पहले दरया शहर के पास बहता था और १८६२ में इसने बहुत नुकसान किया इस सबब से बहुत रुपया खर्च करके ४ मील लम्बा एक बड़ा भारी ईंटों का बंध बनना पड़ा था, पर थोड़े दिनों के बाद दरया उत्तर की तरफ हट गया और फिर लाहौर के पास नहीं आया, लाहौर किसी जमाने में बड़ा भारी और नामी शहर था और इस के गिर्द १५ फीट ऊंची दीवार था और उस में १३ दरवाज़े थे, दीवार अब गिरा दी गई है। लाहौर दूसरी सदी ईस्वी में बसा था और जब मुसलमानों ने पंजाब पर चढ़ाई की, उस वक्त यह शहर राजपूत राजाओं की राजधानी था १७६७ से यह सिक्खों के पास रहा पर अलीवाल, मुदकी, फीरोजशाह और सबराओं की लड़ाइयों के बाद लाहौर और सारा पंजाब अंग्रेजो के हाथ आगया।

लाहौर का अजायबघर १८६४ में बना था देखने के लायक

है इस के सामने अनारकली में जमज़मा बड़ी भारी तोप रक्खी हुई है। यह तोप १७६१ में हिन्दुस्तान में बनी थी और अहमदशाह ने पानीपत की लड़ाई में इस से काम लिया था। लौटता हुआ वह इस तोप का भारी होने के सबब लाहौर छोड़ गया था। १८०२ में यह तोप सिक्खों के हाथ आई और उनके राज्य से भंगियों की तोप कहलाने लगी यह तोप सिक्खों के राज्य का जादू ख्याल की जाती थी इसी सबब से रंजीतसिंह के राज्य का सिक्का और भी बैठ गया था अनार कली के बाहर की तरफ अजायब घर बड़ा डाक खाना तार घर चीफ़-कोर्ट गवर्नमेंट कालिज सैनट हाल जिस में ओरियंटल कालिज भी है, सरकारी दफ़तर, पबलिक लाइबरेरी इंजिनियरों का स्कूल मिशन कालेज जिस में ला कालिज भी है स्टेशन चर्च या गिर्जा जिस में पहले अनारकली की क़बर थी और माल याने ठंडी सड़क पर लारेंस बाग़ जिस में लारेन्स और मन्टगुमरी हाल हैं, चिड़िया घर और मलका का बुत्त देखने के लायक़ हैं अनारकली नाम अकबर ने अपनी प्यारी लौंडी नादिरा बेगम को दिया था पर एक दिन अक़बर के बेटे जहांगीर की तरफ देख कर हंसने के शक में जीती धरती में गाड़ दी गई थी उस का मक़बरा जहांगीर ने १६०० ई० में बनवाया था॥

मेयो हस्पताल जो इटालियन ढंग का बना हुआ है अनारकली के पास एक तरफ को है इस में १०० बीमारों की गुंजायश है यह हस्पताल मेडीकल कालिज के लिये १८७० में खुला था॥

शालामार बाग़ लाहौर से ३ मील के करीब है इस में खूब सूरत चबूतरे और फवारे लगे हुये हैं। यह बाग़ बड़ा अजीब है और देखने के लायक है गवर्नमेन्ट हाउस लारेंस बाग के सामने माल याने ठंडी सड़क की बाईं तरफ है। असल में यह अक़बर के चचा के लड़के मुहम्मद क़ासिमखां की क़बर थी॥

रेलवे स्टेशन और उस के कारखाने भी देखने के लायक़ हैं। स्टेशन वक़्त पर काम देने के लिये क़िले के ढंग का बना हुआ है। रेलवे के कारखाने १२६ एकड़ में बने हुए हैं और उन में दो हज़ार के क़रीब लोग नौकर हैं॥

लाहौर में गरमी में गरमी और सरदी में सरदी ज़ियादा होती है। यहां बहुत मेले होते हैं पर सब से बढ़कर चिरागों का मेला है जो मार्च के आख़ीर शालामार में होता है। इस मेले में ६० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं। लाहौर में कई सराय और बहुत धर्मशालाय हैं। एक बड़ी भारी और ख़ूबसूरत सराय जिस को मीयां सुलतान की सराय कहते हैं, स्टेशन से थोड़े फ़ासले पर वाक़े है और स्टेशन के पास एक और अच्छी सराय मीयां चिरागदीन ने अभी बनाई है॥

स्टेशन पर अंगरेज़ों मुसलमानों और हिन्दुओं के लिये रिफरेशमेंट रूम याने खाने के कमरे बने हैं जहां बहुत अच्छा खाना मिल सक्ता है।

लाहौर कलकत्ते से ईस्ट इण्डियन और नार्थ वैस्टरन रेलवे में १२१३ मील और बम्बई से जी० आई० पी० में १३०६ और बी० बी० ऐण्ड सी० आई० में १०६८ और मील दिल्ली से ३४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ११॥।≋) १६।-) डाकगाड़ी में १०॥) और ३॥) लगता है॥

लाल उदेरो।

नार्थ वैस्टरन रेलवे की कराची लाहौर शाख के उदेरो लाल स्टेशन से ५ मील है। उदेरो लाल कराची से १३४ मील और लाहौर से ६५० मील है तीसरे दरजे का किराया १॥-)। और ७॥≋) लगता है।

एक जगह एक महात्मा के स्थान के सबब बहुत मशहूर है। जिसको हिन्दू और मुसलमान दोनो मानते हैं। हर साल मार्च के

महीने में इस स्थान का ७ दिन तक मेला होता है जिस में २० हजार के करीब लोग आते हैं ॥

यहां एक सराय और एक धर्मशाला यात्रियों के विश्राम के लिये है। स्टेशन पर ऊंट टट्टू और गाड़ियां किराये पर मिलती हैं ॥

लखनऊ ।

यह शहर अवध में है और हिन्दुस्तान में कलकत्ता बम्बई और मद्रास के सिवाय सब शहरों से बड़ा है। यहां छावनी भी बड़ी भारी है जिस में रिसाला अंग्रेजी और देशी पलटनें और तोपखाना रहता है सआदतखां जिस ने अवध के राज की नीव रक्खी १७३२ में यहां का हाकम हुआ और उसने लखनऊ को अपनी राजधानी बनाया। १८५६ ई० में नवाब की खराबियों के सबब अवध सरकार अंग्रेजी के पास आगया। लखनऊ में देखने के लायक यह जगह हैं। रेजिडेन्सी, बेली गार्ड दरवाजा मच्छीभवन इमामबाड़ा हुसैन-आबाद, मारटीनियर कालज जिस को मेजर जनरल कलाड मारटिन ने बनाया। इस साहिब का काल १८०० में हुआ और उन की कबर कालिज के पास है। विंगफीलड पार्क बड़ा सुन्दर है इस में अच्छे २ फुलों के पौदे हैं अजायबघर आकाशलोचन लोहे का पुल आलम बाग जहां जनरल हैवलाक दफ़न है, दिलकुशा जहां उन का काल हुआ सरबाग और छतर मनजिल भी देखने के लायक हैं ॥

लखनऊ में कमिश्नर साहब का सदर मुकाम है। यहां कई सराय और होटल हैं सवारी हर वक्त मिलती है ॥

लखनऊ ईस्ट इण्डियन और अवध रुहेलखण्ड में कलकत्ते से ६१६ और बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ८८५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।॥=) और १०।) लगता है ॥

लुधियाना ।

सूबा पंजाब में ज़िला लुधियाना का हैडकुआरटर और नार्थ वैस्टर्न रेलवे का लुधियाना धुरी जाखल रेलवे के साथ जंक्शन है। दिल्ली से इस का फासला २३३ मील और लाहौर से ११६ मील है तीसरे दरजे का किराया २।॥ और १।-)॥ लगता है । इस नगर को लोधी बंश के यूसफ और निहंग दो भाइयों ने १४८० में बसाया था और होते होते १८३४ में सरकार अंग्रेजी के पास आगया । यहां काशमीरी लोग और काबुल के जलावतन किये हुये शाहजादे बहुत रहते हैं ॥

लुधियाने में दो मेले होते हैं एक मुसलमानों का जिस को रौशनी पीर साहब कहते हैं जून के महीने में ४ दिन तक शेख अब-दुल कादर जीलानी के मजार पर होता है इस में ६० हजार के करीब लोग आते हैं । दूसरा हिन्दुओं का मेला अपरैल के महीने में होता है इसको चेतचौदस का मेला कहते है । इर्द गिर्द के गावों से लोग बुढा दरया में स्नान करने आते हैं यह मेला थोड़ी देर रहता है पर इस मौके पर मालमण्डी भी लगती है यह एक हफ्ता रहती है । ५५ हजार लोग और ६ हज़ार के करीब पशु मण्डी में आते हैं ॥

लुधियाने में अनाज की बड़ी मण्डी है । यह शहर पशमीने के दोशालों सूती कपड़ों लुङ्गियों गलूबन्दों जुराबों के लिये बहुत मशहूर है ॥

यहां कई सराये स्टेशन के पास हैं और पासही एक डाक बंगला भी है सवारी हरवक्त मिलती है ॥

वडाली गुरू ।

सूबा पंजाब की तहसील और जिला अमृतसर में गांव है

जो अमृतसर शहर से ४ मील के करीब है और नार्थ वैस्टर्न रैलवे के छेहरटा स्टेशन से एक मील के करीब है ॥

जनवरी के आखीर में इस गांव में बसंत पंचमी का मेला होता है जिस में ३० हज़ार के करीब लोग आते हैं। गांव के पास एक धर्म्म शाला में शुक्ला पंचमी के मेले भी होते हैं। दमदमा साहिब गांव के पास है यहां भी लोग बहुत आते हैं ॥

वडाली गुरू में सिक्खों के छठे गुरू हरिगोबिंद का जन्म स्थान है ॥

अमृतसर में वडाली गुरू जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

छेहरटा स्टेशन लाहौर से २६ मील है तीसरे दरजे का किराया ।-)॥ लगता है ॥

वला ।

सूबा पंजाब जिला अमृतसर की तहसील में गांव है जो नार्थ वेस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख के अमृतसर और वैरका स्टेशनों के बीच में वाके हैं ॥

गांव में सिक्खों के नौवें गुरू तेग बहादुर का मन्दिर है। कहते हैं कि गुरू साहिब ने इस गांव में दो घंटे विश्राम किया था। फर्वरी के महीने में यहां हर साल एक बड़ा मेला होता है। जिस में ३० हजार के करीब लोग अमृतसर और ईर्द गिर्द के गाओं से आते हैं ॥

यहां कोई सराय या धर्म्मशाला नहीं लोग शाम को अपने घरों को चले जाते हैं ॥

अमृतसर लाहौर से ३३ मील है और वैरका ३८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।-) और ।=) लगता है। अमृतसर में वला जाने के लिये सवारी मिलती है पर वैरका में नहीं मिलती ॥

वाटी मोट्टा

मदरास अहाते में नगर है इस में विष्णु का बड़ा और सुन्दर मन्दिर है जिस को वांताद या मित्ताद ने बनाया था इस के अन्दर अच्छा काम किया हुआ है और गिर्द का नजारा बड़ा सुहावना है। यह मन्दिर एक ताल के किनारे पर है जिस के इर्द गिर्द पहाड़ियां हैं। यहां हर साल ब्रह्म उत्सव होता है उस मौके पर बहुत यात्री आते हैं॥

वाटीमोट्टा मदरास रेलवे की नार्थवैस्ट लाइन पर स्टेशन है इसका फासला मदरास से १४७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १॥।≈) और सवारी गाड़ी में १॥-) लगता है॥

विरावनालूर।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मदरास बीच जंकशन से ४६२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ५-) लगता है॥

स्टेशन से २॥ मील उत्तर पश्चिम की तरफ थीरुप्पदामरुथुर गांव में शिवजी का मन्दिर है जिस में जनवरी या फरवरी के महीने में पूसम का तेहवार होता है इस में बहुत यात्री आते हैं विरावनालूर में कपड़ा बहुत बनता है॥

विरावनालूर में तीन चत्तरम हैं जो स्टेशन से १॥ मील के फासले पर हैं यहां ब्राह्मणों को बिना दाम खाना मिलता है। एक चत्तरम थीरुप्पदामरुथुर में भी है और इन दोनों जगहों में बंगला कोई नहीं॥

स्टेशन पर बैल गाड़ियां किराये पर मिलती हैं, किराया

।=) से ।।) तक एक गाड़ी का होता है पर मेले के दिनों में किराया बहुत बढ़ जाता है ॥

विल्लीवकम ।

मद्रास रेलवे पर है स्टेशन के पास दमोदर पेरुमल और अगथेश्वर दो मन्दिर हैं जिनके दर्शन को बहुत यात्री आते हैं ॥

विल्लीवकम मद्रास से ६ मील है तीसरे दरजे का किराया =) लगता है ॥

यहां सवारी कोई नहीं क्योंकि गांव स्टेशन के पास है गांव में दस चोलत्रियां और चतरम याने धर्मशालायें हैं ॥

पीसी हुई हड्डियां यहां से बाहर जाती हैं और साबत हड्डियां देसी कपड़ा और लकड़ी बाहर से आती हैं ॥

विनूकोंडा ।

मद्रास अहाते के किस्टना जिले में पहाड़ा और नगर है और यहां पर एक पहाड़ी किला है जिस की बाबत एक अजीब बात मशहूर है । कहते हैं कि रामचन्द्रजी को पहले पहल सीताजी के छलेजाने की इसी जगह खबर मिली थी पहाड़ी समुद्र से ६०० फीट ऊंची है और इसके गिर्द तेहरी दीवारें बनी हैं जिस के अन्दर पानी के हौज और अनाज के खाते थे ॥

विकरावंदी ।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर है इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से ६३ मील है और तीसरे दरजे का किराया १=) लगता है ॥

स्टेशन से दो मील दक्खिन पूर्व की तरफ एक शिवजीका पुराना मन्दिर है जो नेथरुथराकार के नाम पर है इस मन्दिर में जनवरी और फरवरी के महीनों में तेहवार होते हैं। स्टेशन से २ मील रथा पुरम में आठवें दिन मेला होता है जिस में पशु, अनाज और चमड़ा बिकने के लिये बहुत आता है ॥

विकरावन्दी में दो चतरम या धर्मशालायें और बंगला है जो स्टेशन से आधे मील के फासले पर हैं बैलगाड़ियां सवारी के लिये किराये पर मिलती हैं ॥

यहां से धान तिल और नील बाहर जाता है और अनाज लाल मिरचें और लकड़ी बाहर से आती हैं ॥

विजागापटम ।

अहाता मद्रास में नगर और बन्दर है इस की आबादी ३५ हजार है पास एक पहाड़ी है जो खाड़ी में कुछ दूर तक चली गई है। इस का नाम डालफिन नोज है और इस के ऊपर से बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है। एक और पहाड़ी है जिस को बीच में से काटा हुआ है इस में से पहले ईस्ट कोस्ट रेलवे गुजरा करती थी, इस पहाड़ी के ऊपर एक गिरजा, एक हिन्दुओं का मन्दिर और एक मुसलमानों की मसजिद है सब धर्मों के लोग और उन के पूजास्थान इकट्ठे हों यह बात और किसी जगह नहीं पाई जाती। विजागा पटम इतिहासी नगर है पहले यह डच्च लोगों की बस्ती थी और फिर कुरुमण्डल पर अंग्रेजों का गढ़ बना और किसी दिन यह बड़ा बन्दर बन जाये गा॥

विजागापटम मद्रास रेलवेका स्टेशन है इसका फासला रायापुरम मद्रास से ४८७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ६।८) लगता है ॥

विजागापटम में दो चतरम हैं एक तो स्टेशन के पास है और दूसरी पौन मील के फासले पर है। अंग्रेज लोगों के ठहरने के लिये वालटेयर के बंगले क्लब और फराम जी का होटल है॥

बैलगाड़ियां स्टेशन पर और नगर में मिलती हैं और फरामजी और कम्पनी को लिखने से घोड़ा गाड़ियां भी किराये पर मिल सक्ती हैं यहां हाथी दांत का काम बहुत अच्छा होता है॥

वेनकाटागिरी।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से ३०१ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३।०) लगता है॥

वेनकाटागिरी एक बड़ी ज़िमींदारी का बड़ा नगर है और इस में एक महल है जिस में राजा रहता है। इस नगर में एक बंगला भी है जिस में अंग्रेज़ लोग राजा की इज़ाजत से ठहर सक्ते हैं जून या जूलाई के महीने में यहां एक छोटे से मन्दिर में ईश्वर ब्रह्म ऊतशावम तेहवार होता है लूथरन ईसाईयों का इस जगह गिरजा है, और अच्छा लैस का कपड़ा बनता है वेनकाटागिरी और यल्लाकारू के बीच में जंगल है जिस में चीते, भालू और कभी २ शेर का शिकार मिलता है॥

यहां देशियों के लिये दो बहुत सुन्दर आश्रम हैं एक स्टेशन के बिलकुल पास है और दूसरा नगर में स्टेशन से २ मील के फासले पर है। अंग्रेज़ों के लिये भी यहां दो बंगाले हैं यह दोनो स्टेशन से तीन मील के करीब हैं॥

वेरटाहल।

मद्रास रेलवे की अर्जाकल शाख पर स्टेशन है इस का

फासला मद्रास से ४१७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ५।ऽ) और सवारी गाड़ी में ४।ऽ) लगता है॥

इस जगह दशहरे के मौक़े पर स्टेशन से उत्तर की तरफ घरका मन्दिर पर हर साल मेला होता है। दीपमाला के मौक़े पर नवम्बर महीने में एक और बड़ा भारी मेला होता है जिस में ५ या ६ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं यह दोनों मेले एक एक दिन रहते है॥

यहां कोई सराए या धर्मशाला नहीं लोग शाम को अपने २ घरों को लौट जाते हैं॥

शाहपुर।

सूबा पंजाब के ज़िला गुरदासपुर और तहसील पठानकोट में एक गांव है। यहां सितम्बर के महीने में एक बड़ा भारी मेला होता है जिस को सैर कहते हैं इस में ६ हज़ार के क़रीब लोग आते हैं॥

पठानकोट नार्थ वैस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख पर स्टेशन है इसका फासला अमृतसर से ६७ मील है और तीसरे दरजे का किराया ॥।)॥ लगता है॥

पठानकोट में एक सराय है और यक्के किराये पर मिलते हैं॥

शाहदरा-देहली।

सूबा आगरा और अवध के ज़िला मेरठ और तहसील गाजीआबाद में नगर और मीयूनिसिपैलटी है। यह नगर जमना की पूर्वी नहर के बाएं किनारे पर मेरठ शहर से ३१ मील के फासले पर वाके है और ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। इस

को शाहजहान ने अपनी फौज़ों की रसद के लिये मण्डी के तौर पर बसाया था। इस को सूर्यमल भरतपुर के जाट ने और पानीपत की लड़ाई से पहले अहमदशाह दुर्रानी ने लूटा। मिठाई, जूतियां और चमड़े का असबाब बनकर बाहर जाता है और इस जगह खांचियां भी बहुत हैं॥

जूलाई महीने में तीज का मेला बड़ा भारी होता है जिस में २० हज़ार के करीब लोग आते हैं॥

शाहदरा दिल्ली से ४ मील है तीसरे दरजे का किराया)॥ लगता है॥

इस जगह थाना डाकखाना और एक सुन्दर सराय है॥

शाहदरा—लाहौर।

सूबा पंजाब के ज़िला लाहौर में लाहौर के सामने रावी दरया के पश्चिमी किनारे पर वाके है। इस में जहांगीर बादशाह और उस की मलका नूरजहां के मकबरे एक बाग में हैं। और देखनेके लायक हैं। लाहौर के लोग यहां अकसर जातेहैं। सिक्खोंने यहां से संगमरमर लेजाकर अमृतसर दरबार साहिब में लगाया था शाहदरा लाहौर से नार्थवेस्टर्न रेलवे में दूसरा स्टेशन है उस का फासला लाहौर से ५ मील है तीसरे दरजे का किराया ~) लगता है। लाहौर से शाहदरे को तांगे और टमटमें भी मिलती हैं॥

इस गांव में जून के महीने में क़दम धौंकल का मेला होता है जिस में ६ हज़ार के करीब लोग आते हैं॥

शाहापुर।

अहाता बम्बई के थाना ज़िले में शाहापुर सबडिवीज़न का बड़ा

नगर है बम्बई से यह नगर ५४ मील उत्तर पूर्व की तरफ है और जी० आई० पी रेलवे के असनगांव स्टेशन से इसका फासला पौनेदो मील है। नगर भाटसा दरिया की शाख भादंजी नदी के किनारे पर और माहुली किले से ५ मील के फासले पर बसा हुआ है। फर्वरी के महीने में महाशिवरात्री के मौके पर मेला होता है जिस में ३ हजार के करीब लोग आते हैं। इस से बड़ा एक और मेला १५ दिन बाद होली के पूरे चांद के मौके पर होता है॥

शाहापुर जानेवाले मुसाफिरों को असनगांव स्टेशनपर उतरना चाहिये असनगांव बम्बई से ५४ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥।९) और सवारी गाड़ी में ॥-) लगता है॥

शाहापुर में एक डाक बंगला और दो धर्मशालाएं हैं॥

असनगांव में जो एक छोटा सा गांव है कोई टिकने की जगह नहीं। असनगांव में तांगे शाहापुर जाने के लिये किराये पर मिलते हैं पूरे तांगे का किराया ॥) लगता है॥

शाहापुर में चावलों की चार चक्कियां हैं। यहां से चावल, लकड़ी और कोयले बाहर जाते हैं और अनाज बाहर से आता है॥

शिंगनापुर।

अहाता बम्बई के सतारा जिला और मान सब डिवीजन में एक नगर है जो सतारा से ६ मील के फासले पर वाके है। यह बड़े तीर्थ की जगह है। पहाड़ीकी चोटी पर महादेव का मन्दिर है जिस के सबब से यह नगर बहुत मशहूर है। मार्च अप्रैल के महीने में यहां बड़भारी मेला होता है जिस में ५० हजार के करीब लोग आते हैं मेले के दिनों में सफाई का बहुत इन्तजाम किया जाता है॥

सदर्न महरटा रेलवे पर सतारा रोड स्टेशन पुना से ७७॥ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १)। और स्वारी गाड़ी में ॥।-) लगता है ॥

शिमला ।

गवर्नमेण्ट हिंदुस्तान का गरमी के मौसम का सदरमुकाम है समुद्र से इस की ऊंचाई ७ हजार से ८ हजार फीट है । शिमला जाकू पहाड़से वैसरीगलवाज याने हिंदुस्तान के लाटसाहब के महल और छोटे शिमले से वालूगंज तक फैला हुआ है । शिमले में सबसे पहिला मकान लफटिनेन्ट रास साहब पुलिटिकल एजंट ने १८१६ ई० में बनाया था होते होते यह जगह ऐसी दिल पसंद होती गई कि लार्ड एमहर्स्ट हिंदुस्तान के पहले गवरनर जनरल ने थोड़े से स्टाफ के साथ आकर १८२७ की गरमी इसी जगह गुजारी । शिमले की आब हवा बहुत अच्छी है और इर्द गिर्द का नजारा बड़ा सुहावना है इस जगह बहुत से उमदा होटल हैं जिन में से सिसल होटल चौड़े मैदान में डाकखाने के सामने, लोरी का होटल मेटरोपोल होटल और यूनाईटड सरविस क्लब ठंढी सड़क पर, इलजियम होटल लांगवुड होटल बड़े डाकखाने से एक मील उत्तर की तरफ एक पहाड़ी पर और ग्रांड या पलेटी का होटल तार घर की ऊपर की तरफ सड़क पर वाके हैं देशी लोगों के लिये गाड़ी सड़क पर पुराने यक्के खाने के करीब एक अच्छी सराय है जिस में एक कमरे का ॥) एक दिन का किराया लगता है ॥

कालका से जो पहाड़ के नीचे शिमले से ७० मील के फासले पर वाके है कालका शिमला पहाड़ी रेल शिमले तक जाती है तीसरे दरजे का किराया ३।)॥ लगता है । यह लाइन बड़ी अजीब बनी हुई है और देखने के लायक है ॥

शिमला कलकत्ते से ११३५ मील है और तीसरे दरजे का किराया १४-) और बम्बई से जी० आई० पी०रेलवे में फासला १२२१ मील और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १६।-) लगता है।

शिमले में डाकखाना, तारघर और सरकारी दफतर खूबसूरत बने हुये हैं॥

शिमोगा।

शिमोगा जिले का सदरमुकाम और सदर्नमरहट्टा रेलवेका स्टेशन है। यहां शैशनजज और मुनसिफों की कचहरियां, डिप्टी कमिशनर और असिस्टेंट कमिशनरों के दफतर, डाकखाना, तार घर और हस्पताल हैं। जेरेस्पा की मशहूर पानी की चादरें यहां से ६४ मील के करीब हैं। यह चादरें सारे जगत की चादरों से ऊंची हैं और सुन्दरताई में सब से बढकर हैं। एक चादर जिसका नाम राजा है ८३० फीट की ऊंचाई से गिरती है इसके सिवाय तीन और हैं जिन के नाम रोरर राकेट और डेम बलैंक हैं। यह पश्चिमी घाटके किनारे पर हैं,इर्द गिर्द का नजारा बडा सुहावना है। इन के देखने के लिये सब से अच्छा सरदी का मौसम है। मैसूर रियासत की तरफ से हर रोज शिमोगा से सागर तक जो शिमोगा से ४५ मील है एक डाक का यक्का ८ बजे सवेरे चलता है और सागर ५॥ बजे पहुंचता है एकसवारी का किराया एक तरफ का ३) रुपया लगता है। जुदा यक्का भी ८) रु० किराये पर मिल सक्ता है। डांक के यक्के मे जगह के लिये शिमोगा के पोस्टमास्टर को कम से कम एक दिन पहिले खबर देनी चाहिये मुसाफिरों को अपना असबाब पहले भेज देना चाहिये क्योंकि डाकके यक्के में एक रुपया एक गठडी का किराया लगता है। सागरसे चादरों तक आने के लिये सवारी के वास्ते सागर के अखिमदार को दरखास्त करनी चाहिये॥

सागर में एक बंगला है और चादरों के पास दो बंगले हैं इन में बर्तन लैम्प और सब असबाब हैं पर मुसाफिरोंको खाने का बन्दोबस्त आप करना चाहिये ॥

शिमोगा पूना से ५३२ मील और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६।।।~)।। और सवारी गाड़ी में ५।।)।।। लगता है ॥

शियाली ।

साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है। इसका फासला मद्रास बीच जंकशन से १६४ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २≈) और सवारी गाड़ी में १।।।~) लगता है ॥

नगर में ५ देशियों के होटल कई मन्दिर और दफ़्तर हैं। चित्रई तेहवार यहां हर साल मई के महीने में होता है। इस कोरट की चटाइयां बहुत अच्छी बनती हैं ॥

स्टेशन से १२ मील के फासले पर नेदावसाल गांव में नमक का कारखाना है। शियाली में लूथर्न ईसाईयों का मिशन है और स्टेसन से एक मील के फासले पर एक बंगला है ॥

शेरगढ़ ।

सूबा पंजाब के मिण्टगुमरी जिले और दीपाल पुर तहसील म गांव है इस जगह हजरत दाऊद बंदगी की खानगाह है जिस पर हर साल मार्च के महीने में आठ दिन तक बड़ा भारी मेला होता है। इस में ६ हजार के करीब हिन्दू और मुसलमान आते हैं कहते हैं कि इस महात्मा ने बहुत से आश्चर्य काम किये थे ॥

शेरगढ़ में कोई सराय नहीं लोग पुराने घरों में ठहरते हैं ॥

नार्थ वेस्टर्न रेलवे के वान राधाराम स्टेशन से यह नगर १० मील के करीब है स्टेशन पर यक्के किराये पर मिलते हैं ॥

वान राधाराम लाहौर से ६० मील है तीसरे दरजे का किराया ॥=)। लगता है ॥

शोलिंघूर।

मद्रास रेलवे पर स्टेशन है कावेरी पाकतालजो मद्रास अहातेके सब तालों से बड़ा है स्टेशन से ४ मील दक्खिन पश्चिम की तरफ वाके है स्टेशन से ८ मील एक पहाड़ी पर एक मन्दिर है जहां बहुत यात्री आया करते हैं ॥

पहाड़ी के नीचे मिशन स्कूल और जिले के मुन्सिफ की कचहरी है। गाड़ियां किराये पर मिलती हैं ॥

शोलिंघूर मद्रास से ५६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ॥।) और सवारी गाड़ी में ॥=) लगता है ॥

शोलापुर

यह नगर बड़े व्योपार की जगह है और शोलापुर जिले के कलेक्टर, डाकखाने, और तार के दफ़तरों का हैडक्वार्टर है। मकर संक्रान्ती का मेला हर साल जनवरी के महीने में सिद्धेश्वर ताल के किनारे पर एक महीने तक होता है मेले में अनाज कपड़ा तांबे और पीतल की चीजें और शीशे की चीजें बिकती हैं किला जिसको बीजापुर के राजों ने ४०० साल के करीब हुए बनाया था स्टेशन के पास है कमेटी के बाग भी पास हैं। यहां कातने और बुनने की भी कई कलें हैं। एकरुक ताल स्टेशन से ३ मील के करीब है इस का घेरा सात मील के करीब है और पानी गहरा है। नगर से और सरकारी

बंगले से इस झील को पक्की सड़क जाती है। यह ताल आबपाशी के लिये बनाया गया था॥

स्टेशन के पास एक धर्मशाला भी है। शोलापुर जी० आई०पी० रेवेल पर स्टेशन है, इसका फासला बम्बई से २८३ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ४।≈) और सवारी गाड़ी में २॥≈) है॥

श्रमी देवी।

साउथ इण्डियन रेलवे की मनियाची कुईलन ब्रांच पर स्टेशन है इस का फासला मद्रास बीच जंकशन से ४५६ मील है और तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ५-) लगता है। यहां हेड असिस्टैंट कलक्टर और सब रजिस्टरार का हैड क्वार्टर है

स्टेशन से दो मील के फासलेपर एक मन्दिर है जिसको विथिया पथम कहते हैं जनवरी के महीने में इस मन्दिर पर हर साल मेला होता है स्टेशन के पासही हर बृहस्पति के दिन एक और मेला होता है॥

स्टेशन से चौथाई मील के करीब देशियों के लिये लोकल फण्ड चत्तरम याने आश्रम है पर अंगरेजों के लिये कोइ बंगला नहीं॥

सौराथ।

अहाता बंगाल के जिला दरभङ्गा में माधो बेनी से ८ मील पश्चिम की तरफ गांव है इस में महाराजा दरभंगा ने १८४५ में महादेव का मन्दिर बनाया था मन्दिर के पास एक तालाब है जिस के इर्द गिर्द आमों के रूखों का एक सुन्दर झुण्ड है। यह गांव एक बड़े मेले के सबब बहुत मशहूर है जिस में ब्राह्मण लोग अपने बच्चों के बिवाह

को ठीक ठाक करते हैं मेला हर साल जून या जुलाई के महीने में होता है ॥

सेरिंगापटम ।

कावेरी दरया में टापू है पहिले रियासत मैसूर की राजधानी थी यह बड़ा इतिहासी नगर है यहां टीपू सुलतान और अंगरेजों में बहुत लड़ाइयां हुई थीं और इस जगह १७९२ में लार्ड• कार्न वालिस ने टीपू से सुलाहनामा लिखवाया था और १७९९ में जनरल हैरीस ने टीपू को शिकस्त दी थी और इसी लाड़ाई में टीपू मारा गया था। सेरिंगापटम में टूटी हुई फसील, डंजन डी हेवलैंड अर्च रंगा का मन्दिर जामामसजिद, बैलजली पुल और किला देखने के लायक हैं किले के पूर्व की तरफ दरया दौलतबाग है जिस में टीपू सुलतान का गरमी में रहनेका महल है इसमहलमें बादमें डिग्रूकआफ बैलिङ्गटन रहा करते थे इस की दीवारों पर भांति भांति की सुन्दर तसवीर और वेल बूटे बने हुए हैं और आगे पूर्व की तरफ गजाम के पास लाल बाग है जिस में टीपू ने अपने बाप हैदर का मकबरा बनवाया था इसी मकबरे में टीपू भी दफन है। इस मकबरे के दरवाजों पर हाथी दांत का बहुत खूबसूरत काम किया हुआ है यह दरवाजे लार्ड डिलहाजी ने दिये थे। स्टेशन से हैदरअली का मकबरा तीन मील है स्टेशनमास्टर को दरख्वास्त करनेपर गाड़ियां सवारी के लिये किराये पर मिल सक्ती हैं। स्टेशन से १॥ मील के फासले पर बंगला है यहां खाने का बन्दोबस्त आप करना पड़ता है॥

सेरिङ्गापटम सदर्न मरहट्टा रेलवे की मैसूर बंगलोर शाख पर मैसूर से ९ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में) और सवारी गाड़ी में -)॥ लगता है ॥
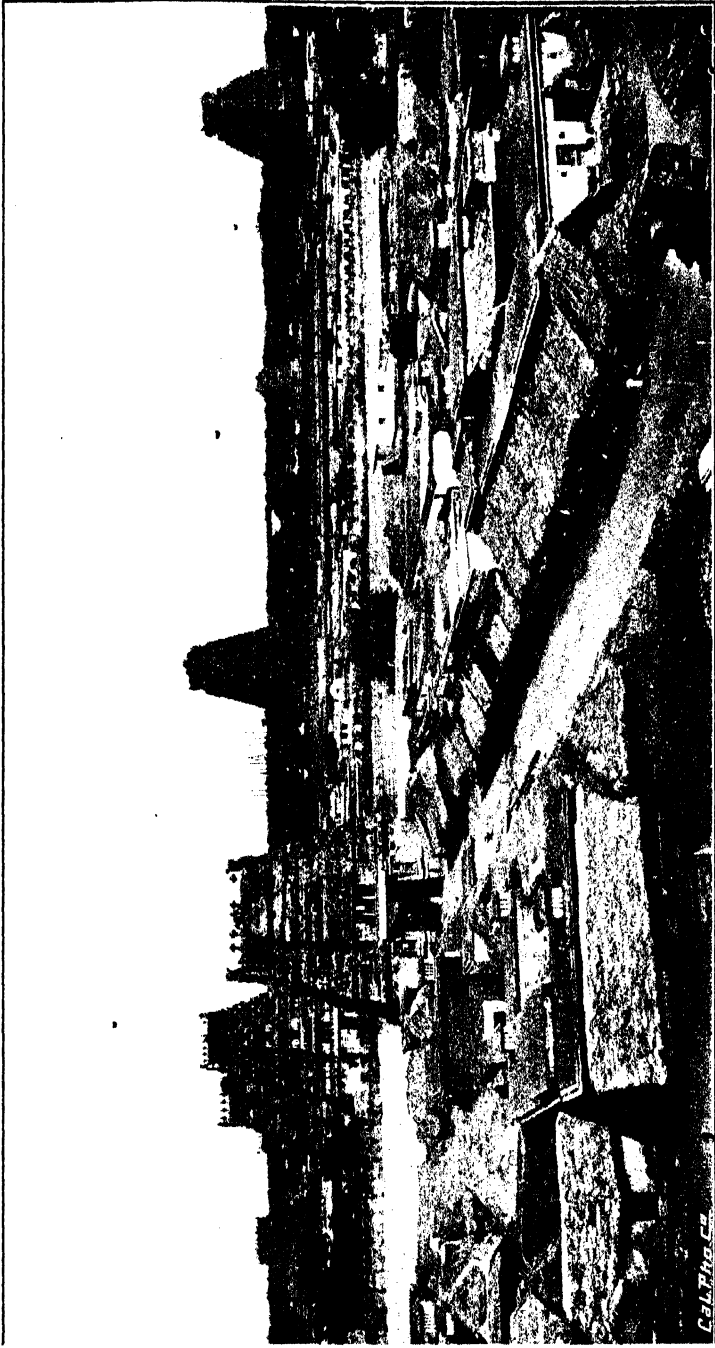
Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

सिरंघम पगोडि त्रिचनापली ।
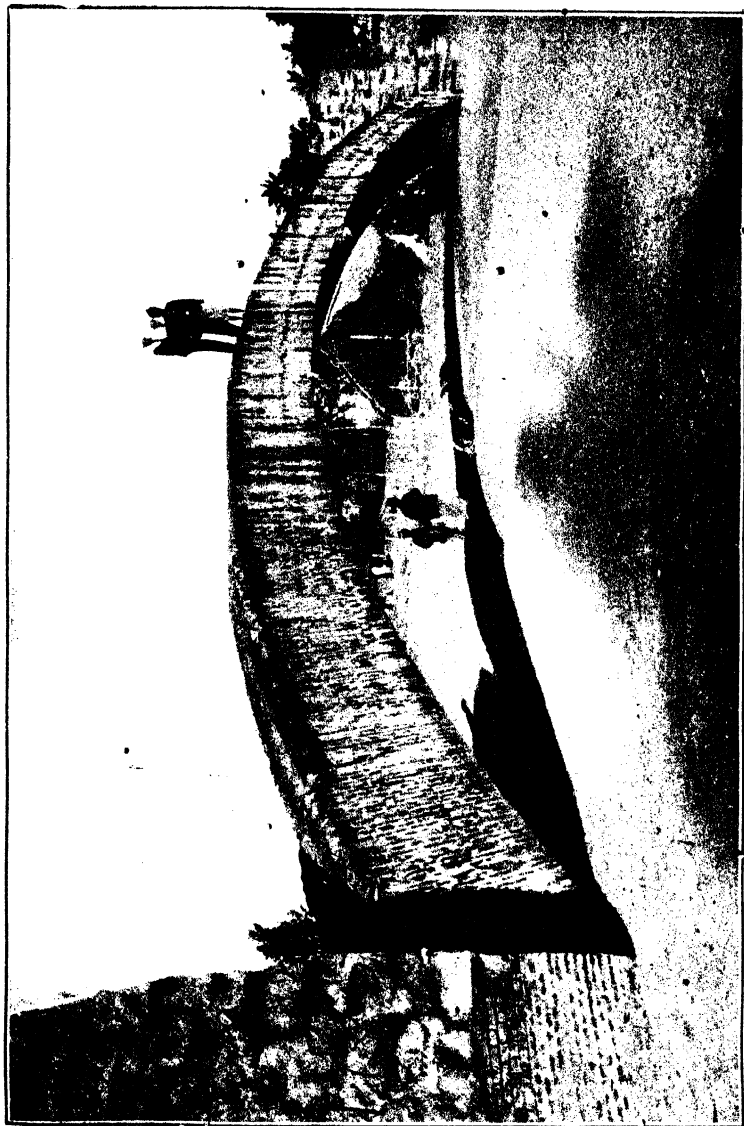
आज़मायशी पुल—सिरंगापटम।

सेवरी नारायण ।

सूबाजात मुतवस्त के बिलासपुर ज़िले में बिलासपुर नगर से ४६ मील पूर्व की तरफ महानदी दरिया के किनारे पर एक नगर है। इस जगह नारायण का मन्दिर है जो मालूम होता है कि ८४१ में बना था। यहां फरवरी के महीने में हर साल बड़ा भारी मेला होता है॥

सेवरी नारायण के लिये बंगाल नागपुर रेलवे का नौलाल स्टेशन पास है पर यहां से कोई सड़क नहीं जाती इस वास्ते यात्रियों को बिलासपुर स्टेशन पर उतरना चाहिये। बिलासपुर में सवारी के लिये बैलगाड़ियां किराए पर मिलती हैं॥

बिलासपुर कलकत्ते से ४४५ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।-) ॥ लगता है॥

सौनदत्ती

बम्बई अहाते के बेलगाम ज़िला पारसगढ़ सब डिवीज़न से सब से बड़ा नगर है। यह बेलगाम नगर से ४१ मील और सदर्न मरहट्टा रेलवे के धारवार स्टेशन से २० मील के क़रीब है सोनदत्ती से चार मील के फासले पर यल्लम्मा देवी का मन्दिर है यल्लम्मा एक ऋषि की स्त्री थी और उस के तीन पुत्र थे एक दिन यल्लम्मा की अन्य आज्ञाकारी के सबब उस का पति ऐसा गुस्से हुआ कि उसने लड़कों को हुकम दिया कि उस को मारडालो। छोटे लड़के ने यह कह कर कि पिता का हुकम मानना ज़रूरी है अपनी माता को मार डाला पीछे लड़का अपने पिता से बोला कि मैं ने आप का हुकम माना और अपनी माता को मारने का पाप किया अब आप माता को जीता कर दें। जब लड़का पीछे पड़ा तो आखिर ऋषि ने मान

लिया और यल्लम्मा को जीता कर दिया पर वह उस से राज़ी नहीं था यल्लम्मा ने उसको खुश करने के लिये तीन वर्ष तक बिना खाये पिये अपने पति की सेवा की और आखिर उसको राजी कर लिया हरसाल नवम्बर दिसम्बर और जनवरी के महीनों में ६० हजार के करीब लोग यल्लम्मा के मन्दिर पर यात्रा को आते हैं ऋषि और इसके छोटे लड़के के मन्दिर भी हैं पर वह ऐसे पवित्र नहीं समझे जाते ॥

धारवार स्टेशन पर बैलगाड़ियां और घोड़े गाड़ियां मिलती हैं ॥

सौनदत्ती में एक धर्म्मशाला और मन्दिर के ऊपर की तरफ एक बंगला है ॥

यहां से बहुत रुई गोकल कलों को जाती है ॥

धारवार पूना से ३२१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४≡) और सवारी गाड़ी में ३।≡)॥ लगता है ॥

सत्तीराकुदी ।

यह स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे की मंडापम शाख पर है उसका फासला मदरास बीच से ४०५ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ५।-) और सवारी गाड़ी में ४॥) लगता है ॥

शिवजी का एक पुराना मन्दिर जिस को ऊथराकोसामंगई कहते हैं स्टेशन से ६ मील दक्षिण पूर्व की तरफ है यहां फर्वरी जूलाई और अगस्त के महीनों में ब्रह्मऊतशावम यानी रथ यात्रा के मेले होते हैं। स्टेशन से २॥ फर्लाङ्ग के फासले पर एक चौलत्री यानी आश्रम है। यहां धान पैदा होते हैं और हर सोमवार को एक मेला लगता है ॥

सारनाथ ।

बुद्ध लोग इस जगह को बुद्ध गया से दूसरे दरजे पवित्र समझते हैं । यह बनारस से ३॥ मील उत्तर की तरफ है साक्य मुनि पहिले इसी जगह बुद्ध धर्म का उपदेश किया करता था और बाजे खण्डर उसी के वक्त के मालूम होते हैं । सब से अजीब एक गुम्मद है जो धरती से ११० फीट ऊंचा और ९३ फीट चौड़ा है इसका नाम धमेक है । यहां दो और स्तूपे और बहुत से खंडर हैं धमेक उसी जगह पर बना हुआ है जहां राजा अशोक ने एक बुर्ज बनाया था ॥

बनारस ईस्टइण्डियन और अवधरुहेलखण्ड रेलवे में कलकत्ते से ४२६ मील और लखनऊ से १९९ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।≈) और २)॥ लगता है ॥

सारसपुर ।

आसाम के दक्षिण में पहाड़ी पर है। इस पर्ब्बत के सिरे पर बदर पुर नगर है जिस में शिव जी का पुराना मन्दिर है शिव जी की यहांपर सिद्धेश्वर के नाम से पूजा होती है । मार्च के महीने में यहां मेला होता है जिस में अनगिनत लोग आते हैं ॥

बदरपुर जंकशन आसाम बंगाल रेलवे पर है इस का फासला चिटागांग से २९२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥≈) लगता है ॥

संकारीडरग ।

यह मदरास रेलवे पर स्टेशन है । यहां से ५ मील के क़रीब त्रिचंगोद है जिस में हिन्दुओं की एक बड़ा मशहूर मन्दिर है ॥

इस मन्दिर के दर्शन को हजारों यात्री आते हैं यहां मई महीने के करीब हर साल एक मेला होता है॥

सङ्कारीडरग मद्रास से २३१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी मे ३) और सवारी गाड़ी में २।≈) लगता है॥

सांची।

भोपाल रियासत में भीलसा से ५ मील दक्षिण की तरफ है जिस पहाड़ी पर सांची का मशहूर टोप है वह गांव से १५ मिनट का रास्ता है। प्राचीन वस्तु विद्या वालों के लिये यहटोप देखने के लायक है। गांव के इर्द गिर्द मीलोंतक बुद्ध लोगों के बहुत से पुराने खण्डर हैं पर सांची में बुद्ध लोगों के पुराने मकान और भी जियादा हैं और अभी तक अच्छे हाल में हैं यहां बुद्ध लोगों की संगतराशी की मूर्त्तें हैं जिन से बुद्ध लोगों की रसमें और पूजा वगैरा का ढंग जैसे अशोक के राज्य में होता था मालूम होता है। सांची की बाबत चीनी यात्री फाहियन ने भी लिखा है वह इसका नाम शाची लिखता है और कहता है कि उन दिनों में यह बड़ी भारी रियासत थी॥

मालूम होता है कि बेसनगर के पुराने नगर और सांची और इर्द गिर्द के असथलों से मालवे के इस हिस्से में बहुत धन आता होगा। बेस नगर उन दिनों में दक्षिण की तरफ बेतवा और बेस दरियाओं के संगम से उदया गिरि पहाड़ी तक और पूर्व की तरफ भीलसा की लोहंगी चटान तक फैला हुआ था। सांची से सधात्रा तक घाटियों में बंधों के निशान हैं जिन से मालूम होता है कि बुद्ध लोग पक्के किसान थे॥

सांची स्टेशन पर तीसरे दरजे के मुसाफिरों के लिये एक मुसाफिर खाना बना हुआ है और स्टेशन से थोड़े फासले पर भोपाल

को बेगम साहिबे का बनाया हुआ बंगला है। सांची स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफिरों को उतारने या चढ़ाने के लिये डाकगाड़ी खड़ी कर दी जाती है अगर सांची और इटारसी या भोपाल के स्टेशन मास्टरों को मुसाफिर खबर कर देवें॥

सांची जी० आई० पी० की बम्बई आगरा लाइन पर स्टेशन है, इस का फासला बम्बई से ५४६ मील और दिल्ली से ४०६ मील है तीसरे दरजे का किराया ६) और ५।≈) लगता है॥

साखीगोपाल।

पुरी की जिले कचहरी से १० मील रेल के रस्ते और २१ मील पक्की सड़क के रस्ते जगन्नाथ की सड़क पर है। इस में श्रीगोपाल जी विष्णु का मन्दिर है जिस के यात्री लोग पुरी में जगन्नाथसे आते हुए दर्शन करते हैं। यहां नारियल का बड़ा व्योपार होता है॥

साखी गोपाल बङ्गाल नागपुर रेलवे पर है इस का फासला कलकत्ते से ३०० मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥≈) और मदरास मेल में ४॥≈) है॥

साखी गोपाल में बहुत धर्मशाला हैं और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

सकरा या पटना या सकरपट्टना।

अहाता मदरास की रियासत मैसूर के जिला कडूर में गांव है जो चिकमंगलूर नगर से १५ मील उत्तर पूर्व की तरफ है। यह गांव एक पुराने नगर की जगह पर बसा हुआ है जिसकी बाबत यहां के लोग कहते हैं कि यह राजा रुकमंगदा की जिसका जिकर महाभारत में है राजधानी थी। यहां हानदिल्ला चौकीदार की समाध देखने के

लायक है हानबिल्ला का अध्ययन कियर ताल जो गांव के पास है कायम रखने के लिये बलिदान किया गया था। यहां हर साल रंगा नाथ का रथ यात्रा का मेला होता है जिस में २००० छत्तेर देवता को बलि दिये जाते हैं। यहां हर शुक्र को भी एक बड़ा मेला होता है॥

सरस्वती।

पंजाब का पवित्र दरिया है रियासत सिरमौर से निकलता है और जिला अम्बाला में जध बदरी मुकाम पर मैदान में पहुंचता है यह मुकाम सब हिन्दुओं के नजदीक बड़ा पवित्र है॥

सरस्वती नाम से जिस के माने हैं तालाबों का दरिया इस के पहले हिस्से की हालत बखूबी मालूम होती है यहां पर शुरू साल में दरिया खुश्क होकर बहुत से अलग अलग तालाब रह जाते हैं जिन के मुतल्लिक एक एक कहावत और एक एक मन्दिर हैं जिनके दर्शन को हजारों यात्री लोग हर साल आते हैं कहते हैं कि सरस्वती महादेव जी की लड़की थी एक दिन उसका बाप नशे की हालत में उस के सत्व को तोड़ने के खियाल से उस के पास आया तो वह भागी और जब अपने बाप को पास आते हुए देखती तो धरती में गोता मार जाती उसके पीछे पीछे दरिया बनता गया और जहां सरस्वती ने धरती में गोता मारा था वहां गायब हो जाता है। पक्के हिन्दुओं का खियाल है कि सरस्वती धरती के नीचे नीचे इलाहाबाद के पास गंगा जी और जमुना जी से जा मिलती है। जहां अमर बड़ के दरख्त के मन्दिर की गुफा की दीवारें पर नमी इस बात को जाहर करती है कि दरिया वहां मौजूद है बाजबाज आर्यों की पहली बस्तियां इस दरिया के किनारे पर कायम हुई थीं और आस पास का मुल्क वेदों के जमाने से पवित्र समझा जाता है॥

सलसत्ते ।

बम्बई जजीरे के उत्तर की तरफ एक जजीरा है, यहां दोनो एक पुल और ऊंची सड़क से मिला दिये गये हैं सलसत्ते चैतिया खोह के सबब मशहूर है जो कनेरी में है यह खोह पांचवीं सदी का है लेकिन बिहारे उस से भी पहले के हैं चौथी सदी में सलसत्ते बुद्ध के दांत के सबब मशहूर था ॥

बम्बई कलकत्ते से ३४६ मील है और तीसरे दरजे का किराया १२) लगता है ॥

सातापुर ।

जी० आई० पी० रेलवे पर चितराकोट पवित्र पर्वत के पास पैसूनी नदी के बाएं किनारे पर है । बड़ाबाजार नदी के किनारे पर है और वहां बहुत से खूबसूरत और पुराने मन्दिर हैं जिनको सारे हिन्दुस्तान देश के हिन्दू पवित्र मानते हैं और आदर करते हैं ॥

चित्राकोट झांसी से १५७ मील है तीसरे दरजे का किराया २) लगता है ॥

सिंगापेरुमल कोइल ।

विष्णु के मन्दिर के सबब से जो एक छोटी सी पहाड़ी पर है इस जगह का नाम सिंगापेरुमल होगया है । इस गांव में हरसाल मई के महीने में एक तेहवार होता है । स्टेशन से एक फरलांग के फासले पर एक चोलत्री याने आश्रम है, जिस को सम्वत १६०० में मदरास के सौदागरों मोज़ज़ और कम्पनी के हिस्सेदार एम० आर० सी० पथोराजूलू चेट्टी गरु ने मन्दिर के दर्शन को आने वाले यात्रियों के विश्राम के लिये बनाया था ॥

यह स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे की मद्रास टूटी कर्णब्रांच पर वाके है मद्रास बीच जंकशन से इस का फासला ३२ मील है और तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ।=) और सवारी गाड़ी में ।=)॥ लगता है ॥

साहडोल ।

बंगाल नागपुर रेलवे पर है सोहागपुर नगर स्टेशन से थोड़ीदूर है। यह नगर ब्योपार की जगह है। और बहुत पुराना है इस का पुराना नाम विर्तपुर है और इस में एक ताल है जिस को बानगंगा कहते हैं और एक बड़े राक्षस कचिका का मन्दिर है जिस को पांडव और कौरव की लड़ाई में भीम ने माराथा कहते हैं पांडव अपने बनबास में एकवर्ष इस जगह राजा विदर के पास छुपे रहे और इसी जगह पांडव और कौरव में पहिली लड़ाई हुईथी और दकोरा तेहवार के दिन उस रूख को जिस के पीछे पाण्डव ने अपने हथियार छुपाए थे अबतक पूजा होती है। चांद या सूर्य ग्रहण के मौके पर यहां का ताल बहुतही पवित्र समझा जाता है यहां पत्थर का कोयला भी निकलता है ॥

साहडोल कलकत्ते से ५६५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६-)॥ लगता है ॥

सागर ।

अहाता बंगाल में हुगली दरिया के दाहने पर एक टापू है इस जगह जनवरी के महीने में बड़ा भारी मेला होता है जिस में बहुत यात्री बंगाल के सब हिस्सों से पवित्र दरिया में स्नान करने आते हैं और उन में जियादा औरतें होती हैं इस मौके पर ब्योपार

भी बहुत होता है। १८६४ के भौंचाल से इस टापू में बहुत नुकसान हुआ था ॥

कलकत्ते से सागर तक अगनबोट में तीसरे दरजे का किराया ३) लगता है ॥

भागीरथी के नीचे सागर का बाकी हाल देखो ॥

सादूल्लापुर ।

अहाता बंगाल के ज़िला मालदा में गांव है। भागीरथी का सब से पवित्र घाट इस जगह पर है और हिन्दू लोग मुरदे दूर दूर से यहां लाते हैं क्योंकि यह बहुत पुराना मरघट और स्नान करने की जगह है। मार्च के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है ॥

श्रीरंगम ।

कावेरी दरया के जज़ीरे में त्रिचनापली से दो मील उत्तर की तर्फ़ एक कसबा है जज़ीरे में पहुंचने के लिये एक लम्बा पुल बना हुआ है। यह कसबा विष्णु के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है यह मन्दिर हिन्दुस्तान में सब से बड़ा है उस की इस वक़्त की ऊंचाई २०० फीट है ॥

दर्मियाना अहाते के साथ का अहाता निहायत खूबसूरत है इस में पील पाओं का दालान है जिस की लम्बाई ४५० फीट और चौड़ाई १३० फीट है सतून लाल रंग के एक एक पत्थर के बने हुए हैं और बड़ी मेहनत से मुनक़्क़श किये गये हैं दूर से १४ या १५ बड़े बुर्ज अच्छा नज़ारा देते हैं यहां पर चन्द खूबसूरत बाग़ और तालाब भी हैं सब मकान १७ और १८ सदी के हैं ख़याल किया जाता है कि सब मकान वग़ैरह बैकुण्ठ यानी विष्णु के स्वर्ग की नक़ल हैं ॥

श्रीरंगम रामनया के रहने की जगह होने के सबब मशहूर है जो वेसिशता देवता फिलासफी का बनाने वाला था कहते हैं वह १२० साल की उमर तक जीता रहा मन्दिर के एक आंगन में रामानया का स्थान है ॥

श्रीरंगम में देशी आर अंग्रेज़ लोगों के लिये कोई आश्रम नहीं यात्री लोगों को किराये पर मकान मिल सकते हैं ॥

श्रीबिलली पुतूर ।

मद्रास अहाते के तिनिवेली ज़िले में श्रीबिल्लापुतर तालुक का सदर मुकाम है। इस में २० हज़ार की आबादी है और हर साल रथ यात्रा के मेले आदि (जूलाई—अगस्त) के महीने में ९ दिन तक होते हैं जिस में १० हज़ार के क़रीब लोग आते हैं, श्रीबिल्लीपुतूर जाने के लिये साऊथ इण्डियन रेलवे के सत्तूर स्टेशन पर उतरना चाहिये इसका फासला श्रीबिल्लीपुतूर से २५ मील है और वहां बैल गाड़ियां १॥) रुपया व २) रुपया तक किराये पर मिलती हैं पर मेले के दिनों में उनका किराया २) से ३॥) रुपया तक हो जाता है। श्रीबिल्लीपुतूर और सत्तूर में अंग्रेजों और देशी लोगोंके लिये बङ्गले और चत्तरम हैं ॥

श्रीबिल्लूर में मोटा कपड़ा पीतल और कांसी के बर्तन बनते हैं। मोटा कपड़ा, अनाज और रूई बाहर जाती है बारीक कपड़ा, और अंग्रेजी और देशी चीजें बाहर से आती हैं ॥

सरिंगा ।

मदरास अहाते में मैसूर रियासत के कदूर जिले में तुंगा दरिया के बांयें किनारे पर एक पवित्र गांव है। कहते कि सारिंगा ऋषि ने इस जगह जन्म लिया था और विभांदका ऋषि यहां तप किया करते

थे आठवीं सदी में शङ्कराचार्य काश्मीर से सारद अम्बा या सरस्वती की मूर्ति लाया और यहां अपना स्थान बनाया ॥

सारिंगा स्वामी जिस का नाम नरसिंह अचारी था और जो स्मारत ब्राह्मणों का जगत् गुरु था बड़ा बुद्धिमान था गांव में एकही बाजार है और इसकी पहाड़ी पर सारद अम्बा का मन्दिर है यहां साल में कई तेहवार होते हैं जिन में ३ हजार से १० हजार तक लोग आते हैं। इन मौकों पर सब यात्रियों को मठ की तरफ से बिना दाम खाना मिलता है और औरतों को कपड़े और आदमियों को पैसे दिये जाते हैं ॥

कदूर में इस गांव को जाने के लिये सवारी मिलती है ॥

कदूर सदर्न मरहट्टा रेलवे पर बंगलोर शहर से १२७ मील है तीसरे दरजे का किराया १।~)। लगता है ॥

सल्लूरुपटा ।

मदरास रेलवे पर स्टेशन है और पोलूर डिवीजन के तहसीलदार का सदर मुकाम है यह कलुंगी दरिया के बायें किनारे पर वाके है और पोलूर से २ मील पूर्ब की तरफ है। पोलूर में एक बड़ा मन्दिर है जिस में कई मेले होते हैं और बहुत लोग आते हैं ॥

यह स्टेशन मदरास से ५२ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥=) लगता है ॥

सुलतानपुर ।

सूबा पंजाब के जिले कांगड़ा और कुलू तहसील में नगर है जो ब्यास दरिया के दाहने किनारे पर वाके है ॥

यह नगर कुलू के राजों सिक्खों और अब अंग्रेजों के इन्तिजाम

की जगह रही है पर अब सब डिवीजन का सदर मुकाम ब्यास से ऊपर नगर में है ॥

यहां पर हरसाल बड़ाभारी मेला होता है जब ८० छोटे २ देवता रघुनाथ जी को दण्डवत करने जाते हैं ॥

एशिया और हिन्दुस्तान में इस रस्ते बहुत ब्योपार होता है यहां एक सराय भी है । पठान कोट से धर्मशाला नगर तक तांगे और एके और वहां से टट्टू और खचरें सुलतानपुर तक जाती हैं ॥

सुलतानपुर जाने के लिये नार्थ वेस्टर्न रेलवे की अमृतसर पठानकोट शाख के पठानकोट स्टेशन पर उतरना चाहिये । अमृतसर से पठान कोट ६७ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है ।

श्रीनगर ।

सूबा पंजाब के उत्तर की तरफ़ कश्मीर रियासत का राजधानी है और खूबसूरत घाटी में जेहलम दरिया के दोनों किनारों पर वाके है । शहर के दोनों हिस्से ७ पुलों के जरिये मिले हुए हैं दरिया पर कई सुन्दर घाट बने हुए हैं और शहर में नहरें हैं यहां कई बाजार और मण्डियां हैं जिन में से महाराज गंज बहुत खूबसूरत है उस में कश्मीर की बनी हुई सब चीजें मिल सक्ती हैं ॥

झील डल जिस की मूर साहब ने अपनी किताब लाला रुखने बड़ी तारीफ़ की है शहर के उत्तर पूर्व की तरफ़ है इस झील की लम्बाई ४ मील और चौड़ाई २॥ मील है । इस पर बहुत जगह तैरने वाले बाग़ हैं इन में खीरा, ककड़ी और खरबूजे बहुत पैदा होते हैं । तैरने वाले बाग बहुत अजीब हैं और देखने के लायक हैं ॥

जहांगीर बादशाह की बनाई हुई सैरगाह जिस को शालामार बाग कहते हैं नसीम या राहत बाग जिस की बाबत कहते

हैं कि अकबर ने बनाई थी और निशात बाग बहुत खूबसूरत है शहर की बड़ी बड़ी इमारतें यह हैं:—

(१) बारादरी (२) किला (३) महल (४) शंकराचार्य का मन्दिर और तख्त सुलैमान जहां से शहर का बड़ा अच्छा नजारा दिखाई देता है ॥

गुलमर्ग श्रीनगर से २८ मील है यहां का नजारा बहुत खूबसूरत है अंग्रेज लोग दूर २ से इसको देखने आते हैं पर रस्ता छोटा है और उस पर घोड़े के सिवाय और सवारी नहीं जा सक्ती ॥

पंजाब से कश्मीर को पांच सड़कें जाती हैं मरी का रास्ता सब से छोटा है पर पीर पंजाल का सबसे खूबसूरत है। मरी और रावल पिंडी में तांगे बहुत मिलते हैं रावलपिंडी से श्रीनगर तक यक्के का किराया २७) रुपया से ३०) रुपये तक होता है। यक्का ५ दिन में श्रीनगर पहुंचता है रस्ते में सब पड़ाओं पर अंग्रेजों और देशियों के टिकने के लिये मकान बने हुये हैं ॥

रावलपिंडी कलकत्ते से ईस्टइण्डियन और नार्थ वैस्टर्न रेलवे में १३९३ मील बम्बई से जी० आई० पी० और नार्थवैस्टर्न रेलवे में १४८६ मील और बी० बी० एंड सी० आई याने बम्बई की छोटी लाइन के रस्ते १२७८ मील है तीसरे दरजे का किराया १४-) १५॥≡) और १२॥-) लगता है ॥

श्रीनगर में एक सराय है और नीडो का होटल गरमी में खुल जाता है।

सोरन।

सूबा आगरा और अवध के जिला इटा और तहसील कासगंज में बढ़गंगा के किनारे पर नगर है। इटा से उत्तर पूर्व की तरफ बरेली

हाथरस को सड़क पर २७ मील के फासले पर वाके है। सोरन बड़ा पुराना नगर है पहिले इस का नाम उकाला क्षेत्र था पर जब विष्णु ने शेर के अवतार में हिरण्यकश्यप राक्षस को मारा तो इस का नाम सुकारा क्षेत्र हो गया। इस जगह बहुत से यात्रा के मेले होते हैं। हिन्दू लोग मथुरा से लौटते हुये सोरन आकर बढ़गंगा में जिस के किनारे पर बहुत से सुन्दर मन्दिर और घाट बने हुये हैं स्नान करते हैं। सोरन में आधे के करीब ब्राह्मण बसे हुये हैं उन के सिर पर लाल पगड़ी होती है। मन्दिरों के गिर्द पीपल के रूख लगे हैं। गिनती में यहां सारे ६० मन्दिर हैं सोरन का सब से बड़ा मेला नवम्बर के महीने में एकादशी का होता है इस दिन भगवान् ने अजमर के पास पुस्कर पवित्र जगह में जन्म लिया था। मेला १५ दिन रहता है और इस में हजारों यात्री आते हैं॥

सोरन से दो मील एक छोटी सी नदी के किनारे पर ऋषि भागीरथ की गुफा है। भागीरथ इस जगह हजारों वर्ष तक तप और पूजा पाठ में लगा रहा आखिर उस की बिनती मनजूर हो गई और गंगा जी ने स्वर्ग से आकर राजा सागर के लड़कों को जो कापला मुनि के श्राप से भस्म हो गये थे मुक्ति कराई, इसका पूरा हाल भागीरथी के नीचे देखो॥

सोरन में एक सराय और ६ सुन्दर धर्मशालायें हैं पर यात्री लोग अपने प्रोहितों के घरों में ठहरते हैं। सोरन में अनाज का बड़ा व्योपार होता है॥

सोरन रूहेल खंड कुमाऊं रेलवे पर है इस का फासला बरेली से ५५ मील, कानपुर से १६२ और आगरा फोर्ट से १०२ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥~)।, १~) और १~) लगता है॥

सोनपुर ।

अहाता बंगाल के जिला सारन में बड़ा मशहूर गांव है । यह गंडक और गंगा जी के संगम पर वाके है और बड़े मेले के सबब से जो कार्तिक के महीने में पूरे चांद के मौके पर दस दिन तक होता है मशहूर है यह मेला हिंदुस्तान के सब मेलों से पुराना है कहते हैं कि रामचन्द्र जी और सीता जी के जमाने से चला आता है, और सोनपुर में ही विष्णु ने एक हाथी को जो पानी पीने गया था मगर मच्छ से बचाया था और पीछे इस जगह रामचंद्र जी ने सीता के जीतने के वास्ते जनकपुर जाते हुये एक मन्दिर बनाया था इस सबब से सोनपुर बहुत पवित्र समझा जाता है । मेले में बहुत लोग आते हैं मेले के पहिले और पिछले दो दो दिन गंगा जी में स्नान होता है ॥

हाथी घोड़ों और अङ्गरेजी चीजों का ब्योपार होता है । सोनपुर में हर साल घोड़दौड़ भी होती है ॥

सोनपुर बंगाल नार्थ वैस्टर्न रेलवे का जंकशन है इसका फासला काटीहार से ९७० मील है और तीसरे दरजे का किराया ११०) है ॥

सोनगढ़ ।

बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे पर पालीताना से १५ मील के फासले पर है । यहां एक बड़ी अच्छी धर्मशाला है और पालीताना जाने के लिये असिसटंटपुलिटिकल एजंट को दरख्वास्त करने पर सवारी मिल सकती है ॥

पालीताना में जैनियों के बड़े बड़े और नामी मन्दिर हैं, शत्रुंजय पहाड़ी की सारी चोटी पर मन्दिर बने हुये हैं । वहां कई धर्मशालायें हैं सवारी के लिये डोलियां मिल सक्ती हैं, डोली का किराया ६ आने से दो रुपये तक होता है ॥

सोनगढ़ भावनगर से १८ मील है तीसरे दरजे का किराया ।)
लगता है ॥

सोनगिर ।

जी० आई० पी० रेलवे पर है। स्टेशन के पास एक पहाड़ी पर बहुत से मन्दिर हैं जिनके दर्शन को यात्री हिंदुस्तान के सब हिस्सों से आते हैं। यह जगह रेल में से दिखाई देती है। जैनी लोग इस जगह को बहुत पवित्र मानते हैं मन्दिर कई ढंग के बने हुए हैं। जैनियों का नया मन्दिर बहुत सुन्दर है। स्टेशन पर वेटिंग रूम बने हुये हैं ॥

सोनागिर बम्बई से ७२५ मील और दिल्ली से २३२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ११।-) और ३।≈) और सवारी गाड़ी में ८।) और ३≈) लगता है ॥

सोमनाथ ।

अहाता बम्बई की जूनागढ़ रियासत में पुराना नगर है जो वेरावाल बंदर के पास वाके हैं। यह बड़ा पवित्र और इतिहासी नगर है। यहां माल और फौजदारी के अफसर भी रहते हैं समुद्र के किनारे पर शिवजी का बड़ा भारी मन्दिर है। मन्दिर के पीछे एक हौज़ है जिसको भातकुण्ड कहते हैं, कहते हैं कि यहां कृष्ण जी का काल हुआ था सोमनाथ के इर्द गिर्द कृष्ण जी की यादगार की बहुत जगह हैं उन में से सब से बढ़कर तीन नदियों के संगम पर एक जगह नगर के पूर्व की तरफ है यहां कहते हैं कि कृष्ण जी की लोथ जलाई गई थी। यहां और भी हिंदुओं के मन्दिर हैं यहां बहुत यात्री आते हैं यह नगर कई हिन्दू और मुसलमान राजों के हाथ में रहा है ॥

सोमनाथ में लकड़ी और लोहे के बने हुए ताले बहुत मशहूर हैं। इस नगर को देव पट्टन, प्रभास पट्टन, वेरावाल पट्टन या पट्टने सोमनाथ भी कहते हैं॥

वेरावाल भावनगर जूनागढ़ पोरबन्दर रेलवे पर है इस का फासला भावनगर से१७८मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥-) लगता है॥

सीतामढ़ी।

अहाता बंगाल के जिला मुज़फरपुर में नगर और सीतामढ़ी सब डिवीजन का सदर मुकाम है जो लखनदेई के पश्चिमी किनारे पर वाके है। चैत्र के महीने में बड़ा भारी मेला होता है इस का सब से बड़ा दिन शुक्ल पक्ष की नौमी या रामनौमी याने रामचन्द्र जी के जन्म का दिन होता है यह मेला १५ दिन रहता है और दूर दूर से लोग आते हैं कहते हैं कि एक दिन राजा जनक हल चला रहा था हल एक मिट्टी के बासन में लगा जिस में से सीता जी निकल आई। यहां ६ मन्दिर हैं जिन में से ५ सीता के मन्दिर के अहाते में हैं, यह मन्दिर सीता, हनुमान्, शिव और दही के हैं॥

इस जगह जन्जू बनते हैं। चावल, सखवा की लकड़ी तेल के बीज और चमड़े का व्योपार होता है॥

सीता मढ़ी बंगाल नार्थ वैस्टर्न रेलवे पर स्टेशन है इस का फासला दरभंगा से ४२ मील है तीसरे दरजे का किराया।≈) लगता है॥

सीपी।

सूबा पंजाब के जिला शिमला में एक छोटी सी रियासत कोटी में गांव है। यहां के राजा को १८५७ के गदर में मदद करने के सबब

राना का खिताब मिला था। राना के बाप दादा बड़े पटना से आए थे मशोबरा भी कोटी रियासत में है मशोबरे के पूर्व की तरफ एक घाटी में सीपी गांव है जहां हरसाल मई के महीने में मेला होता है इर्द गिर्द के पहाड़ी गावों और शिमले से देशी और अंग्रेज इस मेले में बहुत आते हैं। नलदेरा भी कोटी रियासत में छोटा सा गांव है जो एक सुहावने मैदान पर वाके है अंग्रेज लोग यहां अकसर सैर के लिये जाते हैं सीपी शिमले से ७ मील के करीब है और नलदेरा १२ मील के करीब शिमले से यहां जाने के लिये रिक्षा गाड़ियां और घोड़े मिलते हैं॥

सीता कुण्ड।

सूबा पूर्वी बंगाल और आसाम के जिला चिटा गांव में सीता कुण्ड पर्व्वत की सब से ऊंची चोटी है। कहते हैं यहां एक पवित्र पानी का चश्मा भी था जो अब सूख गया है पर उसकी जगह को हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और यात्री हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से आते हैं कहते हैं कि यहां रामचन्द्र जी और शिवजी दोनों आये थे और शिव जी की पृथ्वी पर यह सब से मन भावनी रहने की जगह है। फरवरी के महीने में शिव चतुर्दशी चांद की चौदहवीं रात को मेला होता है जो दस दिन तक रहता है इस में २० हजार के करीब लोग आते हैं। इस जगह के ब्राह्मणों ने जिन को अधिकारी कहते हैं घर बनाये हुये हैं जिन में यात्री लोग ठहरते हैं कहते हैं ब्राह्मणों को मेले के दिनों में ४५ हजार से ६० हजार तक रुपया आता है। सीताकुण्ड या चन्द्रनाथ पर्व्वत पर चढ़ने से यात्री अगले जन्म की तकलीफ से बच जाते हैं। बंगाली साल के आखरी दिन एक जगह इस पर्व्वत पर बुद्ध लोगों का भी मेला

होता कहते हैं कि यहां बुद्ध की लोथ जलाई गई थी। बुद्ध लोग अपने मरे हुए सम्बन्धियों की हड्डियां एक गढे में लाकर डालते हैं यहां और भी कई छोटे छोटे मले मार्च और नवम्बर के महीनों में और सूर्य और चांद ग्रहण के मौकों पर होते हैं॥

सीता कुण्ड आसाम बंगाल रेलवे का स्टेशन है, इस का फासला चिट्टागांव से २३ मील है और तीसरे दरजे का किराया।~)॥ लगता है॥

सिंगारा या कोंडा।

मद्रास रेलवे पर एक छोटा सा गांव है। जिस की आबादी १०६८ है। यह गांव समुद्र से ४ मील और तालुक के हैडकार्टर कन्दूकर से ८ मील के फासले पर है इसजगह दो मन्दिर हैं, एक नरसिंहा स्वामी का और दूसरा बरह्या स्वामी का, अप्रैल के महीने में दूसरे मन्दिर का मेला होता है॥

मद्रास से इस स्टेशन का फासला १६५ मील है और तीसरे दरजे का किराया २।~) लगता है॥

सिधपुर।

बड़ोदा रियासत के कादी जिले में अहमदाबाद से ६४ मील सरस्वती पवित्र दरिया के किनारे पर नगर है। इस जगह रुद्रामाला शिवजी का मन्दिर है जिसकी बाबत डाक्टर बरजस साहब लिखते हैं कि इसके बड़े बड़े टुकड़े जो अब तक हैं देख कर हैरान होजाते हैं। सिधपुर बड़ी मशहूर हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है और सब जातों के यात्री मन्दिर के दर्शन करने और दरिया में स्नान करने के लिये आते हैं। यहां एक पवित्र पाठशाला या स्थल भी है। केवलापुरी गसाबी अतीत लोगों के लिये सिधपुर से १५ मील उत्तर की

तरफ पुराना नगर पटन है यह पहले बलहारा वंश के राजों की राजधानी थी और कहते हैं ४७५ ई० में बना था और होते होते बड़ा भारी नगर बन गया था। १००० ई० में इस का घेरा १८ मील था जिस में बहुत से मन्दिर और कालिज थे और मालूम होता है कि उस वक्त यह बड़े व्योपार की जगह थी क्योंकि हर रोज चुंगी का महसूल ५ हज़ार रुपये होता था। यह गुजरात के हाकमों की देर तक राजधानी रही चौदहवीं सदी में राजधानी अहमदाबाद में बदल गई और नई राजधानी को सजाने के लिये पटन का कुछ हिस्सा गिरा दिया गया था पर अब भी छोटे बड़े बहुत मन्दिर हैं सब देखने के लायक हैं। यहां की आबादी ४० हजार के करीब है जिस में से बहुत हिस्सा जैनियों का है जिनकी पुस्तकशालाएं बड़ी अजीब हैं इन में बहुत सी किताबें खजूर के पत्तों पर लिखी हुई हैं॥

सिधपुर बी० बी० ऐण्ड सी० आई रेलवे का स्टेशन है इस का फासला बम्बई से ३७४ मील और ४७५ मील दिल्ली से है और तीसरे दरजे का किराया ४) और ४।) लगता है॥

स्टेशन के पास देशी लोगों के लिये एक धर्मशाला है और एक बंगला भी जिस में अंग्रेज लोग रियासत की इजाजत से ठहर सक्ते हैं॥

सिध्देश्वर।

सूबा पूर्वी बंगाल और आसाम में सारसपुर पर्ब्बत के पास एक गांव है। यहां हिन्दुओं का एक नामी मन्दिर है और मार्च के महीने में यहां मेला होता है जिस में ३ हजार के करीब लोग आते हैं। उन्हीं दिनों में दरिया के दूसरे किनारे पर एक स्नान मेला होता है। कहते हैं कि पतंजली के साथी ऋषि कपिला मुनि इसी जगह रहा करते थे॥

इस गांव के लिये असाम बंगाल रेलवे बदरपुर स्टेशन पर उतरना चाहिये। चिट्टागांग स्टेशन का फासला २५२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥।≈) लगता है॥

सियालकोट।

सूबा पंजाब में शहर छावनी और जिला सियालकोट का सदर मुकाम है जो नार्थ वैस्टर्न रेलवे की वजीराबाद जम्बू शाख पर पेशावर से २५३ मील और दिल्ली से ४३८ मील के फासले पर वाके है तीसरे दरजे का किराया इन दोनों मुकामों से २॥।≈)॥ और ४॥)॥ है। कहते हैं कि इस शहर को पांडव के चचा राजा साल ने बसाया था। सन् ७० ई० के करीब राजा सालिबाहन ने इस को फिर आबाद करके अपनी राजधानी बनाया। राजा के पुत्र रसालू की बहादुरी की बहुतसी बातें हिन्दुओं में मशहूर हैं रसालू की गखड़ लोगों के सर्दार राजा हूदी से बहुत दिन तक लड़ाई होती रही आखिर जब हार हुई तो अपनी पुत्री का विवाह हूदी के साथ करके उस से सुलह करली और राजा रसालू के बेटा न होने के सबब उस के मरने के बाद राज्य गद्दी राजा हूदी के हाथ आगई॥

सियालकोट खुला, खूबसूरत और सुथरा शहर है। बाजार भी खुले हैं और सफाई का इन्तजाम अच्छा है। यह शहर बड़े व्योपार की जगह है, सूसी और कागज बनता है। यहां के नावडे बड़े ब्योपारी और धनी हैं शहर में मुसाफिरों के लिये बहुत सरायें हैं और छावनी में स्टेशन से २॥ मील के करीब एक बंगला है। गाड़ियां और यक्के हर वक्त किराये पर मिलते हैं। इस शहर में जो मकान देखने के लायक हैं नीचे लिखे जाते हैं॥

१ किला जो अब गिर गया है॥

२ तेजासिंह का मन्दिर॥

३ बाबा नानक साहिब की समाध, यहां हर साल बड़ा भारी मेला लगता है ॥

४ दर्बार बावली साहिब यह एक छत दार कुआ है जो एक सिक्ख राजपूत ने बनवाया था 'यह भी सिक्खों की बड़ी पवित्र जगह है ॥

५ इमामअली अलहक की खानगाह यह बड़ी खूबसूरत इमारत है ॥

इनके सिवाय जिले के दफतर भी हैं ॥

छावनी सियालकोट शहर से एक मील के करीब उत्तर की तरफ वाके है बड़ी खुली और खूबसूरत बनी हुई है इस का आम बाग २७ एकड़ में फैला हुआ है इस में खेलने के मैदान पुस्तकालय हैं ॥

हरिद्वार ।

सूबा आगरा और अवध में बड़ा पुराना नगर है। इस के कई नाम हो चुके हैं। हरिद्वार या विष्णु का दरवाजा बहुत पुराना नहीं है। इस के पुराने नाम मायूरा या मायापुर इस को शिव जी का स्थान जाहर करते हैं। अकबर के राज्य में अबुलफज़ल लिखता है कि गंगा जी के किनारे पर हरिद्वार की धरती ३६ मील तक पवित्र है। उस से अलग राज्य में टाम कोरट साहिब यहां गये और इस को हरा द्वारा या शिव जी का द्वारा लिखते हैं। शिव जी और विष्णु के आधीनों में आज तक झगड़ा है कि दोनों देवताओं में से किस ने गंगा जी को बनाया। दोनों विष्णु पुराण का हवाला देते हैं जिस में लिखा है कि गंगा जी विष्णु ने और अलकनन्दा या गंगा जी की पूर्वी शाख शिवजी ने बनाई। शिवजी के आधीन कहते हैं कि इस का नाम हराद्वारा या शिव जी का द्वारा है और विष्णु के

आधीन कहते हैं कि हराद्वारा या विष्णु का द्वारा कहते हैं। हरिद्वार के और भी नाम हैं इस को कपिला या गापिला भी कहते हैं और एक जगह कपिल ऋषि के नाम पर अब तक कपिला स्थान कहलाती है हियून संग चीनी बुद्ध यात्री सातवीं सदी ई० में यहां आया और एक नगर का नाम मोयंली लिखता है जिस के खण्डर आज कल के नगर के दक्खिन में अब तक हैं। हरिद्वार के मन्दिर जिन के दर्शन यात्री करते हैं यह हैं:—

(१) चन्दी पहाड़ गंगा जी के बाएं किनारे पर है॥

(२) माया देवी का मन्दिर॥

(३) सरवनाथ का मन्दिर इस के बाहर बुद्ध की मूर्त्ति है॥

हरिद्वार में हरि के चर्ण घाट सब से बढ़कर है, और इस के पास गंगा द्वारा मन्दिर है घाट की ऊपर की दीवाल में एक पत्थर है जिस पर विष्णु के पाओं का निशान है यात्री लोग इसका बड़ा आदर करते हैं। बैशाख महीने के पहिले दिन यहां बड़ा भारी मेला होता है इसी दिन गंगा जी आकाश से पृथ्वी पर आई थी। बारहवें साल कुम्भ का मेला होता है जिस में अनगिनत लोग आते हैं इन के सिवाय होली, दखौती, दशहरा ज्येष्ठ और कार्तिक पूर्नो के मेले हरिद्वार से एक मील के फासले पर मार्च, अप्रैल, जून, और नवम्बर के महीनों में होते हैं जिन में ६ हजार ८० हजार, ८ हजार और ५ हजार यात्री आते हैं॥

कनखल यहां से २ मील के करीब दक्खिन पूर्व की तरफ है इस में कई मन्दिर हैं और बहुत यात्री यहां जाते हैं। कनखल के नामी मन्दिर यह हैं (१) राजा दक्षप्रजापति का मन्दिर (२) सतीकुण्ड (३) राजा कन्धौरा का मन्दिर और (४) दक्ष स्थान जहां राजा दक्षने यजन किया था पर उस में शिवजी सति के पति को न बुलाया बल्कि

उसको गालियां दी सती को अपने पति को विना कसूर गालियां देते सुनकर क्रोध आया और उसने उस जगह जिस को सतीकुण्ड कहते हैं योगअग्नि से अपना शरीर भस्म किया ॥

हरिद्वार अवध रुहेलखण्ड रेलवे पर स्टेशन है कलकत्ते से इसका फासला ९२१ मील और सहारनपुर से ४६ मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥।~) और ॥≈)। लगता है ॥

हरिद्वार में बहुत धर्म्मशालायें हैं ॥

हस्तिनापुर ।

सूबा आगरा और अवध के जिला मेरठ में पुराने हस्तिनापुर की जगह के पास एक गांव है। पुराने हस्तिनापुर को हस्तिने जो बलवंत राजा भरत के वंश में से था बसाया था और इस जगह पांडव और कौरव में बड़ी भारी लड़ाई हुई थी। पुराना नगर अब अलोप होगया है। नया गांव मेरठ से २२ मील है और हिन्दू इसको पवित्र मानते हैं॥

कातिक के पूरे चांद के मौके पर जैनियों के ऋषियों और महापुरुषों की यादगार में एक मेला होता है जिस में २० हजार के करीब यात्री आते हैं जिन में जियादा श्रावगी होते हैं जैनियों के दोनों मन्दिरों के साथ कुछ मकान बने हुये हैं जिन में यात्री लोग उतरते हैं ॥

मेरठ में हस्तिनापुर जाने के लिये बैल गाड़ियां और यक्के मिलते हैं। बैलगाड़ी का आने जाने का किराया १५) रु० और यक्के का ८) होता है यक्के मनावां तक ही जासक्ते हैं क्योंकि अगले ६ मील का रास्ता कच्चा है ॥

मेरठ शहर नार्थ वेस्टर्न रेलवे में दिल्ली से ४१ मील है तीसरे दरजे का किराया।≈)॥। लगता है ॥

हिन्दौन ।

राजपूताना की जयपुर रियासत में नगर है जो आगरे से महू की पुरानी सड़क पर वाके है। हिन्दौन रोड स्टेशन यहां से ३५ मील है और बीच में पक्की सड़क बनी हुई है पहले यह बड़ा भारी नगर था। यहां महाबीर का मेला चैत्र सुदी पूर्णमा (मार्च) के महीने में होता है जिस में एक लाख के करीब यात्री आते हैं॥

हिन्दौन स्टेशन राजपूताना मालवा रेलवे पर है इस का फासला आगरा फोर्ट जंकशन से ७४ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥)। लगता है॥

स्टेशन पर नगर जाने के लिये यक्के मिलते हैं। नगर में डाक बंगला और एक अच्छी धर्म्मशाला है॥

हरदा ।

जी० आई० पी० याने बम्बई की बड़ी लाईन पर स्टेशन है यहां से १० मील के करीब नमांवर गांव है जिसमें हिन्दुओं के पवित्र मन्दिर हैं। प्राचीन विद्यावाले लोगों के लिये बम्बई से यहां तक का सफर बड़ा मनभावना है। यहां असिस्टंट कमिश्नर की कचहरी और देशियों के लिये हस्पताल भी है। जी० आई० पी० रेलवे की बनाई हुई पुस्तकालय बड़ी सुन्दर है, और जब गाड़ी स्टेशन के पास पहुंचती है तो यह गाड़ी में से दिखाई देती है॥

हरदा से अनाज बहुत बाहर जाता है। यहां रुई निकालने और दबानेके भी कारखाने हैं स्टेशन पर अंग्रेजों और देशियों के लिये वेटिंगरूम याने मुसाफरखाने बने हैं और एक बड़ी सराय भी है जो स्टेशन से दिखाई देती है॥

हरदा बम्बई से ४१७ मील और दिल्ली से ५४१ मील है

तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६।) और ८=) और सवारी गाड़ी में ४।=) और ६॥=) लगता है॥

हासपत ।

मदरास अहाते के विलारी जिले में नगर और सदर्न महटा रेलवे का स्टेशन है यहां तहसीलदार और सब मजिस्ट्रेट की कचहरियां भी हैं। स्टेशन से ७ मील के करीब तुंगभद्रा दरया के किनारे पर हम्पी उजड़ा हुआ नगर है पहले यह नगर विजयानगर के राजाओं की राजधानी था पीछे बीजापुर और गोलकण्डा के राजों के हाथ आया। विजयानगर के राजों के राज्य में यह नगर बहुत बढ़ गया था और इस में बहुत से सुन्दर महल बन गये थे। कैसरफरेड्रिक साहब लिखते हैं कि मैंने राजा विजियानगर के महल जैसा कहीं नहीं देखा। खण्डरों में विथोबा का मन्दिर, महल हाथियों का तबेला और कई और मकान अबतक हैं यहां मार्च य. अपरैल के महीने में एक मेला होता है जिस में बहुत यात्री आते हैं॥

स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है और ८ मील के फासले पर कमालापुरम में एक अच्छा डाक बंगला भी है॥

हासपत पूना से ४२३ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।=)॥ लगता है॥

होशंगाबाद ।

जी० आई० पी० रेलवे पर है स्टेशन पर वेटिंगरूम बना हुआ है होशंगाबाद कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर और असिस्टेंट कमिश्नरों का सदर मुकाम है। नर्बदा दरिया इस नगर के पास से गुजरता है उस पर भूपाल रियासत ने सुन्दर पुल बनाया हुआ है। कार्त्तिक

सुदी (नवम्बर) में यहां नर्बदा और बड़ा तवा दरियाओं के संगम पर बृन्द्राबन जगह पर बड़ा भारी मेला होता है इस जगह महादेव का मन्दिर है ॥

गिरजे के सामने स्टेशन से एक मील के क़रीब एक बंगला है और कई धर्म्मशालायें हैं जिन में से ६ के क़रीब मन्दिरों के साथ हैं, और एक नर्बदा दरिया के किनारे पर है और एक जो राम जी बाबा की धर्म्मशाला कहलाती है स्टेशन के सामने ही है। यहां से पत्थर की सिलें बाहर जाती हैं ॥

होशंगाबाद बम्बई से ४७८ मील और दिल्ली से ४८२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ७।≤) और ७।–) और सवारी गाड़ी में ४॥≤)॥ और ६≤) लगता है ॥

ज़मीमा पहिला।

रेलवे एकट ६ सन् १८९० ई० का खुलासा आम लोगों की खबर के वास्ते नीचे दर्ज किया जाता है:—

आम क़वायद

दफा ४७ (६) हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि अपनी रेलवे के हर स्टेशन में उन आम क़वायद की एक नक़ल रख दिया करे जो दफ़ा हाज़ा की रू से रेलवे मज़कूर में बर वक्त जारी रहें और यह लाज़िम होगा कि तमाम मुनासिब वक्तों में क़वायद मज़कूर के बिला तलब रसूम देखने की हर शख़्स को इजाज़त दे॥

हर कमरे के लिये मुसाफ़िरों की तादाद ग़ायत

दफा ६३—हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि जनाब नवाब गवर्नर जनरल बहादुर व इजलास कौंसल की मंजूरी की पाबन्दी के साथ हर किसम की गाड़ी के हर एक कमरे में जिस कदर के मुसाफ़िर ले जाए जा सकें उनकी तादाद ग़ायत मुकर्रर कर दे और यह भी लाज़िम होगा कि हर कमरे के अन्दर या बाहर नुमायां तौर पर तादाद मुकर्रर मज़कूरा ज़ाहर कर दे ख्वाह अंग्रेजी ज़बान में या एक या ज़ियादा देशी ज़बानों में जो उस कलमरौ में अमूमन मुसतामिल हों जहां से रेलवे गई हो या दोनों में यानी अंग्रेज़ी ज़बान में और एक या ज़ियादा ऐसी देसी ज़बानों में जो जनाब नवाब गवर्नर जनरल बहादुर वइजलास कौंसल मुन्तज़िम रेलवे से मशवरा करने के बाद ठहरा दें॥

कमरों का औरतों से मख़सूस कर रखना

दफा ६४ (१) सन् १८९१ ई० की जनवरी की पहली तारीख को और उस के बाद से हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि हरएक

ट्रेन में जिस में मुसाफिर जाते हों सब से नीचे दरजे की गाड़ी का जो उस ट्रेन का जज़्व हो कम से कम एक कमरा औरतों के इस्तेमाल के लिये मखसूस कर रक्खे ॥

(२) ऐसा एक कमरा जो हस्ब मज़कूरा बाला मखसूस कर रक्खा जाय उस में एक पाखाना भी होना चाहिये अगर ट्रेन ५० मील से ज़ियादा दूर जाने वाली हो ॥

नक्शा औक़ात और नक्शा महसूल को स्टेशनों में नुमायां करना

दफा ६५-हर मुन्तज़िम रेलवे को लाज़िम होगा कि अपनी रेलवे के हर स्टेशन के किसी नुमायां और ऐसी जगह में जहां पहुंचा जासके बज़बान अंग्रेज़ी और किसी ऐसी देसी ज़बान में जो उस कलमरौ में आम तौर पर मुसतामिल हो जहां वह स्टेशन वाके है उन नकशाहा औक़ात की एक नकल जो उस रेलवे में बरवक़्त जारी रहें और उन महसूलात की फेहरिस्तें चसपां कराए जो उस स्टेशन से जहां फेहरिस्तें लटका दी गई हैं हर ऐसे मुक़ाम तक सफ़र करने की बाबत तलब किये जाते हैं कि जिस मुक़ाम के लिये कार्ड टिकट उस स्टेशन में मुसाफिरों को मामूलन बांटे जाते हैं ॥

उस सूरत की निसबत हुक्म जब कि ऐसी ट्रेन के लिये टिकट बट चुके हों जिस में ज़ियादा मुसाफिरों की जगह न हो

दफा ६७ (१) महसूल का क़बूल किया जाना और टिकट का बटना उसवक़्त समझा जाएगा जब कि उस ट्रेन में जगह रहे जिसके लिये टिकट बटते हों ॥

(२) अगर किसी शख्स को टिकट दिया गया हो और उस को उस ट्रेन में जगह न मिले जिस के लिये टिकट बटा था तो उस

शख़्स को ट्रेन के चले जाने के बाद तीन घण्टे के अन्दर टिकट फेर देने पर मुस्तहक़ इस बात का होगा कि अपना महसूल फौरन वापिस ले ले ॥

(३) वह शख़्स जिसके वास्ते उस दरजे की गाड़ी में जिसके लिये उसने टिकट खरीदा हो कोई जगह न हो और जिस को किसी नीचे दरजे की गाड़ी में बमजबूरी सफर करना पड़ा हो अपना टिकट हवाले कर देने पर मुस्तहिक़ इस बात का होगा कि जो महसूल उसने अदा किया हो उसके और उस महसूल के दरमियान जो उस दरजे की गाड़ी की बाबत वाजिबुलअदा है जिस पर उसने सफर किया है जिस क़दर फ़र्क निकले वह उसे वापिस मिले ॥

ऐसे आदमियों के लेजाने से इनकार करने का इख़्तियार जो मुतअद्दी या छूतवाली बीमारी में मुबतिला हों

दफा ७१ (१) मुन्तज़िम रेलवे को इख़्तियार है कि किसी ऐसे शख़्स के लेजाने से इनकार करे जो किसी मुतअद्दी या छूतवाली बीमारी में मुबतिला हो इल्ला उन शरतों के मुताबिक जो दफा ४७ की दफ़ा तहती (१) के ज़िम्मन ५ की रू से मुकर्रर हैं ॥

(२) जो शख़्स वैसी बीमारी में मुबतिला हो उसको लाज़िम होगा कि किसी रेलवे में स्टेशनमास्टर या उस मुकाम के जिम्मेवार किसी और मुलाज़िम रेलवे की मन्जूरी खासके बिदून जहां वह रेलवे मज़कूर में दाखिल हो किसी रेलवे में दाखिल न हो या सफर न करे ॥

(३) उस मुलाज़िम रेलवे पर जो वैसी इजाज़त देता हो जिसका दफा तहती (२) में जिक्र है वाजिब होगा कि उस शख़्स को जो उस बीमारी में मुबतिला हो ऐसे और लोगों से जुदा रखने का इन्तिज़ाम करे जो रेलवे पर हों या रेलवे पर सफर करते हों ॥

ऐसे कमरे में दाखिल होना जो मख़सूस कर रखा जाए या जो आगे से भरा हुआ हो या ऐसे कमरे में दाखिल होने से रोकना जो भरा हुआ न हो

दफा १०९ (१) अगर कोई मुसाफिर किसी गाड़ी के ऐसे कमरे में दाखिल होकर जिसको किसी मुन्तज़िम रेलवे ने किसी और मुसाफिर के इस्तेमाल के लिये मख़सूस कर रखा हो या जिस में मुसाफिरों की ऐसी तादाद ग़ायत आगे से मौजूद हो जो उस कमरे के अन्दर या बाहर दफ़ा ६३ की रू से लिखी रहे मुलाज़िम रेलवे के कहने पर भी उस से निकलने से इनकार करे तो उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिस की हद २०) तक हो सक्ती है ॥

(२) अगर कोई मुसाफिर गाड़ी के किसी ऐसे कमरे में किसी और मुसाफ़िर को जायज़ तौर पर दाखिल होने से रोके जिस को मुन्तज़िम रेलवे ने रोकने वाले मुसाफिर के इस्तेमाल के लिये मख़सूस न कर दिया हो या जिस में मुसाफ़िरों की वह तादाद ग़ायत आगे से मौजूद न हो जो उस कमरे के अन्दर या बाहर दफ़ा ६३ की रू से लिखी रहे तो उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद २०) रु० तक हो सकती है ॥

तम्बाकू पीना

दफा ११० (१) अगर कोई शख़्स उन मुसाफिरों की (अगर कोई हो) रज़ामन्दी के बिदून जो उसके साथ गाड़ी के एकही कमरे में हों बजूज़ गाड़ी के उस कमरे के जो उस काम के लिये खास कर दिया गया हो गाड़ी के किसी कमरे में तम्बाकू पिये तो उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद २०) रु० तक होसकती है ॥

(२) अगर कोई शख़्स, इस तरह पर तम्बाकू पीता ही रहे बाद इसके कि उसको किसी मुलाज़िम रेलवे ने इस से बाज़ रहने के

लिये खबरदार कर दिया हो तो उसको कोई मुलाज़िम रेलवे अलावा उस मवाखजे के जिसका दफा तहती (१) में जिकर है उस गाड़ी से जिस में वह सफ़र करता हो निकाल दे सकता है॥

पास या टिकट के बग़ैर या गैरकाफी पास या टिकट के साथ या मुसाफत मजाज के बाहर सफ़र करना

दफा ११३ (१) कोई मुसाफिर किसी ट्रेन में अपने साथ ठीक पास या ठीक टिकट न रख कर सफ़र करे या ट्रेन में रहते हुए या ट्रेन से उतरने पर फौरन अपना पास या टिकट मुआयने के लिये पेश न करे या पेश करने से इनकार करे या हवाले न करे जब कि उस से दफ़ा ६८ की रू से वह पास या टिकट तलब किया जाए तो किसी ऐसे मुलाज़िम रेलवे के तलब करने पर जो मुन्तज़िम रेलवे की तरफ से इस काम के लिये मुकर्रर किया गया हो वह ऐसे महसूल मजीद के अदा करने का मस्तौजिब होगा जो बाद अज़ीं इस दफ़ा में मज़कूर है अलावा उस मामूली इकैहरे महसूल के उस मुसाफत के लिये जो वह तै कर चुका हो या जब इस अमर में शुभा हो कि किस स्टेशन से वह रवाना हुआ था तो अलावा उस मामूली इकैहरे महसूल के उस स्टेशन से जहां से ट्रेन इब्तदाअन रवाना हुई हो या अगर उन मुसाफिरों के टिकटों का जो उस ट्रेन पर सफ़र करते हों ट्रेन के इबतदाअन रवाना होने के बाद मुआइना हो गया हो तो इलावा उस मामूली इकहरे महसूल के उस मुकाम से जहां टिकटों का मुआयना होगया हो या उन के एक बार से जियादा मुआयना होने की सूरत में उस मुक़ाम से जहां आखीरबार मुआयना हुआ हो॥

(२) अगर कोई मुसाफिर किसी ऐसी गाड़ी में या ऐसी गाड़ी पर या ऐसी ट्रेन के जरिये से सफ़र करे या सफ़र करने का कस्द करे जो उस गाड़ी या ट्रेन से आला दरजे की हो जिस के लिये उसने

पास हासिल किया था टिकट खरीद किया हो या ऐसी गाड़ी में या ऐसी गाड़ी पर उस मुकाम के बाहर सफर करे जहां तक की उसको बजरिये उसके पास या टिकट के इजाज़त है तो वह ऐसे मुलाज़िम रेलवे के तलब करने पर जो मुन्ताज़िम रेलवे की तरफ से इस काम के लिये मुकर्रर हो ऐसे महसूल मजीद के अदा करने का मस्तौजिब होगा जिसका बाद अज़ीं इस दफा में जिकर है अलावा उस जरे फर्क के जो उस के अदा किये हुये महसूल और उस सफर के महसूल के दरमियान निकले जो उसने किया हो ॥

(३) जिस महसूल मजीद का दफा तहती (१) और दफ़ा तहती (२) में जिकर है वहः—

(अलिफ़) जब कि मुसाफिर पर महसूल आयद होने के बाद ही और किसी मुलाज़िम रेलवे के गिरफ्त करने के क़बल उस मुलाजिम रेलवे का जो ट्रेन में नौकरी पर हो महसूल आयद होने का हाल बयान कर दे तो १) रु० या दो आने या आठ आने होगा और

(बे) किसी और सूरत में ६) रुपया या १) रुपया या ३) रुपया होगा। याने अगर मुसाफिर किसी आला दरजे की गाड़ी में या किसी अदना दरजे की गाड़ी में या किसी और दरजे या किसम की गाड़ी में सफ़र करता हुवा सफ़र कर चुका या उसने सफ़र करने का कस्द किया हो तो बएतबार उस दरजा या किस्म की गाड़ी के जिस पर वह सफ़र करता या सफ़र कर चुका या उसने सफ़र करने का कस्द किया हो मगर शर्त यह है कि महसूल मजीद मज़कूर किसी सूरत में:—

(अलिफ़) जब कि उस के अदा करने का वजूब दफ़ा तहती (१) और पैदा हो उस मामूली या इकैहरे महसूल की तादाद से जियादा न हो जिसके अदा करने का वह मुसाफिर जिस पर वह महसूल आयद हुआ दफ़ा तहती मज़कूर की रू से मस्तौजिब है वा

(बे) जबकि वजूब मज़कूर हस्ब दफ़ा तहती (२) पैदा हो उस ज़रे फर्क से ज़ियादा न हो जो उस मुसाफिर के अदा किये हुये महसूल जिस पर महसूल मज़कूर आयद हुआ हो. और उस सफ़र के महसूल के दरमियान निकलें जो उसने किया हो ॥

(४) अगर कोई मुसाफिर जो ऐसे महसूल मज़ीद और महसूल के अदा करने का मुस्तौजिब हो जिसका दफ़ा तहती (१) में ज़िकर है या ऐसे महसूल मज़ीद और किसी ऐसे फर्क महसूल के अदा करने का मुस्तौजिब हो जिसका दफ़ा तहती (२) में ज़िकर है उस महसूल मज़ीद या फर्क महसूल की दफ़ाआत तहती मज़कूर में से किसी एक दफ़ा तहती की रू से जैसी सूरत हो मुतालबा होने पर अदा करने में कसूर या अदा करने से इनकार करे तो जो रुपया कि उससे वाजिबुलअदा होगा वह किसी ऐसे मुलाज़िम रेलवे के किसी मजिस्ट्रेट के पास दरख्वास्त करने से जो मुन्तज़िम रेलवे की तरफ़ से उस काम के लिये मुकर्रर हो मजिस्ट्रेट के ज़रिये से बतौर ऐसे जुरमाने के मुसाफिर से वसूल किया जाएगा जो मजिस्ट्रेट मौसूफ की तरफ से उस मुसाफिर पर आयद किये जाने की तकदीर में वसूल कियाजाता और जबकि वह जुरमाना वसूल होजाय तो मुन्तज़िम रेलवे को दे दिया जायगा ॥

वापिसी टिकट के किसी निसफ़को मुन्तकिल करना

दफ़ा ११४-अगर कोई शख्श किसी वापिसी टिकट के किसी निसफ को बेचे या बेचने का कस्द करे या किसी शख़्सको देदे या देदेने का कस्द करे इस गरज से कि वह शख़्स बज़रिया उसके सफर करसके या वापसी टिकट का वैसा निस्फ़ खरीद करे तो उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद पचास रु० तक होसक्ती है और अगर वापसी टिकट के वैसे निसफ खरीदार उस को लेकर सफर

करे या सफर करने का कस्द करे तो उसको जुरमाना मज़ीद की सज़ा दी जायेगी जिसकी हद उस सफर की बाबत जिसका उस टिकट की रू से अख़्तियार है दोहरे महसूल के मुबालिग़ तक होसक्ती है॥

किसी गाड़ी या और मुकाम में दाख़िल होना जो ज़नानों के लिये मख़सूस हो

दफा ११९-अगर कोई मर्द किसी गाड़ी या कमरे या कोठरी या और मुकाम में जो मुन्तज़िम रेलवे की तरफ से खास ज़नानों के इस्तेमाल के लिये रखा जाए जान बूझकर बिदून उज़र जायज़ के दाख़िल हो या बाद दाख़िल होने के किसी मुलाज़िम रेलवे के यह कहने पर कि उसको वहां से निकल आना चाहिये वहां ठहरा रहे तो उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद एक सौ रुपये तक होसक्ता है अलावा सोख्त होने किसी महसूल के जो उसने अदा किया हो और जब्ती किसी पास या टिकट के जो उसने हासिल या खरीद किया हो और वह बज़रिये किसी मुलाज़िम रेलवे के उस रेलवे से निकाल दिया जा सकेगा॥

रेलवे पर नशे में होना या किसी अमर बाईस से तकलीफ का मुरतकिब होना

दफा १२०-अगर कोई शख्स रेलवे गाड़ी में या रेलवे के किसी जुज़व पर-
(अलिफ) नशे की हालत में हो या (बे) किसी अमर बाईस से तकलीफ या किसी बेहयाई के फेल का मुर्तकिब हो या फोहश अलफ़ाज इस्तेमाल करे या बद ज़ुबानी करे या (जीम) अमदन या बिदून उजरे जायज के किसी मुसाफिर की राहत में खलल अन्दाज हो या कोई चिराग बुझादेता उसको ऐसे जुरमाने की सज़ा होगी जिसकी हद पचास रुपये तक होसकती है अलावा सोख्त होने किसी महसूल के जो उसने अदा किया हो और जब्ती किसी पास या टिकट के जो उसने हासिल

या खरीद किया हो और वह बज़रिया किसी मुलाज़िम रेलवे के रेलवे से निकाल दिया जा सकेगा ॥

ज़मीमा दूसरा ।

आम कवायद ।

किसी मुसाफ़िर का एक गाड़ी से उस से आला दरजेकी गाड़ी तवदील करना

दफा ४—अगर कोई मुसाफ़िर किसी अदना दरजे की गाड़ी से उस से आला दरजे की गाड़ी हर दो दरजे की गाड़ियों के किराये का ज़रे फ़र्क़ अदा करके तवदील करना चाहे तो उस ट्रेन के गार्ड या किसी और ऐसे रेलवे मुलाज़िम को जिसको रेलवे मुन्तज़िम इस ग़रज़ के लिये मुक़र्रर करे ऐसे तबादले का ज़रूरी इन्तिज़ाम करना चाहिये ॥

जनाने मुसाफ़िर

दफा ५—जब कोई जनाने मुसाफ़िर तनहा सफ़र कर रहे हों तो उस ट्रेन के गार्ड को लाज़िम होगा कि उनके आराम का हर तरह ख्याल रखे और उन को गाड़ी में सवार करते वक़्त अगर ऐसे मुसाफ़िर उन से दरख़ास्त करें तो इस अमर की कोशिश करें कि उन मुसाफ़िरों को उन के टिकट के दरजे के मुताबिक ऐसी गाड़ी में सवार करे जिस में और जनाने मुसाफिर सफ़र कर रहे हों ॥

मुतअद्दी या छूत वाली बीमारियां

दफ़ा ७—हस्व पेरट ६ सन् १८६० ई० मुफ़स्सला ज़ैलबीमारियां, मुतअद्दी या छूत वाली शुमार की जाती हैं :—

(१) बियुबानिक फीवर (२) हैज़ा (३) डिफथेरिया (४) कोढ़ (५) खसरा (६) सकार लट फीवर (७) चेचक (८) टाइफस फीवर (९) टाइफाईड फीवर और (१०) काली खांसी ॥

शरायत जिन पर मुतअद्दी या छूत वाली बीमारियों के मरीज़ मुसाफ़िर रेल में ले जाए जाते हैं

दफा ८—कोई मुतअद्दी या छूतवाली बीमारीका मरीज़ मुसाफ़िर रेल में नहीं लेजाया जायगा जब तक (अलिफ़) वह अपनेवास्ते और अपनेहमराइयों के वास्ते गाड़ी में एक कमरा मख़सूस न कराले (ब) इण्डियन रेलवे एक्ट ६ सन् १८६० ई० के ज़ेर दफ़ा ७१ (देखो ज़मीमा पहिला) उस बीमार मुसाफ़िर और उसके हमराहियों को जब तक वह रेल पर रहें दूसरे सफ़र करनेवाले या सफ़र करते हुये मुसाफ़िरों से अलैहदा रखने का तमाम ज़रूरी इन्तिज़ाम न कर लिया जावे और (जीम) दीगर ज़रूरी एहतियात जो रेलवे मुलाज़िम जिसने ऐसे मरीज़ को रेल में सफ़र करने की इजाज़त दी हो दूसरे सफ़र करने वाले सफ़र करते हुये मुसाफ़िरों को छूतवाली मरज लगजाने से रोकने के लिये ज़रूरी ख्याल करे न करली जावें ॥

असनाए सफ़र में रस्ते में ठहरना

तमाम हिन्दुस्तान की रेलों पर मुसाफ़िरों को ख्वाह उन के पास लोकल टिकट हों या दूर दराज़ के सौ मील का सफ़र करने के बाद एक दिन ठहरने की इजाज़त है बशरते कि वह अपने टिकटों पर उस स्टेशन के स्टेशन मास्टर से जहां वह ठहरना चाहें लिखा लें ॥

रेलवे मुलाज़िमों की मुसाफ़िरों के साथ बदअख़लाक़ी

अगर कोई रेलवे का मुलाज़िम किसी मुसाफ़िर के साथ बदसलूकी बद अख़लाक़ी या बे-तवजह से पेश आवे तो उसी वक़्त वहां के रेलवे हुक्काम को या उस जिले के डिस्ट्रिक्ट टरेफिक सुपरिण्टेण्डेण्ट को उस रेलवे मुलाज़िम की रिपोर्ट करनी चाहिये ॥

रेलवे मुलाज़िमों को इनाम

रेलवे मुलाज़िमों के लिये मुसाफ़िरों से इनाम मांगने या लेने की सख़्त मुमानियत है ॥

ज़मीमा तीसरा।

अवध रोहेलखंड रेलवे।

नीचे लिखे हुए मुकामों में टिकटघर सब दरजे के टिकटों के बेचने के लिये रात दिन खुले रहते हैं॥

(१) अयोध्या (२) बाराबंकी (३) बरेली (४) बनारस (५) परतापगढ़ (६) चन्दौसी (७) देहरादून (८) राजघाट (९) शाहजहानपुर (१०) फैज़आबाद (११) काशीजी (१२) कानपुर (१३) लखनऊ (१४) लकसर (१५) मुरादाबाद (१६) हरिद्वार॥

(१) उन्नावो (२) आंवला (३) कानपुर बिरिज (४) तिलेहर (५) जौनपुर (६) दिबई (७) धामपुर (८) रामपुर (९) रायबरेली (१०) रुदौली (११) रुड़की (१२) सुलतानपुर (१३) संदीला (१४) शाहगंज (१५) गुशाईगंज (१६) नजीबाबाद (१७) नगीना और (१८) हरदोई में सारा दिन खुले रहते हैं और बाकी सब स्टेशनों पर गाड़ी के आने से एक घण्टा पहिले खोले जाते हैं॥

आसाम बंगाल रेलवे।

(१) चिट्टागांग (२) छावनी सिलचार और (३) गौहटी के स्टेशनों पर टिकट घर तीसरे दरजे के टिकटों की फ़रोख्त के वास्ते हर एक गाड़ी के मुक़र्ररा वक़्त रवानगी से तीन घण्टे पेश्तर खोल दिये जाते हैं और॥

(१) अखौड़ा (२) बदरपुर (३) श्रीमंगल (४) शाइस्तागंज (५) फेनी (६) करीमगंज (७) लकसम जंकशन और (८) नोयाखाली जंकशन पर दो घण्टे (९) कोमिल्ला पर डेढ़ घण्टा और बाक़ीमांदा स्टेशनों पर एक घण्टा पहिले टिकट घर खोले जाते हैं बड़े स्टेशनों पर टिकट घर गाड़ी के चलने से ५ मिनट पहिले और छोटे स्टेशनों पर जहां गाड़ी आती हुई दिखाई देने लगती है बन्द कर दिये जाते हैं॥

ईस्ट इण्डियन रेलवे ।

(१) अलीगढ़ (२) आरा (३) असनसोल (४) अलाहाबाद (५) इटावा (६) बांकीपुर (७) बरद्वान (८) वैद्यानाथ (९) पटना (१०) टुंडला (११) जबलपुर (१२) चन्दरनगर (१३) देहली (१४) दीनाजपुर (१५) सिरामपुर (१६) कानपुर (१७) कलकत्ता (१८) गया (१९) मिर्ज़ापुर (२०) मुग़लसराय (२१) मुक़ामे (२२) मेमारी (२३) हौड़ा स्टेशनों के टिकट घर सारा दिन खुले रहते हैं असबाब की बिलटी बन सकती है ॥

कलकत्ता शहर के अन्दर भी टिकट घर खोल दिये गये हैं जो ९ बजे सबेरे से शाम के ६ बजे तक खुले रहते हैं। यह टिकट घर (१) फेरली पलेस (२) नं० १८—३ चौरन्धी (३) आर्मी नेवी स्टोर्स (४) बड़ा बाज़ार नं० १२२ हैरीसन रोड में है ॥

ईस्टरन बंगाल स्टेट रेलवे ।

जो स्टेशन नीचे लिखे हैं उन पर टिकट घर सारा दिन और रात खुले रहते हैं इनके सिवाय और स्टेशनों पर गाड़ी के चलने से आधा घण्टा पहिले खोले जाते हैं और गाड़ी के चलने से ५ मिनट पहिले बन्द कर दिये जाते हैं ॥

(१) बारकपुर (२) बालीगंज (३) बगुला (४) बोगरा (५) धेलिया घाटा (६) पारबतीपुर (७) पुर्निया (८) पोराधा (९) जलपाई गुरी (१०) दम दम जंकशन (११) दीनाजपुर (१२) ढाका (१३) रंगपुर (१४) सिलीगुरी (१५) संताहार (१६) काठीहार (१७) कुस्टिया (१८) कलकत्ता (१९) मैमनसिंह (२०) नटोर (२१) नारायणगंज और (२२) नैहटी ॥

ग्रेट इण्डियन् पैनिनशुला रेलवे ।

(१) अहमदनगर (२) अकोला (३) अमरावती

(४) इतारसी (५) बाईकुला (६) भांडूप (७) भूसावल (८) भूपाल (९) परेल (१०) पूना (११) थाना (१२) झांसी (१३) चिंचपूकली (१४) दादर (१५) दोमबिवली (१६) देवा (१७) सेवल (१८) शोलापुर (१९) करीरोड (२०) कल्यान (२१) कुरला (२२) खांडवा (२३) गुलबरगा (२४) घाट कुपार (२५) मतंगा (२६) मुजगांओं (२७) मसजिद (२८) मुम्बारा (२९) नासिक (३०) नागपुर (३१) वारधा (३२) विक्टोरिया टरमिनस (३३) होशंगा आबाद स्टेशनों पर टिकट घर रात दिन खुले रहते हैं और बाक़ी स्टेशनों पर दिन में हरवक़्त और रात को मुसाफ़िर गाड़ी के चलने से दो घण्टे पहिले टिकट मिलते हैं॥

नार्थ वैस्टर्न रेलवे।

नीचे लिखे हुए स्टेशनों पर मुसाफ़िर हर वक़्त टिकट ख़रीद सक्ते और असबाब की बिलटी करा सक्ते हैं॥

(१) अमृतसर (२) अम्बाला छावनी (३) अम्बाला शहर (४) बादामी बाग़ (५) बटाला (६) बठिंडा (७) पठानकोट (८) पटियाला (९) फिल्लौर (१०) पेशावर छावनी (११) पेशावर शहर (१२) जालन्धर छावनी (१३) जालन्धर शहर (१४) जगाधरी (१५) जम्बू (तवी) (१६) जेहलम (१७) जेकब-आबाद (१८) हसनअबदाल (१९) हैदराबाद सिंध (२०) खैरपुर मीर (२१) दारिया खां (२२) दिल्ली (२३) रावलपिण्डी (२४) रोड़ी (२५) सांगला हिल (२६) सिवी (२७) सहारनपुर (२८) सक्खर (२९) सियालकोट (३०) शिकारपुर (३१) फ़ीरोज़पुर छावनी (३२) फ़ीरोज़पुर शहर (३३) कराची छावनी (३४) कराची शहर (३५) कोटरी (३६) कोटा (३७) केम्बलपुर छावनी (३८) गुजरात (३९) गुजरांवाला (४०) गुजजरखां

(४१) गुरदासपुर (४२) लाहौर (४३) लाहौर छावनी पूर्वी (४४) लाहौर छावनी पश्चिमी (४५) लायलपूर (४६) लुध्याना (४७) मुलतान छावनी (४८) मुलतान शहर (४६) मंटगुमरी (५०) मेरठ शहर (५१) मेरठ छावनी (५२) नौशहरा ॥

निजाम रेलवे

(१) औरंग आबाद (२) जलना ३) दौलत आबाद (४) काजीपत (५) नदेद (६) निज़ाम आबाद (७) वारंगल (८) यलंदु इन स्टेशनों पर गाड़ी के चलने से एक घंटा और बाक़ी स्टेशनों पर आधा घण्टा पहिले टिकट घर खोले जाते हैं ॥

१ बेगमपत (२) बेजवाड़ा (३) हैदराआबाद (४) सिकन्दराआबाद स्टेशनों पर टिकट घर सारा दिन खुले रहते हैं ॥

बर्मा रेलवे ।

(१) इनसेन (२) पज़ोनडांग (३) पगोडा रोड (४) थामियांग (५) जीम खाना (६) छावनी (७) रंगून (८) कमायत (६) केमन देन (१०) लम्माडा (११) मांडले (१२) मिशनरोड स्टेशनों पर टिकट घर सारा दिन खुले रहते हैं ॥

(१) पेगु (२) पनमाना (३) प्रोम (४) थाजी (५) टोंगू (६) सगैंग (७) शाजू (८) काठा ६) लेपटडन (१०) मेंगयान (११) मेमयो (१२) यमेथन स्टेशनों पर गाड़ी के चलने से एक घण्टा पहिले खोले जाते हैं ॥

बी० बी० एंड सी० आई रेलवे ।

नीचे लिखे हुए स्टशनों पर टिकट घर गाड़ी के आने से २ घण्टे पहिले खोले जाते हैं और गाड़ी के चलने से ५ मिनट पहिले बंद कर दिये जाते हैं पर और लाइनो पर जाने वाले यहां और बम्बई के स्टेशनों पर अपने और नौकरों के वास्ते दिन में हरवक़्त टिकट खरीद सक्ते हैं और असबाब की बिलटी करा सक्ते हैं ॥

(१) आबूरोड (२) अजमेर (३) अहमदआबाद (४) आगरा फोर्ट (५) अलवर (६) इन्दौर (७) बांदी कुई (८) बठिंडा (९) बड़ोच (१०) बड़ोदा (११) पालमपुर (१२) जैपुर (१३) हिसार (१४) दिल्ली (१५) रतलाम (१६) रेवाड़ी (१७) सूर्त (१८) कासगंज (१९) कानपुर (२०) मथुरा छावनी (२१) मह्रु (२२) नसीराआबाद (२३) नन्दरबार (२४) नीमच (२५) वधवान ॥

बंगाल नार्थ वैस्टर्न रेलवे ।

स्टेशनमास्टरों को हिदायत है कि मुसाफिरों के टिकट खरीदने और असबाब की बिल्टी कराने की सहूलियत के वास्ते गाड़ीके आने से एक घण्टा पहिले टिकट घर खोल दें ॥

बंगाल नागपुर रेलवे ।

हौड़ा स्टेशन पर मुसाफिर दिन में किसी वक्त टिकट खरीदसक्ते हैं । और कलकत्ता और नागपुर शहर में भी टिकर घर खोले हुए हैं जो नीचे लिखे जाते हैं ॥

(१) नं० ९ ओलड कोर्ट हाऊस कलकत्ता टामस कुक ऍड सनज की कोठी में (२) नं० ४१ चौरंगीरोड आर्मी ऍड नेवी सटोस कलकत्ता यहां पहले और दूसरे दरजे के टिकट मिलते हैं (३) नं० ३०—१डिल हौजी सुकेयर कलकत्ता ९॥ बजे से ५॥ बजे तक खुला रहता है (४) नं० ४२ स्ट्रैंडरोड कलकत्ता हौडे के पुल के पास ६ बजे सबेरे से १० बजे रात तक खुला रहता है और (५) नागपुर शहर का टिकट घर ॥

मदरास रेलवे ।

(१) अदोनी (२) अरकोनाम (३) बाओरंगपेट (४) बॅगलोर (५) जालार पेट (६) रायापुर्म (७) रायचूर (८) सलम (९) कटपडी (१०) कड्डापा (११) कोइनूर (१२) कोयम्बटूर (१३) मदरास (१४) मेत पूलेयम इन स्टेशनों के मुसाफिर जो मदरास रेलवे पर डाक गाड़ी में सफर करना चाहें दिन में हर वक्त मुकर्र टिकट घरों से टिकट खरीद सक्ते हैं और असबाब की बिलटी करा सक्ते हैं ॥

सदर्न मरहटा रेलवे ।

(१) बिलारी (२) बेंगलोर (३) बेलगराम (४) धारवार (५) गुंटा-कुल (६) मीरज (७) मैसूर (८) वालटेयर और (६) हुबली स्टेशनों पर मुसाफिर दिन में हर वक्त अपने और अपने नौकरों के लिये टिकट खरीद सक्ते हैं और असबाब की बिलटी भी करा सक्ते हैं ॥

साऊथ इण्डियन रेलवे ।

नीचे लिखे हुये स्टेशनों पर टिकट घर रात दिन खुले रहते हैं ताकि मुसाफिरों को टिकट खरीदने और बिलटी कराने में आराम रहे ॥

(१) अरकोनाम जंकशन (२) अम्मनया यकनूर (३) इरादे जंक-शन (४) त्रिचनापली जंकशन (५) त्रिचनापली फोर्ट (६) त्रिवलोर (७) तंजोर जंकशन (८) तिन्नीवेली पूल (६) टूटी कारन (१०) चिंग-लीपत (११) दिंदीगुल (१२) कांजीवर्म (१३) कडालोर नया (१४) कडालोर पुराना (१५) करोर (१६) करईकल (१७) कुम्बाकोनाम (१८) मायावर्म (१६) मद्रास (एगमोर) (२०) मदुरा जंकशन (२१) मूतूपत (२२) नेगापटम (२३) वेलूपुर्म (२४) वेलोर ॥

बाकी स्टेशनों पर जहां मेले तेहवार होते हैं यात्रियोंको आपिसी पर टिकट घर रात दिन खुले रहते हैं ॥

इति ॥

पुस्तक मिलने का पता:-

रेलवे के बड़े २ स्टेशनों के बुक स्टालों से मिल सक्ती है ॥

क़ीमत सिर्फ़ =) आने है ॥